CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दशरूपक

Dasharupak : A Selection of 10 Theater-of-experience Texts

गौतम चटर्जी

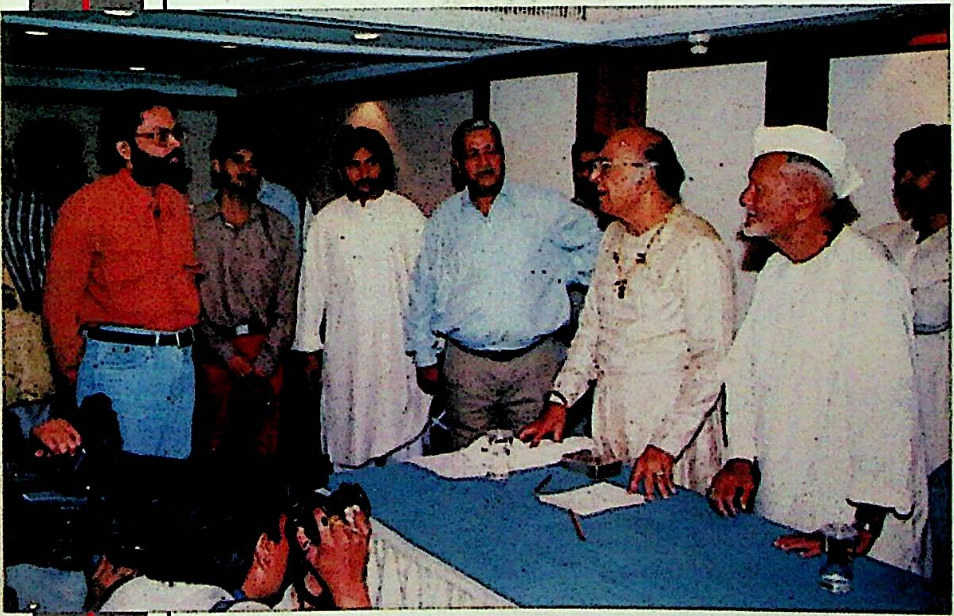

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ शान्तो नाम
शमस्थायिभावात्मको मोक्षप्रवर्तकः
स तु
तत्वज्ञानवैराग्याशयशुद्धत्यादिभिर्विभा
वै समुत्पद्यते ।

अब शान्त, जिसका स्थायीभाव शम है, और जो मोक्ष का प्रवर्तक है, विभावों से उत्पन्न होता है जैसे तत्वज्ञान, वैराग्य, शुद्धचित्त भाव इत्यादि । इसका अभिनय अनुभावों से किया जाना चाहिए जैसे यम व नियम, आत्मध्यान, चित्तएकाग्रता, धारणा, उपासना, समस्त जीवों के प्रति करुणा और लिंगग्रहण अर्थात् धार्मिक क्रियाओं का वरण । इसके व्यभिचारी भाव हैं निर्वेद, स्मृति, मनःदृढ़ता, आश्रम की चारों अवस्थाओं में शुद्धि, देहदृढ़ता, स्तम्भ आदि ।

श्री अभिनव गुप्त

My Theatre is about hope not dope.

Heiner Muller

Face to face with Ustad Vilayat Khan and Ustad Bismillah Khan (on cover).

- Photo Private Collection

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दशरूपक

(दस नाटकों का संग्रह)

प्रिय उर्मिला दी को
आदर के साथ
गौतम चटर्जी
17 सितम्बर '06

गौतम चटर्जी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दशरूपक

(दस नाटकों का संग्रह)

गौतम चटर्जी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दशरूपक (नाटक संग्रह) : गौतम चटर्जी

प्रकाशक : 'अभिरंग' रंगसंस्था
एन.11/38–बी, रानीपुर, महमूरगंज
वाराणसी – 221010
09839058363

प्रथम संस्करण : 2006

© लेखकाधीन

मुद्रक : महावीर प्रेस, वाराणसी ।
शब्दांकन : रक्षा कॉम्पनेट सर्विसेज, वाराणसी ।

DASHARUPAKA (A Collection of Ten Plays)
by Gautam Chatterjee

मूल्य : 300-00
: 200-00 (विद्यार्थियों के लिए)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनुक्रम

1-	संध्या भाषा	21
2-	अन्तरा	43
3-	स्वप्नछन्द	89
4-	तत्पुरुष	97
5-	चौथा अध्याय	125
6-	अन्धेरे अनुभव	151
7-	अंगिरा	171
8-	ईको चेम्बर	187
9-	आवर्तन	209
10-	बहुरि अकेला	229

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बाबा को

(ओम नमः शिवाय)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अभिनेता की प्रत्यभिज्ञा

नर्तक आत्मा

—शिव सूत्र

अन्तर जोति सब्द यक नारी

—सद्गुरू कबीर

मोक्षो हि नाम नैवान्यः स्वरूपप्रथनं हि तत् ।

—श्री तंत्रालोक में श्री अभिनव गुप्त

प्राप्त नाट्यशास्त्र के प्रथम अध्याय में ही भरत मुनि ने स्पष्ट कर दिया है कि तीनों लोकों के भावों का अनुकीर्तन नाट्य है । तीनों लोक, अर्थात् सत, रज और तम, इन तीन प्रकृति—गुणों से सुसज्जित मनुष्य का चित्त । कबीर साहब की सन्ध्या भाषा में त्रिलोक शब्द बार—बार आया है और ठाकुर जयदेव सिंह ने सही कहा है कि इन तीन लोकों के लिए भूः, भुवः और स्वः अधिक ठीक प्रतीत होता है। इस चित्त के कारण शब्द और छवि के रूप में जो भाव और विचार बनते हैं, वे चित्त की वृत्तियाँ हैं, जिन्हें पतंजलि ने तन्मात्रा और उत्तर आधुनिक भाषा ने मन कहा है । चित्त की वृत्तियों का निरोध, योग है और इनका अनुकीर्तन (या मंचन) अभिनय । साक्षी भाव में इनका दर्शन अभिनेता का मोक्ष है अर्थात आत्मज्ञान की सतत रचनात्मक प्रक्रिया, जैसा कि उपरोक्त श्लोक में गुरू श्री अभिनव गुप्त ने मोक्ष को स्पष्ट किया है कि, मोक्ष और कुछ नहीं, स्व—रूप का ज्ञान या आत्मज्ञान है। आत्मज्ञान ही मोक्ष है। और कुछ भी नहीं। चित्तवृत्तियों के दर्शन की प्रक्रिया शान्त रस है। यह अभिनेता की प्रत्यभिज्ञा है । प्रत्यभिज्ञा अर्थात् अपने स्व—रूप की फिर से पहचान (री—कॉग्नीशन) अभिनय कर्म के प्रकाश में—जिसे मनुष्य अज्ञान के अंधेरे में भूल गया है, अपनी असली पहचान को उसने खो दिया है । प्रत्यभिज्ञा दर्शन कश्मीर शैव दर्शन है। प्रत्यभिज्ञा, प्रकाश, विमर्श, उन्मेष, निमेष, प्रतिभा आदि इसी शैव दर्शन की शब्दावलियाँ हैं ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अभिनव गुप्त कश्मीरी शैव ऋषि एवं बहुतत्ववेत्ता थे। उन्होंने इसी दर्शन के आधार पर नाट्यशास्त्र की टीका की है। यह ग्रन्थ है 'अभिनव भारती'। इस प्रकार रंगमंच पर अभिनेता प्रकाश का विमर्श करता है । कबीर साहब ने इसी प्रकाश को ज्योति और विमर्श को शब्द या नारी कहा है। यहाँ पर शब्द ध्वनि या अनाहत नाद नहीं है। न आकाश का सार। यहाँ पर शब्द माया है। प्रकृति है। अभिनेता का मन है। इस मन में तीनों लोकों के समस्त चरित्रों के सारे भाव शब्द रूप में हैं जिनके बारे में भरत मुनि नाट्यवेद के पन्द्रहवें अध्याय के प्रारम्भिक श्लोकों (मुख्य रूप से तीसरे श्लोक) में कहते हैं कि भाव शब्दाश्रित है । भाव का कारण शब्द है। बिना शब्द के भाव सम्भव नहीं। सुनकर अजीब लगता है ! कल्पना ही असम्भव हो जाती है।

किन्तु प्रसंग दिलचस्प है । भरतमुनि अपने समय में भारतीय वांग्मय के ऐसे वटवृक्ष थे जिन्होंने अपने और अपने पूर्ववर्ती समय के ज्ञान, विद्या और शिक्षा के 'श्रेष्ठ' को इस कलाकर्म में शामिल कर इसे इस तरह सम्पूर्ण कला के रूप में देखा–परखा था कि मनुष्य का जीवन (जो यहाँ अभिनेता है) सम्पूर्ण कला की प्रकिया में पूर्णतर होता जाये। सत्य के अन्वेषण में जब उसे सत्य मिले तो वह स्वयं सत्य हो जाये। चारों वेदों से उन्होंने उनके श्रेष्ठ सार को तो लिया ही, ज्ञान, विद्या व शिक्षा की तत्कालीन उपलब्धियों को भी उन्होंने ग्रहण कर अभिनय कर्म के लिए उपयोगी बनाया। पाणिनी और पतंजलि के शब्दधर्मी चिन्तन तथा भर्तृहरि के 'वाक्यपदीयम्' को समझे बिना हम उस तीसरे श्लोक के मर्म को नहीं समझ सकते।

'वाक्यपदीयम्' के ब्रह्मकाण्ड में भर्तृहरि अभिनेताओं को एक अमोघ मंत्र देते हैं और वह है स्फोट का मंत्र । वे कहते हैं (अभिनेता के सम्बोधन में कहें तो) कि अभिनेता श्रोता तक शब्द के अर्थ को सम्प्रेषित नहीं करता। वह शब्द का उच्चार इस तरह करता है किं उसके अर्थ का स्फोट श्रोता में होता है। अर्थ श्रोता के पास पहले से रहता है । पहले तो अभिनेता इसकी परख करता है कि उसके मन या चित्त में मौजूद समस्त भाव शब्द हैं। ये ज्ञात हैं । आठों रस और उन्चासों भाव हैं। उसके लिए ये शब्द हैं। वह अपनी चेतना की सतह पर इकट्ठा शब्दों व उनके इन्टोनेशन (काकू) को इस तरह देखता है कि वे छूट सकें और अवचेतन में जमा शब्द सतह पर आ सकें । इस प्रकिया में वह शब्दों से बने मन की ज्ञात प्रकृति को जान पाता

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

है। उन्हें वह उनकी प्रकृति के अनुसार उच्चार देता है ताकि उनके अर्थ का स्फोट श्रोताओं में हो सके। रस निष्पत्ति हो सके।

श्री अभिनव गुप्त कहते हैं, अभिनेता का मुख्य काम यहाँ से शुरू होता है। उसे शब्द ब्रह्म की ओर बढ़ना होता है। माया के सार से आकाश के सार की ओर। अभिनेता के लिए शब्द पहले मन है, अन्ततः मंत्र। उसे इसकी प्रत्यभिज्ञा होती है कि यह मुक्त मन या शब्द पहले ही शून्य में जप रहा है। वह पहले ही मुक्त है जिसकी प्रत्यभिज्ञा अभिनेता को होनी होती है जो उसके लिए अज्ञात होता है। इस अज्ञात को घटने देने की प्रक्रिया में वह ज्ञात भावों का अनुकीर्तन करता है। अन्ततः उसके पास प्रकाश का आकाश बचता है जो वह तत्वतः है। इसका सार ही वह शब्द है जो कबीर का माया के अर्थ में शब्द नहीं, ब्रह्म के अर्थ में शब्द है। गीता में जिसके बारे में श्रीकृष्ण कहते है कि वह शब्द में हूँ। वैखरी, मध्यमा व पश्यन्ति के पार की स्थिति। अभिनेता के लिए शान्त रस। अभिनेता की प्रत्यभिज्ञा। संस्कृति में पश्य का अर्थ देखना है और भारतीय संस्कृति में पश्यन्ति (सुनने) की अवस्था में आकर ही देखना सम्भव होता है। पश्यन्ति देखने की भूमि है।

यहाँ इन दसों नाटक की उपस्थिति और अस्तित्व इसी अभिप्राय से है। भरत मुनि ने नाटक के दस रूप (या रूपक के दस प्रकार) बताएँ हैं – दशरूपक। मेरे नाटक 'दशरूपक' की कथावस्तु इस प्रकार है। विवाहित (आधुनिक लिव टुगेदर) होने के बावजूद कुमार और नन्दिनी अपने कारणो से एक अरसे से, दो शहरों में अलग–अलग रहते हैं। एक छोटे से शहर में ईसाइयों के कब्रगाह के पास एक छोटे से मकान में नन्दिनी अपने बेटे निखिल के साथ रहती है। लगभग प्रतिदिन ही श्मशान बन्धु शव लेकर आते हैं। दफनाते हैं। लौट जाते हैं। नंदिनी के लिए यह सामान्य हो है। इस प्रसंग का पूर्वरंग यह है कि उसी शहर में एक डॉक्टर और कर्नल में गहरी दोस्ती थी। कर्नल डॉक्टर की क्लीनिक में रोज शाम आते। गप–शप में जीवन के विविध पक्षों पर गहराई से बातचीत करते। कॉफी और किताबें मेज पर होतीं। एक शाम वे नहीं आये। एक हफ्ता गुजरा। दो हफ्ता गुजरा। जब एक महीना गुजर गया तो डॉक्टर हुए चिन्तित। खबर लेने पहुँचे कर्नल के घर। पता चला कर्नल एक महीना पहले यह शहर छोड़कर ही चले गये हैं। चकित डॉक्टर मकान के अन्दर गये तो सूने कमरों ने उन्हें विचलित कर दिया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एक कमरे के कोने में रखी मेज ने डॉक्टर को बुलाया । उस पर रखी डायरी पर धूल जम गयी थी । डॉक्टर वह डायरी घर ले आया । पहला पन्ना पलटा तो पूरे पेज पर सिर्फ एक वाक्य लिखा था 'कोई माँ ऐसी भी हो सकती है ! कौतूहल में वे पूरी डायरी पढ़ गये । तब उन्हें पता चला कि अपने पक्के दोस्त को भी बिना बताये शहर छोड़ कर हमेशा के लिए क्यों चले गये हैं कर्नल ।

तो नन्दिनी अपने काम में खोई रहती । एक दिन जब वो खिड़की से दफनाने आये एक शव के साथ के श्मशानबन्धुओं को देख रही थी तो निगाह गई कर्नल पर । वे भी मृतक से सम्बन्धित थे । यहाँ तक आये थे । नन्दिनी को कर्नल अच्छे लगे लेकिन बात आयी गयी हो गई । फिर किसी शव और श्मशान बन्धुओं के साथ उसने दोबारा कर्नल को देखा तो निगाह उम्मीद बन गई । अब वो खिड़की के पास बैठी इन्तजार करती कि जाने किस समूह के साथ कर्नल को देखने की बारी बने । लम्बे समय तक हर शव के साथ आये श्मशान बन्धुओं में वो कर्नल को ढूंढती । दिख जाते तो खुश हो जाती, नहीं मिलते तो उदास हो जाती । फिर काफी वक्त गुजर गया। दर्जनों शव आये । वे नहीं दिखे । उम्मीद बेचैनी बन गयी थी। हर आहट पर वो खिड़की पर झपटती और दुःखी होती । फिर एक अरसे बाद कर्नल कब्रगाह में दिख गये। वो बच गयी । 'कितने दुबले हो गये हैं, शायद बीमार थे', उसने सोचा । और फिर एक लम्बा अरसा गुजर गया । बेचैनी बेइन्तेहाँ, बेपरवाह और बेतरह होती गयी । वो सिर्फ एक झलक और देख लेना चाहती थी । बेचैनी जब बदहवास हो गयी तो उसने एक योजना बना डाली । कुछ भी हो, सुबह तक एक मौत होनी ही चाहिए, कर्नल से सम्बन्धित ! और गहरी रात उसने अपने बेटे को ही मार डाला ।

'कोई माँ ऐसी भी हो सकती है' – जानकर शहर छोड़ने का निर्णय लिया था कर्नल ने । देह से मुक्त होते ही बेटा सीधे पिता कुमार के पास पहुँचा। यहाँ वो अपने पिता और प्रेमिका किशोरी के साथ रहने लगा है। उसे पिता व प्रेम की तलाश है । कुमार और किशोरी को भी निखिल का स्पर्श चाहिए। नाटक की शुरूआत यहाँ से होती है। कुमार रंगमंच का अभिनेता रहा है । वो किसी भी चरित्र की चेतना में प्रवेश करने में दक्ष है। किशोरी शास्त्रीय संगीत सीखती है लेकिन तीनों के बीच निखिल से संवाद, सम्पर्क व

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सम्बन्ध की समस्या तीनों चरित्रों के अतीत को सामने रख देती है । तनाव यह है कि निखिल को अहसास ही नहीं है कि अब वो देह में नहीं है । पिता की तलाश का अर्थ यहाँ बहुस्तरीय है । कुमार और किशोरी मिलकर और उसे शामिल कर विश्व के नौ क्लैसिक नाट्यांशों को अभिनीत करते हैं जो पिता–पुत्र या माँ–बेटे के त्रासद सम्बन्ध पर केन्द्रित हैं जैसे कामू का नाटक 'दी क्रॉस पर्पज', चेखव की कहानी 'दी बिशप' रवीन्द्रनाथ की कहानी 'छुट्टी', मोपासां की कहानी 'वेन्डेटा', कालिदास का 'अभिज्ञान शाकुन्तलम', गिरीश कर्नाड का 'ययाति' आदि । इन नौ प्रकार के रूपक–भेद के जरिये निखिल को उसका अतीत तो स्पष्ट होता है –यत्किंचित, किन्तु तीनों नहीं जान पाते कि सम्पर्क इसलिए सम्भव नहीं हो पा रहा कि वह दरअसल देह के स्तर पर है ही नहीं। सारे प्रयोग विफल होने पर अन्ततः 'कैलिगुला' का अंतिम दृश्य करने के बाद 'ययाति' की तरह कुमार निखिल की देह में प्रवेश कर जाता है और निखिल पुरू की तरह कुमार की देह में । तब वे जान पाते हैं कि निखिल की देह महज प्रतीक थी। किन्तु सम्पर्क अब भी असम्भव रह जाता है क्योंकि कुमार मृत देह में प्रवेश कर जान पाता है, और निखिल जीवित देह में प्रवेश कर कि, अब तक वह देह में नहीं था। अब वह देह में है, पिता की, नश्वर। कैलिगुला का अन्तिम दृश्य करते हुए पिता–पुत्र किशोरी को सचमुच मार चुके हैं। देहान्तरण के बाद कुमार भी अब मृत है। और निखिल को नश्वर देह नहीं चाहिए। मनुष्य और अज्ञात के बीच के सम्बन्ध को दस रूपकों के माध्यम से देखने की यह नाट्य कोशिश 'दशरूपक' इस संकलन में नहीं है किन्तु वह यहाँ संकलित इन्हीं दस नाटकों से उपजी उत्तरवाहिनी काव्य संवेदना है।

लगभग सभी नाटक कबीर साहब के पद में विन्यस्त हैं, तन्त्र के प्रकाश को आलम्बन बनाते हुए। कबीर की सन्ध्या भाषा तंत्र की भाषा से अर्जित और प्रेरित भाषा है। तंत्र परिप्रेक्ष्य है। यह आगम है। श्रुति है। रिवीलीशन है। अभिनव गुप्त ने इसे प्रख्या कहा है जिसे आज हम उपज कहते हैं। यहीं पर आपका ध्यान पहली बार इस ओर आकर्षित करना चाहूँगा कि संगीत को शामिल कर नाट्य के तत्वों की बात भरत मुनि से पहले से ही रही है तंत्र में। इस ओर कभी ध्यान नहीं दिया गया है। गौतम बुद्ध का समय ढाई हजार वर्ष पहले माना गया है और बौद्ध तंत्र को ध्यान से देखने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पर पता चलता है कि इसने न सिर्फ परवर्ती तंत्र परम्परा को प्रेरित किया है बल्कि कला–संस्कृति के वांग्मय को भी प्रतिकृत किया है। यह बात और है कि इसके साहित्य का अंकन व लिपिबद्धता ईसा पश्चात वर्षों में ही प्रकाश में आयी। इनमें से कई तंत्र–पुस्तकों (अब तो वे पुस्तक रूप में ही हैं) में कोई भी देख सकता है। जैसे गुह्यसमाज तंत्र। जैसे श्रीचक्रसंवरतन्त्र। गुह्यसमाज तंत्र से ही पता चलता है कि, बुद्ध ने स्त्री शक्ति को किस तरह प्रथम महत्व पर रखा था, कि पांच ध्यानी बुद्ध (चित्त की पांच अवस्थायें), प्रत्येक के साथ एक स्त्री शक्ति, उनके प्रज्ञाभिषेक तथा तंत्र से उनका क्या अभिप्राय था। गुह्यसमाज तंत्र के श्लोकों को देखकर विस्मय होता है कि नृत्य व नाट्य की शब्दावलियां किस तरह भरत मुनि से पहले थीं। यह सभी जानते हैं कि भरत ने 'नट' शब्द को पाणिनी के 'नृत' शब्द से विस्तृत किया है। पाणिनी ने नट के लिए नृत कहा है जो नृत्य करता है। तभी से शुद्ध नृत्य, नृत्त है और लास्ययुक्त, नृत्य। आप गुह्यसमाज तंत्र का एक श्लोक देखें–

हास्यलास्यक्रियाश्चैव नवनाट्यरसान्विताः
मुद्रामन्त्रविकल्पाश्च वज्रसत्वविचेष्टितम्

इस श्लोक में हास्य, लास्य, नाट्य और रस चार प्रमुख शब्द स्पष्ट हैं। ऐसे कई श्लोक श्रीचक्रसंवरतन्त्र और अन्य बौद्ध तंत्र ग्रन्थों में उपलब्ध हैं। इसी के समानान्तर विकसित नाथ सम्प्रदाय के तंत्र की आधार पुस्तक 'कौलज्ञाननिर्णय' में (अपने आधार ग्रन्थ 'तंत्रालोक' में अभिनव गुप्त ने नाथ सम्प्रदाय के आदिनाथ मत्स्येन्द्र को प्रणाम किया है) भी ऐसे तत्व शब्द है जहाँ से तत्कालीन एवं बाद के संगीताचार्यो ने अपने ग्रन्थों के लिए तत्व शब्द लिये। जैसे शारंगदेव ने अपने संगीत ग्रन्थ 'संगीत रत्नाकर' में देह के चक्र और भाव का प्रयोग तंत्र विशेषकर शंकराचार्य के तंत्र ग्रन्थ 'प्रपंचसारतन्त्र' से लेकर किया। शास्त्रीय संगीत में मार्ग संगीत, नारदीय शिक्षा से लेकर वृहद्देशी, संगीत रत्नाकर और बीसवीं शती के प्रमुख ग्रन्थों तक में परिप्रेक्ष्य तंत्र का मिलता है। इसी कारण एक हजार साल बाद तंत्र में अभिनव गुप्त और छः सौ साल बाद भाषा में कबीर को समझने की जरूरत के साथ नाट्यकर्म के आकाश में प्रवेश करने की सबसे अधिक जरूरत बनती है। इसी महत्व से ये नाटक लिखे व खेले गये हैं। जैसे आचार्य दंडी कहते हैं कि भाषा का प्रकाश नहीं होता तो यह संसार प्रकाश में नहीं आता । उसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रकार कह सकते हैं कि, भाषा के ही प्रकाश में 1990 में नाटकों का यह संसार मेरे सामने प्रकट हुआ। ये सभी नाटक 1990 से 2005 तक लिखित और मंचित हैं। मेरा लिखा पहला नाटक फरवरी 1991 में वाराणसी में 'अपने–अपने नेपथ्य' नाम से और दूसरा नाटक 1992 में 'अधूरे राग' नाम से मंचस्थ हुए । पहले नाटक संग्रह में होने के कारण ये यहाँ शामिल नहीं किये गये है। तो आगम के थोड़े से शब्दों में, नाटक यानी ओम और अहम का खेल। इन नाटकों को लिखने की मेरी प्रक्रिया (आपके लिए भी हो शायद) कबीर साहब के इस सबद को बूझने की प्रक्रिया रही है–

एक अचम्भौ देखा रे भाई, ठाढा सिंघ चरावै गाई ।।
पहिलै पूत पिछै भई माई, चेला कै गुर लागै पाई ।
जल की मछरी तरवरि ब्याई, कूता कौ ले गई बिलाई ।
बैलहि डारि गोंनि धरि आई, घोरै चढ़ि भैंस चरावन जाई ।
तलि करि साखा उपरि करि मूल, बहुत भांति जड़ लागे फूल।
कहै कबीर या पद कौं बूझै, ताकौं तीनिउँ त्रिभुवन सूझै ।।

– गौतम चटर्जी
बुद्ध पूर्णिमा
2006

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सन्दर्भ

भारतीय वांगमय में 'अनुभाव' और 'प्रत्यभिज्ञा' शब्द प्राचीनतम हैं। वैदिक समय के 'अभिज्ञान' (खोये हुए परिचय की पुनर्पहचान) के अर्थ में बौद्ध समय में शब्द प्रचलित हुआ था 'पच्चभिज्ञा' । यही बाद में अर्थात नवीं शती में कश्मीर शैव दर्शन में 'प्रत्यभिज्ञा' शब्द के रूप में प्रतिष्ठित हुआ । इसे प्रतिष्ठित किया सबसे पहले सोमानन्द ने अपने ग्रन्थ 'शिवदृष्टि' में। अनुभाव का अर्थ है पूर्व परिचय (प्री–कॉग्नीशन, कान्ट के शब्दों में 'ए प्रियॉरी') । नाट्यशास्त्र से इस शब्द का प्रयोग अभिनेता की आंगिक चेष्टाओं के रूप में होता है क्योंकि इस शब्द का प्रयोग भरत मुनि ने अपने रससूत्र में किया है । यहाँ अनुभाव सात्विक भाव हैं । बिना पूर्व परिचय के आंगिक चेष्टायें मुश्किल हैं। उसी प्रकार बिना पूर्व परिचय के प्रत्यभिज्ञा मुश्किल है। सोमानन्द के बाद उत्पल देव की 'ईश्वरप्रत्यभिज्ञाविमर्शिनी' की टीका करते हुए अभिनव गुप्त ने इस शब्द का प्रयोग 'ईश्वरप्रत्यभिज्ञाविवृतिविमर्शिनी' में किया है ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

परिशिष्ट

एक

उल्लेखनीय है कि 1826 से 1926 तक नाट्यवेद के मूल पाठ हमें प्रामाणिक तौर पर अशुद्ध मिलते रहे हैं और 1956 तक इन्हें एक सीमा तक शुद्ध किये जाने की प्रक्रिया चलती रही है । संक्षेप में इन्हें जानना यहाँ दिलचस्प और महत्वपूर्ण है । संस्कृत नाटकों पर लगातार लिखते हुए 1826 में विल्सन ने एक लेख लिखा– थियेटर ऑफ दी हिन्दूज, इसमें पहली बार नाट्यशास्त्र के मूल पाठ की सूचना देते हुए शोकार्त स्वर में उन्होंने लिखा कि मूल पाठ का अधिकांश अनुपलब्ध है । लेख के साथ उपलब्ध पाठ के अंश भी छपे। इस तरह पहली बार दुनिया ने जाना कि श्रमसाध्य–अनुमानित ईसा पूर्व तीसरी शती से ईसा पश्चात् दूसरी शती के बीच कभी भरत नामक मुनि ने नाट्यवेद की रचना की थी । जब हमने इसे जाना तब तक हम कलानुशासन के ग्रन्थों को शास्त्र कहने की परम्परा में आ चुके थे ।

इस बीच 'बिब्लियोथिका इन्डिका' सिरीज (कलकत्ता, 1961–65) के अन्तर्गत पहली बार 'दशरूपक' का प्रकाशन हुआ, जिसका सम्पादन हॉल ने किया था । इसमें परिशिष्ट के रूप में नाट्यशास्त्र के प्रासंगिक अध्याय भी संलग्न थे । इन दो विद्वान ब्रिटिश लेखकों विल्सन और हॉल के बाद जर्मन विद्वान हेमान ने 1874 में नाट्यशास्त्र पर अपना पहला लेख प्रस्तुत किया । पहली बार इसलिए कि लेख मूल प्राप्त पाण्डुलिपि पर आधारित था । उन्होंने विषय सामग्री को पहली बार विस्तार से सामने रखा । उनके बाद फ्रेन्च विद्वान पी. रेनॉ को दूसरी पाण्डुलिपि मिली और उन्होंने इसके अध्याय पन्द्रह, सोलह और सत्रह के प्रमुख अंशों को प्रकाशित किया । वर्ष था 1884 । इसी वर्ष उन्होंने अध्याय छह और सात भी प्रकाशित कराये । उनके शिष्य जे. ग्रॉसे ने प्रकाशन प्रकिया को जारी रखते हुए 1888 में अध्याय अट्ठाइस का प्रकाशन किया । नाट्यशास्त्र की दो–तीन अन्य पाण्डुलिपियाँ सिल्वैन लेवी को भी मिलीं जिन्होंने 1980 में एक महत्वपूर्ण पुस्तक लिखी थी –थियेटर इण्डियन । उन्होंने अध्याय अट्ठारह, जो मनमोहन घोष संस्करण में उपलब्ध है, और अध्याय बाइस पर काम किया। जे. ग्रॉसे ने समस्त पाण्डुलिपियों को परखा और 1898 में अध्याय एक से चौदह तक एक साथ प्रकाशित किये । इस दौरान 1894 में पंडित शिवदत्त और काशीनाथ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पाण्डुरंग परब ने दो अन्य पाण्डुलिपियों की पहचान की, जिन्हें आज हम 'काव्यमाला' संस्करण के रूप में जानते हैं ।

इस सिलसिले ने अपना परिणत रुप इस तरह लिया कि 1900 से 1926 के बीच हमें केरल में 'अभिनव भारती' की पाण्डुलिपि मिली। इसे नाट्यशास्त्र का पहला आलोचनात्मक संस्करण माना गया, सन्पादन एम. रामकृष्ण कवि ने किया था । ग्रंथ छपा 1926 में गायकवाड़ ओरिएन्टल सिरीज से । इसके प्राक्कथन में उन्होंने बताया कि ग्रन्थ के अन्य सन्दर्भ देश के विभिन्न भागों एवं नेपाल के ग्रन्थालयों में उपलब्ध हैं । विचित्र है कि 1956 में, अर्थात् तीस वर्ष बाद इसके प्रथम खण्ड का द्वितीय संस्करण गाएकवाड़ ओरिएन्टल सिरीज से छप कर आया । इस संस्करण के सम्पादक के.एस. रामास्वामी ने काफी हद तक प्रथम संस्करण की अशुद्धियों को दूर करने की कोशिश इस संस्करण में की थी । इस दौरान यानी 1926 से 1956 के बीच नाट्यशास्त्र न सिर्फ साहित्य क्षेत्र से हट कर मूर्तिशिल्प के क्षेत्र में प्रासंगिक हो गया, बल्कि इसकी व्याख्या दर्शन–अध्यात्म के विद्यालयों के अनुसार होने लगी । अशुद्ध, भ्रष्ट और कठिन होने के बावजूद 'अभिनव भारती' के पाठ के आधार पर कश्मीर शैव दर्शन एवं अन्य विद्यालयों को देखने के द्वार खुले एवं रसों की संख्या पर विमर्श शुरू हो गये ।

नाट्यशास्त्र के प्रामाणिक और अधिकृत पाठ की मांग और गुंजाइश तब भी बनी रही जब 1929 में इसका एक और संस्करण काशी संस्कृत सिरीज, बनारस से छप कर आया । 1950 और 1956 में एशियाटिक सोसाइटी से मनमोहन घोष द्वारा अंग्रेजी में अनूदित और सम्पादित संस्करण भी सामने आया । इसके पश्चात् नाट्यशास्त्र के अंग्रेजी अनुवाद 1993 में शोध विद्यार्थियों एवं आद्य रंगाचार्य के आ चुके हैं, मराठी, गुजराती, तमिल एवं अन्य भाषाई संस्करण भी अब उपलब्ध हैं ।

तो इन दोनों ग्रन्थों, नाट्यशास्त्र और अभिनव भारती के अशुद्ध पाठ का संक्षिप्त अतीत इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नयी दिल्ली के पास प्रामाणिक तौर पर उपलब्ध है जिसके आधार पर कपिला वात्स्यायन ने 1996 में एक किताब लिखी है – भरत, दी नाट्यशास्त्र (अंग्रेजी में), जो साहित्य अकादमी, नयी दिल्ली से छपी है, जिसमें उपरोक्त उल्लेख भी है । प्रसंगवश एक और जिक्र । 1960 और फिर 1973 में हिन्दी विभाग, दिल्ली

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विश्वविद्यालय ने हिन्दी अभिनव भारती छापी थी जिसमें अभिनव भारती के पहले, दूसरे एवं छठे अध्याय का पाठानुसंधान एवं पाठसमीक्षा 'अभिनव भारती– संजीवन भाष्य' शीर्षक से था, जो अब अनुपलब्ध है । सम्पादक एवं भाष्यकार थे आचार्य विश्वेश्वर सिद्धान्तशिरोमणि । प्रधान सम्पादक थे डॉ. नगेन्द्र। इसी प्रकार हिन्दी में अभिनव भारती (चार भागों में, सं. आचार्य मधूसूदन शास्त्री, अब अनुपलब्ध) काशी हिन्दू विश्वविद्यालय और सम्पूर्णानन्द विश्वविद्यालय (उपलब्ध किन्तु अपूर्ण, तीन भागों में अट्ठारहवें अध्याय तक ही, सं. पारसनाथ द्विवेदी) से प्रकाशित हो चुकी है । तो नाट्यशास्त्र का पहला मुद्रित संस्करण भारतवर्ष में सबसे पहले 1894 में निर्णयसागर प्रेस, मुम्बई से छपा जिसमें 37 अध्याय थे । इसका द्वितीय संस्करण शुद्धियों के साथ यहीं से 1943 में आया । और अद्यतन समस्त भाषाओं में उपलब्ध 36 अध्यायों वाले संस्करणों का संक्षिप्त उल्लेख प्रस्तुत किया जा चुका है । शुद्धि का अवसर नये परिप्रेक्ष्य में अभी तक बना हुआ है । अब कुछ महत्वपूर्ण प्रसंगों की ओर पुनर्विचार और विमर्श के लिए मैं आप सभी का ध्यान आकर्षित कर रहा हूँ ।

एक प्रयोग की दृष्टि से नाट्यशास्त्र के अनुसार संस्कृत नाटकों की परम्परा का प्रमाण प्रथम शती से बीसवीं शती तक मिलता है (ईसा पूर्व में भी) किन्तु यदि हम 'अभिनव भारती' का प्रसंग उठायें, जैसा कि बीसवीं शती के सातवें दशक से लेकर अब तक अभिनव भारती और अभिनव गुप्त का प्रसंग विद्वान बहुतायत में उठाते और उद्धृत करते रहे हैं, तो रंगमंच और शास्त्रीय संगीत में इसका प्रयोग न्यून मिलता है । स्पष्ट कहें, तो विश्व में कहीं नही मिलता । तात्पर्य यह कि अभिनव गुप्त का उल्लेख तो शास्त्रकार करते रहे हैं किन्तु प्रयोग प्रस्तुतियों में अभिनव भारती को प्रयोग में लाने की दृष्टि ही अभी कहीं शुरू नहीं हुई है । कारण यह, कि कश्मीरी शैव ऋषि अभिनव गुप्त और कश्मीर शैव दर्शन का प्रकाश सिर्फ दर्शन और अध्यात्मचर्या तक सीमित है । शास्त्रीय संगीत और रंगमंच पर कश्मीर शैव दर्शन के प्रकाश का अन्धेरा अभी तक बना हुआ है, यह प्रकाश अभी इन कलानुशासनों तक आया ही नहीं, न किसी का प्रयोग के गोलार्द्ध में ध्यान गया है । यह जानना महत्वपूर्ण है कि अभिनवगुप्त ने नाट्यशास्त्र की व्याख्या कश्मीर शैव दर्शन के आधार पर की है । अपने दूसरे सूत्र में ही उन्होंने नाट्यशास्त्र के 36 अध्यायों

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

को कश्मीर शैव दर्शन के 36 तत्वों के आधार पर व्याख्यापित करने की बात भगवान शिव को नमस्कार करते हुए की है । वे कहते हैं : छत्तीस अध्याय वाले इस भरत सूत्र की व्याख्या प्रारम्भ करते हुए मैं, छत्तीस तत्वों से युक्त जगदाकाश को प्रकाशित करने वाली ज्ञान ज्योति की रश्मियों से सुशोभित वेद तथा उसके अर्थ ज्ञान के आश्रय, तेजस्वरूप शिव को नमस्कार करता हूँ ।

कश्मीर शैव दर्शन अर्थात प्रत्यभिज्ञादर्शन के ये छत्तीस तत्व हैं – प्रकृति, महत् तत्व, अहंकार, पाँच तन्मात्राएँ, मन सहित ग्यारह इन्द्रियाँ, पाँच स्थूल भूत, पुरूष, माया, शिव, शक्ति, सदाशिव, ईश्वर, अविद्या, कला, विद्या, राग, काल और नियति । इस त्रिक दर्शन में शिव सूत्रों और तन्त्र, जहाँ प्रकाश, विमर्श, प्रतिभा, उन्मेष, निमेष आदि प्रत्ययों का कला से सीधा सम्बन्ध है, का प्रथम महत्व है । निगम और आगम युग के आरम्भ और विकास में कला लक्षण और ईश्वर लक्ष्य रहा है । ईश्वर में लय और मोक्ष या आत्मज्ञान को लक्ष्य कर ही लक्षण या साधन के तौर पर नाट्यवेद की रचना की थी मुनि भरत ने । इसे पढ़ते और इसके तत्वार्थ (या रहस्य) को पकड़ते हुए पतंजलि और भर्तृहरि को समझ कर चलने की जरूरत बनती है, जैसे चारो वेदों–ऋगवेद, सामवेद, यजुर्वेद व अथर्ववेद – के सार क्रमशः पाठ, गान, भाव और रस, को प्राप्त करने की । इसी कारण उस युग में मार्ग संगीत था, यानी साम गान के बाद, जिसके आधार पर नाट्यप्रयोगों में ध्रुवा गान रूपी मार्ग संगीत की जरूरत बनी । नाट्यवेद की रचना के दस–बारह शती बाद 'अभिनव भारती' रची गयी यानी कश्मीर शैव दर्शन और जुड़ गया और इसे जाने बगैर आज अभिनव गुप्त को संगीत व रंगमंच के शास्त्रीय आकाश में उल्लेख्य बना देने का मजबूत आग्रह सामने दिखता है जो अशुद्ध, अपूर्ण व अयौक्तिक है ।

दो – नाट्यवेद अपने प्रथम अध्याय के एक सौ सातवें श्लोक में स्पष्ट करता है कि नाटक (या अभिनय या अभिनेय प्रस्तुति) तीनों लोकों के भावों का अनुकीर्तन है, अनुकरण नहीं । अब तक उपलब्ध किसी भी भाषा में किया गया अनुवाद या इस श्लोक का भावार्थ यह नहीं स्पष्ट करता कि तीनों लोकों से यहाँ भरत मुनि का तात्पर्य क्या है ! यहाँ एक बार फिर हमें पतंजलि और कश्मीर शैव दर्शन की ओर देखना होगा, क्योंकि दो ही धारा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हैं ज्ञान या विद्या की – आगम और निगम । आगम अर्थात श्रुति अर्थात उद्यम या स्फोट जैसे तंत्र, और निगम अर्थात स्मृति अर्थात परम्परा जैसे वेद । तन्त्र को भी पंचम वेद कहा गया है, नाट्यवेद को भी । 'उद्यम' आज के प्रचलित अर्थ में उद्यम नहीं हैं । कश्मीर शैव दर्शन के शिव सूत्र 'उद्यमो भैरवः' को व्याख्यायित करते हुए ठाकुर जयदेव सिंह ने स्पष्ट किया है कि उद्यम का अर्थ है कौंधना । उद्यमो भैरवः का अर्थ है प्रकाश का कौंधना, प्रकाश की एकाएक चमक या प्राकट्य । भर्तृहरि के वाक्यपदीयम् के ब्रह्मकाण्ड या शब्दसिद्धान्त में वही स्फोट है जो श्रुति या रिवीलीशन है । उद्यम है इमर्जेन्स । इस ओर ही नाट्यवेद के पन्द्रहवें अध्याय के प्रारम्भिक श्लोक इशारा करते हैं ।

तो कश्मीर शैव दर्शन में जिसे चिति कहा गया है, पतंजलि के योगसूत्रों में वही चित्त है, ऐसा नहीं है । चिति शिव का चित्त है यानी यूनिवर्सल माइंड और चित्त व्यक्ति का मन है यानी इंडीविजुअल माइंट । कश्मीर शैव दर्शन के अनुसार चिति ही संकुचित होकर व्यक्ति में चित्त के रूप में उतरा है । व्यक्ति को चित्त से चिति (जो श्री अरविन्दो की भाषा में सुप्रामाइंड है) की ओर बढ़ना होता है । अभिनेता निर्माण की प्रक्रिया यही है । योगी योग से और अभिनेता अभिनय से चित्त से चिति की ओर बढ़ता है और पूर्णतः मुक्त होता है । वह जाने हुए के प्रति जागता है । इस प्रकार चित्त वृत्तियों का निरोध योग है और चित्त वृत्तियों का भावानुकीर्तन या मंचरूपायन रंगकर्म है । नाटक है । 'तन्त्रालोक' के आरम्भ में अभिनव गुप्त भैरवी को प्रणाम करते हैं जो मेघाच्छन्न आकाश में प्रकाश की तीव्र कौंध की तरह है । इसी चित्त में भाव है । मनुष्य का चित्त प्रकृति के तीन गुणों सत, रज, और तम से निर्मित है जिसमें तीनों लोकों के भाव हैं, वृत्तियाँ हैं । चित्तवृत्तियों से उपजते भाव और विचार । इन वृत्तियों का निरोध योग है, इनका अनुकीर्तन नाट्य है । 'त्रैलोकस्यास्य सर्वस्य नाट्यं भावानुकीर्तनम्' अर्थात तीनों लोकों के समस्त भावों का अनुकीर्तन नाट्य है । भरत मुनि ने चार वृत्तियों और उन्चास भावों में नाट्य प्रक्रिया का विन्यास रचा है ।

तीन – उन्चास भावों को उन्होंने तीन श्रेणियों में विभाजित किया है – सात्विक, स्थाई और व्यभिचारी । राजसी और तामसिक नहीं । इन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उन्चास भावों में से आठ सात्विक भाव हैं, आठ स्थाई और तैंतीस व्यभिचारी भाव । स्पष्ट है मंच पर नट या कलाकार या अभिनेता को इन्हीं उन्चास मुख्य भावों का अनुकीर्तन करते हुए रस की उत्पत्ति या निष्पत्ति करनी है । भावों का वर्णन अध्याय सात में है । रस का वर्णन अध्याय छह में हैं । इसमें भरत मुनि ने रससूत्र दिया है कि व्यभिचारी भाव, विभाव और अनुभाव के संयोग से रसनिष्पत्ति होती है । व्यभिचारी तैंतीस हैं जिनका उल्लेख अभी ऊपर किया । विभाव का तात्पर्य है भाव का कारण अर्थात चित्तवृत्तियाँ । जहाँ से भाव अपने अस्तित्व का विभव (शक्ति या पोटेन्सी) लेते हैं या जिस कारण से भाव अस्तित्व में आता है या विभावित होता है वह विभाव है । अनुभाव अर्थात आंगिकी या भावों को व्यक्त करने की आंगिक चेष्टाएं, जिनसे भाव मंच से सम्बोधित सहृदय दर्शकों के लिए अनुभूति योग्य बनते हैं, अनुभाव कहलाते हैं । तो व्यभिचारी भाव, विभाव और अनुभाव के मिलने से रस की सृष्टि और निष्पत्ति होती है । यह नाट्यवेद का रस सूत्र है ।

यहाँ, अब तक उपलब्ध समस्त नाट्यवेद संस्करणों में यह बात समझ में नहीं आती है कि नाट्य प्रदर्शन या अभिनय करने का औचित्य या अभिष्ट यदि रसनिष्पत्ति पर केन्द्रित है तो फिर भरत मुनि उन्यास भावों को विस्तार से बताकर सिर्फ तैतींस (व्यभिचारी) भावों को ही क्यों लेते हैं ? सोलह प्रमुख भावों को रस सूत्र में स्थान क्यों नहीं देते ? प्रमुख इसलिए कि आठ स्थाई भाव आठ रसों के ही स्थाई हैं और भरतमुनि ने इन्हीं आठ स्थाई भावों से आठ रसों का नामकरण किया है और मंच पर रस के लिए सूत्र में इन्हीं भावों को महत्व नहीं ! इसी प्रकार आठ सात्विक भावों का भी सूत्र में उल्लेख नहीं । ऐसा सम्भव नहीं दिखता और प्रयोग की सहज दृष्टि से संकलित रससूत्र समस्त संस्करणों में अशुद्ध और अपर्याप्त सिद्ध होता है । क्योंकि भरत यह नहीं कहते, यह नहीं चाहते कि भावों के अनुकीर्तन या रसनिष्पत्ति के दौरान सोलह ऐसे भावों का उपयोग न किया जाये जिनमें आठ तो रस ही हैं, इनके बिना नाट्यवेद के अनुसार रस उत्पत्ति सम्भव ही नहीं होगी । तो प्रस्ताव है कि समस्त संस्करणों में इसे सुधार कर रससूत्र को इस प्रकार किया जाय कि भाव, विभाव और अनुभाव के संयोग से रसनिष्पत्ति होती है । जाहिर है भाव यानी नाट्यवेद के सातवें अध्याय के उन्चास भाव । प्राप्त नाट्यशास्त्र में वर्णित रससूत्र हैं :

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रस निष्पत्ति : हालांकि छठे अध्याय में यह न 32वें श्लोक में है नं. 33 वें श्लोक में और पिछले पाँच छह दशकों से ही 'अभिनव भारती' में अभिनव गुप्त द्वारा प्रतिपादित 'शान्त रस' विमर्श और विवाद की केन्द्रीय चिन्ता है । कोई इसे नवां रस कहता है तो कोई इसे मानता ही नहीं, कहता है, मंचपर शान्त रस का प्रदर्शन सम्भव नहीं । सम्भव होता तो भरत मुनि अवश्य करते ! रसों की संख्या पर भी विवाद और मतभेद है । शान्त रस पर रैनिरो नोली, जे. एल. मैसन एवं एम.बी. पटवर्धन ने उत्कृष्ट एवं सारगर्भित काम किये हैं । रसों की संख्या पर राघवन का काम महत्वपूर्ण है । ध्यान देने योग्य प्रामाणिक बात यह है कि अभिनव गुप्त ने आश्चर्य प्रकट किया है कि नाट्यवेद में शान्त रस का उल्लेख भरत मुनि से कैसे छूटा, कि शान्त रस का उल्लेख वहाँ है (जो हमें उपलब्ध नहीं । इसे हम ऐसे भी देख सकते हैं कि नाट्यवेद में भरतमुनि ने चार प्रकार के चरित्र बताये हैं धीर उदात्त, धीर उद्धत, धीर ललित और धीर प्रशान्त । यहाँ 'धीर' शब्द चतुर्निष्ठ है । फिर धीर प्रश्न प्रकृति के चरित्र की भी श्रेणी है, जिससे शान्त भाव व रस को आधार रूप में देखने की बात प्रमाणित होती है । प्रेमसिद्धान्त के पाँच रसों – शान्त, दास्य, सख्य, वात्सल्य और माधुर्य – में भी शान्त रस का स्थान आदि में है । जाहिर है, नाट्यवेद में भी यह आदिरस या आधार रस के रूप में है जो प्राप्त संस्करणों में नहीं मिलता । इसी प्रकार नाट्यवेद में संगीत सिर्फ ध्रुवा संगीत के रूप में मिलता है किन्तु यदि हम इसे मार्ग संगीत के रूप में लें तो इसका महत्व व्यापक और वृहत्तर हो जाता है, क्योंकि भरत मुनि के समय में मार्ग संगीत ही प्रचलित था, देशी नहीं । मार्ग संगीत सामगान का कलात्मक विस्तार है । देशी का उल्लेख सातवीं से नौवीं शती ईसा पश्चात् में मतंग मुनि के ग्रन्थ 'वृहददेशी' में मिलता है ।

तेरहवीं शती में शारंगदेव के 'संगीतरत्नाकर' में देह के छह भावों और दस चक्रों का उल्लेख मिलता है जबकि इनका रस समेत उल्लेख आदि शंकराचार्य के आठवीं शती ईसा पश्चात् के ग्रन्थ 'प्रपंचसारतन्त्र' में पूर्व वर्णित है । इसके 58 और 59 वें श्लोक में छह रसों का विधिवत उल्लेख है । 62 वे श्लोक में शान्त रस का भी । अभिनव गुप्त इसके दो शती बाद अस्तित्व में आये ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दो

यह आनुपूर्वी नहीं है कि पिछली दो शती में 'अभिनेता के रंगमंच' पर निर्देशक की उपस्थिति इतनी प्रभावशाली होती गयी कि एक अर्थ में, अभिनेता क्रमशः अप्रासंगिक होता गया । आज रंगमंच पर उसकी उपस्थिति निर्देशक की अभिव्यक्ति या निर्देशक की प्रतीक उपस्थिति सी है । उसकी अपनी चरित्र उपस्थिति नहीं । संभवतः इसीलिए अभिनय की क्रिस्टल पद्धतियों, लिखे नाट्य को मंच पर प्रस्तुत करने की बहुवांचक प्रविधियों, निर्देशक अभिनेता संवाद की बहुविध शैलियों और उत्तर आधुनिक तकनीकों के बीच नाट्य शास्त्र या हमारे अपने अभिनय शास्त्र पर चर्चा उद्यतन संवेदना अर्जित नहीं कर पाती । यह दन्त कथा लगती है ।

दिलचस्प यह भी है कि उत्तर आधुनिक प्रस्तावों ने अब तक विकसित सभी कला प्रवृत्तियों को निरस्त किया है और हमारे देश में इसे खुशी खुशी स्वीकार भी कर लिया गया है । मंच पर अभिनेता की स्थिति के बारे में विकसित सभी दृष्टियों को निरस्त किये जाने के इस अन्धे युग में, नयी शती के बावजूद यदि अभिनेता अभी भी स्वयं को पर निर्भर या परमुखापेक्षी पा रहा है तो शायद यही वह ठीक वक्त है जब उसे बताया जाय कि वह कौन है, कि हमारे अभिनय शास्त्र के अनुसार वह कितना सम्यक और आत्मनिर्भर है ।

रंगमंचीय प्रभाव के लिए नाट्य स्थितियों और चरित्र के परस्पर सम्बन्ध के बारे में अरस्तु ने कहा था कि मंच पर पहले नाटकीय घटना हो, फिर चरित्र हो । स्टैनिस्लॉव्स्की सोचते थे कि चरित्र की उपस्थिति टेक्स्ट में दी हुई स्थिति (गिवेन सिचुएशन) के अनुसार हो । ब्रेख्त (सही उच्चारण ब्रेश्ट) ने नाट्य स्थितियों में शामिल हो चुके चरित्र से समय–समय पर विरत रहने का अभिनेता को निर्देश दिया । उन्होंने थियोरी ऑफ एलियनेशन (ए–फैक्टर) या अनासक्ति का सिद्धान्त दिया कि अभिनेता चरित्र की नाट्य भावना से एकात्म होते ही इस भावना को विश्लेषित कर दे । जर्जी ग्रौटोव्स्की ने मंच के सारे रंग प्रत्ययों को ही निषिद्ध कर दिया । उन्होंने कहा कि सिर्फ नाट्य और अभिनेता, बस, और कोई पैराफर्नेलिया नहीं । जरूरत हुई तो नाट्य या टेक्स्ट भी नहीं, सिर्फ अभिनेता । और अन्ततः अभिनेता भी नहीं, सिर्फ रस ! अभिनेताओं को यह प्रस्ताव भी उन्होंने तब दिया जब वे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भारत होकर लौटे और 'ऐपोकैलिप्सस' व 'ऐक्शन' के पूर्वाभ्यास में जुटे । इसी दौर में विकसित अवान्तर रंगमंच (थियेटर ऑफ दी ऐब्सर्ड) एक प्रकार से ग्रौटोव्स्की की बात ही करता है, कि पहले नाट्य फिर चरित्र, और अन्ततः चरित्र ही प्रमुख ।

ऋषि भरत ने यह नहीं कहा कि स्थिति पहले या चरित्र । उन्होंने सिर्फ कहा : अभियन ही नाट्य है और नाट्य ही रस है । इस तथ्य के भाष्य की जरूरत शायद नहीं है क्योंकि स्पष्ट है कि तीनों एक हैं और रंगमंच पर यदि सम्यक अभिनेता तो फिर उसकी उपस्थिति मात्र से ही अर्थात् उसके अभिनय से ही नाट्य और रस की सृष्टि संभव है । ऐसा नहीं है कि वह अपने अभिनय से पहले रस की उत्पत्ति करेगा फिर निर्देशक किसी प्रविधि की सहायता से दर्शकों में उस रस की निष्पत्ति करेगा । किसी द्वितीय व्यक्ति की यहाँ कोई जरूरत ही नहीं क्योंकि नाट्यशास्त्र के छठे अध्याय अर्थात् रसाध्याय के सार को अभिनव गुप्त ने एक वाक्य में ही स्पष्ट कर दिया है कि रस की उत्पत्ति ही निष्पत्ति है ।

नाट्य, अभिनेता और रस सम्बन्धी इस प्रथम स्थापित तथ्य की स्पष्टता के बाद, कि 'अभिनेता के रंगमंच' पर अभिनेता की उपस्थिति अर्थात् अभिनय ही मुख्य है, शेष सारे प्रयत्न आनुषंगिक, कि अभिनेता के कारण ही मंत्र पर अस्तित्व है कथा का, संभव है नाट्य, कहानी चलेगी अभिनेता के साथ उसकी छाया बनकर....,.. अभिनय शास्त्र का अगला प्रमुख स्थापित तथ्य भी सीधे अभिनेता से ही सम्बन्धित है । अभिनेता ही प्रमुख है और दर्शकों को उसे ही सम्पूर्ण कथा सुनानी है तो अब वह क्या करे, इस पर ऋषि भरत कहते हैं कि तीनों लोकों का भावानुकीर्तन ही नाट्य है । अभिनेता को सिर्फ यही करना है । उसे तीनों लोकों के भावों का अनुकीर्तन करना है । अनुकीर्तन अर्थात् पैराफ्रेजिंग । भावों की मानसिक या आन्तरिक भाषा को दृश्य भाषा में कहने की कला और अनुशासन ।

यहीं से चरित्र को जानने की यात्रा शुरू होती है और अभिनेता चरित्र से अपने सम्बन्ध का सन्धान भी आरम्भ करता है । कहा गया है कि सोचना ही होना है । अभिनेता, चरित्र, जो नाट्य में है, के बारे में जैसे सोचता है, वह वैसा ही चरित्र होता जाता है । चरित्र के बारे में जानने और

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोचने की यात्रा के प्रस्थान बिन्दु और आधार उसके पास सिर्फ संकेत रूप में रहते हैं, अर्थात् नाट्य में दिये हुए कोष्ठक और चरित्र के दर्शाये गये संवाद । इसी आधार पर अभिनेता को चरित्र की कल्पना करनी होती है जिसे वह चरित्र को जानना कहता है । हमारे यहाँ वास्तविक चरित्रों की तुलना में टिपिकल चरित्र, स्टीरियो टाइप चरित्र, मुद्रादोष या मैनेरिज्म वाले चरित्र और स्थायी चरित्र ही अधिक निर्धारित होते गये । राजा, डॉक्टर, मंत्री, नौकर..... इनका कर्म या इनकी भूमिका ही इनके चरित्र मान लिये जाते रहे हैं । जबकि गौर किया जाय तो असंख्य मनोवृत्तियों के डॉक्टर या नौकर संभव हैं । और गौर किया जाय तो इस संसार में जितने भी व्यक्ति हैं, वे सब एक दूसरे से भिन्न और विशिष्ट चरित्र हैं । प्रत्येक चरित्र की अपनी कहानी है । अपने संस्कार और अपने कर्म हैं, घटनायें और परिणतियाँ हैं । इन वास्तविक चरित्रों को जानना है, उनके मन को जानना है। अभिनेता चरित्र के मनोभावों को जाने तो मंत्र पर उनका अनुकीर्तन करें । कैसे जाने ? पूरी उम्र हम जीवन में किसी के साथ गुजार लेते हैं और उसे नहीं जान पाते, तो भला एक प्रस्तुति के काल खण्उ में एक चरित्र को कैसे जाने !

किसी चरित्र का चरित्र दो ही उपादानों से बना होता है–ए प्रिऑरी (प्राक् अतीत) और पोस्टीरिऑरी (सद्य अतीत) से । इन्हीं उपादानों के बूते हम चरित्र के बारे में यह जानने चलते हैं कि उसकी कंडीशनिंग (अभ्यासगत संस्कार) क्या है । इसमें उसके साथ अतीत में घटी घटनाएँ, स्मृति, विचार, दृष्टिकोण, मनोभाव, अचेतन, अवचेतन, अर्ध चेतन, आदत, मैतिया, कोमल/उग्र भावनाएँ, अन्तर्मुखी या बहिर्मुखी समाहित हैं । फिर हम देखते हैं कि चरित्र की इच्छाएँ (दमित, छुपायी गयी और प्रकट) क्या हैं, उसकी इच्छा शक्ति कैसी है, वह किस तरह चीजों को ग्रहण व उन पर प्रतिक्रिया करता है, उसकी विचार करने की प्रतिभा कैसे है, उसकी सौन्दर्यचेतना व संवेदनशीलता कैसी है, जेनेटिक स्तर पर उसमें क्या गुण या रोग हैं, ग्रन्थियाँ कैसी हैं प्रतिक्रियावादी या समर्पणवादी या अहंकेन्द्रित या नॉनरेस्पॉन्सिव, उसका विवके कैसा है आदि–आदि । इन चीजों से चरित्र के मन की आन्तरिक संरचना बनी होती है । यह चरित्र का माइक्रोक्लाइमेट है ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चरित्र के इस पर्यावरण का प्रभाव ही उसके अन्य के साथ के सम्बन्धों को प्रतिकृत करता है और इसी संवाद से सम्बन्ध नाट्य में विकसित होता हुआ होता है । इस प्रकार अभिनेता लिखे संवाद से संवाद की तहों में जान सकता है । किन्तु यहाँ प्रश्न उठता है कि ठीक है इन्हें जाने बिना महज कोष्ठकों व संवादों से चरित्र की कल्पना करना सतही जानना है किन्तु अभिनेता हमेशा चरित्र को अपने अनुसार ही जान सकता है, अपने अनुसार के बिना वह भला चरित्र की वास्तविकता को कैसे जाने, और ऐसे कितने चरित्रों को जाने ?

उत्तर भरत मुनि ही दे चुके हैं, कि तीनों लोकों का भावानुकीर्तन । ये तीनों लोक वस्तुतः अभिनेता की ही चित्तवृत्तियाँ हैं जो उसके तीन प्राकृतिक गुणों – सत, रज और तम – से बनी है । इनमें संसार के सारे चरित्र हैं । किसी चरित्र को बाहर से देखने पर उसकी देह स्मृति बनती है, मन–स्मृति नहीं । अभिनेता की चेतना की सतह पर जो विचार हैं, वे उसके अपने नहीं होते । भगवान बुद्ध के अनुसार वे अतिथि हैं । चले जाने के लिए आए हैं यदि हम उन्हें ठीक से देख सकें तो । इन विचारों से चरित्र पर विचार करने पर मंच पर दोहराये गये चरित्र ही दिखते हैं क्योंकि ये विचार समाज से या अन्य अभिनेताओं के शिल्प की स्मृति से बने हैं । तो पहले इन विचारों से मुक्त होना पड़ता है और चेतना की तहों की यात्रा शुरू करनी होती है, ताकि लिखे संवादों को वास्तविक आंच मिले ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सन्ध्या भाषा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जीवन में मन की किस अवस्था में पहुँचने पर संध्या भाषा अर्जित की जा सकती है इसी की तलाश है राखाल दा की यह कहानी। सन्ध्या भाषा उलटबांसी का परिष्कृत शब्द है। अपने मृत पुत्र के शव और अपनी गूंगी बहरी पत्नी को पिछले कमरे में रख राखाल दा उसी मनःस्थिति में अपने शहर के तमाम लोगों की परेशानियों को सुलझा रहा है ताकि लोगों को स्पष्ट हो कि वो अर्थहीन समस्याओं में इसलिए उलझे हैं क्योंकि मृत्यु को भूले हुए हैं।
इस नाटक का प्रथम मंचन 1996 में वाराणसी में हुआ था।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(शंख ध्वनि)

सम्वरम् छभिशेकन् च सन्ध्यामाषाम् तथैव च
आनन्दक्षणभेदन् च तथान्यम् भोजनादिकम्

स्वप्नान्तं जागरितान्तं चोभौ येनानुपश्यति
महान्तं विभुमात्मानं मत्वा धीरो न शोचति

(कठोपनिषद)

कबीर वाणी – अवधूता कुदरत की गति न्यारी.....(पं. कुमार गन्धर्व)

(कम दामों में क्लैसिक पुस्तकों की बिक्री का एक कमरा । राखाल । नीरो । शाम । मेघा ऐक्टिंग केरियर को लेकर बहुत महात्वाकांक्षी । इस छोटे प्रकाशवृत्त में नीरो नहीं । शेष अन्धेरा ।) (मिस्टर काव अपना दृश्य माइम में करते हैं जो उन्हें बाद में शब्द में करना है । अन्त में सिर्फ एक शब्द राखाल दा का सुनाई देता है– 'एक ही है' । इसके बाद कठोपनिषद का श्लोक समूह में उच्चार लेता है । फिर पं. कुमार गन्धर्व की आवाज में कबीर साहब की वाणी और एकाएक राखाल का मंच–दृश्य–सम्वाद....)

राखाल :मस्तिष्क बिल्कुल शान्त था और छुरा बिल्कुल तना हुआ । मैंने वह छुरा सीधे उसके सीने में घोप दिया.. हॉल बिल्कुल निस्तब्ध था (   ) किसी को पता नहीं, आगे क्या घटने जा रहा.. मैं.. एकाएक .....अट्टहास (अट्टहास) .....उधर धीरे–धीरे एक....फिर एक ....फिर सारे के सारे .....तालियों का अट्टहास ....और गूँजते हॉल में, मैं खामोश हो गया !
(प्रकाशवृत्त के बड़ा होने पर पता चलता है कि राखाल मेघा को किसी दृश्य में अपने किये अभिनय को करके दिखा रहा है ।)

मेघा : राखाल दा ! वन्डरफुल....नो.. एक्सलेन्ट ! (उसके धीरे–धीरे बढ़ते कदमों के साथ वृत्त व्यास बढ़ता जा रहा है) राखाल दा आप तो कमाल के ऐक्टर हैं ! आपने सचमुच कभी स्टेज ऐक्टिंग की है ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मेरा मतलब– आप अब क्यों नहीं करते राखाल दा ! अजीब बात है जो, जो कर सकता है वो, वही नही करता ! आपने ऐक्टिंग क्यू छोड़ी ? ....क्रियेटिवली सैटिस्फाइड !

रा० : व्हॉट इस क्रियेटिव, एण्ड व्हाट इस सैटिस्फैक्शन ?

मेघा : राखाल दा आप मुझे सिर्फ एक बात बता दीजिये, (बायीं हथेली दिखाकर) मेरा ऐम्बिशन पूरा होगा ?

रा० : क्या चाहती हो ?

मेघा : अँ ? हॉ – क्रियेटिव सैटिस्फैक्शन, मैं ऐक्टिंग में एस्टैब्लिश भी होना चहती हूँ ताकि ब्रेड ऐण्ड बटर के लिए किसी पर डिपेन्ड न रहना पड़े, और क्रियेटिव सैटिस्फैक्शन भी चाहती हूँ । मिलेगा ?
(नीरो उठता है एक रैक से एक किताब निकालकर उसे दूसरे, किनारे के रैक में रख देता है, फिर बैठ जाता है । वह कुर्सी की आड़ में अब तक इस प्रकार बैठा होता है कि अभी तक उसका वहॉ होने का अहसास नहीं रहता)
बोलिये मिलेगा ?

रा० : ऐक्टिंग में सक्सेस मिलेगा मगर तुम्हारे तरीके से नहीं, न ही उस वक्त, जब तुम चाहोगी..

मेघा : और क्रियेटिव सैटिस्फैक्शन

नीरो : कभी नहीं

मेघा : क्यों ?

रा० : क्योंकि क्रियेटिव सैटिस्फैक्शन ....तभी मिलेगा जब तुम कुछ क्रियेटिव करोगी.

मेघा : ! !

रा० : तुम वही करती हो जो तुम्हारे दिमाग में आता है । तुम्हारे दिमाग में वही है जो पहले हो चुका है । जो पहले हो चुका है उसी को तुम रिपीट करती हो । तुम इसे क्रियेटिव कहती हो । ये क्रियेटिव है ? यू आर कॉट इन दी नेटवर्क ऑफ थॉट. तुम सिर्फ वही कर सकती हो या सिर्फ वही कर रही हो जो पहले से चुका है । ऐण्ड क्रियेटिव मीन्स आल्वेज न्यू ऐण्ड ओरिजिनल । तुम तो पास्ट से,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अतीत से ऐक्ट कर रही हो । जब तुम कुछ नया या क्रियेटिव करोगी ही नहीं, तुम्हे सैटिस्फैक्शन मिलेगा कैसे ? हाँ ?

मेघा : हाँ (सोचती है)

रा0 : तुम सोचती हो, एक के बाद एक, तुम चुन–चुन कर रोल करती जाओगी और एक दिन तुम तृप्त हो जाओगी. कब.? डज एनीव्हेयर सायक्लॉजिकल टुमाँरो एग्जिस्ट ? तुम कल की बात पूछ रही हो और तुम्हारा फ्यूचर यहँ है, अभी । अब तुम्हारे उपर है । या तो उसी तरह सोचती रहो और खत्म होती जाओ, या फिर आरम्भ करो रचना, तुम अन्त और आरम्भ के क्रियेटिव मिडिल पर खड़ी हो । क्या करोगी मेघा ?

( )

मेघा : करूँगी नहीं. होगा. नया. ओरिजिनल (अपने आप से बात करते हुए जाने लगती है) मैं बाधा नहीं बनूँगी राखाल दा (मिस्टर काव से टकराती है) मिस्टर काव, राखाल दा ने हमेशा के लिए मेरा प्रॉब्लम सॉल्व कर दिया है । आयम फीलिंग क्रियेटिव । आई लव यू राखाल दा. (जा चुकी है. मि0 काव खड़े हैं । इशारे से राखाल को बुला रहे हैं । इस बीच बेकेट और आयोनेस्को भी आ चुके हैं । उनमें से एक, कुर्सी पर बैठ चुका है । दूसरा, रैक पर किताब के पास खड़ा है, मगर नीरो समेत ये तीनों रोशनी में नहीं है. फ्रन्ट स्टेज पर दर्शकों की दायीं ओर मि0 काव फुसफुसाहट में राखाल से कुछ कह रहे हैं. इन्हीं पर पूरा लाइट स्पॉट. जैसे–आरम्भ दृश्य में बायें फ्रन्ट स्टेज पर लाइट स्पॉट था.)

का : नहीं, मैं आऊँगा मगर उस समय नहीं जब लोग आपको घेरे हों । एक तो आपको अकेले पाना मुश्किल । सुबह–शाम दो–दो घण्टे शॉप खोलते हैं और पूरा शहर अपना प्रॉब्लम लेकर आपको घेर लेता है । आऊँगा । कल सुबह । टिपिकल प्रॉब्लम है राखाल दा । प्लीज जरा अकेले में वक्त दीजियेगा । अब सुइसाइड के अलावा और कोई रास्ता नहीं बचा । ओके, हॉ ? (विंग्स के बाहर जाता है, राखाल के मुड़ते–मुड़ते फिर वापस आ जाता है ।) सुबह आप अकेले तो रहेंगे न ! क्रिटिकल प्रॉब्लम है । तंग आ गया ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हमेशा डिप्रेशन । अच्छा फिर वेरी मार्निंग –हॉ ! (धीमे से) ये दाढ़ी वाला कौन है ? (   ) जब देखो तब यहॉ बैठा रहता है. क्लासिक्स और दाढ़ी । ऐब्सोल्यूट के ठीक पास ऐब्सर्ड ! कोई एक रहे यहॉ ?

रा० : एक ही है !

का : ओके । सुबह. (चला जाता है । पूरा प्रकाश)

रा० : हॉ भई । क्या पता चला ?

बेकेट : (खड़ा होते ही, भीतर से परिचय स्वर ये बेकेट हैं)
कुछ नहीं, कुछ नहीं राखाल दा !

रा० : क्यों ?

आ : मुझे तो पता चला (परिचय स्वर : ये आयोनेस्को हैं)

रा० : क्या ?

(आयोनेस्को एकाएक पीछे मुड़कर देखता है किसी को आते हुए इसलिए चुप हो जाता है । युवक–युवती का प्रवेश)

यु : अब बोलो !

युवती : नहीं तुम ही बोलो । फिर तुम्ही सुनना, अगर सुनायी दे सके तो ! तुम तो अपने ही गुड लिसेनर हो । राखाल दा सुलझा देते हैं. सारी समस्यायें । बताओ अपनी समस्या । तुम मेरी समस्या नहीं हो । बोलो । अब चुप क्यूं खड़े हो ? (किताबें देखने लगती है)
(   )

युवक : राखाल दा । ये मेरी जरूरत है । मैं इसके बिना नहीं रह सकता । मैं इससे प्रेम करता हूँ.

रा० : और वो... ?

युवक : उसके बारे में मैं कुछ नहीं बता सकता । मुझे उसी की जरूरत है ।

रा० : सिर्फ जरूरत से क्या होता है ? क़िसी को पाने के लिए पहले उसके योग्य होना होता है । फिर वो अपने आप मिल जाती है ।

युवती : नहीं, राखाल दा । इसकी असली समस्या ये नहीं है ।

रा० : फिर ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

युवक : आज भोर में मैंने एक सपना देखा– बीस साल गुजर गये हैं : मैं वीतरागी हो गया हूँ और एक आदमी से कह रहा हूँ : खास तरह की घटनायें घटी हैं तभी मैं आज ऐसा हूँ । दूसरी तरह की घटनायें घटती तो मैं कुछ और होता । हमें घटनायें बनाती हैं । जिन्हें हम अनुभव करते हैं । सुनकर वो आदमी कहता है– किसी भी तरह की घटनायें घटतीं तुम वही होते जो आज हो (सिर्फ बेकेट और आयोनेस्को पर रोशनी) दुःख ने तुम्हें ऐसा बनाया । दुःख तुम्हें इस रूप में न मिलता तो किसी और रूप में मिलता । समय पर दुःख का मिलना तय है । तुम आज जो भी हो, उसे बनाने के लिए ही घटनायें घटी हैं । बीस साल बाद मैं एक सपने में देखता हूँ कि एक मेरे बारे में पूछ रहा है, वो सत्य के रास्ते कैसे जाया ? तो दूसरे ने कहा– तैयारी बहुत दिनों से चल रही थी । फ़िर मै देखता हूँ, मैं ऋषि हो गया हूँ । तमाम लोग आकर मुझसे प्रश्न पूछ रहे हैं । एक ने पूछा–मृत्यु क्या है, मैने कहा– अहं का सार0 तभी दस्तक होती है. (युवती को दिखाकर, पूरी रोशनी) ये आकर कहती है : मैं आ गयी हूँ । मुझे स्वीकार कर लो । तब मैं कहता हूँ – मेरी जरूरत पूरी हो गयी है । चीजें सचमुच अपने आप से मिलती हैं । मैं अपने आपको एक दूसरे अदृश्य दरवाजे से बाहर निकलते देखता हूँ .....

रा0 : जहाँ से एक और स्वप्न शुरू होता है । सपनों से जागो । खुद से जागो । प्रेम और समझ में रिश्ता ढूढ़ो ।

युवती : राखाल दा ! प्रेम होता है तब समझ आती है या समझ होती है तब प्रेम होता है ?

रा0 : दोनों साथ–साथ होता है.

युवती : तो क्या हमें विवाह कर लेना चाहिए ? क्या हमें विवाह नहीं कर लेना चाहिए ?

रा0 : वो ?

युवती : वो मुझे चाहता है । मैं जानती हूँ ।

रा0 : वो तुम्हें चाहता है । वो जागतिक में तुम्हें प्राप्त करना चाहता है और स्वप्न में तुमसे मुक्त होना चाहता है । वो दरअसल क्या

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चाहता है ? उसके पास कन्ट्राडिक्शन है । तुम इसे प्रेम कहती हो ?

युवती : शादी के बाद सारे कन्ट्राडिक्शन खत्म हो जाते है (युवक एक किताब निकालता है)

नीरो : बोर्खेस । लायब्रिन्थ । पढ़ो ।

रा० : तो कर लो. पूछने क्यों आयी हो ?

युवती : राखाल दा समझ नहीं पा रही । क्या यह ठीक रहेगा ? दरअसल हम कट्टर मुस्लिम हैं और ये हिन्दू, ब्राम्हण (थोड़ी तेज होकर) लेकिन हम शादी करेंगे । अपनी कम्यूनिटी के कट्टरपन को तोड़ेंगे । मैं नहीं मानती ये जाति ....धर्म वगैरह राखाल दा, ठीक कर रही हूँ न मैं?

(पति–पत्नी का प्रवेश)

पत्नी : राखाल दा । फाइनल हो गया.

रा० : क्या ?

पति : तलाक ! मैं नहीं रह सकता उसके साथ हम उसके साथ अधिक देर तक नहीं रह सकते जिसे हम न समझते हों, जो हमें न समझता हो ।

पत्नी : और उसके साथ भी नहीं रह सकते, जिसे समझते हों ।

पति : समझने की फेकल्टी है भी, जो समझोगी ?

पत्नी : नहीं. तुम तो समझते थे – तुम्हें तो मुझसे प्रेम था. चले थे गंगा जमुनी संस्कृति बनाने.
अब क्या कहती है तुम्हारी – समझ फैकल्टी ।

युवक : यहीं कि हम तलाक से पहले तलाक ले लें ।

नीरो : फिर स्वप्न ।

रा० : (युवती) शादी करोगी ? (युवक से) प्रेम करते हो ! पत्नी से) तलाक चाहिए । (पति से) फैकल्टी !
(एक नेता–सा आदमी, एक लड़की के साथ प्रवेश करता है : राखाल दा, नमस्कार) एक मिनट, आप लोग उधर बैठिये थोड़ी देर. हम दूसरे के साथ अधिक देर नहीं रह सकते. हम अपने साथ अधिक देर रह सकते हैं, लेकिन फिर भी दूसरे के साथ रहना

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चाहते हैं, क्यों ? और दूसरे के साथ रहते हुए भी अपने साथ रहना चाहते हैं : यानी ओवरऑल अपने ही साथ रहना चाहते हैं. फिर दूसरा किस तरह से होता है हमारी जिन्दगी में ? जितना उसमें हम अपने को आइडेन्टीफाई करते हैं । बस वहीं तक हम उसके साथ होते हैं । जहॉ से उसके अस्तित्व का सिरा शुरू होता है, हम लौट आते हैं अपने पास

युवक : राइट !

पति : राइढ राखाल दा । अब हम रह लेंगे ।

युवती : हम भी ।

पत्नी : अपने साथ रहते हुए भी सबके साथ ।

युवक : राखाल दा, लैब्रिन्थ ले जा रहे हैं । ये पॉच रूपये ।

पति : पन्द्रह रूपये दे दो....

रा० : क्यों ?

पत्नी : चेखव की कहानियों के पाँच, उस दिन ले गये थे और ये कॉस पर्पज, कामू के दस । आप ऐसे ही क्लासिकल्स पढ़ाते रहिए राखाल दा.....

पति : और हमें सुलझाते रहिए ...

रा० : जब हम किसी से प्रेम कर रहे होते हैं तो अरअसल वो हमारी कोई मानसिक जरूरत पूरी कर रहा होता है. (चारो जा रहे है)

पति : अब भी तुम मुझसे प्रेम करती हो ?

पत्नी : हॉ, ताकि तुम्हारी हिंसा बाहर आ सके ।

युवती : (एकाएक लोटकर) राखाल दा, शादी से पहले लेकिन, डर लग रहा है ...

रा० : अगर ये कन्ट्राडिक्शन है तो शादी के बाद खत्म हो जायेगा.

युवक : और अगर स्वप्न है ?

रा० : तो जाग जाओगे.

(लड़का आकर खड़ा है)

रा० : क्या हैं ?

लड़का : (उसी तरह) क्या हैं ।

रा० : (पास आकर) क्या क्या चाहिए बेटे ? कौन हो तुम, क्या करते हो ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लड़का : (एकदम से आकर) साबुन बेचता हूँ । साबुन । खरीदेंगे आप । कोई नहीं खरीदता तो क्या हुआ, आप तो खरीदेंगे ही । सुना है आप महान है । फर्स्ट क्लास धुलाई का फर्स्ट क्लास साबुन । ऐसी वैसी टिकिया नहीं । आप भी देखिये, आप भी देखिये । नहीं शाब, शक की कोई गुंजाइश नहीं । आप थोड़ा सा घिसिये, न साबुन घिसेगा न हाथ कपड़ा होगा, चकाचक । तीन रूपये का दो, तीन रूपये का दो । ले लीजिये, अरे अब तो बड़े बन जाये । ले लीजिये न कोई नहीं लेता. सब समझते हैं मैं नालायक हूँ । मैं कुछ नहीं कर सकता । क्यों नहीं कर सकता (रो देता है) ? मैं साबुन भी नहीं बेच सकता ? क्यों समझते है क्या मुझे ऐसा । मैं कर सकता हूँ बहुत कुछ (फूट–फूट कर रोने लगता है)

रा0दा : (करीब आकर, पहले थपथपाता है)

लड़का : मैं कर सकता हूँ बहुत कुछ पर वे करने नहीं देते राखाल दा

रा0दा0 : पापा से झगड़ा हुआ है ?

लड़का : राखाल दा, मैं जानता हूँ मैं बहुत कुछ कर सकता हूँ मैं ऐक्टिंग कर सकता हूँ, मैं गाना गा सकता हूँ फिजिक्स.. मेरा मन नहीं लगता । मैं बहुत कुछ कर सकता हूँ मगर वे चौबीस घण्टा कहते हैं तुमसे ये नहीं हो सकता, तुमसे वो नहीं हो सकता । तुमसे कुछ नहीं हो सकता ।

रा0दा0 : तुम से सब कुछ हो सकता है । अभी तुम उनका कहा मानो, फिर वे हमेशा तुम्हारा कहा मानेंगे । ना, रोते नहीं । अच्छे बच्चे रोया नहीं करते ।

(फेड आउट)

पुरूष : क्या तुम दोनों में प्रेम है ?

स्त्री : हम दोनों अक्सर, काफी देर तक खामोश बैठे होते हैं । पास–पास । खामोशी से बिना डिस्टर्ब हुए । मुझे लगता हैं, मैं आलोकित हो रही हूँ । मुझे आलोकित होने दो सिद्धार्थ...

पु0 : दूसरो के सम्पर्क में आलोकित होना क्या आलोकित होना होता है कविप्रिये ? तुम्हे अपने लोक में आलोकित होना है.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्त्री : आलोक होता है । हमें पता नहीं होता । सही समय और सही सम्पर्क में हम अपने आलोक को पहचानते हैं और आलोकित होते है...

पु० : तुम्हारे व्यक्तित्व में, तुम्हारे व्यक्तित्व के आलोक में आज मुझे उत्सव दिखायी दे रहा है । तुम्हारे व्यक्तित्व में उत्सव है शर्मिष्ठा !

स्त्री : कभी–कभी लगता है, हम जिसे जब हृदय से चाह रहे होते हैं, तब वह हमारे सबसे पास होता है, हमें सम्बोधित करता हुआ... और ... हम ... हम उसे अस्वीकार कर रहे होते हैं सारा जीवन व्याकुल हो–होकर उसे ढूंढते रहने के लिए । तुम मेरे सामने से हट जाओ ताकि मैं तुम्हें ढूंढ सकूँ । मैं तुम्हें क्यों ढूंढ रही हूँ ? मैं तुम्हें कब से ढूंढ रही हूँ और तुम सुनते ही नहीं ! मैं तुम्हें सुनना चाहती हूँ.

पु : किसे ?

रा० : किसे सुनना चाहती हो तनु ?

पु : पता नहीं, ये रिहर्सल में भी ऐसे ही करती है ! जाने कहॉ भटक जाती है ।

रा० : क्या बात है तनु ?
(रोने लगती है)

स्त्री : राखाल दा, मैं मर जाऊँगी । मैं मरना नहीं चाहती....

रा० : तुम घर जाओ (पुरूष से) मैं तनु को छोड़ जाऊँगा. (चला जाता है) बोलो किससे डर रही हो ?

त : इससे.

रा० : इससे.

त : हॉ, इसी ने सुमति का खून किया है –

रा० : सुमति...

त : मेरी छोटी बहन ताकि मुझे पा सके.

रा० : श्योर ?

त : डोन्ट नो.

रा० : कोई एवीडेन्स ?

त : नहीं.

रा० : वहम ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

त : वहम् !

रा0 : कब से जानती हो ?

त : दो साल से । जब से दफ्तर में मेरा बॉस है । थियेटर तो हम बाद में करने लगे । मुझे डर लग रहा है । क्या करूँ ?

रा0 : जब हम किसी से डरते हैं तो समझ लो, उसे हमारे प्यार की जरूरत है । बैठ जाओ । अभी आते हैं ।

व्यक्ति : श्रीमान् जी कृप्या मेरी भी सुन लें । (इसी के साथ एक लड़की भी गयी थी)

रा0 : बोलें...

व्य : मैं राज्यसभा का मनोनीत सदस्य हूँ, मेरी भतीजी इण्टर फाइनल में है । अपने कालेज में वह पढ़ने–लिखने में होशियार तो है ही, खेल–कूद में भी आगे है । 26 जनवरी पर राजपथ से जो स्कूलों की झांकियां निकलती है. मेरी भतीजी अपने स्कूल परेड का नेतृत्व करती आयी है. लेकिन इस साल वो ऐसा नहीं कर सकी ।

रा0 :· क्यों ?

व्य : उसकी नयी गेम टीचर के कारण । उसने आते ही पहले उसे गेम से निकाल दिया फिर 26 जनवरी के परेड की जो लिस्ट बनी, उसमें उसी का नाम हटा दिया बाकी स्टूडेंट को आश्चर्य हुआ, क्योंकि नेतृत्व करती थी. लेकिन इसने भी परेड में जाने की जिद बना ली । टीचर को पता चला तो 25 जनवरी के दो घण्टे तक छड़ी से लगातार पीटा, क्योंकि वह बीच रिहर्सल में राजपथ पर पहुँच गयी थी और कह दिया था, इसी तरह कल राष्ट्रपति के आगे गुजरते परेड के वक्त भी जाऊँगी ।

रा0 : आप क्या चाहते हैं ?

व्य : मैं एक साथ दो चीज चाहता हूँ, एक – इसे सदन में मुद्दा बनाना, दो–टीचर की बर्खस्तगी तक जनान्दोलन... (राखाल दा लड़की को गौर से देखते हैं, लाइट स्त्री पर) 26 जनवरी को जब मेरी बच्ची दिन भर नहीं लौटी तो मुझे खटका, क्योंकि 25 की रात भी वो लौटी थी तो मैंने समझा था कि वो किसी सहेली के घर रूक गयी है, ताकि सुबह राजपथ तक पहुँच सके...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रा0 : फिर ?

व्य : 27 की सुबह जब क्लास रूम खोला गया तो उसमें एक कोने में उसे बेहोश पाया गया...

रा0 : क्या ?

व्य : हॉ, इस डर से कि कहीं वो सचमुच परेड में न पहुँच जाय, टीचर ने 25 को मारने के बाद उसे क्लास रूम में ही बन्द कर दिया था और ताला लगवा दिया था । राखाल दा ... वो 26 को सारा दिन चीखती रही, कोई वहॉ सुनने वाला नहीं था लोगों ने मुझे आपके पास भेजा है...

रा0 : (लड़की को देखते हुये) लेकिन ये तो ... ?

व्य : ये उसकी बहन है.

रा0 : वो कहा है ?

व्य : घर में.

रा0 : चलो !

(फेड आउट)

(एक डरी हुयी बैठी लड़की । राखाल । शायद नीरो भी । चाचा व बहन भी । राखाल दा उसके थोड़ा करीब जाते हैं । अकेले । ताली । लड़की देखती है । वह घड़ी निकाल कर उसके आगे फेकता है । वह चौकन्नी होती है । राखाल दा कवायद की मुद्रा में चलने लगते हैं । वो उठती है । बहन जाने लगती है । राखाल रोक देते हैं । वो पिता को मारने लगती है । पिता जब निष्क्रिय हो जाते हैं तो राखाल दा कहते है)

रा0दा : अरे तुमने तो इसे मार डाला ! मर गयी तुम्हारी क्लास टीचर ! वो तो मर गयी ! बहुत परेशान किया था न उसने ? क्लास रूम में बन्द कर दिया था, तुम चीखी थी! देखो हम सब तुम्हे सुन रहे हैं । तुम्हारी बात । सब तुम्हारी राह देख रहे है । स्कूल से अब तुम घर लौट जाओ । देखो तुम्हारे चाचा.. (चाचा को देखते ही वह 'चाचा कहते हुये चाचा से लिपट जाती है)

(फेड आउट)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(एक कोई कमरा । लेखक । स्क्रिप्ट । सादे चरित्र । राखाल भी)

लेखक : आश्चर्य हो रहा है न ! स्क्रिप्ट अगर आप सब को मैं पहले से दे देता तो अपने पास्ट एक्सपिरियेन्स से आप कैरेक्टर का अपने तरीके से इमेज बना लेते फिर आपका मुझसे संवाद नहीं होता । आप इमेज से कैरेक्टर चुनते हैं । इसलिए डायरेक्ट करने के लिए एक अतिरिक्त डायरेक्टर की जरूरत होती है । खुद से डायरेक्ट नहीं होते...

एक : फिर ?

ले : एक्सपिरियेन्स । हम अनुभव को महत्व देंगे । आप उस चरित्र को खुद अपने पास आने दीजिये जो पहले से आपके अनुभव का हिस्सा है, जिसके बारे में आप अवेयर नहीं हैं । मैं टेक्स्ट पढ़ता हूँ । आप चुनेंगे नहीं, सुनेंगें... उस चरित्र को अपने पास आने देंगे, जो आपके निजी अनुभव का हिस्सा लगता हो.

(एक चरित्र चुपके से आकर बैठ जाता है)

कभी तो रिहर्सल में टाइम पर आया करो

दो : स्कूटर खराब हो गयी थी सर, कल से सर ....

ले : ... नाटक का आरंभ कठोपनिषद के एक श्लोक से होता है. (श्लोक उच्चरित होते ही अन्धेरा छा जाता है और एक बच्चे के कराहने की आवाज पास आ जाती है ।

ले.स्वरः ये जो एक बच्चे की कराहने की आवाज आप सुन रहे हैं, ये दरअसल दो बच्चों की है । एक बच्चा वो जो मौत के करीब है इरशाद भाई का, जिसे बचाने गये हैं राखाल दा, देखिये शायद बच जाये, और यहाँ एक दूसरा बच्चा भी है जिसके कराहने की आवाज आप सुन रहे हैं । ये राखाल दा का बच्चा है । अपना बेटा । अकेला बेटा । माफ कीजिये मैं शायद बताना भूल गया कि राखाल दा का अपना परिवार भी है । उसकी बीबी और उसका बेटा । बीबी गूंगी–बहरी । और बेटा 6 साल का । दूसरो के ऑसू पोछने में व्यस्त राखाल दा को अहसास ही नहीं कि खुद उनके बेटे पर आज रात दो बजे इतनी बड़ी विपदा आने वाली है ...

एक : क्या होगा (एकाएक प्रकाश) ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दो : नीरो क्यों है, वह अक्सर खामोश क्यों रहता है ?

ले : क्योंकि वो बोल सकता है..

एक : बाकी बोलने वाले पात्र ?

रा0 : वे बोल नहीं सकते हैं. इसलिए बोल रहे हैं । वे बोलना नहीं जानते ।

दो : लेकिन नीरो ?

ले : उसी से सुनो.

नीरो : मेरे चाचा ने बचपन में मुझे एक कहानी सुनायी थी । कहानी में एक पिता ... उसकी बेटी मर गयी । पिता नहीं रोया । मैं रोना चाहता हूँ मगर किसी ने मुझे रोक रखा है । शायद कहानी ने, या उस पल ने जब कहानी घटने वाली है । इन्तजार कर रहा हूँ ।

एक : सोचो मत । हो जायेगा ।

दो : कहानी का पात्र चुप है तो ये भी चुप है.
(सब हंस देते है)

ले : राखाल की बीबी भी.

दो : वो गूँगी है.

नीरो : गूँगा कौन नहीं है?

एक : फिर ?

नीरो : लेखक बतायेगा.
(लेखक खड़ा हो जाता है, सामने आकर)

एक : क्या हुआ ?

ले : राखाल का रोल कौन करेगा ?

एक : क्यों, कोई भी कर लेगा...

नीरो : कोई भी कर लेगा ?

एक : क्यों ?

नीरो : जिसका बेटा मर रहा हो उसका रोल कोई भी कर लेगा ?

राखाल : फिर बेटा क्यों ?

नीरो : तुम्हारा एक्स्टेन्शन ?

राखाल : क्यों

नीरो : ताकि तुम बचे रह सको. मौत के बाद भी.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रा० : वह तो मर गया.

नीरो : तुम रह गये.

रा० : फिर बेटा क्यों ?

नी : ताकि तुम पिता हो सको । पिता होने के लिए बेटे का होना जरूरी नहीं ...

नी : लेकिन राखाल होने के लिए तुम्हारा होना जरूरी है.

रा : लेकिन मै क्या करूँगा ? बेटा नहीं । बीबी गूँगी बहरी ।

नीरो : वो क्र्या बोलेगी ? जिन्दगी को बोलेगी वो ? कि मौत को ? तुम बोल सकते हो ? वही ठीक ।

रा०. : तो मैं क्या करूँ ? बताओ ?

नी : बताओ । जो तुम्हारे पास आते हैं अपने प्राब्लेम लेकर, उन्हें बताओ कि टाइम नहीं है ! पोछते हो उनके ऑसू ! किसी का बेटा मर गया, किसी की बीबी छोड़ गयी, नेता को चिन्ता है कि... बताओ कि आज तुम्हारा ही बेटा उठ गया ! है कोई तुम्हारे ऑसू पोछने वाला ? कोई जरूरत नहीं दुनिया का दुःख दूर करने की. गिराइये शटर, आज दुकान नहीं खुलेगी । लेखक ! आज राखाल रोयेगा । बेटे की मौत पर दोनों रोयेंगे, वो बैठी है गॅूगी बहरी, बुत । लेखक ये कर रहा है राखाल का रोल । मैं नीरो । ये दोनों आज सिर्फ रोयेंगे, क्यों नहीं रोये थे दोनों ? आग लग गयी है आज दोनों के दिलों में...

रा० : लेकिन इस आग से चिता नहीं जलेगी ! पहली समिधा के लिए भी मुझे कम से कम दो किताबें बेचनी होगी ! राखाल के पास पैसा है ? (लेखक से)

ले : नहीं, क्रिमेशन भर का पैसा नहीं !

नीरो : तो ? आयेगे लोग अपना–अपना रोना लेकर । लो पैसा, बताओ उनको कि आज सुनने के लिए टाइम नहीं । मन नहीं ।

रा० : नहीं । नहीं बताऊँगा.

ले : फिर ?

रा० : जो रोज होता है, वही आज भी होगा..

ले : लेकिन ये स्क्रिप्ट में नहीं है ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रा0 : उनकी देर शटर उठाऊँगा, जितनी देर क्रिमेशन भर का पैसा इकट्ठा हो जाये ।

नीरो : एक तरफ लाश पड़ी रहेगी, दूसरी ओर तुम उनके आँसू पोछोगे ? उन्हें हंसाओगे, कहोगे—अच्छे बच्चे रोया नहीं करते ?

रा0 : हॉ

ले : लेकिन ये स्क्रिप्ट में नहीं ...

रा0 : स्क्रिप्ट ? कौन सी ?

(फेड आउट)

नेता : श्रीमान् जी ! मेरी भी सुने...

रा0 : हमारे तुम्हारे बीच अगर कोई आकाश है तो कुछ बोल दो, कि हमेशा सुना जा सके.

ने : हे. हे. हे... आज कुछ सीरियस लग रहे हैं । राखाल दा आप तो सीरियस होते नहीं.

रा0 : नहीं :

ने : मैं इतना बोलता हूँ. चौराहों से लेकर संसद तक, कोई क्यों नहीं सुनता ?

रा0 : सुनने की कोशिश में हम बेहतर बोल सकते हैं । सुनने लगेंगे तो बोलने की जरूरत जाती रहेगी ।

ने : तभी तो इस बार बिल्कुल डिफ्रेन्ट गेम की पॉलिटिक्स है. हम हैं वामपन्थी । हम उठा ले रहे हैं ज्ञानवापी मुद्दा...

रा0 : आप !!.. (आश्चर्य)

ने : यही तो ? चौंक गये न ! देश भी चौंकेगा । एक ही पार्टी ठेका लेगी मंदिर—मस्जिद का ?

रा0 : कम्युनिष्ट होकर ... !

ने : अरे मारिये गोली, कम्युनिज्म, फम्युनिज्म ! रूस में फेल । चीन में फेल । यहाँ नहीं होगा । हम ज्ञानवापी पर चुनाव लड़ेंगे । ठीक रहेगा ?

रा0 : आइए ।
(नेता सिर घुमा कर पीछे देखता है, डॉ बैनर्जी खड़े) क्या बात है ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

डॉ : इस उम्र में किसी का जवान बेटा मर जाय । पहले पत्नी गयी... अब बत्तीस साल के जवान बेटे को ब्रेन कैन्सर । इकसठ साल के इस बूढ़े को इस तरह अकेला होना था ! ऐसा डॉ बैनर्जी क्या सुने, क्या बोले, क्या करे राखाल दा ?

(उनके पास एक कुर्सी लाकर देता है)

रा0 : बैठ जाइये. (नेता को नहीं. वह खुद वहीं कहीं बैठ जाता है) आपके पास से जब लोग एक शव ले जा रहे होते है—श्रीराम नाम सत्य कहते हुए — तब लोगों के कन्धों पर आप ही लेटे होते हैं डॉ0 बैनर्जी । ना, लोगों के कन्धों पर नहीं, आप अपने ही कन्धों पर लेटे होते हैं । अगली सुबह आप फिर जिन्दा हो जाते हैं । मगर शव की स्मृति आपको न शव होने देती है न शिव । आपका बेटा तो अभी किसी और की गोद में खेल रहा होगा मगर आप हैं कि स्मृति–शव से मुक्त नहीं हो पा रहे हैं....

डॉ0 : स्मृति शव ?

रा0 : हाँ शव की स्मृति तो स्मृति शव है । लोग शव को अपने घर अधिक देर नहीं रखते, नहीं रख पाते, और आप हैं कि,.. कितने दिन हुए ?

डॉ0 : सात महीने –

रा : बताइए, सात महीने से लिये घूम रहे हैं ! शव से आशा करते हो डॉक्टर ? शव होने से पहले शव से बचो डॉक्टर । तुम शिव हो, शव नहीं. इन्हें देखिए –

(मिसेज चार्ल्स पीछे बैठी हुई है)

मिसेज चार्ल्स (सुबकने लगती है) शादी के एक हफ्ते बाद ही इनके हसबैण्ड पैरालाइज्ड हो गये । इन्हें पहचान भी नहीं पाते थे । आज गुजर गये...

मि.चा. : ही वॉज दी पर्फ्यूम आफ माई एग्जिस्टेन्स ।

रा : इसके बावजूद.

डॉ0बै0 : हम क्या करें – कहाँ जाएं

रा0 : इन्वाइट डेथ ह्वाइल लिविंग.

मि.चा. : डेथ इज अन्इन्वाइटेड । सिर्फ एक तस्वीर बची है....

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रा0 : एण्ड इट । आदमी नहीं तो उसकी तस्वीर ही सही । भगवान नहीं तो मन्दिर ही सही । ज्ञानवापी । एण्ड इट।

मि.चा. : ही वॉज गुड ।

रा0 : दैट विच इस गुड कैन नेवर बी ओवर। आपने गुडनेस को आदमी से आइडेन्टीफाई कर दिया । आदमी गया तो लग रहा है वह गुण भी चला गया । बुद्ध मरता है बुद्धत्व नहीं । एक जाता है तीन आ जाते है ।

(तीन बच्चे)

पूछिए इनसे...

नेता : मैं चलूँ ?

रा0 : आपका क्या था ?

नेता : ज्ञानवापी । कम्युनिज्म...

रा0 : हाँ. (नेता चला जाता है. काव आकर चला जाता है)

डा0बै0 : आपको जीवन में कभी दुःख नहीं मिला ?

रा0 : —

(दोबारा नेता और काव आते हैं । साथ)

रा0 : बात क्या है ?

नेता : ये दक्षिणाखण्डी हैं —

रा0 : दक्षिणाखण्डी ?

का : हाँ । इन्हें दक्षिणाखण्ड चाहिए.

रा0 : ये खुद क्यों नहीं बोलते ?

नेता : मौन अनशन पर है....

रा0 : ये बच्चे...?

नेता : अभी से पोलिटिक्स की प्रैक्टिस राखाल दा । इनका भविष्य इसी में हैं कि ये अभी से अपने अधिकार की मांग करें । ये दक्षिणाखण्ड लेकर रहेंगे...

रा0 : दिमाग खराब हो गया है ? उत्तराखण्ड, दक्षिणाखण्ड, मौन अनशन, अधिकार (एकाएक प्रकृतस्थ होकर) —दायित्व कहां है ? हां ? कहाँ है दायित्व ? अधिकार—अधिकार ! दायित्व देंगे आप इन्हें

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संस्कार में, कि दूसरों का जो अधिकार है इन पर, उनके इस अधिकार की रक्षा ही है इनका दायित्व....

का : इनके माँ–बाप ने बलि दी है इस आन्दोलन में ! आप लौटायेंगे उन्हें ?

रा0 : !!

नेता : अभी बाहर उन कार सेवकों की विधवाएं खड़ी हैं जो अयोध्या से ऊपर चले गये ...

का : '84 के दंगा पीड़ित भी...

रा0 : तो करो आन्दोलन ! मारो ! तुम इसको वो तुमको ! तुममे से किसी को नहीं दिखता कि बगल में लाश रखी है ! तुम्हारी हर साँस में तुम्हारी लाश, तुम्हारी मौत छुपी है । नहीं दिखता ?
है खिलवाड़ करते हो जिन्दगी से जिन्दगी भर, भूल गये मौत के साथ जीना...!

(सब चले जाते हैं)

(राखाल देखता है वहाँ जहाँ उसे अब जाना है, जहाँ काफी देर से कुछ सुलग रहा है, जहाँ उसका घर है, जहाँ की जहाँ आज उजड़ गयी है)

जा रहा हूँ मैं. जाकर बैठुंगा पीपल के पेड़ के पास । बहेलिया तीर चलायेगा । मैं क्या सोच रहा हूँ ? मुझे इस वक्त क्या सोचना चाहिए ? क्या सोचा था कृष्ण ने मरने से पहले ? लेकिन बहेलिये ने तो तीर चला दिया... रात दो बजे ! दो ही बजे न ? सूरज निकलने से पहले... मैं तो मर गया । मैं फिर क्यों जा रहा हूँ पीपल के पास ? कितनी बार मरूँगा ? कितनी बार मरोगे कृष्ण ? कहाँ हो जरा.. कितनी बार चलाओगे तीर तुम ? मन नहीं भरा क्या ? अब और नहीं मर सकता मैं ! थक गया हूँ कृष्ण ! ए ! ये क्या गड़बड़ है.. (बीवी से) उठ नहीं चलेगा ये गड़बड़ । बेटा मर गया और तू यूं बैठी है बुत बनकर, ईश्वर है तू ? बेटा मरे और तू रोये नहीं ? बोल ? कैसे बोलेगी तू, बोल तो तू सकती नहीं ! नहीं, तू बोल मैं सुनूंगा... मैं सुनूंगा तेरे को, कोई नहीं सुनता न तेरे को ? कि तू सुनाई नहीं देती... आज तू बोलगी मैं सुनूंगा, तू बोल मुझे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आज और कुछ सुनायी नहीं देगा तू बोल, सिर्फ तू सुनाई देगी आज, मैं जानता हूँ तू बोल रही है, तू बोल रही है रात दो बजे से, बोल रही है न बोल, मगर मैं सुनता ही नहीं, ये भीड़ ये लोग नेता प्रेमी काव, मैं इनकी शोर में तुझे नहीं सुन पा रहा था । किन्तु चीत्कार कर रही है, सुबह से हाय, हाय मेरा बेटा–हाय मेरा बेटा, मैं क्यों नहीं सुन पा रहा हूँ ? तू रोती काए नई, रात से बेटे की लाश सीने से लगाये तू रो रही है, और मुझे सुनाई नहीं दे रहा, तू काए को नहीं रोती । बहरा हूँ मैं, हम कोई गूँगे हैं, कि खुशी हो हम हँसे नहीं, बेटा मरे और रोये नहीं । तू रो... रोती काए को न्ई (खींच लाता है कुर्सियों के पास) ये देख डॉ बैनर्जी ! बूढ़े का जवान बेटा मर गया है, मैं समझा रहा हूँ शव है शिव है.. काएको ? जवान बेटा मर जाए और तू शव शिव करेगी, रोएगी नहीं, काएको, तू रो, ये ले मिसेज चार्ल्स ! हैलो... इसके आदमी को लकवा मार दिया मर गया, और गुड बैड बुद्ध बुद्धत्व, नो नो, तू रोयेगी नहीं ? ये ये देख ये बच्चे, तीनों के मॉ बाप मर गये, ये रो रहे हैं देख ये इतना रो रहे हैं, रो न । इस बच्ची को गेम टीचर ने क्लासरूम के बन्द कर इतना पीटा इतना पीटा, ऐसे, देख ऐसे रोते है, नहीं रोएगी, तू, तू साली गॅूगी बहरी, चल मैं भी हो जाता हूँ गूंगा बहरा, (रो देती है), अरे तू रो रही है, पागल है तू, ये ये क्या कर रही है चल पगली, अच्छे बच्चे रोया नहीं करते, चुप हो जा, चुप (जोर से) नो यू आर कॉट इन द नेटवर्क ऑफ थॉट... हॅ हॅ (हॅसी) रोती है, देख तू ऐसे रोती है, देख (वो रोने की भूमिका में सचमुच रोता है देख कर वो हॅसने लगती है) (वो उठकर भीतर की तरफ) श्श्श्श्श्श्श ! जाग जाएगा । (वो रूकती है फिर रोने लगती है भीतर जाते हुए । वो हंसने लगता है वो फिर हंसने लगती है । फिर पता नहीं चल पा रहा । शायद दोनो हँस रहे हैं । दोनों रो रहे हैं शायद...)

सीन रिपीट

(राखाल की जगह नीरो)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(दृश्य में एक जगह बैठा राखाल लेखक के साथ दृश्य को देख रहा है)

(नीरा के थक गया हूँ कृष्ण बोलते ही....)

ले : ये स्क्रिप्ट में नहीं है !

रा : ये भी स्क्रिप्ट में है

ले : कहाॅ से आया है कौन है ये ?

रा : मैं ही हूँ । वो भी । ये भी । एक ही समय में घट रहा हूँ और साक्षी हो रहा हूँ । मैं हो रहा हूँ ।

ले : तुम्हारी भाषा समझ में नहीं आ रही है राखाल !

रा : स्क्रिप्ट से बाहर आओ भरत ।

ले : स्क्रिप्ट से बाहर क्या है ?

रा : स्क्रिप्ट का चरित्र मंच पर आकर दो हो जाता है, एक भोगता है, दूसरा देखता है, एक ही है ।

(नीरो ए क्या गड़बड़ है से राखाल दा की पत्नी के साथ सीन पूरी करता है, नाटक नहीं.... । पूरा होता है कबीर पद.. अवधूता...)

संकेत : रिक्त कोष्ठक का अर्थ समी नाटकों में मौन है ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नचिकेता–यम और सावित्री–यम से आगे मृत्यु से पार आत्मा को एक पार्थिव देह सौंपने का कलात्मक संवाद–आख्यान है अन्तरा और मृत्यु का यह संवाद जो अन्ततः अपने प्रिय को प्रेम की देह सौंपती है जिस पर मृत्यु की आँख न पड़ सके। पूर्वरंग बोर्हेस की एक संक्षिप्त कहानी 'नींद' पर विकसित की गयी है।

इस नाटक का प्रथम मंचन वाराणसी में 2004 में हुआ था।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पूर्वरंग
लेखकीय वक्तव्य
शून्य गढ़ शहर, शहर गढ़ बस्ती (गोरख वाणी, पं. कुमार गन्धर्व का स्वर)
तबला (कहरवा चार मात्रा)
शंख ध्वनि
कविता
मंच पर टार्च का जलना–बुझना
शून्य गढ़ शहर, शहर गढ़ बस्ती (पुनः)
मौन
नेपथ्य स्वर : *उसे अभी भी नींद नहीं आयी है*
पखावज शुरू
तबला (पुनः चार मात्रा कहरवा)

(यह हर बार मृत्यु स्वर से ठीक पहले मृत्यु संवाद के साथ–साथ चलेगा)

<u>अंक–एक</u>

कथावचक (नेपथ्य स्वर)
अरूप (मंच पर)
रूपा (मंच पर)
उत्तम (मंच पर)
अन्तरा (मंच पर)
दीदी (नेपथ्य स्वर, मंच पर निर्दिष्ट वर्ण)
पिता (नेपथ्य स्वर, मंच पर निर्दिष्ट वर्ण)
दोस्त (नेपथ्य स्वर, मंच पर निर्दिष्ट वर्ण)
और
मृत्यु (नेपथ्य स्वर, चार मात्रिक कहरवा)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दृश्य : एक

(शेष दृश्य स्वतः क्रमशः हर छोटे फेड आउट के बाद)

कथावाचक : इसी समय की बात है । इसी शहर की बात है। अरूप नामक एक युवक रूपा नाम की एक युवती से प्रेम करता था । रोज शाम वो उससे मिलने जाता था । दोनों अलग–अलग अकेले रहते थे । एक शाम जब अरूप रूपा के घर पहुँचा तो उसे लगा, अन्दर रूपा के साथ कोई है । अन्दर जाने पर उसे कोई नहीं दिखा । अगली शाम जब वो पहुँचा तो उसे लगा, अंदर रूपा किसी से बात कर रही है । लेकिन कमरे में फिर कोई नही दिखा । उसने कुछ नहीं पूछा । अगली शाम फिर वही बात. वो निश्चिन्त होकर बाहर खिड़की से सुन रहा था, कि रूपा किसी से बात कर रही थी । दूसरे की आवाज सुनायी नहीं दे रही थी । इतना तय था कि जिससे बात हो रही थी, वो पुरूष था । इस शाम अंदर जाते ही अरूप ने पूछ लिया, हालांकि अन्दर रूपा फिर अकेली मिली :

अरूप : कौन था ? (प्रश्न)

रूपा : कौन था ....! (विस्मय)

अरूप : ...जिससे तुम बात कर रही थी ...?

रूपा : मैं बात कर रही थी ?

अरूप : हॉं ।

रूपा : तुमने सुना ?

अरूप : हॉं !

रूपा : किससे बात कर रही थी ?

अरूप : यही तो जानना चाह रहा हूँ.

रूपा : यहॉं और कोई है

अरूप : ( ) (ढूंढता है)

रूपा : तो !

फेड आऊट

(कथावाचक : अगली शाम .. फिर संवाद का भ्रम ....)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रूपा : ये वो समझे तब तो .. समझता ही नहीं .. आप उसे समझाइए .. मेरी बात तो वो ...

अरूप : (प्रवेश) ! ये अभी तुम बात कर रही थी कि नहीं ?

रूपा : (हँसते हुए) किससे ?

अरूप : (चिढ़कर) बात तुम कर रही थी और मैं बताऊँगा, किससे ! कौन था ?

रूपा : कौन था... तुम पहले बैठो तो .. मैं तो सिर्फ तुमसे बात करती हूँ !

फेड आउट

(अगली शाम ....)

रूपा : वो बेवजह परेशान है । उसका सब अच्छा होगा ... ये वो मानता ही नहीं, कहता है वो अपने लिए ही अपशकुन है...

अरूप : देखो .. ये तुम किससे बात करती हो.. कोई है ... कोई तो है यहॉ...

रूपा : स्वामी जी से बात कर रही थी ..

अरूप : कहॉ है ?

रूपा : चले गये ।

अरूप : मैं भी बात करूँगा

रूपा : बता दूँगी । कल शाम आयेंगे तो बात कर लेना । मुझसे कब करोगे ?

अरूप : क्या ...

रूपा : बात !

अरूप : कल ।

फेड आऊट

(क : अगली शाम ...)

रूपा : आओ

(बैठता है.)

अरूप : आ गये ?

रूपा : वो क्या न बैठे हैं !

अरूप : कहॉ ?

रूपा : अरे, क्या न बैठे हैं. देखिए

अरूप : कहॉ हैं वहॉ ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रूपा : देह में नहीं, सूक्ष्म शरीर में आये है। साफ तो दिख रहें है
अरूप : मैं क्यों नहीं देख पा रहा ..
रूपा : क्या.. अच्छा कोई सुगंध तुम तक आ रही है ...
अरूप : अब बेवकूफ मत बनाओ । यदि हैं तो बात कराओ ।
रूपा : हूँ ? कह रहे हैं, कल आओ ।
अरूप : मैं तो रोज शाम ही आता हूँ (चला जाता हूँ)
रूपा : अब इस पगले को कौन समझाये ....

फेड आऊट

(फेड इन)

अरूप : आ गये ?
रूपा : काश इतनी उत्सुकता, इतनी बेचैनी, मुझसे मिलने की भी होती । मुझसे बात करने की भी ...
अरूप : किसके पास आया हूँ ?
रूपा : लेकिन किससे मिलने ?
अरूप : तुम्हारे ही पास रहकर न !
रूपा : कितनी देर तुम होते हो मेरे पास !
अरूप : हम दोनों इसीलिए एक दूसरे से मिले हैं कि ...
रूपा : कि प्रेम कर सकें ...
अरूप : कि ईश्वर से मिल सकें ...
रूपा : तुम्हें मुक्ति मिलेगी ... मुझसे ही.
अरूप : आज बात हुयी तो यही पूछूँगा स्वामी जी से ...
रूपा : उन्होंने ही कहा है ।
अरूप : आये तो सही ।
रूपा : वो तो आ चुके है.
अरूप : कहाँ ?
रूपा : वो क्या हैं.. क्या.. (स्वामी जी से मुझे ये भी करना होगा .. ठीक है.. फिर भी तो वो समझे (अरूप से) सुनो ! तुम्हें वे दिखाई नहीं दे रहे हैं इसलिए तुम उन्हें सुन भी नहीं पाओगे
अरूप : तो ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रूपा : एक मिनट. तुम उनसे बात करोगे. आज अभी. (स्वामी जी से) हूँ ? (अरूप से) तुम दो मिनट शान्त बैठो. मैं खुद को एकाग्र करूँगी । वे मुझमें आयेंगे । तुमसे बात करेंगे । ठीक ?
(आँखें बंद कर लेती है । वो स्तब्ध देखता है. अपलक)
बोलिये ! (स्वामी जी का स्वर, देह रूपा की ही)

अरूप : प्रणाम

रूपा : खुश रहिए. बोलिए !

अरूप : क्या मैं इस जीवन में ईश्वर दर्शन कर सकता हूँ ?

रूपा : इस वाक्य से क्या शब्द हटा दीजिए !

अरूप : कैसे ? इतनी परेशानियों से घिरा हूँ... घर, दफ्तर और संसार की सारी ड्यूटीज़ पूरी कर रहा हूँ, बस मेडिटेशन नहीं कर रहा । मुझे मालूम है कि इस दिशा में क्या करना है लेकिन कर नहीं पा रहा । क्या करूँ ? यही मेरा एकमात्र दुःख है...

रूपा : करना छोड़ दीजिए । होने दीजिए । मेडिटेशन भी ।

अरूप : घर, दफ्तर और संसार में मेरे विरूद्ध जो परिवेश है उसका जो क्लेश मन पर छाया रहता है, वे ठीक होंगी तभी मैं अध्यात्मिक मार्ग पर चलने की तैयारी कर सकूँगा ! मैं जिन घटनाओं का कारण नहीं हूँ उनका परिवेश मेरे विरूद्ध तैयार होता है । उन्हें ठीक करूँ या पहले एकांत में मेडिटेट करूँ ?

रूपा : जो सामने आ रहा है उसे सिर्फ ऐटेन कीजिए। आप साक्षी है ।

अरूप : लेकिन ....

रूपा : जीवन में सुनिए अधिक । जब आप सुनते हैं तो आपकी ओर से कोई और सुनता है. परस्पर संवाद सिर्फ मैान में ही सम्भव है ।

अरूप : प्रणाम

रूपा : ओम् !

(थोड़ी देर रूपा झुकाये सिर को पकड़ी बैठी रही है.)

ओफ (अब रूपा का स्वर)

अरूप : क्या हुआ ...

रूपा : पता नहीं एक अजीब किस्म का दर्द हो रहा है । ( ) क्या हुआ ... बात हुई ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अरूप : हाँ ।

फेड आऊट

फेड इन

रूपा : कल जब तुम चले गये तो वे मेरे पास भी नहीं आये । रात बारह बजे सोने गयी तो उनकी आवाज सुनायी दी । वे कह रहे थे : तुम ट्रू सोल हो । किसी कारण इस संसार में ईश्वर की ओर से यहाँ भेज दिये गये हो, इसलिए इस धरती पर अजनबी की तरह विचरते हो, सारी स्थितियों में मिसफिट पाते हो । तुम्हारा युग आगे आयेगा जब लोग तुम्हें समझेंगे..... तुम्हारी भाषा को, तुम्हारी फीलिंग्स को । इस युग का निर्माण और आरम्भ तुम्हीं से होगा । इसलिए प्रकृति ने तुम्हें बनाया है ।

अरूप : और तुम्हारे बारे में क्या कहते हैं स्वामी जी ?

रूपा : अरूप ! अभी दो दिन पहले जब मैं उनके आश्रम गयी थी तो जिस एकान्त पूजा कक्ष में वे कई दिनों तक समाधिस्थ रहते हैं, जहाँ से कई दिनों बाद बाहर निकलते हैं, वहाँ मुझे लेकर गये । वहाँ कुछ नहीं था सिर्फ शून्य का एकान्त था । द्वार पर एक तस्वीर थी । राधा कृष्ण की । उन्होंने कहा, देखो । तुम राधा हो । तुम्हें इस जीवन में राधा ही होना है. थोड़ा संशोधित । अरूप के जीवन के उस अभाव को पूरा करना है जिसे माँ, पत्नी, प्रेमिका, बहन और बेटी पूरा करती हैं । तुम्हें एक साथ ये सारी भूमिकाएं निभानी होंगी ।

अरूप : ओफ !

रूपा : क्या हुआ ?

अरूप : कुछ नहीं । तो अब ये सब भी करेगी ये डिस्टर्बिंग एलिमेंट ?

रूपा : मैं डिस्टर्बिंग एलिमेंट हूँ. जाओ. कल से नहीं मिलूँगी ।

अरूप : कल से ?

रूपा : ठीक है अभी से । चले जाओ ।

अरूप : लेकिन मीठी चाय तो अभी मिली नहीं । मेरा कोटा ?

(अचानक गिरती है)

क्या हुआ ? (बिठाता है)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रूपा : (हृदय की ओर संकेत कर) यहाँ अचानक तेजी से बहुत दर्द हुआ.. ओह. !

अरूप : अभी भी .... रूको डाक्टर को...

रूपा : नहीं । अभी बस कंधे से हाथ तक खूब दर्द हो रहा है । थोड़ी देर में कम हो जायेगा ।

अरूप : तुम्हें कैसे पता ?

रूपा : होता रहता है. आज तुम्हारे सामने हुआ । घबड़ाओ मत । इतनी जल्दी मरूँगी नहीं । कोई मछली का प्राण और स्त्री का प्राण एक जैसा होता है. जल्दी नहीं निकलता ।

फेड आऊट

अरूप : प्रणाम !

रूपा : प्रणाम, बोलिए !

अरूप : रूपा की तबियत कल शाम अचानक ....

रूपा : हॉ

अरूप : आपसे बात करने के बाद थोड़ी शांति मिली है और याद आया है कि मैं अपने मार्ग से कैसे भटक गया था

रूपा : आपने अभी कदम रखा है । मार्ग बना है ।

अरूप : आप रूपा को भी ठीक कर दीजिए ...

रूपा : सब वो करता है । उसे आप मुक्त करेंगे । जैसे आपको मुक्ति वो देगी ।

अरूप : लेकिन ... उसकी तबियत ... सीने में तेज दर्द ...

रूपा : ओम !

अरूप : (प्रणाम की मुद्रा में) स्वामी जी !

रूपा : हॉ । (रूपा का स्वर)

अरूप : रूपा । ये अन्तिम था । अब नहीं. स्वामी जी तुम्हारी देह छोड़कर जाते हैं तुम्हें काफी कष्ट होता है । तुम बात कर लिया करो .... मैं सुन लिया करूँगा तुमसे ।

रूपा : स्वामी जी आये थे ?

अरूप : हॉ.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रूपा : क्या बात हुई ?

अरूप : मैंने बताया कि डिस्टर्बिंग एलिमेंट बहुत डिस्टर्ब करती है

रूपा : क्या कहा?

अरूप : कल बताऊँगा । चल रहा हूँ. कई काम है ।

रूपा : स्क्रिप्ट पूरी हुयी ?

अरूप : कौन सी ?

रूपा : अन्तरा की ...

अरूप : नहीं । कैरेक्टर ने मुझे उलझा दिया है। वो अपने कैरेक्टर से बाहर आना चाहता है। वों दर्शक होना चाहता है अपने चरित्र का।

रूपा : उसे किसी फीमेल कैरेक्टर से मिला दो ।

अरूप : वैसे ही मरा हुआ है ।

रूपा : मेरे लिए भी एक रोल लिखो न ! मैं इस जीवन में सिर्फ एक बार अभिनय करना चाहती हूँ सिर्फ तुम्हारे डायरेक्शन में !

अरूप : अगले जन्म में ...

रूपा : अरे इस जन्म में लिखोगे तब तो अगले जन्म में निभाऊँगी । लिख दो वर्ना तुम्हें फिर जन्म लेना पड़ेगा । ओफ !

(फिर दर्द । सम्भालता है.)

अरूप : कहीं एन्जाइना पेन तो नहीं !

फेड आऊट

अरूप : लेटी रहो ।

रूपा : (बैठती है) मुझे कुछ भी अब अच्छा नहीं लग रहा.

अरूप : तुम भी खूब करती हो नाटक

रूपा : सिर्फ तुम्हारे कारण जिन्दा हूँ. कब कराओंगे तुम मुझे नारी होने का एहसास ? कब हूँगी मैं अन्तःसत्ता ? (अन्तःसत्ता अर्थात् गर्भवती)

अरूप : स्वामी जी से पूछकर बताऊँगा । वैसे भी इतनी बार तो हो चुकी. इतनी बार वे तुममें आ गये ।

रूपा : दिल्ली चलोगे ? कल जा रही हूँ. अकेली । लो मिल लो । वे आ रहे हैं । प्रणाम (शून्य को सम्बोधित, एक सुनिश्चित बिन्दु की ओर स्वामी जी से)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अरूप : प्रणाम । किधर हैं ?

रूपा : आप जिधर देखना चाहें । गीता में तो भगवान ने कहा ही है. सिर्फ मैं देखता हूँ । जो हो चुका है वो घटने जा रहा है. जिसे आप देखेंगे । जिधर आप देखना चाहें ।

अरूप : रूपा कैसे ठीक हो ?

रूपा : ( )

अरूप : रूपा को देखिए, उसके सीने में अक्सर दर्द होता है–

रूपा : अरूप को देखना है.

अरूप : मेरे पास योग्यता नहीं. रूपा कब तक ठीक होगी ?

रूपा : ( )

अरूप : स्वामी जी..

रूपा : सिर्फ तीस साल का जीवन लेकर आयी है रूपा

अरूप : तीस साल ! तीस साल की तो वो है. कल एक नवम्बर को उसका जन्म दिन है । रात बारह बजे के बाद वो इक्तीसवें वर्ष में प्रवेश कर जायेगी । क्या है?

रूपा : सिर्फ कल का दिन ही है । तीस साल की नहीं सिर्फ एक और शाम की रूपा ।

अरूप : क्या ! नहीं ! लेकिन ! डाक्टर !

(चला जाता है)

फेड आऊट

(कथावाचक : और फिर आखिरी शाम ...)

रूपा : रूपा की तरह आज आपकी भी एक ही शाम है । आप क्या चाहते हैं ?

अरूप : सिर्फ ईश्वर । और कुछ नहीं ।

रूपा : कैसे मिलेंगे ?

अरूप : आप हैं न ! आप मेरे लिए ईश्वर हैं इस देह में । आप मुझे मिल गये । अब मिल जायें तो मुझे मिल जायेंगे ईश्वर ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रूपा : आज रूपा का जन्मदिन भी है और मृत्यु दिन भी। रात बारह बजे वो जगतमिथ्याभाव में आ जायेगी और देह के पार चली जायेगी ।

अरूप : ये सत्य है ?

रूपा : अटल और सुनिश्चित ।

अरूप : उसे और जीवन नहीं मिल सकता ?

रूपा : तुममें इतनी इन्टेन्सिटी तो है कि किसी के समाप्तप्राय जीवन को सुदीर्घ कर सको ।

अरूप : तो फिर उसे और जीवन प्रदान कर दीजिये, मेरे जीवन से लेकर ।

रूपा : नहीं । यदि मिलेगा जीवन उसे तो किसी स्त्री जीवन से ही ।

अरूप : ठीक है, ये आप देखिए । लेकिन रूपा को आज की मृत्यु से मुक्त कीजिए. इसे टालिए..

रूपा : और ईश्वर ?

अरूप : वो तो मुझे चाहिए । रूपा को जीवन और अरूप को आप ।

रूपा : इस वक्त तो तुम्हें कोई एक ही मिलेगा । ईश्वर या रूपा । साधू चमत्कार के लिए नहीं होंते । एक देह में एक समय में एक ही रह सकता है, मैं या रूपा । रूपा आयेगी तो मैं चला जाऊँगा, मैं आऊँगा तो रूपा नहीं रहेगी । बोलिए !

अरूप : अभी इस देह में आप हैं, रूपा की देह में..

रूपा : देह भी ईश्वर की होती है । रूप रूपा का है जिसे तुम प्रेम करते हो । मैं अभी हूँ । लौटूँगा तो रूपा आ जायेगी । लेकिन आज रात बारह बजे तक के लिए ही । अभी के बाद मैं फिर तुमसे कभी नहीं मिल सकूँगा । अभी जो चाहिए जीवन भर के लिए माँग लो । किसे चुनते हो—मुझे या रूपा को ? (अरूप कश्मकश में)
किसी एक को ही चुनने की स्वतंत्रता है ।

अरूप : अभी आप रूपा का जीवन तीस साल और बढ़ा दीजिए । बस उसके बाद से ही मैं पूरी तरह आपका हो जाऊँगा । लेकिन पहले मिले रूपा को जीवन ...

रूपा : यही होगा । रात बारह बजे से उसका जीवन तीस और शामें देखेंगा । ओम् !

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

फेड आऊट

कथावा :और फिर वो वक्त आ गया ... दोनों भयभीत थे और आश्वस्त, कि मृत्यु तो थोड़ी देर में होनी ही है । रूपा के डॉक्टर ने भी जवाब दे दिया था, कि जितने पल वो गुजार ले, भगवान की मर्जी से ही मुमकिन... लेकिन दोनों को कहीं कोई थोड़ी सी प्रतीक्षा भी थी । स्वामी जी के प्रति आस्था, कि शायद वो बच जाय और मृत्यु टल जाय । लेकिन फिलहाल तो रूपा मर रही थी और उसके साथ पल–प्रतिपल अरूप भी । रात पौने बारह बज रहे थे । सिर्फ पन्द्रह मिनट का जीवन रह गया था ...

अरूप : नहीं । लेटना नहीं । बैठी रहो ।

रूपा : क्यों ?

अरूप : स्वामी जी ने कहा है ..

रूपा : क्या .. क्या कहा है स्वामी जी ने.. बोलो अरूप !

अरूप : उन्होंने कहा है आज रात रूपा को लेटने मत देना

(घड़ी देखता है)

रूपा : और कितने मिनट बच गये मेरी जिन्दगी के ?

अरूप : (उसके होठों पर उंगली रख) न्न! ऐसे मत बोलो रूपा ! दस मिनट बाद तुम नये जीवन में प्रवेश कर जाओगी । आज मैं पहली बार तुम्हारा जन्मदिन मनाऊँगा सही वक्त पर ...

रूपा : सिर्फ दस मिनट .. अब नौ मिनट ..

अरूप : हर बार मैं तुम्हें सुबह विश करता आया हूँ । रात बारह बजे कभी ठहरने की गुंजाइश हीं नहीं बनी । आज बनी है .. पास रहने की गुंजाइश .. मेरी मौजूदगी में तुम कदम रखोगी तीस साल के नये जीवन में ..

रूपा : (होठों पर अंगली रख) आठ मिनट । बोलो नहीं । एक–एक वाक्य से गुजरता जायेगा एक–एक मिनट. बस. बोलो नहीं । जो पल गुजरे तो सिर्फ खामोशी में गुजरे और मैं सिर्फ तुम्हें देखती रहूँ । अपने अन्तस में भर लूँ तुम्हें .. क्या हुआ .. स्वामी जी में आस्था नहीं ? ए..... थोड़ी देर के लिए सब कुछ भूल जाओ .. सब अच्छा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

होगा.. पता है, जब मेरा जन्म हुआ था तो मैं रोई नहीं. थी .. हँसी भी नहीं थी । बताओं मैंने क्या किया था.. बताओ न ! इमेजिन करो । ए ! अभी मैं पैदा हूँगी तो तुम क्या करोगे ? तुम न मुझे गोद में उठा लेना और घूमाना नहीं. मुझे बहुत डर लगता है. चक्कर आ गया तो ? तुम न मुझे गोद में लेकर बहुत प्यार करना और मैं न, मैं न.. मैं क्या करूँगी ? मैं तो तुम्हारे गोद में रहूँगी । (छोटे बच्चे के इम्प्रोवाइजेशन में) मैं न, नन्हें नन्हें हाथों से तुम्हारे सिर पर हाथ फेरूँगी । लेकिन यार एक प्राब्लेम आ जायेगी । तुम शाम को फिर किससे मिलने आओगे । एक नन्हीं बच्ची से ? अच्छा रोज शाम मुझे गोद में रख के घुमाने ले चलना.. ए ऐसा मत करना मुझे शर्म आ जायेगी । ए.. मैं तुम्हें प्यार कैसे करूँगी ? और पता है रास्ते में तुम जब किसी कन्या को देखोगे तो मैं तुम्हें आँख से इशारा... छोटी–छोटी आँखों से .. अरूप ! तुम यहीं तो हो.. तुम मुझे दिख क्यों नहीं रहे.. देखो अरूप सामने सब कुछ भूरा–भूरा सा.. क्यों होता जा रहा है.. मुझे कुछ दिख क्यों नहीं रहा .. अरे अभी तो सब कुछ साफ था .. अरूप मुझे लिटा दो प्लीज जल्दी ! अरूप ऐसा क्यों हो रहा है ? नहीं दायाँ कन्धा पकड़ो, बायें हाथ में बहुत तेज दर्द हो रहा .. कंधे से लेकर पूरे .. हाथ .. में

(जुबान पहले धीमी फिर लहराने लगती है, वो सम्भलते हुए घड़ी देखता है । चेहरे का रंग उतर जाता है)

अरूप....वो देखो एक सफेद लकीर धुंए की.... नहीं.....कुहासा.....देखो ......गायब हो चुकी है ..

कथावा: उसी शहर में एक ट्रक ड्रायवर रहता था । रोज रात बारह बजे के करीब वो घर लौटता था । उसकी तीस साल की बीवी रोज रात उसके आगे खाने की थाली रखती थी और एक गिलास पानी रख कर वो बिस्तर पर लेट जाती थी । उस रात जब ट्रक ड्रायवर लौटा । हाथ मुँह धोकर खाने बैठा तो थाली और गिलास का पानी अभी सामने नहीं आया था । एक दो बार उसने अपनी बीवी को आवाज लगायी । लेकिन वो तो अभी–अभी बिस्तर पर लेटे–लेटे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गुजर गयी थी. जबकी ट्रक ड्रायवर इंतजार कर रहा था कि अभी बस वो थाली लेकर आने ही वाली है ...

रूपा : अरूप वो देखो घड़ी बंद हो गयी है ! तुमने बंद कर दी थी क्या ? बुद्धु हो ! वो देखो । वो वाला कैलेन्डर, फिर टेढ़ा हो गया है। जाओ सीधा कर दो नहीं तो राधा भी नाराज हो जायेगी और कृष्ण भी । फिर तुम नहीं सुन पाओगे उनकी बॉसुरी.. जाओ ठीकर कर दो । ये तुम ऐसे मुर्दे की तरह क्यों बैठे हो ?

अरूप : तुम्हारी तो नब्ज फिर चलने लगी है. बिल्कुल नॉर्मल ! तुम्हें सब कुछ दिख रहा है ? (खुशी की आश्चर्य उत्तेजना में, शायद रो पड़े)

रूपा : हॉ । पहले की तरह, पहले से ज्यादा साफ ।

अरूप : और दर्द ?

रूपा : बिल्कुल गायब, अरूप मैं तो जी गयी, मैं तो जी गयी अरूप !

अरूप : हॉ, ग्रेट मिरैकिल. तुम नहीं मरी (रो रहा है)

रूपा : अच्छा तो तुम इंतजार कर रहे थे कि टपक जाय ये डिस्टर्बिंग. एलीमेंट

अरूप : और क्या... चलो आज रात इसे सेलीब्रेट किया जाय.

रूपा : हॉ चलो, क्या करेंगे ? डांस करेंगे । तुम किशोर वाला कैसेट लाये थे ?

अरूप : नहीं यार वो तो ..

रूपा : एक काम तुम ढंग से नहीं करते. एक मिनट. मेरे पास वो वाला है . . किशोर का, *तेरा हुआ अब मेरा क्या होगा* ... उसी को लगाते हैं और धमाल करते हैं ..

अरूप : चलो सारी लाइटें जला देते हैं. रात भर हम गायेंगे–नाचेंगे. खीर भी तो रखी है तुमने । आज लाइट भी नहीं गयी । तुमने मीठी वाली चाय भी नहीं बनायी चलो बनाओ

रूपा : हाँ बनाती हूँ तुम्हें भी बनाती हूँ । आज सब कुछ होगा ।

अरूप : चलो ।

रूपा : एक मिनट । बस मुझे दस मिनट का वक्त दे दो ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अरूप : क्या करोगी ?

रूपा : करूँगी नहीं, जाऊँगी

अरूप : कहाँ ?

रूपा : वो मेरा इन्तजार कर रहा है । बस मैं खाने की थाली और एक गिलास पानी रखूँगी और यहाँ चली आऊँगी । बस मैं यूँ गयी और आयी, बिचारा दिन भर का थका है ट्रक चलाते–चलाते ।

अरूप : खाने की थाली .. एक गिलास पानी .. ट्रक .. रूपा.

फेड आउट

अन्तरा

बाजे अनहद नाद (कॉस्मिक डांस ऑफ शिव), नींद (स्लीप), स्वप्न (ड्रीम), मृत्यु (डेथ), जागृति (लाइफ), आवेग (पैशन), संवाद (सायलेंस), चरित्र (कलर्स), ध्वनि (म्यूजिक) से बनी स्वरलिपियों यानी नोटेशन्स से जो दृश्य काव्य बनता है वह है नाटक–अंतरा....

जो पूछती है– मृत्यु क्यों है ? मृत्यु क्या है ? मृत्यु अंत है ? क्या मृत्यु का अंत सम्भव है ?

और मृत्यु पूछती है उससे– क्या तुम अपने आपको सावित्री मान बैठी हो ? पूछती है पहले वह उत्तम से – क्या तुम अपने आपको नचिकेता मान बैठे हो ?

औपनिषदिक और ऐतिहासिक प्रतीक चरित्रों के माध्यम से अद्यतन संवेदना के साथ एक काव्य–विमर्श ...

– शंख ध्वनि
– श्लोक
– पखावज
– कविता
– कुमार गंधर्व
– घड़ी की आवाज
– आवाज
– टार्च
– पखावज

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(आदमी, बिस्तर, मोबाइल, पिस्टल, सफेद रहस्मय पर्दा, पखावज और कुमारगंधर्व – शून्यगढ़ शहर, शहर गढ़ बस्ती ... और आवाज़ : 'उसे अभी भी नींद नहीं आयी है' । आरम्भ में आरम्भ अंश, फिर प्रांजल और अंतरा की प्रथम कविताएं, फिर कुमारगंधर्व ... । कमरे में छोटे–बड़े कई पासे, जिनसे खेलता है वह, जिनसे खेलेगी मृत्यु । बिस्तर पर हल्के प्रकाश में सोने की कोशिश करता उत्तम । पखावज पर मृत्यु ध्वनि । देह पर देह की कुछ सहज स्वाभाविक हरकतें । गहरी खामोशी में रात के बारह बजे । अचानक ठहरती ध्वनि में एकाएक उठ बैठता उत्तम...)

मृत्यु : कैसे हो !

उत्तम : !! (लगता है आवाज़ जैसे पासों से आयी, सैटिन का सफेद पर्दा हिलते हुए रहस्य को गाढ़ा करता है)

मृत्यु : क्या हुआ ... नींद नहीं आ रही ?
(अपनी आहट या कोई और है कमरे में!) जागना भी चाहते हो और सोना भी चाहते हो ! नींद कैसे आयेगी भला !
(कभी छोटा तो कभी बड़ा पासा अलग–अलग रंगों में चमक उठता है) आज पहली बार तुम तक आने का मौका मिला है । पूछोगे नहीं, मैं कैसा हूँ ?
(बिस्तर की ओर मुड़ता है)
ओ ! तो तुम एकबार फिर मेरा परिचय चाहते हो !
(चेहरा जैसे ही सामने मुड़ता है)
अन्तरात्मा !

उत्तम : वो तुम नहीं हो

मृत्यु : ईश्वर !

उत्तम : वो तुम हो नहीं सकते

मृत्यु : तो फिर मैं कौन ?

उत्तम : अधिक से अधिक मौत हो सकते हो । टाइम नहीं है
(मौन)

मृत्यु : मुझसे दोस्ती करोगे ?

उत्तम : सोने दो यार...सोना चाहता हूँ... दो घण्टे से कोशिश कर रहा हूँ...

मृत्यु : सोने की या जागने की ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उत्तम : जब तुम्हें सब पता है तो ये भी पता होगा कि कौन सोता है और कौन जागता है ।

मृत्यु : हाँ, सोते वे हैं ... जिन्हें मौत से डर लगता है

उत्तम : मुझे ये डर नहीं है, फिर भी सोना चाहता हूँ । मुझे सोने दो और तुम .... तुम जागते रहो

मृत्यु : मैं जागता रहूँ तो तुम सो सकोगे ?

उत्तम : हाँ ... तुम भी आकर सो जाओ

( )

क्या हुआ ... मिस्टर डेथ !

मृत्यु : डेथ नहीं. रूलर ऑफ डेथ । मैं शासक हूँ मृत्यु का ।

उत्तम : तो यहाँ क्या कर रहे हो ? ... मुझे लेने आये हो ?

मृत्यु : नहीं.

उत्तम : तो ... फिर टाइम पास कर रहे हो ! कोई बात नहीं । आदमी की संगत में हो इतने समय से ! आदत पड़ गई है ।

(मोबाइल पर नम्बर मिलाता है)

हाँ, मैं । यार नींद नहीं आ रही है । कोशिश की लेकिन ! नहीं, आज पहली बार ऐसा हो रहा है, क्या करें ? ...ठीक है करते हैं । (शवासन में लेट जाता है । फिर एकाएक उठ बैठता है)

यार पहले भी तो शवासन में ही लेटा था !

मृत्यु : लेकिन शव जैसे तो नहीं हुए थे न !

उत्तम : होना भी नहीं है... शव जैसा ! तुम क्यों नहीं हो जाते... शव जैसा ? नहीं, पूरा शव ? मैं हूँ न ! अंतिम संस्कार के लिए !

मृत्यु : जो चाहोगे वही होगा. लेकिन पहले ये बताओ क्या तुम खुद को नचिकेता मान बैठे हो ?

उत्तम : नचिकेता ... कौन ? नहीं, न मुझमें उतनी विनम्रता है, न त्याग, न तप, न तितिक्षा ...

मृत्यु : न भय ... (पहली बार मृत्यु हँसी)

उत्तम : हाँ । इसमें हँसने की बात नहीं है । जैसे तुम मृत्यु नहीं मृत्यु के शासक हो, उसी तरह से मेरी मृत्यु हो ये अपनी जगह है... लेकिन मुझे मृत्यु का भय नहीं है ...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मृत्यु : सचमुच ?

उत्तम : सचमुच ! (गाढ़ा आकाशी रंग पर्दे पर प्रकट होता है इस तरह कि उत्तम भी उसी रंग में जा आये । अब वह अपनी शुभा दी के साथ । तीस साल पहले, जिस संवाद के बाद वो नहीं रही थी) सचमुच ! ये जो गहरा आसमानी रंग है है, ये मुझे बॅहोत पसंद है । अब ये आसमान के कारण है, कि उसकी गहराई के कारण... सुन रही हो न ? .....हाँ। बस पसंद है । शायद आसमान के कारण ..... नहीं शायद गहराई के कारण ... नहीं...

शुभादीः समुद्र के कारण (पर्दे का स्वर)

उत्तम : हाँ समुद्र के कारण ! देखो. बता दिया । इसीलिए कहता हूँ कि दीदी हो तो मेरी दीदी की तरह । हाँ तो ये गहरा आसमानी रंग मुझे... तुम कैसे इतनी गहरी बातों को, मेरी फीलिंग्स को तुरंत समझ लेती हो ! देखो, एक शब्द में कह दिया !

शुभादीः चलो खाना खा लो ... सुबह जल्दी उठना है

उत्तम : नहीं थोड़ी देर और बातें करते हैं

शुभादीः देर तक बातें करेंगे तो सुबह मैं युनिवर्सिटी कैसे जा पाऊँगीं ! वहाँ भी तुम्हारी तरह कई बच्चे ....

उत्तम : बच्चे ! मैं बच्चा हूँ ?

शुभादीः अच्छा बाबा पंद्रह साल का समुद्र, जिसे गहरा आसमानी रंग खूब पसंद है. ठीक ? लेकिन समुद्र अब क्या करेगा?

उत्तम : देर तक बातें करेगा । फिल्म की, नहीं युनिवर्सिटी की, नहीं । क्रिकेट की । नहीं ...

शुभादीः माँ की

उत्तम : हाँ, माँ की

शुभादीः नहीं.

उत्तम : हाँ, नहीं । माँ की बात नहीं । बाबा की भी नहीं ।

शुभादीः (हँस पड़ती है) समुद्र ! मेरे लिए तुम बच्चे ही रहोगे । चलो खाना खाकर सो जाओ । वैसे भी तुम सोना चाहते हो । नींद आती है

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लेकिन सो नहीं पाते । जागते रहते हो रातभर । रात भर जागता है समुद्र... ?

उत्तम : कभी–कभी ... तुम्हें लगता नहीं कि अगर माँ हमारे पास होती तो तुम्हें हम भाई–बहनों का बोझ नहीं ...

शुभादीः बोझ !

उत्तम : सॉरी ... वेरी सॉरी, मेरी मतलब तुम्हें संघर्ष कम करना पड़ता ... तुम्हारी अपनी दुनिया भी खिलती... शादी हो जाती ....

(रंग से बाहर आ कर)

कहाँ गई? (कमशः निस्तेज पड़ता रंग) अरे मैं तो ये कह रहा था कि ... अब बताओ, तुम्हारी शादी हो जाती तो मुझे कौन देखता ! दीदी ! नहीं, मैं तुम्हारे बगैर नहीं रह सकता ...

मृत्यु : क्यों ?

उत्तम : क्योंकि ...

शुभादीः क्योंकि तुम अकेले रहना नहीं चाहते !

उत्तम : हाँ. सो सिम्पल.

मृत्यु : (हँसी) मृत्यु हो, ये अपनी जगह है, लेकिन मुझे मृत्यु का भय नहीं है (हँसी) तो ...

उत्तम : हाँ मुझे मृत्यु का भय नहीं है

मृत्यु : तो फिर ये क्या है, मृत्यु का साहस (हँसी)

उत्तम : एक मिनट... जरा एक मिनट ठहरो !

मृत्यु : एक मिनट नहीं, एक पल । मृत्यु का एक पल ही सब कुछ है । उस एक पल में सबकुछ तुम्हारे सामने रख रहा हूँ मैं । सब कुछ दोहरायी जा रही है तुम्हारी आँखों के सामने....

उत्तम : नहीं मिस्टर डेथ, वेट । अभी मैं सोने की कोशिश कर रहा हूँ । आज रात मुझे नीद आयेगी । मृत्यु नहीं । कोई और देखो ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मृत्यु : मैं तुम्हें ही देख रहा हूँ‌ लगातार । एकटक... उस पल से, जब तुमने सूरज के उजाले में पहली सांस ली थी । तुम्हीं मुझे भूले रहते हो...

उत्तम : ऐसा ? तुम मुझे देख रहे हो ? (रूककर) ... लगातार जिन्दगी के पहले पल से ? कहाँ हो भाई ! जिन्दगी और मौत साथ–सांथ चल रहे हैं, एक दूसरे को देखते हुए, एकटक. देखते रहो तुम दोनों. मैं चला सोने।

(घूमते ही फिर आ जाता है आसमानी रंग के दायरे में.)

अरे ! ये अभी क्या हो गया था ? तुम कहाँ चली गयी थी, दीदी? तुम कहाँ चली गयी हो ? मैं कहाँ चला गया था ?

शुभादीः मृत्यु के पास । तीस साल आगे ।

उत्तम : क्या ? वही कमरा, वही रात, रात बारह बजे सोने की कोशिश करता वही मैं, फिर मैं कहाँ चला गया था ?

मृत्यु : दीदी के पास । तीस साल पहले ।

उत्तम : दीदी के पास ... शुभादी के पास ... जिन्होंने आत्महत्या की थी ? वो यहाँ आयी थीं ... तीस साल बाद, तब तो मैं पंद्रह साल का किशोर था ? तो कितना आसान कर देती थी मुझे !

(फिर वही आसमानी रंग)

देखो तुम कितना आसान कर देती हो मुझे ... तुम्हें जिन्दगी जटिल नहीं लगती ? काफी अनुभवों से गुजरी हो न. ... सरल हो गयी हो । मेरी डायरी कहाँ हैं ? तुम डायरी क्यों नहीं लिखती ? धत्त तुम्हें डायरी लिखने की जरूरत ही नहीं । तुम इतनी सुलझी हुई क्यों हो कि तुम्हारी आँखों में इतनी चिन्ताएं दिखती हैं ? मुझे लेकर न ! तुमने आत्महत्या क्यों कर ली ? (आसमानी रंग में काला रंग घुलता है) कहाँ हो ? तुम्हें पता है तुम्हारे चले जाने के बाद मैं बिल्कुल अकेला हो गया । एक अनरेस्ट डेवलप होता चला गया, कि मैं रात भर जागता रहता हूँ । ठीक है. तुम्हारे पास पूरी परिस्थिति थी आत्महत्या की । तुमने कर ली ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शुभादी: तुम्हारे पास भी है.

उत्तम : नहीं, हाँ, अरे ! हाँ मेरे पास भी है लेकिन मैं करूँगा नहीं । तुम्हारे अवरूद्ध प्रेम ने तुम्हारे जीवन को अवरूद्ध कर दिया । छोड़ो न । तुम इस पल कहाँ हो ? मैं कैसे रहूँ ? बताओ न मैं कैसे रहूँ ! तुम्हारे बगैर सब कुछ उलझता ही गया है... अब कोई सरल नहीं करता ... मैं नहीं रह सकता...

( ) (नारंगी रंग में पर्दा नहा उठता है)

ये जो रंग है... ठीक कहती थी दीदी... तुमने नहीं देखा मेरी दीदी को ? सत्रह साल बड़ी थी मुझसे, कहती थी, बच्चों सा मन है मेरा, तभी तो इतने सवाल पूछता हूँ ... तब ये रंग मेरे लिए आश्चर्य था. हर जगह यही रंग था. चारों ओर बिखरा पड़ा ... पता है क्यों ..... नहीं, वे आ रहे हैं. अभी पूछेंगे... (पिता का स्वर)

पिता : जिन्दगी को समझो नहीं अनुभव करो. क्या समझे ?

उत्तम : वे मेरे लिए आश्चर्य थे । जैसे दीदी थी मेरे लिए वात्सल्य । लेकिन इस आश्चर्य से मैं डरता था जबकि वे थे मेरे हीरो । लोग उन्हें मेरा पिता कहते थे, वे मेरे पिता थे....

मृत्यु : तुम उनके कोध से डरते थे कि, उनके व्यक्तित्व से चकित थे ?

उत्तम : ये उनके उत्तर का ढंग था । मैं प्रश्नों के साथ था...

पिता : जो मुझे करना था, कर दिया । अब अपनी जिन्दगी खुद देखो ।

उत्तम : आपने किया नहीं, दिया

पिता : हाँ

उत्तम : मुझे नहीं

पिता : हाँ

उत्तम : आपने जो दिया, वो देने योग्य नहीं था !

पिता : हाँ

उत्तम : मैं सिर्फ मुखाग्नि के लिए हूँ ?

पिता : हाँ

उत्तम : आप मुझे किसे देंगे ?

पिता : मृत्यु को

उत्तम : .... क्यों ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पिता : क्योंकि इतने लोग मर रहे हैं रोज, मरकर तुम्हारे पास से गुजर रहे हैं रोज... फिर भी तुम जीना चाहते हो ?

उत्तम : हाँ मैं जीना चाहता हूँ लेकिन मैं जी तब पाऊँगा जब आँप नहीं होंगे ! लेकिन मैं कैसे जी पाऊँगा जब आप नहीं होंगे ? (स्वगत)

मृत्यु : ये तुम्हारा प्रश्न है कि भय ?

उत्तम : हाँ, कौन ?

मृत्यु : ये तुम्हारा ...

उत्तम : रूको ! क्या तुम आज रात भर के लिए ठहर सकते हो ? मुझे उत्तर मिल जायेगा !

(जाकर लेट जाता है । अचानक उठता है)

क्यों नहीं सोने देते मुझे ? (.) कहाँ गये ?

मृत्यु : यदि सवाल सोने नहीं देते, तो क्यों नहीं हो जाते नचिकेता ? सम्भावना हो तुम !

उत्तम : (पिस्टल लेकर) मैं सम्भावना हूँ... और तुम ? क्या हुआ... कहाँ गये... क्या हो तुम ?

मृत्यु : तुम्हारी सम्भावना का द्वार...

उत्तम : (हँसी आ जाती है) क्या बात है ! ठीक कहा तुमने । अब मृत्यु द्वार ही मेरी सम्भावना का द्वार है... अब तक कहाँ थे दोस्त ! और पहले आना चाहिए था

मृत्यु : पहले से ही हूँ ! एकबार जरा आँख उठाकर मेरी ओर देखो तो सही

उत्तम : कैसे देखूँ दोस्त ! आँखो में...

मृत्यु : नींद नहीं... सपने नहीं... उम्मीद नहीं... यानी पूरी सम्भावना, मुझे देख सकने की

उत्तम : लेकिन अभी मैं कुछ देखना नहीं चाहता । सोना चाहता हूँ । सदियों से जागा हुआ हूँ । अजीब पेशेन्ट हूँ मैं । भूख लगती है, खाना सामने रखा रहता है, खा नहीं पाता । नींद आती है, सोना चाहता हूँ, सो नहीं पाता । अजीब पेशेन्ट हूँ मैं । यस । डाक्टर को फोन करता हूँ, क्या नम्बर है... (ढूंढता है)

मृत्यु : 9839058363

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उत्तम : हाँ, डॉक्टर साब ! सॉरी, इतनी रात डिस्टर्ब किया ! नहीं, मुझे लगता है कि आज रात मुझे सोना चाहिए, नहीं, और रातें भी सोने जाता हूँ । सोने की तरह ही सोया रहता हूँ लेकिन नींद पूरी नहीं होती । आज साउन्ड स्लीप चाह रहा हूँ । खूब सोना । लगता है कि आँखों में नींद है लेकिन दो घण्टे से सो नहीं पा रहा... अनरेस्ट ! मुझे भला कौन सा अनरेस्ट होगा ! मैं रेस्टफुल हूँ । दिन में ग्यारह बजे सो के उठता हूँ । अड्डे पर गपशप करता हूँ... फिर दफ्तर जाता हूँ । शाम के बाद घाट की सीढ़ियों पर बैठ सन्ध्या को उतरते देखता हूँ । रात ग्यारह बजे तक फिर गपशप । फिर लौट आता हूँ अपने इस एकान्त में । ऐल्प्रेक्स 5 MG? है । ले लूँ ? कभी लिया नहीं । हाँ नींद तो है लेकिन सो नहीं पा रहा । ठीक है...(फोन ऑफ) दुखिया दास कबीर है जागे अरू रोवे । कहते हैं सबकॉन्शस में अनरेस्ट है । अरे मुझे कैसा अनरेस्ट ? मैं तो सब पीछे छोड़ आया हूँ । भूल गया हूँ

मृत्यु : अपने पिता को भी ? देखो तुम्हारा इंतजार कर रहे हैं...

(रंग फिर नारंगी । पर्दा फिर बोल उठना चाहता है.)

उत्तम : मुझे कुछ कहना है (सामने रखी आराम कुर्सी से सम्बोधित)

पिता : बोलो !

उत्तम : मैंने मृत्यु को चुन लिया है

पिता : अंततः वही मिलती है

उत्तम : हाँ । इससे पहले कि आप मुझे मृत्यु को सौंपे, मैने खुद उसे चुन लिया है । मैं जा रहा हूँ, उसके साथ । जा रहा हूँ उसी के साथ रहने । जीने । अंतरा... अंतरा नाम है उसका...

पिता : अंतरा ! नाम तो अच्छा है, लेकिन वह मृत्यु नहीं हो सकती । जीवन हो सकती है । मृत्यु नहीं

उत्तम : क्यों ?

पिता : क्योंकि वो स्थायी नहीं है । अन्तरा है

उत्तम : आप सचमुच वाजश्रवा हैं क्या?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पिता : नहीं । मैं तुम्हारा पिता हूँ । सिर्फ पिता । न वाजश्रवा न परमपिता । नचिकेता होते तुम, तो हो सकता था मैं वाजश्रवा । सिर्फ पिता हूँ तुम्हारा । तुम उत्तम हो ।

उत्तम : सिर्फ मुखाग्नि के लिए ? मृत्यु को अग्नि देने से पहले तक मैं मरता ही रहूँ ? लेकिन उस शाम जब मैं लौट रहा था माँ की मुखाग्नि कर, तो मुझे लगा था पहली बार, कि वो मुझमें आ गयी है (स्वगत)

(नारंगी रंग में काला धब्बा)

ऐसा क्यों ? बोलो ...

मृत्यु : क्योंकि जब कोई गौर से देखता है मुझे तो मैं उसमें प्रवेश कर जाता हूँ । मरने वाले की छाया उसे देखने वाले में भाग कर छिप जाती है ताकि अब वो मरने के लिए तैयार हो । इसीलिए देह मरता है, देह के साथ मैं नहीं...

उत्तम : यानी उस शाम जब मैं लौट रहा था, मुँह में राख और सांसों में चिता की जलती आंच लिए तो वो तुम थे जिसे मैं जीवन समझ रहा था ? नदी की शीतलता में नहायी मृत्यु की गंध आयी थी मेरे साथ इस कमरे तक ?

मृत्यु : अभी भी है इस कमरे में । दीदी, पिता, दोस्त, माँ, प्रेमिका, यानी तुम्हारे पूरे संसार की मृत्यु गंध । मृत्यु धुन, उन सबकी जिसको जिसको तुमने मुखाग्नि दी है... ।

उत्तम : तो !

मृत्यु : सबकी छाया लेकर लौटे थे तुम... इस कमरे में, कैसे सो पाओगे !

उत्तम : हाँ, तो !

मृत्यु : पैतालिस साल का उत्तम क्या पूछना चाहता है मृत्यु से ?

उत्तम : तुम ये कहना चाहते हो कि वे मुझे सोने नहीं दे रहे... माँ, बाप, दीदी, दोस्त, प्रेमिका...

मृत्यु : नहीं, मैं कुछ नहीं कह रहा हूँ । मैं कर रहा हूँ । मैं कभी इस पासे को उठाकर वहाँ, तो कभी उस पासे को उठाकर यहाँ रख दे रहा हूँ और तुम मात खा जा रहे हो, और पिस्टल उठा ले रहे हो । जीवन संसार के धोखे में ये जो तुमने अपना मृत्यु संसार बना रखा है, उसमें किसे मारना चाह रहे हो तुम ? मुझे ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उत्तम : तो तुम मुझसे शतरंज खेल रहे हो ?

मृत्यु : नहीं रिमाइन्ड करा रहा हूँ. और तुम ऐलप्रेक्स खा कर सोना चाहते हो ! नहीं देखना चाहते तुम इन मृत्युछायाओं का नर्तन ! तुम तो कवि हो ! संगीत और दर्शन से जीवन के रस को भाषा देते आये हो अब तक ! किसने सोख लिया तुम्हारे सारे जीवन रस को, जिसे तुम्हारे डॉक्टर कहते हैं सबकॉन्शस अनरेस्ट !

(प्रांजल जाकर पर्दे को गौर से देखता है । उलटता–पलटता है । फिर एक–एक पासे को देखता है पखावज के साथ । एक ऊँचे पासे पर कुहनी की टेक लगाये निर्निमेष भाव से वह अपनी माँ के शव को देख रहा है)

उत्तम : न कर्तृत्वम् न कर्माणि लोकस्य सृजति प्रभु
न कर्मफल संयोगं, स्वभावस्तु प्रवर्तते

(बैठे–बैठे मानो पढ़ता है, एक पासे को उठाकर कहीं रखता है, सामने नजर उठा कर देखता है)

खुश ! अब तो खुश ! ये मैं अपनी माँ के शव के पास बैठा हूँ । अपने जीवन संसार में माँ का शव लिए ...तुमने पासा चल दिया ! मैं तो कुछ नहीं कर रहा ! तुम कर रहे हो ! खेल रहे हो ! किससे ? तुम्हारा प्रतिपक्ष कौन है ? मैंने तो तुम्हें न मित्र बनाया न प्रतिपक्ष ! मैं तो तुम्हें जानता तक नहीं !

(पखावज ध्वनि)

मृत्यु : इसका अर्थ जानते हो ?

उत्तम : किसका ?

मृत्यु : गीता के इस श्लोक का ! जो तुमने अभी–अभी पढ़ा... सोयी माँ के सिरहाने ! उन्हीं को सुनाया न ?

उत्तम : माँ ! माँ तुम सोयी हो ? देखो आज मैं जल्दी घर लौटा हूँ । चलो आज मैं भी तुम्हारे साथ सो जाता हूँ ।

मृत्यु : मैं जा रहा हूँ

उत्तम : क्यों ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मृत्यु : ताकि तुम माँ से बात कर सको । ताकि तुम रो सको । तुम चाहते हो कि अभी तुम्हारी पास कोई न हो ।

उत्तम : लेकिन मैंने तो कुछ नहीं किया न ! न तो ईश्वर का कर्ता से सम्बनध है, न कर्म से, न कर्मफल से ... यहीं कहता है न गीता का श्लोक ? तो फिर मैंने कुछ नहीं किया। नहीं किया न ?

मृत्यु : किससे पूछ रहे हो ?

उत्तम : तुमसे !

मृत्यु : मैं ईश्वर नहीं । जाकर ईश्वर से पूछो ।

उत्तम : (हँसी आ जाती है) चलो क्लीअर कर दिया न ! शुरू में ही कहा था मैंने । अन्तरात्मा तुम हो नहीं । ईश्वर तुम हो नहीं सकते । अधिक से अधिक मृत्यु ... बिछा दिये पासे और मेरी माँ तक पहुँच गये । अब कहते हो जाकर पूछो ईश्वर से ? क्या पूछूँ ईश्वर से और क्यों पूछूँ ईश्वर से ? हाँ ? सारा खेल तो तुम्हारा है ! ईश्वर ने कुछ किया नहीं, माँ तुम्हें जिन्दगी भर शिकायत रही कि मैं तुम्हारे करीब नहीं आता । तुम्हें सुनता नहीं । तुमसे बात नहीं करता । तुम्हें माँ कहकर नहीं बुलाता... अब देखो ... सिर्फ हम और तुम ... रात भर बातें करेंगें । देखो कहता है ईश्वर से पूछो। ईश्वर से कुछ लेना–देना नहीं। ईश्वर होता तो मृत्यु कैसे होती. इसीलिए तुम न मृत्यु हो न ईश्वर, सिर्फ माँ हो ... सिर्फ माँ ! ईश्वर से क्यों पूछूँ ? नहीं पूछुँगा । सुना तुमने ! माँ है मेरी ! ये मेरी माँ है ! याद है बचपन में मैं तुम्हारे बगल में कैसे लेटता था कि लेटते ही नींद आ जाती थी । चलो तुम भी सो जाओ । मैं भी । पांव दबा दूँ ? चलो सो जाते है...

( ) (रंग बदलता है...)

मृत्यु : मृत्यु के साथ लेटे हो ?

(उठता है। एक दूसरे पासे के पास जाकर उसे बाहों में समेटता है । पूछता है)

उत्तम : क्या हुआ ? पूछो ! वहाँ माँ के साथ लेटा तो तुम्हें वो मृत्यु दिखाई दी. ये देखो अब मैं बाबा के साथ हूँ । पूछो मृत्यु के साथ बैठे हो ? ये लो ...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(वो पूरे कमरे में बिछे कभी इस पासे तो कभी उस पासे के करीब जाता है)

मैं शुभादी के पास आ गया । अब क्या बोलोगे ? बोलो कि मृत्यु की गोद में सिर रखे हो ! मृत्यु कहीं के ! समझाओ माँ इसे ! हर इंसान में इसे मृत्यु ही दिखाई देती है । ये देखो माँ की गोद में मेरा सिर ! बोलो ! शव की गोद में...

मृत्यु : शव !

उत्तम : क्या ?

मृत्यु : शव की गोद में शव ! शव को बाहों में लिए शव ! शव से बात करता शव !

उत्तम : (हँसता है) ठीक : यहाँ तो हम ही दोनों हैं ! शव से बात करता शव ! सुन भी रहे हैं शव !

मृत्यु : यहाँ हम ही दो हैं !

उत्तम : हाँ !

मृत्यु : फिर चुपचाप सो क्यों नहीं जाते ?

उत्तम : सोने दो तब न ! लेकिन अब मैं वहाँ (बेड की ओर इशारा कर) नहीं सोऊँगा । अब मैं माँ, बाबा और दीदी के साथ सोऊँगा ।

मृत्यु : ठीक !

उत्तम : क्या ठीक ...

मृत्यु : अभी दो और हैं.

उत्तम : क्या ?

मृत्यु : शव !

उत्तम : कहाँ ?

मृत्यु : वो देखो ...

(रंग बदलता है । पर्दे के गुलाबी में मित्र)

उत्तम : (चौंकता है । मुँहफेर कर) मैंने तुमसे कुछ कहा था ? (रोष में)

मित्र : हाँ, कहा था कि तुम कभी दोबारा मेरी सूरत नहीं देखोगे।

उत्तम : फिर क्यों आये हो यहाँ ? ( ) (घूमता है) क्यों आये हो फिर यहाँ ? और क्या लेना बाकी रह गया है? मेरे पैसों पर तुम्हारी निगाह थी और मेरे प्रेम पर ! सब तो नष्ट कर दिया तुमने ! अब ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मित्र : क्यों लेकर चल रहे हो इतना सारा अस्वीकार ?

उत्तम : अस्वीकार लेकर चल रहा हूँ, तुम्हें लेकर नहीं । चले जाओ यहाँ से !

मित्र : तुम्हारी इस घृणा और विरक्ति में भी मेरे प्रति तुम्हारा प्रेम प्रकट हो रहा है, क्योंकि कुछ भी हूँ, मित्र हूँ तुम्हारा !

उत्तम : (जेब टटोल कर) न ! कुछ नहीं है ! न पैसा न प्रेम न जिन्दगी । कुछ नहीं दे सकता । जाओ

मित्र : पैसा और प्रेम जब तक तुम्हारे पास है ...

उत्तम : तभी तक न मित्र हो ! लेकिन मैंने तुम्हारा विश्वास किया था दानिश ! मेरा सब कुछ तुम्हारा था ! प्रेम तक तुम्हारी निगरानी में था और जीवन आसमान की तरह खुला, कहीं से भी कोई देख ले, और तुमने ही मेरे साथ छल किया ? अविश्वास सौंप दिया उसके मन में ? साथी के साथ ही घात ? क्यों किया तुमने ऐसा दानिश ? चले जाओ वरना मेरी पिस्टल की आँख नहीं है, और कानों में सायलेन्सर है ।

मित्र : देखो उत्तम ...

उत्तम : क्या जवाब है तुम्हारे पास ? तुम्हारे परिवार के लिए इतना कुछ किया मैंने, तुम्हें लड़के की तरह समझा मेरे घर ने, माँ ने तुम्हें अपना दूसरा बेटा कहा और तुमने उनके साथ भी...

मित्र : इसीलिए तो मुझे ऐसी मौत मिली न मित्र !

उत्तम : हाँ ?

मित्र : हाँ...

उत्तम : (विस्मय) हाँ! तुम्हारी तो मौत हो चुकी है...पैरालिटिक अटैक फिर गैंग्रीन फिर...मैं तो गया भी था कब्र तक...तुम...कहाँ गये?

(पखावज । मृत्यु हँसी । गन्धर्वः खोजत फिरत हाथ नहीं आना...)

कहाँ गये ... क्यों नहीं सोने देते मुझे ?

मृत्यु : यदि सवाल सोने नहीं देते तो क्यों नहीं हो जाते नचिकेता, सम्भावना हो तुम !

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उत्तम : (भय, औद्धत्य, दुस्साहस, और ठंडी हँसी के साथ) हूँ ? डर को छोड़ दूँ ? अहंकार को छोड़ दूँ ? आदमी हूँ ! इन्हीं के साथ जीना है मुझे... कम, से कम रहना है इस संसार में मुझे ! डर, अहंकार, घृणा, ईर्ष्या, लोभ आश्चर्य, सुख, असुरक्षा, विद्रोह, सफलता, पश्चाताप, प्रेम ...

(मैरून रंग का हो जाता है पर्दा,)

अन्तरा : जब उदास पंखुरी पर गिरती है प्रेम की प्रथम ओस/ जब ठहरी नदी को मिलता है भोर का प्रथम स्पर्श/ तब तुम्हारा हृदय सुनता है मेरी आत्मा का प्रथम गीत... धरती पर उतर रहे स्वप्न की तरह/ नदी पर हो रही बारिश की तरह ... तुम गाती हो शुद्ध स्वरों का विहाग सिर्फ मेरे लिए/ मेरी प्रार्थना का अदृश्य स्वर बन जाने के लिए/ मेरी मुक्ति का दृश्य द्वार बन जाने के लिए/ मेरे आलाप का स्थाई अंतरा बन जाने के लिए... याद है ? कभी तुमने मुझे ये कविता सौंपी थी ! आज भी मैं वहीं हूँ, लेकिन वही नहीं हूँ... शायद, तुम्हारे लिए... क्यों ... ये जानना नहीं चाहूँगी...

उत्तम : सुनोगी ?

अन्तरा : हाँ.

उत्तम : मैं तुम्हारे जीवन में नये सिरे से होना चाहता हूँ प्रेम के मौन में बिना रूके... अपलक !

तुम इस तरह ठहरो जैसे बहती है नदी
इस तरह बहो जैसे ठहरता है स्पर्श
इस तरह सुनो मुझे कि मैं मरता ही रहूँ
तुम्हारे जीने में बिना रूके... अपलक... अक्लान्त !
होती हो बारिश की तरह किन्तु भीगता नहीं
रोती हो पत्तियों की तरह किन्तु सोता नहीं
वक्ष में भरती हो नीला आकाश
किन्तु छूटता ही नहीं...

गरल ही कान्ति मेरी
तुम्हारे प्रेम की प्रतिश्रुति मेरी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तुम्हारी आखों में तुम्हारे हृदय में
अपलक... अक्लान्त... अनवरत !

अंतरा : वक्त ने किस तरह हम दोनों को दो तरह के वक्त में बदल दिया है... अब भी लिखते हो कविता !

उत्तम : लेकिन अब खुद भी नहीं सुनता... अब मृत्यु पढ़ती है कविता! मुझे तो एहसास ही नहीं कि कब मैं मर गया, तुम्हारे एहसास में ! तुमने बताया भी नहीं कि कब तुमने शादी कर ली... और मैंने माँ को खो दिया ...

अंतरा : मुझे एहसास नहीं तुम्हारी इस मृत्यु का ?

उत्तम : और पूछती हो... कविता नहीं लिखता ?

अंतरा : अगर मैं मृत्यु से मिल सकती हूँ तो तुम जीवित भी रह सकते हो

उत्तम : लेकिन तुम्हें सौंपने के लिए अब मेरे पास कोई कविता नहीं !

अंतरा : मृत्यु तो है...

उत्तम : (सिर झुकाकर, उदास मुस्कान) मृत्यु... (एकाएक सिर उठाकर उसकी आँखों में) मृत्यु ... सचमुच बहुत प्यार करता हूँ तुम्हें ...

अंतरा : बहुत !

उत्तम : हाँ बहुत

अंतरा : लेकिन कम, बहुत कम लोगों को होता है यह शौक... मरने का शौक... (श्रृंगार)

उत्तम : (उसके घुटनों पर हथेली) मृत्यु शौक! थोड़ी देर यहाँ सिर रखकर थोड़ा मर जाऊँ ?

अंतरा : मरना है तो थोड़ा क्यों... शादी कर लो

(वो देखता है. वो देखती है. अपलक.)

क्या देख रहे हो ?

उत्तम : न जाने किस अनन्त से उड़कर आयी यह गौरैया मानो मुझे देख रही है, जबकि देख रही है सपना. उस सपने में मैं जी रहा... मर रहा... हँस रहा... रो रहा... ये रात है । सुबह जब वो जागेगी और उड़ जायेगी.

अंतरा : और मैं क्या देख रही... सपना ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उत्तम : तुम तो मर चुकी हो। वहाँ से मुझे देख रही हो, जो दिखता है। तुमने तो ठग लिया है। इसीलिए यहाँ मैं मर चुका हूँ। यहाँ से देख रहा हूँ तुम्हें। जो दिखता है...

अंतरा : क्या दिखता है ?

उत्तम : हूँ... क्या दिखता है... मृत्यु की ओर से क्या दिखता है... बस जो दिखता है... शायद प्रे...

अंतरा : क्या, जरा फिर से बोलो...

उत्तम : अन्तरा ...

अंतरा : क्या, क्या फिर से ... इसका स्थाई बोलो.

उत्तम : न ! डर लगता है.

अंतरा : तो फिर छोड़ो... थोड़ा मर जाओ ...

(वह उसके घुटने पर पूरी आश्वस्ति के साथ सिर टिकाता है। दोनों की आँखें बंद होने के साथ फेड आउट)

(फेड आउट के साथ एक लाइन गा उठते है गन्धर्व : कौन ठगवा नगरिया लूटल हो...। फेड इन। अकेले कमरे में अकेला उत्तम। अन्तरा गायब। मैरून गायब। सिर्फ पीला पखावज। भोरं की अजान सुनाई देती है। आँख मलता है। समय देखता है। शवासन। नींद नहीं। एल्प्रेक्स। नींद नहीं। पासों के पास लेटना। नींद नहीं। उठकर पर्दे को छूता है। पखावज)

उत्तम : रात गुजर गयी। नींद नहीं आयी। शवासन। ऐल्प्रेक्स। सब बोगस। नींद भी अपनी नहीं। तो ? ये चली भोर की शीतल हवा। अब आयेगी नींद (लेटता है)

मृत्यु : आयी ?

उत्तम : आयेगी... मैंने कहा न तुम्हें ! आज रात मुझे नींद आयेगी, मौत नहीं। और यह तुम देखोगे। इसलिए टकटकी लगाये जागते रहो... कब से देख रहे हो एकटक, हाँ, जन्म से ? जब से मैंने आँखें खोली है। यानी मैं नहीं बड़ा हुआ... तुम्हारा जो बीज है मुझमें वो बड़ा हुआ है! वो बीज आज वृक्ष बनकर सामने आया है और तुम्हारी हिम्मत हो सकी है मुझसे बात करने की! उत्तम से बात करने की! लेकिन सामने भी कहाँ आ पाये हो ! इतने बड़े हो गये और

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

छुप–छुप कर पासे चल रहे हो ! पूछते हो किसने सोख लिया है मेरे जीवन रस को ! क्यों, बोलों क्यों ? एक भी रस ऐसा नहीं बचा जीवन में जिसमें मृत्यु न घुल गयी हो... क्या श्रृंगार, क्या आश्चर्य, क्या हास्य, क्या भय... जिसे–जिसे मैंने अपना समझा, जिस–जिस रिश्ते को मैंने स्पर्श करना चाहा, मुझसे पहले वहाँ पहुँच कर तुमने अपने दाँत गड़ा दिये ! हर रस में तुमने एक ऐसा रस घोल दिया, ऐसा रंग चढ़ा दिया कि आदमी जीने लायक ही न रहे ! और आखीर में शान्ति को भी डस लिया... कहते हो अनरेस्ट । कहते हो इसीलिए नहीं सो पा रहा मैं ! अकेले अपने एकान्त में जी रहा था मैं किसी तरह, और प्रकट कर दिया मेरा मृत्यु संसार ! भर दिया इस पूरे कमरे को श्मशान की राख से ! हर तरफ मृत्युगंध... मृत्यु धुन ! लाकर मेरे सामने रख दिये मेरे प्रियजनों के शव ! क्या बताने, कि इनके कारण मैं सो नहीं पा रहा ? कि मेरी नींद से बड़ी है तुम्हारी जागृति ? कि तुम नचिकेता के यम हो फिर भी मैं नहीं चल सकता मृत्युहीन जीवन में ? खुद को इतना महान समझ लिया है तुमने ? देखो मैं किस तरह सोता हूँ आज ! रात तो अब ढल चुकी, भोर की अजान भी हो गयी लेकिन सुनो, कि इस रात की कोई भोर नहीं है। जागूंगा जब मैं तो इस सृष्टि के प्रेम को मिलेगा भोर का प्रथम स्पर्श ! तुम सुनोगे मेरी आत्मा का गीत पहली बार, और लोगों के रंग और रस और राग होंगे मृत्यु से पूरी तरह मुक्त ! इसीलिए आज मुझे सोना है, एकान्त बिस्तर पर नहीं, इन सबके साथ, इस कमरे के पूरे विस्तार में ! देखो ये रहे बाबा...

(वो एक–एक पासे को बिस्तर से दूर क्रमशः संयोजित करता जाता है.)

ये मेरी माँ, ये शुभा दी, ये दानिश, ये अन्तरा... इन सबके साथ सोऊँगा आज मैं ! शवदाह से पहले चौरान्बे तुम्हारी और छह ईश्वर की न ! ये एक, ये दो, ये तीन, ये चार, ये पाँच और ... हाँ. छठा मैं ! इन सबके साथ मैं चला सोने... नहीं, ये भी क्यों बचे ! आज रात सबके साथ ! इस पूरे कमरे में आज रात मैं सोऊँगा सबके

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

साथ। तुम देखोगे, ताकि शव होने से पहले ये शिव हो सके। कहाँ छुप गये सारे रंग ...

(उलझ पड़ता है पर्दे से)

कहाँ छुपा दिये सारे रंग को !

(पिस्टल ले आता है)

बोलो, क्यों नहीं सोने देते मुझे ? दिखाते हो मुझे मृत्यु रंग....

(गोली चलने की आवाज। पर्दा समेत उत्तम क्रमशः फेड। पूरी रौशनी रिक्त बेड पर, और आवाज 'उसे अभी भी नींद नहीं आयी है'। 'शून्य गढ शहर...' पूरा होता है। कम्पलीट फेड आऊट में 'नैहरवा हमका न भावै...' के साथ बिल्कुल दूसरे कोने में खुले बालों से झिरते अन्य प्रकाश रंग में बैठी अंतरा। अस्पष्ट सिल्यूट आकृति। लाल परिप्रेक्ष्य। इन दो दृश्यों के बीच धुआँ सा कुछ)

(फेड आऊट)

(फेड इन)

(पासों के पिरामिड से आगे बढ़ती अंतरा आगे मृत्यु। साथ में शुभादी)

मृत्यु : तुम ?

अंतरा : हाँ मैं

मृत्यु : क्यो ?

अंतरा : ये प्रश्न तो मेरा है !

मृत्यु : जैसे शव ?

( ) (ढूंढती है)

क्या हुआ ?

अंतरा : मैं प्रश्नों के साथ हूँ। और प्रश्न नहीं चाहिए मुझे !

मृत्यु : वो भी था... प्रश्नों के साथ... नहीं बन सका नचिकेता... शव बन गया

अंतरा : (ढूँढती है) नचिकेता... कौन ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मृत्यु : न आग्रह था, न विनय, न तितिक्षा, न भय !

अंतरा : तो ?

शुभादी: तुम चाहती तो वो बच सकता था !

अंतरा : और तुम... बच सकी ? जो बचना चाहते हैं वे आत्महत्या नहीं करते । आत्महत्या वे करते हैं जो जीना नहीं चाहते..

शुभादी: जैसे ये शव ?

(अंतरा ढूँढती है)

मृत्यु : क्या हुआ ! लौट सकती हो तो लौट जाओ

अंतरा : मैं लौटने नही आयी हूँ यहाँ तक ! लौटूँगी । जरूर लौटूँगी लेकिन, जीवन लेकर

मृत्यु : (हँसी) मृत्यु से माँगती है जीवन ! जैसे वो मांगता था एक मृत्युहीन जीवन !

अंतरा : ए ! ये विषधरका विष है, कोई गरल नहीं, कि उतारा न जा सके किसी मंत्र से !

शुभादी: लेकिन वो तो कहता था, गरल ही कांति मेरी ?

अंतरा : वो कहता था। मैं नहीं। अब नहीं कहेगा। कान्ति ही जीवन होगा

मृत्यु : ऐसा ?

अंतरा : हाँ। मैंने उसे शब्द दिया है, कि यदि मैं मृत्यु से मिल सकती हूँ तो तुम जीवित भी रह सकते हो। हमेशा

मृत्यु : तुमने क्या खुद को सावित्री मान लिया है ?

अंतरा : सावित्री कौन ? तुम्हें आश्चर्य है ?

मृत्यु : अपने पर इतना विश्वास ?

अंतरा : अपने पर नहीं, अपने प्रेम पर.

मृत्यु : अन्तरा !

अंतरा : हाँ, मैं तो ऐसी ही हूँ

मृत्यु : ऐसा ?

अंतरा : हाँ

मृत्यु : तो जाओ काशी, देखो गंगा, करो तर्पण, और शान्ति दो उसकी आत्मा को

अंतरा : क्या ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मृत्यु : अपने प्रेम की आत्मा को. शान्ति दो। मुक्ति दो। सोना चाहता था। मैंने सुला दिया। स्थाई नींद में पड़े अब इस शव को सम्भालो स्थाई नींद की अन्तरा ! हांलाकि उसे अभी भी नींद नहीं आयी है... मेरे मृत्यु रस और तुम्हारे मृत्यु प्रेम के बावजूद ! जाओ और बाहों में भर लो अपने प्रेमशव को ...

अंतरा : ए ! तुम्हें शव के अलावा कुछ सूझता नहीं क्या ? जैसे ये शव... जैसे वो शव... शव बन गया... शव को सम्भालो... हर तरफ तुम्हें शव ही दिखायी देता है... प्रेम शव... प्रेम भी तुम्हारे लिए शव है ! संसार की ओर देखते हो तो तुम्हें शव ही शव नजर आता है... कभी अपनी ओर भी देखो ! दिखा... मृत्यु शव ? और ये तुम किसे शव कह रहे हो... उत्तम को ? ये तुम्हें शव नजर आ रहा है ? ये मेरा प्रेम है, शव नहीं. प्रेम का शव नहीं होता और जो शव की तरह है वो प्रेम नहीं हो सकता ।

मृत्यु : और ये तुम्हारा विश्वास है

अंतरा : मैं तो ऐसी ही हूँ !

मृत्यु : तुम्हें भी कोई मृत्यु भय नहीं ?

अंतरा : मृत्यु भय ! जब मृत्यु ही नहीं तो भय कैसा ?

मृत्यु : (हँसी) इतनी दूर मेरे साथ चल कर आ गयी तो अब कहती हो न मृत्यु न मृत्यु भय ! वो भी कहता था। कहता था, मेरी मृत्यु हो ये अपनी जगह है लेकिन मृत्यु का भय नहीं है ।

अंतरा : हाँ, उसे मृत्यु भय नहीं ...

मृत्यु : अरे सबसे बड़ा भय तो तुम्हें लेकर था, तुम्हारी मृत्यु को लेकर...

अंतरा : मेरी मृत्यु ... मैं कब मरी ?

मृत्यु : तुम मरी नहीं थी, इसका उसे भय था कि कहीं वो तुम्हें खो न दे

अंतरा : हाँ। तो ये तो प्रेम है। ये तुम्हें मृत्यु भय नजर आता है ?

मृत्यु : नजर नहीं आता, है। ये मृत्यु भय ही है (अन्तरा की हँसी) इसमें हँसने की बात नहीं है। इसी धोखे में वो मरा। बच सकता था। मैंने उसकी मदद की। मैंने उसे दिखाया कि जिस–जिस भाव में वो रस लेता है उस–उस रस में मृत्यु भाव है, किसी एक रस का नाम लो

(पर्दे पर सारे रंग दुहराये जाते हैं.)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जीवन के सारे रसों में सिर्फ मैं स्थाई हूँ। रस लेते ही प्रकट हो जाता हूँ। मनुष्य के प्रत्येक भाव में मेरा ही स्थाई भाव है। ये मैंने उसे दिखाया। मैं उसे खो न दूँ, कोई जान न जाय, ऐसा हो गया तो मेरा क्या होगा, यदि ये न रहा यदि वो न रहा, घृणा, ईर्ष्या, लोभ... जितने भी भाव हैं उतने ही भय है। और सारे भय दरअसल मृत्यु भय है। उत्तम की सारी प्रतिक्रिया इसी भय की प्रतिक्रिया थी। इसे वो रिश्ता समझता था। माँ, बाबा, दीदी, दोस्त, तुम... । जहाँ रिश्ता होता है वहाँ रिश्ते का भाव नहीं होता । और जहाँ भाव होता है वहाँ उस रिश्ते की मृत्यु नहीं ।

अंतरा : तुम्हें ये भय नहीं ?

मृत्यु : ( )

अंतरा : क्या हुआ मिस्टर डेथ... सॉरी मिस्टर रूलर ऑफ डेथ ! तुम्हें ये भय नहीं ?

मृत्यु : नहीं.

अंतरा : सचमुच ?

मृत्यु : हाँ। मैं तो ईश्वर के शाप से शापित होकर इस मृत्युलोक में हूँ। भेजा गया हूँ। मैं अभी चन्द्रलोक जा रहा हूँ। तुम्हारे चन्द्रमा पर नहीं । तुम लौट जाओ । मेरे पीछे मत आओ । न मैं यम हूँ कि तुम्हें वर दे सकूँ न तुम सावित्री हो कि दोबारा अपने सत्यवान को जीवित कर सको । तुम इस समय की अन्तरा हो बस, और मैं तुम्हारा स्थाई । मुझे उत्तम का प्राण लेकर लौटने दो । मैं तुम्हें उसकी स्मृति लेकर लौटने का मार्ग प्रशस्त करता हूँ । जाकर शव की अन्त्येष्टि करो । सम्भव हो तो काशी में । लो मैंने शव को काशी में रख दिया । अब घाट तय कर लो– मणि बाबू कि हरि बाबू ! ( ) क्या हुआ आत्मबल डगमगा गया ? अन्तरा ? ए !

अंतरा : शव काशी में है तो प्रेम कहाँ है, आस्था कहाँ है, उत्तम कहाँ है?

मृत्यु : वहीं है जहाँ था। तीनों लोक यहीं हैं । भय लोक भी, भव लोक भी, भाव लोक भी । इन्हीं का अनुकीर्तन देह में होता है । देह छोड़कर कोई कहीं जाता नहीं । वह वहीं रहता है, जहाँ वो था । उस स्तर पर जहाँ तक की तैयारी उसने देह में रहकर की थी ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देह बदलने से बस देश बदल जाता है । काल बदल जाता है । वो कथा के देश में था । कविता के देश में आ गया। तुम्हारे बिल्कुल करीब है तुम्हारा उत्तम , लेकिन अब न सम्पर्क सम्भव है न संवाद !

अंतरा : झूठ बोलते हो तुम ! ये भ्रम कहीं और फैलाना ! मैं तुम्हारा प्रवचन सुनूँ ? तुम्हारा सरोकार देह के देश से है और मेरी आस्था प्रेम के देश में है ।

मृत्यु : फिर क्यों आयी हो मेरे पास ! मैं तो नहीं गया तुम्हारे पास ?

अंतरा : वो भी तो नहीं गया था, तुम्हारे पास ?

मृत्यु : हाँ

अंतरा : क्यों ?

मृत्यु : क्योंकि मुझे उसमें नचिकेता सी सम्भावना दिखी थी उसके नचिकेता होते ही मैं मृत्यु से यम हो जाता और उसे मृत्युहीन जीवन का द्वार दिख जाता

अंतरा : लेकिन ऐसा हुआ नहीं न ! तुमने तो उसे हमेशा के लिए सुला दिया !

मृत्यु : नहीं। यही तो अफसोस है । वो सोना चाहता था। उसे अभी भी नींद नहीं आयी है

अंतरा : क्या ?

मृत्यु : हाँ । वो अभी भी सोने की कोशिश कर रहा है । तकलीफ और बढ़ गयी है, उसकी दुगर्ति हो रही है

अंतरा : क्यों ?

मृत्यु : क्योंकि उसने आत्महत्या की है । क्योंकि उसने ईश्वर द्वारा निर्धारित आयु अन्तराल का अपमान किया है । इसलिए उसे शेष निर्धारित आयु की यही यातना भोगनी है । उसे सोना है लेकिन अब सोने के लिए उसके पास देह नहीं रही । इसका उसे एहसास नहीं । उसे तो अपनी मृत्यु का भी एहसास नहीं । अपनी काल्पनिक देह को वो पार्थिव देह समझ रहा है । यह दुगर्ति उसका दण्ड है । वो छटपटा रहा है....

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा : कहाँ है, कहाँ है मेरा उत्तम ? मैं उसकी कोई तकलीफ बर्दाश्त नहीं कर सकती ! कहाँ है वो ? तुम झूठ बोल रहे हो ! तुम मेरी आस्था को आहत कर अपवित्र करना चाह रहे हो ! मेरे पास अभी भी उसकी आहट है ! ए ! यदि तुम सही हो तो उसकी स्थिति मुझे भी दिखाओ ! ( ) क्या हुआ ! क्या हुआ झूठे !

मृत्यु : देख सकोगी ?

अंतरा : हाँ

मृत्यु : मृत्यु के बाद न कोई देह को देखना चाहता है न उसके प्रेत को नरक यंत्रणा से गुजर रहे उत्तम को भी तुम देखना चाहोगी ?

अंतरा : मैं तो ऐसी हूँ हूँ !

मृत्यु : तो फिर देखो –

(एक विशेष प्रकाश में मानो किसी कंटीली जंजीर में जकड़ा उत्तम रोने और डूबने और जलने के किसी मिश्र प्रभाव की ध्वनि में कुछ बोल रहा है । अन्तरा ये देख नहीं पा रही । वो अन्तरा को सुन नहीं पा रहा)

अंतरा : उत्तम ! अरे उसे ये क्या हो गया ?

मृत्यु : चलो तुमने इतनी प्रेतात्माओं में अपने उत्तम को तलाश लिया

अंतरा : लेकिन ...

मृत्यु : तुम दोनों में न सम्पर्क सम्भव है न संवाद, क्योंकि तुम दोनों अलग–अलग देशकाल में हो !

अंतरा : क्यों किया तुमने मेरे उत्तम के साथ ऐसा ! तुम्हें मेरे शाप का भी भय नहीं !

मृत्यु : है । लेकिन अब मैं उसका कुछ नहीं कर सकता

अंतरा : मेरा तो कर सकते हो ?

मृत्यु : क्या ?

अंतरा : या तो मुझे भी वहीं भेज दो या फिर उसे उसकी मनुष्य देह में वापस लौटा दो !

मृत्यु : मुझे मालूम था कि तुम यही कहोगी ! ये हर युग की सावित्री का कथन है, लेकिन दोनों सम्भव नहीं । न मैं तुम्हें उसके पास भेज

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सकता हूँ न वो दोबारा उस पुरानी देह में लौट सकता है ! तुम उसे अभी जो बोलोगी वो उसे एक साल पहले सुनाई दे चुका है और वह जो बोल चुका है वह तुम्हें एक साल बाद सुनायी देगा !

अंतरा : यानी वो मेरे बिना मर नहीं सकता और मैं उसके बिना जी नहीं सकती ... इसलिए यदि तुम्हें मेरे शाप से बचना है तो उसे फिर से एक मनुष्य देह सौंपो। सम्भव हो तो वही, जिसमें वो पहले था ।

मृत्यु : मृत्यु से बड़ी है तुम्हारी प्रेम शक्ि।. इसलिए मैं उसे उसके इच्छानुसार एक देंह एक वर्ष के लिए सौंपना चाहूँगा। तुम अपनी प्रेमशक्ति से तीन मिनट तक उससे बात कर सकती हो। उससे पूछ लो फिर बताओ उसकी पसंद की देह। मैं सौंप दूँगा

उत्तम : ये तुम मुझे कहाँ ले आयी हो ? मैं सो क्यों नहीं पा रहा ? अन्तरा, बड़ी घुटन है, मुझे यहाँ से जल्दी कहीं ले चलो...

अंतरा : तुम मर चुके हो उत्तम ! तुम अब देह में नहीं.

उत्तम : क्या...

अंतरा : वक्त मत गँवाओ उत्तम ! जल्दी बोलो...

उत्तम : नहीं सबसे पहले तुम मुझे एक देह दे दो.. कोई भी देह ! मुझे जोर से नींद आ रही है। मैं सोना चाहता हूँ

अंतरा : वहीं देह दे दूँ.. वही तुम्हारी देह !

उत्तम : नहीं। मनुष्य देह नहीं। वो देह मेरी नहीं। मेरे चरित्र के अनुसार मुझें देह सौंपो अन्तरा ! मेरा चरित्र यदि श्वान का है तो मुझे श्वान की देह मिले, यदि लोमड़ी, गिद्ध या भेड़िया का चरित्र है तो रूप भी उसी का मिले। कम से कम लोग मुझे पहचान तो सकेंगे ! एक बार फिर मनुष्य रूप में कोई और चरित्र लेकर जीना नहीं चाहता....

अंतरा : नहीं !

उत्तम : प्लीज अन्तरा ! यदि तुमने मुझसे प्रेम किया है तो कोई भी एक देह दे दो... मैने देह की हत्या कर बहुत बड़ी गलती कर दी है। मुझसे बहुत बड़ा पाप हो गया है अन्तरा ! ये यंत्रणा मुझसे सही नहीं जा पा रही है। मुझे बचा लो। मैं कोई चरित्र नहीं निभाना चाहता। मैं अपने चरित्र से बाहर आना चाहता हूँ...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(आवाज धुंधली होती जाती है)

अंतरा : उत्तम !

मृत्यु : समाप्त ! संवाद का अन्तराल समाप्त हुआ ! अब ? क्या हुआ ?

अंतरा : तुमने उसका जीवन तो लिया है लेकिन अभी मृत्यु नहीं सौंपीं है जल्दी करो । वो तकलीफ में है। उसे शान्त करो। मैं हाथ जोड़ता हूँ तुम्हारे मृत्युदेव। उसे मृत्यु दो

मृत्यु : न मैं कुछ ले सकता हूँ न कुछ दे सकता हूँ। मैं तो ऐसा ही हूँ !

अंतरा : तो फिर आते क्यों हो ? डराने ?

मृत्यु : नहीं. आगाह करने, कि सम्भावना खो चुके, कि सम्भावना है जीवन !

अंतरा : तो तुम नहीं दोगे ?

मृत्यु : क्या ?

अंतरा : मृत्यु हो तो क्या जीवन दोगे ? मृत्यु दो उत्तम को. अशांत है वो छटपटा रहा है... दे सकते हो तो उसे मृत्यु की देह दो ताकि वो मर सके । मुझसे उसकी तकलीफ देखी नहीं जा रही। ऐसे तो मैं देह में रहकर भी छटपटाती रहूँगी। वो देह से बाहर आकर भी तकलीफ में है।

मृत्यु : देह मिलेगी उसे तो कैसे मरेगा वो ? सिर्फ सो सकेगा वो ! (हँसी) मरने के लिए देह माँगती है. अरे तब तो लोग उसे जीवित समझेंगे ! यह चतुराई कभी सावित्री ने की थी और यम को बातों में लुभा कर सत्यवान को वापस देह दिला दी थी। इस बार वही चतुराई तुम दिखा रही हो । लेकिन मैं तुम्हारी बातों में आने वाला नहीं। कहती है उत्तम को देह दे दो। मरने के लिए देह माँग रही कि उसे जीवित रखने के लिए ?

अंतरा : (हँसी आ जाती है) मरने के लिए होती है देह, कि जीने के लिए बुद्धूदेव ?

मृत्यु : उसने तो जीने के लिए चुनी थी देह, तुम मरने के लिए माँग रही हो ?

अंतरा : नहीं, उसे इसकी समझ है । उसे मरने के लिए देह चाहिए। जीने के लिए ...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मृत्यु : जीने के लिए ?

अंतरा : मैं हूँ न, जीने के लिए ...

मृत्यु : जीने के लिए उसने किसे चुना ?

अंतरा : ईश्वर को

मृत्यु : नहीं

अंतरा : हाँ

मृत्यु : नहीं जीने के लिए उसने तुम्हें चुना था

अंतरा : हाँ, तो ? तुम्हें चुनता ? तुम्हें कोई क्यों नहीं चुनता ? आदमी प्रेम को ही चुनता है। मृत्यु को नहीं। तुम्हीं ने कहा था कि मृत्यु से बड़ी है प्रेम शक्ति। संघर्ष मेरा तुम्हारा ही तो है। जिसे प्रेम नहीं मिलता, उसे मिलती है मृत्यु, तो कर पाते हो तुम अट्टाहास। ईर्ष्या हो रही है मुझसे? च्च च्च च्च कोई नहीं करता तुमसे प्रेम..

मृत्यु : मैं करता हूँ सबसे प्रेम ।

अंतरा : फिर भी जीने के लिए उत्तम ने मुझे चुना था ।

मृत्यु : इसीलिए तो तुम मरी.. उसने तुम्हें खोया और उसकी ये दुर्गति हुई.

अंतरा : क्या ?

मृत्यु : हाँ

अंतरा : मैं कब मरी ?

मृत्यु : तुम्हें याद नहीं ? उसके सामने चुनाव था। या तो वो ईश्वर को चुने या फिर संसार को यानी तुम्हें। उसने तुम्हें चुना इसलिए दुःख मिला। पिछले जन्म से चल रहा है अभी तक दुःखों का सिलसिला।

अंतरा : क्या मतलब ?

मृत्यु : हाँ। अरूप से खुद आकर पूछा था पिछले जन्म में ईश्वर ने, कौन चाहिए ईश्वर या रूपा ? उसने रूपा को चुना था । इसलिए खोया था और मिला था दुःख । वही अरूप इस जन्म में उत्तम है और रूपा तुम हो । इस जन्म में भी उसने तुम्हें चुना इसलिए वंचित हुआ ईश्वर सुख से और मैं विजयी हुआ।

अंतरा : अरूप रूपा की कथा हमारी कथा है ?

मृत्यु : हाँ

अंतरा : उस बार भी तुम जीते थे ईश्वर हारा था ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मृत्यु : हाँ

अंतरा : इस बार भी तुम जीते हो और ईश्वर हारा है ?

मृत्यु : हाँ

अंतरा : लेकिन मैं तो नहीं हारी न ! इस बार हारने की बारी तुम्हारी है ।

मृत्यु : (हँसी) देखा जाय। तुम्हारी शक्ति तो चली गयी। देह की हत्या कर छटपटा रही। शान्ति के लिए देह माँग रही। कहाँ से दोगी ? सारी देहों पर तो मेरी निगाह है। मेरा पहरा है। मैं रहूँगा जब तक तब तक सुनोगी तुम मृत्यु की दस्तक। प्रेम एक बार फिर अपदस्थ हुआ। तुम हार गयी अंतरा ।

अंतरा : ए ! आखिरी बार पूछती हूँ। तुम उत्तम को देह दे सकते हो ?

मृत्यु : नहीं

अंतरा : मृत्यु दे सकते हो ?

मृत्यु : नहीं

अंतरा : तो फिर मैं जीत गयी (हँसी) पासा पलट गया। जब तुम कुछ कर ही नहीं सकते तो तुम्हारी जरूरत क्या है ?

मृत्यु : क्यों ?

अंतरा : भाई तुम तो कुछ भी नहीं कर सकते। न मृत्यु दे सकते हो न जीवन। न देह दे सकते हो, न ले सकते हो देह। यदि मृत्यु होते तो शांति मिलती उत्तम को। रूप या देह ले सकते हो न, तो लेकर जाओ। उत्तम तो सही सलामत है। उसका तो तुम कुछ भी नहीं बिगाड़ सके। वो तकलीफ में है तो अपने कारण। लौट सको तो लौट जाओ अपने चन्द्रलोक। मैं सम्भाल लूँगी। तुम उसकी देह लेते भी तो दूसरी देह मिल जाती उसे

मृत्यु : लेकिन वो तो तकलीफ में है ?

अंतरा : तो ? तुम्हें क्यों तकलीफ हो रही है ? मैंने कहा न मैं सम्भाल लूँगी । तुम जाओ । तुम्हारी कोई जरूरत नहीं रही। तुम्हारी कोई जरूरत ही नहीं लोगो को

मृत्यु : अन्तरा !

अंतरा : मैं तो ऐसी ही हूँ

मृत्यु : तो तुम दोगी उसे देह ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा : हाँ
मृत्यु : तुम दोगी उसे जीवन ?
अंतरा : हाँ
मृत्यु : कैसे ? देह मिलते ही तो वो मेरी गिरफ्त में आ जायेगा!
अंतरा : नहीं। इस बार ऐसा नहीं होगा मिस्टर डेथ.. सॉरी .. सॉरी मिस्टर रूलर ऑफ डेथ! मैं उत्तम को ऐसी देह दूँगी कि तुम देखते रह जाओगे । कुछ नहीं कर पाओगे
मृत्यु : कैसी देह ?
अंतरा : प्रेम की देह.
मृत्यु : प्रेम की देह ?
अंतरा : हाँ । देख सकोगे ? मैं उसे प्रेम की देह सौपूंगी और उसी में उसे शांति भी मिलेगी और मुक्ति भी
मृत्यु : नहीं ऐसा मत करो.
अंतरा : मैं ऐसा ही करूँगी.
मृत्यु : नहीं। फिर तो मेरा अस्तित्व ही नहीं रहेगा
अंतरा : न रहे, वैसे भी कहाँ है ? सिर्फ भ्रम है। डराते हो तुम लोगों को। ज़ाओ । अब प्रेम की देह में रहेगा उत्तम मृत्यु की देह में नहीं। जाओ अपनी सबसे उदास कविता लेकर। और हो सके तो अपने शव पर शोकगीत गाओ

(राधा कृष्ण का दो युग्मी अर्धनारीश्वर)

(अगला दृश्य)

रूपा : आज भी लिखते हो कविता ? (श्रृंगार)
अरूप : आज ही लिखी है. अभी–अभी सुनोगी.
बारिश की पीठ पे चेहरा टिकाये,
देखती हो तुम
तो भीगता है बचपन और भीगती हैं मेरी आँखें
भीगती होगी शायद तुम्हारी
सपनों की बारिश भी
भीगते मन के कोरों को आश्वस्त करने
कि इस बार रूला के नहीं लौटेगी बारिश

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

और हँसती रहोगी तुम हर मौसम में
मृत्यु के पार जाकर भी ।
कैसी लगी ? अरे ! (रूपा को सम्भलता है)

रूपा : कुछ नहीं बस मैं मरने लगी थी तुम्हारी कविता में

अरूप : तो फिर थोड़ी देर यहाँ मैं सिर टिका कर मर जाऊँ ?

रूपा : थोड़ा क्यों पूरा मर जाओ। मरते भी तो नहीं । न जीने देते हो। ए ! बोलो न !

अरूप : कल बोलूँगा। अभी मुझे ठीक से मरने दो

रूपा : पहले बताओ। आज रात तुम मेरे साथ जागोगे न ?

अरूप : पहले मुझे सोने दो

रूपा : जागना भी चाहते हो और सोना भी चाहते हो। नींद कैसे आयेगी भला! डर लगता है ?

अरूप : ओफ ! मरने भी नहीं देती

रूपा : तो मर जाओ न ! लेकिन पहले बताओ डरते हो ?

अरूप : नहीं पहले मुझे तुम्हारी गोद में सोने दो

रूपा : नहीं पहले बताओ ?

अरूप : क्या ?

रूपा : डरते हो ?

अरूप : मैं चला सोने (अचानक) हाँ डरता हूँ.

रूपा : किससे ?

अरूप : ट्रक ड्राइवर की बीवी से

(शून्य गढ़ शहर ...)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वप्न छन्द

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अपनी हवेली में अकेली रहती है संघमित्रा। इस वक्त उसकी इस हवेली में तीन पुरूष आकर रह रहे हैं। एक उसका प्रेमी जिससे यदि सम्भव हुआ तो विवाह सम्पन्न होगा, दूसरा उसके इलाहाबाद विश्वविद्यालय की पढ़ाई के समय का दोस्त जो इस वक्त इस शहर में इन्टरव्यू देने आया है और यहाँ ठहरा हुआ है और तीसरा दूर का उसका मुंहबोला भाई जो दरअसल सम्पत्ति के लिए हत्या के इरादे से उसके पास आया है किन्तु अन्य दोनों पुरूषों से उसके सम्बन्ध को देखकर दिलचस्पी लेने लगा है। तीनों तीन कमरे में ठहरे हैं। दूसरी ओर संघमित्रा एक स्पैस्टिक रोगी से शादी कर ली है जिसका नाम ईश्वर है जिसके बारे में अन्त में पता चलता है। संघमित्रा को छोड़कर सारे पात्र मंच की एक ओर बैठकर कथावाचक समेत वैसे ही संवादों का रंगमंचीय पाठ कर रहे हैं जैसे नृत्य में पार्श्व मंच पर बोल पढ़ंत होता है। संघमित्रा नृत्यांगना के रूप और चरित्र में। पृष्ठ में एक कुर्सी के ऊपर कैरम का एक रिक्त और विशाल बोर्ड।

इस नाटक का प्रथम मंचन वाराणसी में वर्ष 2000 में हुआ था।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(यूँ तो उसके नृत्य के सारे आवर्तन अन्धेरे में हैं किन्तु ध्वनियाँ प्रकाश में हैं । ये ध्वनियाँ एकाएक खामोश होती जाती हैं और जारी नृत्य के अन्धेरे आवर्तनों के बीच पहले सुनायी देता है कुमार गन्धर्व के कण्ठ में 'उड़ जायेगा हंस अकेला..' का आलाप और फिर इसके विलीन होने में सुनायी देते हैं शब्द। ये प्रकट होते नेपथ्य शब्द हैं......हल्के पीले प्रकाश में । वह काले दुपट्टे और काले रिबन के साथ है)

स्वर : ये कथा है एक देह की जिसमें शायद कोई स्त्रीमन है....स्त्री का पता नहीं इसलिए इस मन की भी ठीक–ठीक कोई खबर नहीं.... शताब्दियों से कोई खबर नहीं । सिर्फ कुछ आहटें हैं जो इस देह के अपने देशकाल में ही व्यक्त होती है ... (कुमार गन्धर्व) यदि आप इन आहटों को महसूस कर सकें तो आपको दिखायी देगा, कि मन की तरह यह देह भी विभाजित है.... यह विभाजित है तीन आकाशों में ...., यह है देह का समय (नृत्यरत अन्धेरे देह के इर्द–गिर्द तीन प्रकाश–स्तम्भ पीला, लाल व हरा – एक–एक कर प्रकट होंगे, देह पर प्रकाश नहीं, देह के ये तीन प्रकाश हैं जिनसे छिटककर जितने कम प्रकाश–कण देह बन कर सके, उतना ही सुन्दर), यह है देह का विचार (दूसरा स्तम्भ) और यह रहा देह का भाव (तीसरा....इनके प्रकट होने और नृत्य के तीन उठानों में गति और ठहराव की एक संगति, एक–एक ठहरे हस्तक के साथ एक–एक प्रकाश स्तम्भ) ये ही तीनों देह के प्रकाश हैं, इनके कारण देह पर बस इतना ही प्रकाश है.....अब इस देह के पीछे जो अभिनेत्री है उसका पता हो तो वह देह में प्रकाशित हो.... (वह हँस पड़ती है)

वह : तुम क्यों चाहते हो कि मैं सिर्फ देह में व्यक्त होऊँ ?
(तीन रंगों के प्रकाश–स्तम्भों में से एक)

प्रथम पुरूष स्वर : मेरी रूचि अव्यक्त में है, कि उसमें क्या है जो व्यक्त होने जा रहा है (पहली बार पखावज की ध्वनि) क्या है जो व्यक्त होना चाह रहा है !

वह : (खिलखिलाकर हँस देती है) यह तुम्हारी इच्छा में है या अव्यक्त की .... प्रथम पुरूष ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(कोई प्रतिक्रिया न पाकर)

.....क्या हुआ, चलो, उत्तम पुरुष ?

मूल स्वर (कथावाचक) : यह तुम किससे पूछ रही हो संघमित्रा ? कौन है वहाँ, कोई तो नहीं । अब सिर्फ तुम ही बची हो .... एक प्रश्न की तरह । (दर्शक को) बल्कि उसके इस प्रश्न में भी वह नहीं है । स्वयं का प्रश्न और स्वयं अनुपस्थित ! जीवन वृक्ष से कुछ पत्तियाँ गिरती हैं और मनुष्य इतना रिक्त रह जाता है ? इतना रिक्त कि प्रश्न में भी अनुपस्थित .... एक, दो, तीन.... सिर्फ तीन पत्तियाँ चुनी थी उसने .... तीनों उड़े, और न जाने कहाँ गिरे ....! वो सिर्फ जानती है कि वह बिखर गयी है और रह गयी है सिर्फ एक गूँज.... रिक्तता की गूँज .... (अब तक काला दुपट्टा व रिबन लाल दुपट्टे व लाल रिबन में बदल चुका है)

प्रथम स्वर : मैं प्रेम हूँ, तुम प्रेम के लिए ही बनी हो । तुम मुझमें विन्यस्त होकर ही मुक्त हो सकती हो ।

मूल स्वर : उसने कहा था । और संघमित्रा ने प्रश्न नहीं किया था । सिर्फ सुना था । विचार से प्रेम में उसका स्खलन है, वह नहीं जानती थी । उसने सिर्फ सुना था । उसने सुना था ...

प्रथम स्वर : जब मैं कहूँगा वृक्ष तुम कहना आकाश । जब मैं कहूँगा प्रेम तुम कहना घर ।

मूल स्वर : फिर ? फिर अचानक क्या हो गया था संघमित्रा ? इतनी आश्वस्ति और निरापद सम्बन्ध ! क्या इसकी सारी अभिव्यक्तियाँ देह पर ही होती गयीं ? क्या इसकी समस्त अनुभूतियाँ देह पर ही ठहरती चली गयीं ? क्या मन के पार जाना, विचार को नहीं आता ? तुमने उसे उसका धर्म बताया क्यों नहीं ? विचार से विचार के पार जाने की प्रविधि उसे सिखायी क्यों नहीं ? बताओ अभिनेत्री !

वह : जब उसने कहा था .....

प्रथम स्वर : मैं प्रेम हूँ, तुम प्रेम के लिए ही बनी हो । तुम मुझमें विन्यस्त होकर ही मुक्त हो सकती हो ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वह : तब मुझे लगा था ... (उसका अनुभव कुमार गन्धर्व के इस गायन के साथ चल रहे ताल और नृत्य में अन्तरित होता जाता है)

वह : जब उसने कहा था ....

प्रथम स्वर : जब मैं कहूँगा वृक्ष तुम कहना आकाश, जब मैं कहूँगा प्रेम तुम कहना घर ।

वह : तो मुझे लगा था.... (उसी प्रकार नृत्य में अभिव्यक्ति)

वह : और जब उसने कहा था ....

प्रथम स्वर : तुम चाहे कितनी श्रेष्ठ हो, मैं पुरूष हूँ । तुम्हारे साथ रहने में आकाश की विदायी है । मैं रूपवंचित रह सकता हूँ आकाशवंचित नहीं । यदि तुम मुझसे प्रेम करती हो तो मुझे आकाश के संग होने दो । उस आकाश के जो तुम्हारी अनुपस्थिति में ही आकार लेता है ....

वह : स्तब्ध रह गयी थी मैं ... (पखावज) पुरूष .... आकाश ..... और मैं ? (कुमार गन्धर्व)

मूल स्वर : फिर ? तुम्हारे इस दुःख की उसे फिक्र नहीं थी । उसे आकाश की आकुलता थी । तुम्हें अनुभूति की । तुम्हें प्रतीक्षा थी । प्रथम पुरूष के रूप में प्रथम पत्ती से वंचित हुआ था यह वृक्ष, जिसे आप अभी इस नर्तक अभिनेत्री की देह में देख रहे हैं। प्रथम बार सुनायी दे रही है यह देह...

वह : और मैं ? क्या प्रत्येक परिचय में मुझे अपरिचय की काशी मिलेगी ? (कुमार गन्धर्व)

मूल स्वर : उसने तुम्हारा दुःख सुना तो था ....उसे सुनायी दिया था....

वह : क्या ?

मूल स्वर : तुम्हारा दुःख ? या तुमने छुपाया था ?

वह : क्या ?

मूल स्वर : अपना दुःख ?

वह : हूँ ! मृत्यु कभी छुप सकती है ? कितनी देर तक छुपी रह सकती है मृत्यु ? किन्तु वह द्वितीय पुरुष था ।

मूल स्वर : किन्तु वह तुम्हारी देह पर समय की तरह अंकित रहा है ....

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(वह हरा दुपट्टा कमर में बाँध चुकी है जहाँ अब तक लाल दुपट्टा था, इसी प्रकार हथेलियों में वह हरी रिबन ले चुकी है, इन रिबनों से वह ऐसे खेलने लग जा रही है मानों चल रही कथा से उसका कोई वास्ता ही न हो और जब कभी वह स्थितियों से संगति बैठा ले रही है तब लग रहा है मानों वह दुपट्टे व रिबन में इन स्थितियों को ही प्रतीकित कर रही हो)

द्वितीय पुरूष स्वर : मैं आज जा रहा हूँ ।

वह : क्यों ।

द्वितीय : इन्टरव्यू देने आया था । इन्टरव्यू हो गया । बस ।

वह : बस ?

द्वितीयः देखों संघमित्रा, तुम्हारी इस हवेली में तुम बहुवांचक हो । मैं अब तुम्हारी स्मृति हूँ, इकहरी स्मृति । सामने हूँ फिर भी । छन्द कट गया है, ऐसा भी नहीं । इलाहाबाद युनिवर्सिटी के दिन भी मैंने नहीं भूले । तुम्हारे शहर आया इन्टरव्यू देने । तीन दिन रहा तुम्हारी हवेली के एक कमरे में । तुमने रहने दिया । इतना ही काफी नहीं क्या ?

वह : तो ?

द्वितीयः तुम समझती हो । मुझे यहाँ सिर्फ तुम नहीं दिख रही । इन तीनों में तुम....

वह : तीनों ?

द्वितीयः हाँ । रफी जो तुम्हारा संदिग्ध प्रेम है । तुम प्रेम करते हुए उसे हराना भी चाहती हो .....

वह : कैसे ?

द्वितीयः तुम उसे हरा चुकी हो, अपनी नजर में ।

वह : ! !

द्वितीयः कहीं अन्ततः वो तुम्हें रिजेक्ट न कर दे, तुमने शादी कर ली है एक स्पैस्टिक से :.. कि यदि वो तुम्हें शादी से इनकार कर दे तो तुम यह कह कर बदला ले सको कि देखो मैंने एक स्पैस्टिक रोगी से शादी कर ली है, तुम क्या हो ?

वह : ! !

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

द्वितीयः किन्तु तुम क्या समझती हो, ईश्वर (उसके स्पैस्टिक पति का नाम) यह सब महसूस नहीं कर सकता ? वह सब कुछ देखता है, समझता है और सब कुछ महसूस करता है बस व्यक्त नहीं कर पाता । उसकी देह असमर्थ है दिमाग की बात मान नहीं सकता । और तुम्हें ऐसा ही पति चाहिए जो देखे सब कुछ, समझे सब कुछ, बस रिऐक्ट न करे । सारी घटनाएँ उसके आगे घटे, वो सिर्फ घटनाओं का साक्षी रहे । संघमित्रा वो सचमुच ईश्वर है ।

वह : तुम्हें यह सब दिखता है ?

द्वितीयः हाँ, यह भी कि रफी और मेरे कमरों के अलावा तीसरा कमरा तुम्हारे मोह का कमरा है जिसे तुम अपना मुँहबोला भाई कहती हो ...

वह : फिर वही बात मत दोहराना ...

द्वितीयः यह सच है संघमित्रा कि वो यहाँ तुम्हारी हत्या के इरादे से आया है । उसे तुम्हारी यह पूरी सम्पत्ति चाहिए । इसलिए वो यहाँ आकर ऊपर वाले कमरे में ठहरा किन्तु हम दोनों को देख उसकी दिलचस्पी हुई और वो इस कहानी में दिलचस्पी लेने लगा ।

वह : वो ऐसा कभी नही करेगा ।

द्वितीयः यह तुम्हारा मोह है । मोहभाव छोड़ो यदि बचना चाहती हो तो

वह : तुमको लगता है कि मैं बची हूँ ?

द्वितीयः रफी तुम्हारा विचार है ।

वह : और तुम ?

द्वितीयः तुम्हारा समय । स्मृति ।

वह : स्मृति । ठीक । तुम मेरे लिए स्मृति हों तो वस्तुतः तुम हो कौन ?

द्वितीयः ढूँढ रहा हूँ ।

प्रथम : और मैं तुम्हें ।

वह : और मैं देख रही हूँ मेरे तीम कमरों में ठहरा है —भय, दुःख और मूर्खता ।

द्वितीय : तीनों बाहर से आये हैं । आगन्तुक । तुम बच सकती हो।

मूल स्वर : तुम बच सकती हो, संघमित्रा ? (ढूँढने के स्वर में कई बार संघमित्रा नाम गूँजता है मानों कथा वाचक के साथ तीनों स्वर उसे ढूँढ रहे हों)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(संघमित्रा सुनने की परवाह न कर नृत्य में डूब जाती है) (कुमार गन्धर्व)

मूल स्वर : वो आज भी देह के आन्तरिक आवर्तनों में गूँज रही है... अनहद... अपलक । उसकी इस निस्पन्द छटपटाहट को लोग कहते हैं —एक निषिद्ध पक्षी का गान । यह गान शायद शताब्दियों से उच्चार लेना चाह रहा है उसकी देह पर किन्तु अब सिर्फ वो यही पूछती है...

वह : क्या सम्पूर्ण जीवन मृत्यु – छन्द में ही निबद्ध है ?

मूल स्वर : उसे कोई उत्तर नहीं मिलता सिवाय इसके, कि जीवन और मृत्यु दोनों घट रहे हैं एक विराट स्वप्न में । जिसे वो मृत्युछन्द समझती है, वो है स्वप्नछंद । अब भी जब वो अक्सर सोयी होती है तो होठों पर कुछ उच्चार लेता है मानो ...

वह : स्वप्नछंद ! ! ! (लगभग घुटने पर माथा टिकाये सोयी सी, नींद में उच्चार लेते ये दो शब्द)

(अजीब अंधेरे में सिर्फ कुमार गन्धर्व की ध्वनि का शेष ही निःशेष रहता है)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तत्पुरुष

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सिद्धार्थ अपने माता–पिता का अकेला बेटा है। उसके मनोजगत को कुचलकर माता–पिता ने उसे अपने अनुसार बनाना चाहा है जिस कारण वह सीजोफ्रेनिक रोगी हो गया है और जिस मनोचिकित्सक की देख–रेख में है, उससे प्रेम का अवसर भी मिलता गया है । इसमें सीजोफ्रेनिया रोग को मनुष्य के अस्तित्व में भय को मूल केन्द्र में देखते हुए भय के प्रतीक रोग का रूपक सौपा गया है और अन्त निर्देशक पर छोड़ दिया गया है।

इसका मंचन अभी तक नहीं हुआ है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंक – 1

दृश्य – 2

(कमरा, कुर्सी पर निष्प्राण–सा पड़ा सिद्धार्थ, सामने कुर्सी की पीठ, पर सिर और हाथ)

फाल्गुनी : और कुछ सुनना चाहते हो तुम ? तुम दरअसल सुनना ही नहीं चाहते ! तुम चाहते हो कि सिर्फ तुम्हें सुना जाय ! तुम अपने माँ–बाप का नतीजा हो । अगर गौर कर सको, तो अब तुम खुद का नतीजा हो !

(करीब जाकर) तुम चाहो तो इसे बदल सकते हो ! (मानो उसका सिर किसी रोशनी पर गिरा हुआ है । कोई प्रतिकिया न पाकर फाल्गुनी उसे छूती है, हिलाती–डुलाती है, टिकाती है, डर जाती है) ... सिद्धार्थ । .....अरे......तुम सिद्धार्थ.....

(वह एक लम्बी हँसी के साथ उठता है, उसकी ओर इशारा करता हुआ पूरे कमरे में चक्कर–चक्कर हँसी की लम्बी लकीर खींचता है । कहना चाह रहा है मगर हँसी है कि रूक ही नहीं रही...)

फाल्गुनी : तो तुम सुन रहे थे ?

सिद्धार्थ : सुन सकता हूँ ? (एकाएक चौंकर मगर सहज रहकर ही)

फाल्गुनी : हाँ !

सिद्धार्थ : फिर बाबा ने मुझे तुम्हारे हवाले क्यों किया है ?

फाल्गुनी : इसलिए कि तुम ठीक से नहीं सुनते !

सिद्धार्थ : सबको लगता है कि वह ठीक से बोलता है... सबको लगता है कि वह बोलता है... हाँ, सिर्फ बोलता है। तुम मुझे बचाओगी ?

फाल्गुनी : अगर तुम मेरी मदद करोगे ! तुम्हें ठीक करने में तुम्हारी मदद नहीं मिलेगी तो मैं अकेली पड़ जाऊँगी ।

सिद्धार्थ : अकेली !

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दृश्य – 3

(सिद्धार्थ की मां, बहन कुहू, आसपास शायद कही बाबा भी)

(पहले दृश्य से पहले यह कमरा खाली दिखता है । सिर्फ तीन रखी कुर्सियाँ और ऊपर तीन गश्त लगाते माइक्रोफोन । वीरानी का स्वर । यह पहला दृश्य था)

कुहू : मैं जाऊँ ?
माँ : नहीं तुम लड़की हो ।
कुहू : अब भी ।
माँ : ...... !
कुहू : तुम्हें मैं बता चुकी हूँ कि वो मर गया !
माँ : यानी अब तुम फ्री हो ?
कुहू : शायद ।
माँ : फिर उससे प्रेम क्यों करती थी ?
कुहू : क्या तुम सहज हो सकी हो ?
माँ : ... (हारमोनियम का मंद्र 'सा' तेज होता है)
कुहू : क्या तुम्हारे अपने सारे सवाल सुलझ गये ?
माँ : तुम उससे प्रेम करती थी ?
कुहू : तुम सहज हो सकी हो !
(तानपूरे का स्वर)
माँ : सिद्धार्थ के चले जाने के बाद इसका अहसास हुआ है कि मैं सहज नहीं हूँ...कि मैं सहज नहीं थी.....ऐसा क्यों होता है.....किसी को खोकर ही हम अपने को क्यों जान पाते हैं ।
कुहू : कब ?
माँ : नहीं ! हम तब ही क्यों अपने को जान पाते हैं ......
कुहू : कब ? ('सा') मैं उसे खो चुकी हूँ । शायद अपने को भी ।
माँ : चलो खाना खा लें ।
कुहू : वहाँ से सिद्धार्थ की कुर्सी हटा दो । नहीं रहने दो ।
माँ : चलो !

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कुहू : कहाँ ? ('तानपूरा') (उठती है, चलती है, बैठ जाती है) जब हम प्रेम करते हैं तब हम प्रेम नहीं करते । जब हम खामोश होते हैं तब हम खामोश नहीं होते । जब हम अंधेरे में चलते हैं तब हम अंधेरे में चलते हैं । (खामोशी)

माँ : मैं जिम्मेदार नहीं !

कुहू : एक बार पूछ लेती । सिद्धार्थ से । वह रूक जाता ।

माँ : तुम्हें बाबा से डर नहीं लगता ?

कुहू : डर ! ... हाँ, डर । डर से डर । कितना डरावना होता है न .....

माँ : ?

कुहू : ....एक डरा हुआ इन्सान ! ?

(माँ कुहू से नजर नहीं मिला पा रही या चाह रही है कि कुहू उस से डरे)

(दोनों एक दूसरे को देख रही हैं न देखने की तरह) तुमने अपने डर को सिद्धार्थ में क्यों भरा ?

माँ : मैं उससे प्यार करती हूँ । (क्योंकि) हम जब प्रेम करते हैं तो डरने लगते हैं ।

(बाबा आते हैं । दोनों सहम कर देखती हैं)

बाबा : क्या आकर बुलाना पड़ेगा ?

(दोनों कुछ समझ नहीं पातीं)

कहना पड़ेगा कि खाना खा लीजिए ?

(दो सेकेण्ड का अंधेरा)

(डायनिंग टेबिल पर वे, खाना और खामोशी)

(रात के साढ़े नौ)

माँ : खाना खाते समय भी तनाव .... (शून्य का स्वर)

कुहू : अब यह हमारे जीवन का जरूरी हिस्सा है .....

माँ : चुप रहो ।

कुहू : यह तनाव को जारी रखने की कोशिश है ।

बाबा : तुम्हारी इच्छा थी कि घर में लड़का हो ।

माँ : औरतें अमर होना नहीं चाहतीं ।

कुहू : हम चुप हो जायें ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

माँ : और फिर ?

(5 सेकेण्ड की खामोशी)

कुहू : आप यह मानकर चले थे कि वह आपका विस्तार होगा । आप नहीं रहेंगें । मगर रह जायेंगे । मगर, आप उसकी परिस्थिति हैं ।

बाबा : मैंने कहा था कि वह हमें छोड़ दे ?

कुहू : आप उसकी परिस्थिति हैं !

(बाब उठ जाते हैं)

(तीनों पहले वाले कमरे में । रात के दस)

बाबा : यह कोई तरीका नहीं होता .....

कुहू : तरीका ! (फोन की घण्टी)

(बाबा उठाते हैं । बोलने जाते हैं मगर रिसीवर को हथेली से दबाकर माँ से कह जाते हैं)

बाबा : ....यह कोई तरीका नहीं होता । यह तुम्हारा प्रेम था । इतना प्रेम कि उससे जताने लगी कि उससे प्रेम नहीं करती । तुम्हें डर था कि प्रेम से वह बिगड़ न जाये । यह कोई तरीका नहीं होता ।

कुहू : यह तरीका भी .....

(अब बाबा फोन की सुनते हैं)

(लाइट चली जाती है । कुहू मोमबत्ती जलाती है ।)

(माँ मोमबत्ती के करीब आ जाती है)

माँ : मैं क्या करूँ ! हमें क्या करना चाहिए ?

बाबा : यह कोई तरीका नहीं होता कि अब हम उसे इस तरह ढूँढने निकलें ! (दूरी पर)

माँ : क्या बोल रहे हैं ? (करीब)

बाबा : बोल कहाँ से रही हैं ? यूनिवर्सिटी से ? युनिवर्सिटी में ? नहीं, मेरा मतलब उसे यहाँ होना चाहिए । जरूरत तो उसकी यहाँ है । सिद्धार्थ को साइकियाट्री की क्या जरूरत है ? मेरा बेटा पागल नहीं है । समझीं आप ? यह कोई तरीका नहीं होता कि रात को दस बजे आप बताएं कि मेरा बेटा पागल है.... हाँ हाँ वही..... सीजोफ्रेनिक! सीजोफ्रेनिक आप हैं । हम सब । अब क्या सुनें..... हाँ सुन ही तो रहे हैं....क्या करे ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(माँ फूंक कर मोमबत्ती को बुझा देती है । यह दोबारा जलती है । वह फिर बुझाती है । फिर जलती है)
(बाब की हँसी)
नहीं हम कम्युनिस्ट नहीं हैं । आप हैं ? आप तो सीजोफ्रनिक हैं । घर आइए । आपका स्वागत है । यहाँ हम तीन भी हैं । सीजोफ्रेनिक से कौन डरेगा । वह तो बेचारा खुद इतना डरा हुआ ....
(फोन रखते ही बिजली आती है)

माँ : आ गई ।

कुहू : मैं जाऊँ ?

माँ : तुम लड़की हो ।

बाबा : वो तो लड़का था । अब एक नया ड्रामा । घर छोड़कर सिद्धार्थ कभी हुआ करते थे बुद्ध ! अब हो गये सीजोफ्रेनिक।

माँ : उसे ढूंढो ।

बाबा : तुम तो उसे बचपन से ढूंढ रही हो । बल्कि उसके जन्म से पहले से ।

माँ : क्या ढूंढ रही हूँ मैं ?

कुहू : मैं जाऊँ ?

माँ : तुम ढूंढ लोगी ?

कुहू : तुमने विश्वास नहीं खोया है । सिद्धार्थ की तरह । तुम पहचान लोगी ?

माँ : हाँ ।

कुहू : तुम पहचानती हो ? वह सत्य है।

माँ : मैने उसे जन्म दिया है ।

बाबा : तुम बार–बार मोमबत्ती क्यों बुझा रही थी ?

माँ : हम इंतजार करें ?

कुहू : मैं सुबह से पहले सुबह को ढूँढना चाहती हूँ ।

बाबा : सुबह को सुबह ही पाया जा सकता है ।

माँ : और सिद्धार्थ को?..... सवा दस हो रहे हैं । किस यूनिवर्सिटी में कौन साइकियाट्रिक ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बाबा : इतना समय गुजर गया !

कुहू : अभी गुजरा नहीं है । गुज़रने को है । यह 'अभी' पता नहीं कब तक है ।

माँ : हम इंतजार करें ?

बाबा : नहीं, सरल करो । गलत कौन होता है ?

कुहू : जो नहीं होता । जैसे रूनू। वह मर गया । मैं प्रेम करती थी ।

माँ : मैं सिद्धार्थ से प्रेम करती हूँ । वह है । वह सही है ।

बाबा : यह डर है । सच को खोने का ।

कुहू : और आप ?

बाबा : मैं परिस्थिति हूँ । अंधेरा । जन्मता है डर । सीजोफ़ेनिया । सुबह ।

कुहू : जब हम अन्धेरे में चलते हैं तब हम अंधेरे में चलते हैं ......

बाबा : सुबह तक !

माँ : सच ?

कुहू : पता नहीं ।

बाबा : हां, पता नहीं । सुबह का पता नहीं । यही सही । सुबह है मगर सुबह का पता नहीं । मोमबत्ती कहाँ रख दी !

दृश्य – 4

(वही जगह । वे ही लोग । सिद्धार्थ का मित्र भी । सुबह । माँ की एन्ट्री

बाबा : यह ध्रुपद है । यह कहता है इसने सिद्धार्थ को ढूँढ लिया है ।

माँ : मैंने आज देर तक पूजा की है ।

बाबा : यह सिद्धार्थ का दोस्त है ।

माँ : नहीं सिद्धार्थ है ।

कुहू : चाय ठंडी हो रही है ।

माँ : आज तुम्हें पहली बार देख रही हूँ । तुम्हें अपने बीच पाना बहुत अच्छा लग रहा है बेटे, तुमसे बहुत कुछ कहना है। तुम सिद्धार्थ को जानते हो ? (भारी बाँसुरी की कँपकँपी)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कुहू : इसने उसे ढूँढ लिया । पहचानता है । सही है ।

बाबा : नहीं दोस्त है । हम इसके लिए अजनबी हैं । जैसे सिद्धार्थ कहता है कि हम अजनबी हैं । सिर्फ दोस्त है ।

कुहू : हो सकता है सही भी हो ! उसके पास नयी जानकारियाँ है। मगर वह पहले कुछ जानना चाहता है ।

बाबा : हमसे । क्योंकि अजनबी हैं ।

माँ : तुम सिद्धार्थ को जानते हो ?

बाबा : सिद्धार्थ जानता है ?

माँ : अब बिल्कुल खामोश हो जाओ..... ।

कुहू : इससे तनाव....

माँ : नहीं बढ़ेगा । आज मैंने काफी देर तक पूजा की है । और सिद्धार्थ का पता चल गया । अब तुम नहीं बताओगे तो भी निश्चिन्त हो जाऊँगी ।

ध्रुपद : वह भी सुनिश्चय चाहता है । डरता है । आप क्यों डरती हैं ? ( )

माँ : तुम्हें कैसे पता ?

ध्रुपद : क्योंकि वह डरता है । उसका डर अब डरावना है । वह आपसे प्रकट हुआ है ।

माँ : मुझसे ?

ध्रुपद : नहीं ?

(बाबा उठकर चले जाते हैं)

अब उसे ढूँढना मुश्किल है । आप उसे खोना नहीं चाहती थीं । इसलिए खो दिया । वह अब भी आपको खोना नहीं चाहता ( )

माँ : (कुहू से) तुमने गैस खुला छोड़ दिया क्या ?

कुहू : नॉट श्योर.... कल तो लड़की ने फोन किया था ।

ध्रुपद : मेरी बहन है । साइकियाट्रिक । पिछले साल ही ज्वॉयन किया है इन्स्टीच्यूट । सिद्धार्थ उसी की ट्रीटमेन्ट में है ।

माँ : क्या हुआ है सिद्धार्थ को ? कहाँ गये (पुकार कर) ? बाबा कहाँ चले गये (कुहू से) ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध्रुपद : यह दिमागी रोग है । आदमी ज्यादा डरने लगे और उसका खुद पर काबू न रह जाये तो इसे सीजोफ्रेनिया कहते हैं ।
(कुहू से) आप तो जानती होंगी ?

माँ : लेकिन उसे यह कैसे हो गया ? सिर्फ ग्यारह दिनों में ?

ध्रुपद : यह जेनेटिक है । खानदान में किसी को होगा । आप बता सकती हैं ।

माँ : नहीं, हमारे यहाँ तो किसी को नहीं है ।

कुहू : श्योर ?

माँ : क्या ?

कुहू : क्या हमारे यहाँ कोई नहीं डरता ? .... तुम जरूर गैस खुला छोड़ आई हो ।

माँ : पता नहीं ।
(खामोशी)
(तीनों चाह रहें है कि तनाव टूटे और सीधे–सीधे बात खुले नतीजा निकले, मगर कौन करे पहल ? एकाएक ध्रुपद उठता है ....)

ध्रुपद : मैं चल रहा हूँ ।

माँ और कुहू : अरे !!!

ध्रुपद : इस तनाव में कोई नहीं रह सकता । कोई पौधा पनप नहीं सकता ।

माँ और कुहू : .....!!!!
(धुपद शायद परेशान या उत्तेजित हो उठता है)

ध्रुपद : ये... ये प्रोफेसर गांगुली का घर नहीं है । ये तो एक डिग्री कॉलेज के प्रिंसिपल का मकान है । मकान नहीं कब्रगाह। यहाँ चार आत्माएं रहती हैं । अतृप्त और आधी–अधूरी । चार घुटी हुई चीखें । इस जलवायु में बहुत मुश्किल है सांस लेना । अच्छा हुआ एक आत्मा यहां से छिटक गयी। वह सीजोफ्रेनिक बनकर खुश है । चलिए, उसे इसी में सुकून मिल रहा है । मगर आप । ..... मैं चल रहा हूँ..... ।
(कुहू उठती है)

कुहू : एक मिनट !

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(वह कमरे से बाहर जाती है । वापस लौटती है दो सेकेण्ड बाद । दरवाजा अन्दर से बन्द करती है । ध्रुपद के करीब आती है....)
अब बोलो ।

ध्रुपद : क्या ?

कुहू : जो अभी तक नहीं बोले हो । बोलो ।

ध्रुपद : (उससे दूर हटकर) दीदी, यह ध्रुपद है । यह यहाँ आकर विचलित हुआ है आज । यह, जो नहीं जानता कि क्या होता है डर । यह विचलित हुआ है आज पहली बार, रोज सुनता रहा हूँ इस घर की बात फाल्गुनी से । रोज एक घण्टा यह घर हमारी बहस का चेहरा रहा है । रोज । भले ही फाल्गुनी उतना विश्लेषण कर सकी है जितना वह सिद्धार्थ से ले सकी है । आप ! रूनू आपका मंगेतर था । उसके मरने के बाद से आप टूटी नहीं । विक्षिप्त हो गयी हैं । जैसे किसी राग को उसके अधूरेपन पर ही बाधित कर दिया जाय । दिस इज क्वाइट नैचुरल । आई कैन रियलाइज यू । आप इसे अपने घर में रिलीज कर लेती हैं । कुण्ठा और क्रोध की शक्ल में । मगर सिद्धार्थ नहीं रिलीज कर सका आखीर तक, अपनी कुण्ठा और अपना क्रोध ! उसे डर था कि रिलीज करने की भी उसे सजा मिलेगी । अन्ततः उसे आपलोगों को छोड़ देना पड़ा ! बताइए ?
(खामोश)
(माँ जाकर दरवाजा खोल देती है । बाहर देखती है।)

कुहू : सिगरेट पीने गये हैं ।
(वापस बैठ जाती है । कुहू दरवाजे तक जाकर मुड़कर ध्रुपद पर नजर टिकाती है । ध्रुपद माँ पर)

ध्रुपद : सिद्धार्थ में आर्टिस्टिक जिनियस है । प्रो. गांगुली ने प्लान कर रखा था कि सिद्धार्थ इंजीनियर बनेगा या आई.ए. एस. । आप भी यही चाहती थीं । सिर्फ सिद्धार्थ नहीं चाहता था । वह आपके फ्रेम में फिट नहीं हुआ । उसे अपने फ्रेम की तलाश थी । आपने पूछा तक नहीं । सिर्फ डराया, और आज ! वो गये कहाँ ? सिगरेट मुझसे ले लेतें ! मेरे पास है !

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

माँ : वो सिगरेट पीने नहीं गये है ।

ध्रुपद : फिर ?

कुहू : ढूँढने । रोज सुबह निकलते हैं । नयी तैयारी लेकर । नयी आशा लेकर । तुमने बता दिया कि वह सुरक्षित है फिर भी । अब वो थक गये हैं । हम सब ।

ध्रुपद : सिगरेट पी सकता .....

कुहू : हाँ ।

पहली रात जब सिद्धार्थ घर नहीं लौटा तो पता है अगली सुबह वो कहाँ गये ? सीधे लावारिस शवगृह में ! इतना गुस्सा है उनका ।

माँ : और तुम कह रहे हो कि हम उसे महत्व नहीं देते । घर में सिद्धार्थ ही सबसे महत्वपूर्ण है और उसे हमेशा लगता रहा कि हमने उसे महत्व नहीं दिया ।

कुहू : महत्व न मिलने पर आदमी खुद को क्यों ज्यादा आंकने लगता है । जो महत्वपूर्ण होता है वही फिसलता है । (ध्रुपद की चहलकदमी)

माँ : हमने खामोशी से उसे हर जगह ढूंढा और अब.....

कुहू : अब भी ढूँढ रहे हैं । कोई पूछता है तो बताते हैं सिद्धार्थ मामा के घर गया है और बाबा सिगरेट पीने । सिद्धार्थ का कोई मामा नहीं है और बाबा सिगरेट नहीं पीते....।

(बाबा सिगरेट नहीं पीते वाक्य से एन पहले ध्रुपद ऐशट्रे मंगाता है फिर 'ओके' कहता है)

(कमरे में अब कुहू और ध्रुपद चहलकदमी कर रहे हैं और माँ निढाल बैठी है जबकि मन में दरअसल तीनों चहलकदमी कर रहें हैं)

माँ : इन ग्यारह दिनों ने हमें अधमरा कर दिया है ध्रुपद । सब कुछ अव्यवस्थित पड़ा है । घर खाना–सोना–दरवाजे, सब खुले पड़े हैं । एक चिन्ता सिद्धार्थ ! पहले भी वही चिन्ता थी । अव्यवस्था थी । मगर दूसरी किस्म की ( ) मरने पर ही निष्कृति मिले शायद !

कुहू : कितनी बार मरेंगे हम ! जब कुछ नहीं घटता तो हम चाहते हैं कि कुछ घटे और घटने पर ... इतना ढह जाते हैं ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध्रुपद : अब क्लियर हुआ । मगर यह हर बार लगता है ।
माँ : वह कब आयेगा ? हम लेने चलें ? इलाज कब तक चलेगा ?
ध्रुपद : एक तो अभी आप उससे मिल नहीं सकेंगी । वैसे मैं ले चलता हूँ । दूसरे, मिलकर अच्छा नहीं लगेगा ।
कुहू : मिलना सिर्फ सोचने पर ही अच्छा लगता है । चीजें होती हैं । हम 'कन्फर्म' करते हैं कि ये सचमुच हैं । अनुभव से। चीजें सिद्ध होती हैं या हम । डरते हैं इसलिए कन्फर्म करते हैं । शायद ।
ध्रुपद : सिद्धार्थ के दिमाग में दो तरह का डर बैठ गया है । एक डर है बाबा का । दूसरा आपका । आपको खोने का । फादर फीगर और मदर फीगर । दोनों की जरूरत और दोनों का डर । इसे वो रिल्ीज नहीं कर पाया कभी । डर मर्ज बनकर भीतर ही भीतर बढ़ता गया । आज वो सीजोफ्रेनिक है । छोटी–छोटी चीजों से डरा हुआ । चलिए जरा एक नजर आप खुद देख लीजिए । आपकी जरा सी उपेक्षा से उसने समझा, उसे बुनियादी महत्व ही नहीं मिल रहा । (कुहू से) और आप अपनी जिन्दगी में व्यस्त थीं । (खामोशी) आप सबने जो फ्रेम रचा था अतिमहत्वपूर्ण सिद्धार्थ को लेकर उसमें वो न आ सका । उसमें आप लोगों ने ऐसा हीन भाव भरा कि वह अपने आप को चूका हुआ महसूस करने लगा । (माँ से) आपने अपना डर अपना कन्फ्यूजन उसमें भरा । और वो आपको सबसे ज्यादा चाहता है । बाबा को भी । मगर डर उसे आपके पास आने नहीं देता (बाबा आते हैं) यही आकलन है फाल्गुनी का । मेरी बहन । साइकियाट्रिस्ट चलिए चलते हैं । पता नहीं वह आप लोगों को पहचानेगा भी या नहीं ।
(कुहू और माँ अन्दर की ओर मुड़ती हैं)
एक मिनट ! जरा किचेन में गैस देख लीजिएगा ।

दृश्य – 5

(मेडिकल कालेज की 17वीं मंजिली इमारत की आखिरी सीढ़ी पर ध्रुपद के अलावा तीनों छत का दृश्य देखकर ठिठके खड़े हैं । स्तब्ध ! फाल्गुनी छत के किनारे–किनारे सहज रूप से कुछ बोल–बोल कर चल रही

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

है । उसके समानान्तर छत के बीच से सुरक्षित जगह पर सिद्धार्थ–काली पैन्ट सफेद शर्ट पहने कसा–कसा सा चल रहा है । कोई अदृश्य शक्ति उसके दोनों पैरों की दूरी को क्रमशः कम कर रही है । पूरा शरीर तनाव में हैं । फाल्गुनी को लेकर खिंचा हुआ डर मानो मुंडेर से वह गिरने–गिरने वाला हो । शरीर की सभी मांसपेशियां आँखों में खिंच आयी है । जकड़ा हुआ डर)

सिद्धार्थ : (खुद को मुंडेर के विपरीत खींचते हुए) आ जाओ । आ जाओ, नहीं ! अरे, मत जाओ वहां ! अरे गिर जाओगी !

फाल्गुनी : तो मुझे मत देखो, दूसरी ओर घूम जाओ ।

सिद्धार्थ : (बगैर घूमे, मुड़े, अपने दूसरी ओर 'अपनी ओर खिंचे हाथ' से दर्शाते हुए) नहीं । उधर वे दोनों लड़कियाँ तो एकदम किनारे बैठी हैं । स्वेटर बुन रहीं है । अरे, अरे .....

फाल्गुनी : तो तुम्हें क्या फर्क पड़ रहा है ? वे अपनी छत पर हैं । तुम चाहो तो दोस्ती ऑफर कर सकते हो ।

सिद्धार्थ : अरे, अरे क्या कर रही हो ! चलो वहां से ....

फाल्गुनी : मैं इधर की छतों पर ढूँढ रही हूँ । अपने लिए कोई दोस्त।

सिद्धार्थ : मैं !

फाल्गुनी : तुम नहीं हो सकते । इतना डरा हुआ दोस्त !

सिद्धार्थ : अच्छा अब बहुत हो गया चलो इधर आओ वर्ना मैं कूद पड़ूंगा ।

फाल्गुनी : किनारे तो आओ ।

सिद्धार्थ : नहीं !

फाल्गुनी : फिर ! क्या है यहां ? देखो छज्जे हैं यहां । चलो नीचे मत देखना । आओ तो ।

सिद्धार्थ : नहीं

फाल्गुनी : तो मैं भी नहीं आती ।

सिद्धार्थ : प्लीज फाल्गुनी, आ जाओ, मैं गिर जाऊँगा । और नहीं खड़ा रह सकता यहां, उफ ! नीचे चलो ।

फाल्गुनी : तुम जाओ, मैं अभी थोड़ी देर यहीं रहूँगी । सनसेट देखूँगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सिद्धार्थ : लेकिन मैं अकेले कैसे उतरूंगा। सीढ़ियां खुली हैं । (मंच पर बनी सीढ़ी पर पहली बार नेपथ्य से प्रकाश)

फाल्गुनी : तुम जानो । या तो यहाँ आओ या फिर खुद नीचे उतरो अकेले ।

(सिद्धार्थ असहाय सा लगभग रोने लगता है)

(फाल्गुनी उसके पास आती है)

मेरा हाथ पकड़ो, अरे इतना कस के नहीं । अब चलो ।

सिद्धार्थ : नहीं । उधर नहीं प्लीज ।

फाल्गुनी : चुपचाप चलो मेरे साथ । कोशिश करो । काहे का डर । गिरोगे तो मेरे साथ गिरोगे ।

(फाल्गुनी उसे किनारे की तरफ खूब खींच रही है । सिद्धार्थ न जाने की कोशिश में लगभग बैठता जा रहा है । चार जोड़ी आखें गाढ़ी होती हैं मगर पूरा दृश्य कहीं खो जाता है ।)

अंक –2
दृश्य – 6

(कुर्सी की पीठ पर फाल्गुनी की पीठ । सिद्धार्थ की ओर यह पीठ)

सिद्धार्थ : नाराज हो ? (खामोशी) फाल्गुनी, नाराज हो (जाकर उसके आगे घुटनों के बल बैठता है) फाल्गुनी ! (फाल्गुनी उठकर सामने आ जाती है । सिद्धार्थ पीछे से उसकी ओर बढ़ता है । अभी वह थोड़ी दूर पर कि फाल्गुनी एकाएक घूमकर ....)

फाल्गुनी : अब मुझसे नहीं होगा । (दोनों आमने–सामने) मैं अब कुछ नहीं कर सकती । सुन लो तुम । मैं अब तुम्हारे लिए कुछ नहीं कर सकती । क्योंकि खुद तुम नहीं चाहते ठीक होना । सुबह डॉ. बाकची से बात करती हूँ या तो डिस्चार्ज करें या कोई दूसरा साइकियाट्रिक देखें या फिर पी.जी.आई. ट्रांसफर करें । मुझसे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नहीं होगा । समझे तुम! जब सड़क–सड़क घूमोगे, बच्चे पत्थर फेकेंगे तब शायद ठीक हो जाओ ।

सिद्धार्थ : सबकी परिस्थिति ऐसी नहीं होती जिधर बच्चों कीं नजर पड़े ! तुम दुनिया के किसी भी इन्सान को बच्चों की हरकतों में पा सकती हो.... ।

फाल्गुनी : बच्चे ऊँचाइयों पर चढ़ते हैं....

सिद्धार्थ : हाँ, गहराइयों में .....

फाल्गुनी : तुम कौन सी हरकत हो ?

सिद्धार्थ : कोई भी ।

फाल्गुनी : फिर डर क्यों रहे थे ? ( ) बच्चे तो नहीं डरते ! हम डराते हैं । क्यूं डर रहे थे थोड़ी देर पहले ?

सिद्धार्थ : अभिनय । डर का अभिनय । मैं देख रहा था अपना अभिनय । तुम डर रही थी उस अभिनय के साथ (हँसता है) (हारमोनियम का पहला 'सा')

फाल्गुनी : तुम हँसते हो तो मुझे लगता है तुम्हारा प्रतिशोध बिखर रहा है ।

(वह हँसता है और हँसते हुए उदास हो जाता है)

सिद्धार्थ : तुम अगर उस घर में होती जहां मैं ग्यारह दिन पहले तक था तुम हँसना खो देती । तुम स्त्री हो । दुःख को फील नहीं कर सकती । (कुर्सी पर सिर टिकाकर बैठ जाता है)

(सा) (फाल्गुनी एकदम से झपटती है)

फाल्गुनी : क्या कहा.....

सिद्धार्थ : (काटकर) नहीं मतलब फील शायद कर भी लो, ज्यादा देर तक सह नहीं सकती ।

फाल्गुनी : नहीं सहती तो तुम होते ?

सिद्धार्थ : ! ! !

(सिद्धार्थ उसे देख रहा है, बिना रूके)

फाल्गुनी : जब तुम इस दुनिया में आ रहे होते हो तो उस दौरान मैं क्या और कितना सह रही होती हूँ, तुम्हें पता है ? कभी देखा है ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सिद्धार्थ : क्या सहना सिर्फ इतना ही होता है ?

फाल्गुनी : नहीं, एक प्रकार से हम पूरा जीवन ही सहते हैं ।

सिद्धार्थ : क्यों ? जीवन ऐसा क्यों है, असह्य ! .....

फाल्गुनी : तमाम एचीवमेन्ट्स के बावजूद !

सिद्धार्थ : नो । आर्ट इज ए गुड स्केप ।

फाल्गुनी : Still avoidence of death. Death is inevitable.

सिद्धार्थ : नो !

फाल्गुनी : तुम सुनो । मृत्यु–भय ने तुम्हें इस तरह से घेर रखा है कि सुनने की योग्यता ही तुम खो चुके हो । जन्म हुआ तो माँ मर गयी । पिता का कत्ल उससे पहले हो चुका था । मदर टेरेसा सोसाइटी में बड़ी होने लगी । छुप कर पढ़ाई की, भाग कर डॉक्टर बनी हूँ लेकिन मदर का काम हाथों से नहीं छूट पाया है .....।

(सिद्धार्थ जाकर कुर्सी पर बैठता है, सिर झुकाने से पहले सिर्फ इतना बोलता है....)

सिद्धार्थ : ....और जिस बेटे का कत्ल उसकी माँ हमेशा करती रही हो....

फाल्गुनी : मैं मानसिक कत्ल की बात नहीं कर रही । किसी अज्ञात भय को सेलिब्रेट नहीं कर रही । मैं देख रही हूँ, जान रही हूँ कि वे मुझे खत्म करना चाहते हैं । मेरे पिता के कातिल मुझे बचपन से ढूँढ रहे हैं । और अब उन्होंने मुझे ढूँढ लिया है और तुम सुन नहीं सकते । और कुछ सुनना चाहते हो तुम ! तुम दरअसल सुनना ही नहीं चाहते ! तुम चाहते हो कि सिर्फ तुम्हें सुना जाय ! तुम अपने माँ–बाप का नतीजा हो । (करीब जाकर) तुम चाहो तो इसे बदल सकते हो.... (उसका सिर मानो किसी रोशनी पर गिरा हुआ है । कोई प्रतिक्रिया न पाकर फाल्गुनी उसे छूती है, हिलाती–डुलाती है, टिकाती है, डर जाती है).....सिद्धार्थ ! अरे....तुम.....सिद्धार्थ......

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(वह एक लम्बी हँसी के साथ उठता है, उसकी ओर इशारा करता हुआ वह पूरे कमरे में चक्कर–चक्कर हँसी की लम्बी लकीर खींचता है । वह बोलना चाह रहा है लेकिन हँसी है कि रूक ही नहीं रही.....)
तो तुम सुन रहे थे !

सिद्धार्थ : सुन सकता हूँ ?

फाल्गुनी : हाँ । (पूरे विश्वास के साथ)

सिद्धार्थ : फिर बाबा ने मुझे तुम्हारे हवाले क्यों किया ?

फाल्गुनी : क्योंकि तुम ठीक से नहीं सुनते ।

सिद्धार्थ : सबको लगता है कि वह ठीक से बोलता....... सबको लगता है कि वह बोलता है........सिर्फ बोलता है......तुम मुझे बचाओगी ?

फाल्गुनी : अगर तुम मेरी मदद करो। तुम्हें ठीक करने में तुम्हारी मदद नहीं मिलेगी तो मैं अकेली पड़ जाऊँगी ।

सिद्धार्थ : अकेली ।

फाल्गुनी : हाँ । एक प्रकार से । मेरे नहीं रहने से तुम अकेले पड़ जाओगे । और दुनिया से जब कोई भी अकेला होता है तो हम अकेले पड़ जाते हैं ।

सिद्धार्थ : या, तब हम अकेले नहीं होते । या जब हम अकेले होते हैं तब क्या हम सचमुच अकेले होते हैं ? ( ) तब कोई और भी अकेला हो रहा होता है हमारे लिए । तुम्हें तुम्हारे बारे में यह जानकारी किसने दी, कि तुम अकेली नहीं हो?

फाल्गुनी : मिलना चाहोगे ?

सिद्धार्थ : बिल्कुल ।

फाल्गुनी : फिर हमें आश्रम चलना होगा उस रियलाइज्ड सोल के पास जहाँ मदर मुझे बचपन से ले जाया करती थी । लेकिन उससे पहले मुझे मिलना है कुहू से, माँ से और बाबा से । राइट ?

(फेड आउट)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दृश्य –7

(किसी जगह)

कुहू : आपको देखकर लगता नहीं कि आप साइकियाट्रिस्ट हैं!
फाल्गुनी : क्या लगता है ?
कुहू : जैसे अभी–अभी युनिवर्सिटी ज्वॉएन किया है ।
फाल्गुनी : अभी–अभी ही निकली हूँ रांची इन्स्टीच्यूट से ।
कुहू : देखकर लगता नहीं !
फाल्गुनी : हाँ, देख कर लगता नहीं । देख कर नहीं लगता । अगर दिखने से ही लग जाता तो कहानी हर बार कुछ और हुआ करती ।
कुहू : मतलब ? आप तो इन्टेलेक्चुअल.....
फाल्गुनी : दिखती हूँ कि लगती हूँ ?
कुहू : .....हैं ।
फाल्गुनी : हूँ ? और आप ......
कुहू : मैं
फाल्गुनी : आप Innocent हैं
कुहू : कैसे पता ?
फाल्गुनी : दिखता है । Every one must find her play for herself.
कुहू : !
फाल्गुनी : यह लगता है । आपको देखकर यही लगता है ।
कुहू : सिद्धार्थ ने ..... ?
फाल्गुनी : नहीं । क्या आपको नहीं लगता कि आप ऑब्सेस्ड नहीं है..... इनोसेन्ट हैं....बेसिकली ?
कुहू : आप क्या जानना चाहती हैं ? तुम कहूँ ?
फाल्गुनी : बिल्कुल ।
कुहू : तुम क्या जान्ना चाह रही हो ?
फाल्गुनी : नहीं प्रश्न होना चाहिए, तुम किसे जानना चाह रही हो ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कुहू : ....चलो यही सही, किसे ......
फाल्गुनी : सिद्धार्थ को ।
कुहू : क्यों ?
फाल्गुनी : जानना ट्रीटमेन्ट का एक हिस्सा होता है हमारे लिए ।
कुहू : ट्रीट कर लोगी, जिसे हम नहीं कर पाये ?
फाल्गुनी : कोशिश कर रही हूँ ।
कुहू : ताकि तुम हमेशा ट्रीट कर सको ।
फाल्गुनी : क्या !
कुहू : तुम उसे जानना चाहती हो और हमेशा ट्रीट करती रहना चाहती हो । हर औरत ऐसा ही क्यों चाहती है ?
फाल्गुनी : आप बेहतर बता सकती हैं ।
कुहू : क्या तुम्हें लग रहा है कि मैं गलत सोच रही हूँ ?
फाल्गुनी : ये भी आप ही बता सकती हैं । आदमी कैसे सोच रहा है यह उसी आदमी से बेहतर और कौन देख सकता है । ( ) तो हर औरत कैसा और वैसा ही क्यों चाहती है ?
कुहू : कैसा ?
फाल्गुनी : आप बता रही थीं ।

(धीरे–धीरे फेड आउट)

दृश्य–8

(किसी भी जगह । फाल्गुनी और माँ)

(इस प्रकार वह बारी–बारी से कुहू, माँ और बाबा से अलग–अलग मिलती है । मिलने के बाद वह इसका निर्वचन और संश्लेषण डॉक्टर बाकची आदि से डिस्कस करती है, कि वहाँ सिद्धार्थ आ जाता है । किन्तु फिलहाल फाल्गुनी और माँ.....)

माँ : सिद्धार्थ क्यों नहीं लौट आता ?
फाल्गुनी : ( ) फिर ?
माँ : उसके बिना हमें बिल्कुल अच्छा नहीं लग रहा । वह कब आयेगा ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

फाल्गुनी : यह पेंटिंग सिद्धार्थ ने बनायी है ?

माँ : हाँ, सब उसी का तो है।

फाल्गुनी : उसने सीखा है या यह ( ) ?

माँ : अरे, कितनी अच्छी–अच्छी पेन्टिंग उसके लिए हम ले आये थे । लेकिन वो इतना उदासीन कि.....

फाल्गुनी : इसका वृक्ष पॉल क्ली के एक वृक्ष की याद दिला रहा है।

माँ : नहीं, नहीं । हम जहाँ रहते थे, तब सिद्धार्थ बहुत छोटा था, वहाँ एक वटवृक्ष था जिसे मैं रसोई बनाते हुए रोज देखा करती थी, खिड़की से......

फाल्गुनी : वो मुझे बेसिकली आध्यात्मिक लगता है । दार्शनिक आँखें आपको उदासीन लगती होंगी । आपकी आँखें भी सुन्दर है ।

माँ : अरे नहीं । बचपन से मेरा महापुरूषों से संसर्ग रहा है। उसी का कुछ मिला होगा। हमारे समय में कितने बडे–बड़े महापुरूष हुए हैं– तैलंग स्वामी, हरिहर बाबा, मोहनानन्द स्वामी..... । तब तो उसका अस्तित्व ही नहीं था। आज ऐसे लोग कहाँ ?

फाल्गुनी : आपमें इतना कॉम्प्लेक्स क्यों है ?

माँ : ( ) !

फाल्गुनी : हीन भावना ?

माँ : नहीं समझी ।

फाल्गुनी : आप अपने आपको इतना महत्व क्यों देती हैं, कि दूसरे दिखते ही नहीं ? माँ का विगलन तो बच्चे में हो जाता है, इस प्रकार कि वो 'माँ' हो सके । उसमें स्त्री होने का अहं लेशमात्र भी नहीं रह जाता ।

माँ : मैंने तो उसे महत्व दिया है हमेशा......

फाल्गुनी : नहीं । आपने ईर्ष्या की है उससे हमेशा........

माँ : ईर्ष्या ? क्यों, मैं भला उससे.....

फाल्गुनी : क्योंकि उसके जन्म से ही आपको लग गया कि वो आपसे नहीं, आप उससे जानी जायेंगी । आप चाहती थीं कि लोग जाने कि वो 'आपका' बेटा है । किन्तु आज समाज जानता है

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कि आप सिद्धार्थ की माँ है । आपका अहं प्रतिहत हुआ है । बताइए .....आप 'माँ' हुई ?

माँ : ( )

फाल्गुनी : अपने बच्चे से इतना प्यार करती है माँ कि साँप अपने बच्चे को ही खा जाती है । अच्छी बात नहीं है न । आपको जब–जब लगा कि उसका कद आपसे बढ़ रहा है, या बढ़ सकता है, आपने बाबा को उकसाया कि वह अपने कद में रहे । उसका कोई कद ही नहीं बना । यह अन्याय वो देखता रहा, सहता रहा । आज बाबा भी उसके शत्रु हैं, जो दरअसल नहीं हैं ।

माँ : मुझे तो कुछ समझ में नहीं आ रहा.......

फाल्गुनी : आप नहीं चाहतीं कि मैं आपकी कथा में जाऊँ ।
( )

माँ : मेरे अन्दर हीन भाव है और मैं नहीं जानती ?

फाल्गुनी : आपने गौर किया कि जब मैंने पेन्टिंग के जरिए सिद्धार्थ की बात की तो आपने काटकर अपने को स्थापित करना चाहा ? मैंने कहा कि उसका मन आध्यात्मिक है तो तुरंत आपने अपने महापुरूष–संसर्ग की बात कही ? इस तरह आपने उसे हमेशा छोटा किया है । अपना हीन भाव उसमें भरा है । गौर करतीं तो दिखायी देता तो जानतीं ।

माँ : तुम दोनों भाई–बहनों का स्वर एक है । ध्रुपद भी यही सब बोल कर गया ।

फाल्गुनी : आप सिद्धार्थ से ईर्ष्या और घृणा क्यों करती हैं ?
(धीरे–धीरे फेड आउट)

दृश्य–9

(फाल्गुनी और बाबा)

बाबा : सब तो तुम जानती ही हो ......

फाल्गुनी : लगभग । लेकिन समझती नहीं ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बाबा : (शून्य से, बिल्कुल मोनोलॉग, दीर्घ निश्वास के साथ) जो समझतें हैं, वो भी क्या कर पाते हैं । हम जानते होते हैं, समझते हैं कि क्या नहीं करना चाहिए, चाहते भी हैं फिर भी कर नहीं पाते । इसका मतलब यह कि हम ही सब कुछ नहीं हैं । ( ) हम कुछ नहीं हैं ।

फाल्गुनी : सिर्फ माध्यम हैं । आप वही करते आए हैं जो आपकी पत्नी कहती रही है । क्यों ?

बाबा : हम सभी माध्यम हैं ।

फाल्गुनी : एक सशक्त व्यक्ति कहीं–कहीं इतना दुर्बल क्यों होता है?

बाबा : शान्त और सभ्य व्यक्ति ही सशक्त होता है । ( )

(फेड आउट)

दृश्य–10

(मेडिकल संस्थान में डॉ. बाकची की केबिन । एक दो अन्य वरिष्ठ मनोचिकित्सकों के साथ फाल्गुनी केस डिस्कस कर रही है)

डॉ.बाकची : तुम ड्रग क्यों नहीं देती ?

फाल्गुनी : वह हमारे अर्थो में सीजोफ्रेनिक नहीं है । He is not clinically schizophrenic.

डॉ.बाकची : जब तुम्हारे पास उसके बारे में clear comprehension है तो फिर केस क्यों ट्रांसफर करना चाह रही हो ?

डॉ.बैनर्जी : Because he is not clinically schizophrenic.

संघमित्र : What does it mean ? What is implied in "not schizophrenic clinically" ? Is he not unnecessary attacking ?

फाल्गुनी : No. He is not attacking in our symptomatic ways.

डॉ.बाकची: What about his fears ?

फाल्गुनी : वह डरता है, और जब नहीं डरता तब कहता है, वह डरने की acting करता है । acting और reality में मैं अब फर्क करने की स्थिति में नहीं रही ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उसकी सुरक्षा में हम enlightened हो सकते हैं । उसके मूल अस्तित्व पर मानो एक थिक कुहासा चढ़ गया है जहाँ वह असुरक्षित है । कुहासे में सोये इस मूल की सुगन्ध आप महसूस कर सकते हैं । कुहासा उसकी conditioning हैं । संस्कार के बादलों में स्वभाव का सूरज छिप गया है। उसे अपना मूल देखना है । मैं दिखा नहीं पा रही...।

डॉ.बैनजी : इसलिए केस ट्रांस्फर कर ही हो । Well. ट्रांसफर करो किन्तु psychiatric की जगह किसी साधु को, क्योंकि सिद्धार्थ, तुम्हारे synthesis से लग रहा है कि, तुम उसे clinically नहीं, philosophically treat कर रही हो । कहीं यह भी किसी high scale की acting तो नहीं ?

(सिद्धार्थ प्रवेश करता है)

Well, come on and join us, (   ) So my dear boy ! This world is a stage and you are simply playing your role ?

सिद्धार्थ : No. The cause of human happiness and misery is a false representation of the understanding. This world is a stage stretched out by the mind, its chief actor atman sit silent as a spectator of the scene.

(फाल्गुनी को छोड़ कर सभी गंभीर होते हैं)

(डॉ. बाकची चुरूट सुलगाते हैं । संघमित्रा मानें ऐप्रन की जेब में कुछ ढूँढती है । फाल्गुनी एकटक सिद्धार्थ को देखना चाह रही है । किन्तु.... । यहां इनके संवाद में सिद्धार्थ का एक बिल्कुल अलग रूप प्रकट होता है, जिसे नैरेट करना मुश्किल है । इसलिए संवाद ही अविकल सुनिए –)

डॉ.बैनर्जी : Very Good......very good ! So you have extended Shakespeare to Atman. Good convergence.

सिद्धार्थ : Sorry. This is not convergence. This is Yoga Vasishtha. Have you ever read it?

डॉ.बैनर्जी : No. You have ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सिद्धार्थ : No. Life is a suggestion all the way to explore the Yoga Vasishtha already in you. 'Within' is the key word.

डॉ.बाकची : फाल्गुनी एक Prudent, inquisitive psychi-atrist होकर भी तुम्हें diagnose नहीं कर पा रही । तुम्हारे मन का synthesis उसके लिए कठिन हो गया है। तुम cooperate नहीं कर रहे क्या ?

सिद्धार्थ : आप synthesize क्यों कर रहे हैं ?

डॉ.बनर्जी : To find the truth of your gene, the nature of your gene. Otherwiseसारे therapy meaningless होंगे ।

सिद्धार्थ : आप synthetic ढूँढेंगे तो analytic truth मिलेगा ।

संघमित्रा : मतलब ?

सिद्धार्थ : Objective knowledge has a double origin-sensibility and understanding. "All bachelors are unmarried" यह analytic truth है और 'All bachelors are unfulfilled' यह synthetic truth है.....

संघमित्रा : According to you.

सिद्धार्थ : No.यह kant का critique of pure reason है । So the question is how is synthetic a priori knowledge possible ? this is the fundamental question of metaphysics. All objects that can be given to us can be conceptualized in two ways. On the one hand, as appearances, on the other hand, as things in themselves. And all of you can see, appearance can be deceptive. Appearance is, you can say, acting or lila, and the verse or passage or content of consciousness is direction. You have to sit silently and enjoy the play.

(संघमित्रा कुछ फुसफुसाकर चली जाती है, फिर लौट आती है)

डॉ.बनर्जी : Appreciable nature of gene

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सिद्धार्थ : Nature has no light of its own. It reflects by dint of the light of Purusha. If Purusha dose not give light to nature, it can not play. Nature's purpose to play is only to liberate Purusha.

डॉ.बनर्जी : Now, what we have to do ?

सिद्धार्थ : If you only do your duty, fully and cheer-fully, you will have help given to you, no matter how or from where. See in the morning every day, what the duty you have to do for the day, do it well. The rest will take care of itself.

(सभी एक–एक कर उठ कर चले जाते हैं, क्योंकि उनसे पहले सिद्धार्थ चला गया होता है । सिर्फ बची रह जाती है फाल्गुनी । कमरे की रोशनी, जो कमरे के बीच मेज के ऊपर चुप लटक रहे बल्ब से फैलती हुई है, से लग रहा है मानो बाहर तेज बारिश शुरू हो गयी है।)

(कभी तो लगता है, वह जाते–जाते बोल गये डॉ. बाकची की इस टिप्पणी 'डिफिकल्ट कॉम्प्लेक्सिटी' पर सोच रही है, फिर कभी लगता है कि यह बिल्कुल असहाय हो गयी है । उसकी सोच के शब्द मेज पर रखे पैंड पर बिधते जा रहे हैं । शटल कॉम्प्लेक्सिटी... कान्ट... हीन भावना...हम सब कुछ नहीं है....मोहनानन्द स्वामी.... सिन्थेटिक टूथ... ऐक्टिंग.... । सब कुछ और उस वक्त को महसूस कर भी ध्रुपद 'टी वी' म्यूट कर देख रहा है । पास में रखे गमले और अनार के पेड़ से उड़ कर एक नन्हीं, बिल्कुल काली सी चिड़िया पैड के पास रखे 'कुछ' को उठाकर उड़ जाती है । फाल्गुनी अचानक उठती है । कुछ चहलकदमी कर रिमोट से टी.वी. ऑफ कर देती है और ध्रुपद से पूछती है कि क्या वह अपनी शूटिंग कर रही टी.वी. टीम को कल सुबह इन्स्टीच्यूट बुला सकता है । ध्रुपद के पूछने पर वह सिर्फ कहती है–ऐक्टिंग थिरेपी ।

अगली सुबह इन्स्टीच्यूट के कमरे में सिद्धार्थ और

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

फाल्गुनी बैठे होते हैं कि एक दाढ़ी वाला युवक आता है और फाल्गुनी को बताता है कि उसे शूटिंग के लिए एक सचमुच सीजोफ्रेनिक रोगी की जरूरत है सिर्फ एक दृश्य के लिए । उसमें रोगी को सिर्फ यह करना है कि सामने माँ का शव रखा है और उसे देखकर उसे सिर्फ रोना है । बस । फाल्गुनी सिद्धार्थ से पूछती है । वह तैयार हो जाता है । उसके स्पॉट के ओर बढ़ने के बाद फाल्गुनी वहीं आये, डॉ. बाकची को बताती है कि वह यह सब काल्पनिक ऐक्टिंग थिरेपी के तहत कर रही है । ऐक्टिंग की ऐक्टिंग करते हुए, हो सकता है, उसमें कोई फर्क पड़े और कुछ प्रकट हो सके । वह उसके डर और दुःख को वास्तव में प्रकट होते देखना चाहती है । सुनकर डॉ. बाकची व्यंग्य से मुस्करा कर अपने चेम्बर में चले जाते हैं । किन्तु उधर शव देख कर सिद्धार्थ जो कहता है, निर्देशक क्षुब्ध हो जाता है । निर्देशक के इस निर्देश पर कि उसे डरने और दुःखी होने का अभिनय करना है, सिद्धार्थ कहता है कि इसमें डरने या दुखी होने की क्या जरूरत है । शव का तुरन्त अन्तिम संस्कार कर दिया जाय । फिर वो न जाने कहाँ चला जाता है ।

अगले दृश्य में कुछ नहीं है । सिर्फ कमरे में ध्रुपद और फाल्गुनी है । फाल्गुनी पूरे कमरे में अजीब वीरानी के साथ घूम रही है । जब भी ध्रुपद उससे पूछ रहा है, क्या वह सचमुच सिद्धार्थ से प्रेम करती है, वह शून्य की ओर देख उत्तर में सिर्फ पूछ रही है – क्या हर भयमुक्त पुरूष तत्पुरूष होता है.....?)

सन्ध्या से पहले ही वृक्ष निस्तब्ध हो गये हैं ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चौथा अध्याय

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्त्री और पुरूष दोनों एक दूसरे से जीवन भर प्रेम करें, यह सम्भव है ? इस अभिप्राय से इसकी कहानी है। विकल्प अपनी प्रेमिका को इसलिए तैयार करता है कि वह उससे और उसके दोस्त अंजन से प्रेम करे और वे दोनों उससे यानी वृन्दा घोषाल से। स्वाभाविक रूप से जब वृन्दा विकल्प से प्रेम करने लगेगी तो अंजन शर्त हारकर दोनों के प्रेम को विवाह की परिणति सौंप देगा। जबकि भेद यह है कि अंजन भी वृन्दा से प्रेम करता है और वृन्दा दोनों से अलग–अलग । प्रेम करने के अभिनय के दौरान वृन्दा के सामने यह भ्रम प्रकट होता है कि कौन सा वास्तविक प्रेम है। जो पहले था वह या जो इस प्रयोग के दौरान हो रहा है वह । प्रेम और अभिनय के बीच यह ट्रेजीकॉमेडी –

इसका प्रथम मंचन वाराणसी में 2004 में हुआ। दूसरा और तीसरा मंचन 2005 में कमशः गोरखपुर और जयपुर में और चौथा मंचन 2006 में जौनपुर में हुआ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दृश्य–1

विकल्प : (दर्शकों से) नमस्कार । स्त्री की ट्रेजेडी आज भी पुरूषों के लिए कॉमेडी है । ये मैं नहीं कह रहा। लेखक ने भी इसे नहीं लिखा है । ये तो उस प्रयोग से निकली हुई बात है जिसे आप अभी देखेंगें । अब बताइए मैं क्या करता ! मैंने अंजन को समझाया अंजन मेरा दोस्त..... जीनियस...... बहुत प्यारा.........मॉलिक्यूलर बॉयलॉजी में इस बार एम.एस.सी. अंतिम वर्ष में है, मेरे साथ ही हॉस्टल में, मेरे ही रूम नं ग्यारह में रहता है । मैने उसे समझाया कि ट्रू लव पॉसिब्ल नहीं इस कलियुग में । ट्रू लव यानी दोनों ओर से प्रेम, लेकिन वो माना ही नहीं जिद्द करता रहा कि यदि सच्चे दिल से किसी लड़की से प्रेम करो तो वो भी सच्चे दिल से प्रेम करेगी, बताइए ! आज तक ऐसा कभी हुआ है ? बहरहाल वृन्दा ! वृन्दा घोषाल, से मिलकर मैं लौट रहा हूँ । वो तैयार हो गयी है इस प्रयोग के लिए कि हम दोनों उससे एक साथ पहली बात मिलेंगे, प्रेम से मिलेंगे, प्रेम करेंगे, सच्चे दिल से प्रेम करेंगे, अब यदि वो भी हम में से किसी एक से सच्चे दिल से प्रेम करने लगी तो दोनों की हम लोग शादी करवा देंगे । ठीक है ? तैयार है न ! लेकिन अंजन को बताइएगा नहीं कि मैं और वृन्दा पहले से एक दूसरे को प्यार करते हैं । आप दर्शक हैं, भेद आपको सौंप कर चलते हैं रूम नं. ग्यारह की ओर अंजन के पास । वो इन्तजार कर रहा है मेरा, सोच रहा है कि इस प्रयोग के लिए लड़की तैयार हुई कि नहीं, उसे तो वृन्दा का नाम तक मालूम नहीं । अगर प्रेम है तो प्रयोग जरूरी है, और प्रयोग के लिए एक अदद लड़की भी जरूरी है देखिए ये आपको ट्रेजेडी लगती है या कॉमेडी ? चलते हैं.........

(फेड आउट)

दृश्य–2

(फेड इन)

विकल्प : (प्रवेश करते हुए) मैंने तुझे कहा था कि नहीं ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंजन : क्या ?
विकल्प : कि women's love is an impossibility...
अंजन : यानी वो तैयार नहीं हुई। तो सीधे बोल न! बेकार में फोक सॉग को क्लासिकिल बना रहा है ।
विकल्प : नहीं यार, यहीं तो मात खा गया J.N.U. ! वो मान गयी ।
अंजन : नहीं !
विकल्प : हाँ ।
अंजन : अरे नहीं नहीं ।
विकल्प : हाँ भई हाँ ।
अंजन : अरे नहीं ! वो मान ही नहीं सकती वो कैसे मान सकती है ?
विकल्प : नहीं मान सकती ?
अंजन : नहीं मान सकती ।
विकल्प : नहीं ।
अंजन : नहीं, मान गयी है चले ? (कहकर चलने लगता है)
विकल्प : कहाँ ?
अंजन : उसी के पास ।
विकल्प : नहीं, हाँ उसी के पास..... उसी के पास ! चाय तो पी लें ?
अंजल : वहीं पीते हैं ना !
विकल्प : कहाँ !!
अंजन : J.N.U. में ।

(फेड आउट)

दृश्य–3

(फेड इन)

(नेपथ्य में 'राम निरंजन न्यारा रे अंजन सकल पसारा रे' कबीर पद गान)

विकल्प : (वृन्दा से) ये अंजन ।
वृन्दा : (आश्चर्य से) कौन अंजन ? कहाँ अंजन ? कैसा अंजन ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विकल्प : मेरा दोस्त, मॉलिक्यूलर बॉयलॉजी में मेरे साथ M.Sc. कर रहा है ।

वृन्दा : लेकिन उसका कोई मॉलिक्यूल तो दिखे ।

विकल्प : (आश्चर्य से) अरे, तू वहाँ क्या कर रहा है ?

अंजन : Atomic Explosion की पूरी परिस्थिति है यहाँ, जी नमस्ते ! मैं अंजन मेहरोत्रा आप ? (विकल्प से पूछते हुए)

वृन्दा : उधर नहीं इधर ।

विकल्प : इधर नहीं उधर ।

अंजन : लेकिन आप ? (विकल्प से)

विकल्प : हाँ मैं तो ?

अंजन : तो आप क्यों ?

विकल्प : अरे मैं..... तू तो ऐसे देख रहा है मानो पहली बार देख रहा है .... (वृन्दा से) प्यारा दोस्त है जीनियस ।

अंजन : ठीक है, लेकिन आप यहाँ क्या कर रहे है ?

विकल्प : अरे मैं ही तो तुझे लेकर यहाँ तक आया !

अंजन : तो ये हो गया न ! अब ?

विकल्प : अब ।

वृन्दा : अब आप दोनों यही रहेंगे, मेरे साथ आज शाम एक साथ कॉफी पियेंगे, मैं वृन्दा घोषाल.... (खास अदा में)

विकल्प : मैं विकल्प, अंजन का नहीं। इसे न तो मुझ पर आस्था है न विश्वास ।

वृन्दा : आप कोई राम मंदिर है क्या ?

अंजन : (सोचकर) आस्था विश्वास... किसी बंगाली लड़की का नाम लगता है, नहीं ?

वृन्दा : बंगाली हूँ भी, गाती भी हूँ, डान्स भी करती हूँ, पेन्टिंग भी, ये आज ही बनायी है, कैसी है ? इधर मॉडलिंग भी Join कर रखा है ।

विकल्प : क्यों ?

वृन्दा : क्योंकि बंगाली हूँ ..... न ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंजन : अच्छा–अच्छा तो आप ये भी हैं । इसने तो बताया था यार तूने तो बताया था ये लड़की है। ये तो बंगाली निकली !

वृन्दा : क्या ?

अंजन : नहीं नहीं इसने दरअसल कहा था.......

वृन्दा : क्या कहा था आपने मेरे बारे में ....

अंजन : बता दूँ ?

विकल्प : बता दें !

अंजन : (खुश होकर) इसने कहा था कि जैसे पंख होते हुए भी मुर्गी चिड़िया नहीं होती वैसे ही लड़कियों को देखकर लगता है कि हाथ पाँव, आँख, कान से वे इंसान जैसी तो हैं लेकिन.....

वृन्दा : लेकिन वे इन्सान होते नहीं ।

विकल्प : नहीं...

वृन्दा : तो ये ख्याल है आपका लड़कियों के बारे में ?

विकल्प : नहीं, नहीं ....

वृन्दा : नहीं–नहीं तो क्या, जब हम इंसान नहीं तो ?

अंजन : जाइए किसी मुर्गी के पास !

वृन्दा : क्या ?

अंजन : मेरा मतलब किसी ....

विकल्प : अरे यार ये मैंने नहीं फिलॉसॉफर शोपेनहॉर ने कहा था...

अंजन : ...कि हम मुर्गी के पास जाए !

वृन्दा : क्या ? मैं जा रही हूँ !

अंजन : कहाँ ?

विकल्प : बनाने । कॉफी या पेन्टिंग ?

वृन्दा : जब हम खामोश होते हैं तब हम खामोश नहीं होते जब हम प्रेम करते हैं तब हम प्रेम नहीं करते जब हम अन्धेरे में चलते हैं तब हम अन्धेरे में चलते हैं ।

अंजन : विकल्प (साथ में) मतलब !

वृन्दा : कविता भी लिखती हूँ न।

अंजन : वाह !

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विकल्प : राइट। आप कविता सुनाइए, आप कविता सुनिए मैं मुर्गी, मतलब पेन्टिंग, मतलब कॉफी बनाकर लाता हूँ । (अन्दर जाता है)

अंजन : जी सुनाइए ।

वृन्दा : तुमने तो कभी विकल्प के बारे में बताया नहीं ?

अंजन : क्या ?

वृन्दा : कि तुम उसे जानते हो ।

अंजन : तुमने बताया कभी ?

वृन्दा : क्या ?

अंजन : कि तुम कविता भी लिखती हो ।

वृन्दा : कविता !

अंजन : हाँ, कविता ! मेरे लिए तो निबन्ध है, गया है कॉफी बनाने ।

वृन्दा : वो तुम्हारा विकल्प नहीं ।

अंजन : तो क्या तुम्हारा है ? तुम्हारा विकल्प । कब से जानती हो ?

वृन्दा : ये तो जेलसी है ।

अंजन : और क्या इसे कविता कहे । (विकल्प का प्रवेश)

विकल्प : कॉफी हाजिर है, क्या हुआ ?

अंजन : पहली कविता सुनी बहुत अच्छी लगी, कॉफी के साथ बाई द वे, आपको यहाँ के किचेन तक की जानकारी है ।

विकल्प : जी हाँ । किचेन की भी और चिकेन की भी। चलो कॉफी पियो । स्टीफेन हॉकिंग के बारे में कुछ बताया कि नहीं ?

वृन्दा : स्टीफेन हॉकिंग ! (खुश होकर) वो जिसने ब्लैक होल का कन्सेप्ट दिया है ? (यहाँ सारे विषयवस्तु एक दूसरे को इंगित करते प्रतीत हैं)

अंजन : अब उसने अपनी ही थ्योरी को खारिज कर दिया । (वृन्दा को इशारा कर) मिलते– मिलते रह गयी नोबल प्राइज ।

विकल्प : मिलेगी तो जरूर ।

अंजन : देखो किसे मिलती है ।

वृन्दा : जीवन में प्राइज नहीं प्रिपेयरेशन जरूरी है ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विकल्प : राइट ।
अंजन : वही तो कर रहे हैं ।
विकल्प : राइट ।
अंजन : यहाँ तो सफोकेशन है। नहीं ? हम गार्डेन में काफी पियें? (अंजन, वृन्दा फ्रीज)
विकल्प : अच्छा मैं किचेन तो बरखुरदार गार्डेन, आइए ।
अंजन : तुम्हें तो सर से मिलना था ।
विकल्प : कल मिल लूंगा, अभी तो मैं भी सुनुंगा ।
अंजन : क्या ?
वृन्दा : कविता ।
अंजन : आपको अज्ञेय पसन्द है कि मुक्तिबोध ?
विकल्प : वेरीगुड ।
वृन्दा : Wow ! मॉलिक्यूलर बॉयलॉजी के साथ मुक्तिबोध भी ।
अंजन : नहीं, विज्ञान और कविता साथ–साथ चले तो प्रेम सुरक्षित है। चलें ?
विकल्प : कभी साथ–साथ चले हैं ?
अंजन : कौन ?
विकल्प : मुर्गी और मुक्तिबोध ?
अंजन : हाँ कभी–कभी साथ भी चलतें हैं ।
विकल्प : हाँ अंजन और उसका विकल्प
अंजन : नहीं तू मेरा विकल्प नहीं ।
वृन्दा : अंजन जी मुझे आपसे कुछ बात करनी है ।
अंजन : जी कहिए। (विकल्प जाने लगता है वृन्दा उसे रोकती है)
वृन्दा : नहीं आप रहिए ।
अंजन : क्यों ?
वृन्दा : उनके रहने से आपको क्या परेशानी है ?
विकल्प : नहीं मेरे रहने से उसे कोई परेशानी नहीं ।
वृन्दा : (अंजन से) M.Sc के बाद आप क्या करेंगे ।
अंजन : टॉफेल । सिलेक्शन हो गया तो States चला जाऊँगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विकल्प : बिना शादी किये, वहीं कर लेगा । इसे विदेशी लड़कियाँ ज्यादा पसंद है ।

वृन्दा : क्यों आपका भारत महान नहीं ?

अंजन : ये एक महान ही काफी नहीं ?

विकल्प : कितनी अच्छी शामें गुजरेंगी न हमारी ! (वृन्दा के साथ चलते हुए) न्यूयार्क से कभी–कभी अंजन का फोन आता रहेगा । हम मुर्गी मतलब कॉफी पीते हुए ....

वृन्दा : (बात काटकर अंजन से) पेन्टिंग किया करेंगे न्यूयॉर्क के किसी फेन्स में, कितना अच्छा लगेगा न अंजन ? भगवान करें आप के पास खूब सारा पैसा आए और आप खूब सारा मुझ पर लूटा दें । मुझे भी विदेश जाने का शौक है, एक बार जाने की इच्छा है ।

विकल्प : लेकिन तुम नहीं जा सकती न ! साथ जाओगी तो वहाँ की गॉरमेन्ट समझेगी, तुम दोनों वहाँ की नागरिकता ले लोगी ।

अंजन : तो ले लेंगे ।

विकल्प : नहीं न ! तुम चले जाओगे तो मेरा क्या होगा ?

अंजन : तुम अपने गाँव चले जाना तुम्हें अपने देश अपनी मिट्टी से बहुत प्यार है ।

विकल्प : नहीं न ।

वृन्दा : क्या नहीं न । तुम गाँव ही जाओगे और मैं भी तुम्हारे साथ ही चलूंगी ।

विकल्प : फिर क्या ? (अंजन से) मैं अभी तेरी फ्लाइट की टिकट ले आता हूँ । तू वहीं जाकर बस जा, नागरिकता मैं दिला दूंगा ।

अंजन : पहले मास्टर्स तो पूरी कर लूं ।

वृन्दा : (इतराकर) तो करिए न ! खाली कहते हैं ।

अंजन : आपके क्या है ?

वृन्दा : क्या ?

अंजन : फ्यूचर प्लान ।

वृन्दा : मैं पहले N.S.D. Join करूँगी, फिर पुणे जाऊंगी, वर्षा वशिष्ठ की तरह नहीं, फिर ऐश्वर्या से मिलूंगी ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंजन : (सोचते हुए) ये ऐश्वर्या कौन ? फिर कोई बंगाली ।

विकल्प : तू जाकर टॉफेल कर । तू ये सब नहीं समझेगा। ये उत्तर आधुनिक मॉलिक्यूलर बॉयलॉजी है । इसके लिए वृन्दा जी मैं हू ना !

वृन्दा : न न आप क्या करेंगे ? आपके लिए मुक्तिबोध और मुर्गी जब बराबर है तो !

विकल्प : तो फिर मैं चलता हूँ (जाना नहीं चाहता)

अंजन : अरे नहीं नहीं (उसे रोक नहीं रहा)

विकल्प : नहीं अब मैं... मुर्गी कहा .....(रूंआसा)

अंजन : अरे नहीं नहीं ।

विकल्प : बताइए मुर्गी कहा..... मुझे...... मैं जा रहा हूँ (हाथ बढ़ाकर चाह रहा कि अंजन उसे रोक ले)

अंजन : आप कहीं नहीं जायेगे (कोफ्त में उसे पकड़ कर) यहाँ बैठकर ठंडी कॉफी भी नहीं पियेंगे। आप दोनों मुक्ति और बोध की चर्चा कीजिए मैं गर्मा–गर्म कॉफी बनाकर लाता हूँ । (चला जाता है)

वृन्दा : (विकल्प को प्रेम से बोलते हुए) क्या है ?

विकल्प : क्या है । (झल्लाकर)

वृन्दा : जरूरी था उन्हें बताना ?

विकल्प : (गुस्से से) क्या ?

वृन्दा : कि हम दोनों एक दूसरे को पहले से जानते हैं ।

विकल्प : ! !

वृन्दा : आज अंजन पहली बार मिल रहे हैं मुझसे ....

विकल्प : लगता तो नहीं है ।

वृन्दा : क्या लगता नहीं है, उन्हें मुझसे प्रेम ..... प्रेम का अभिनय करने दीजिए। मैं हूँ तो तुम्हारी ही न ।

विकल्प : लेकिन तुम उससे हिलमिल ऐसी गयी हो कि लगता है मानो उसी की प्रेमिका हो ...... ।

वृन्दा : अरे, तो तुम्हीं ने तो कहा था, कि उससे प्रेम का अभिनय करना, तो कर रही हूँ, तुम्हें मुझ पर आस्था विश्वास नहीं ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विकल्प : नहीं तुम्हारे अभिनय को सच समझकर कहीं वो सचमुच तुम्हें प्रेम न करने लगे ।

वृन्दा : यह भय है, प्रेम नहीं, दोनों का सहअस्तित्व सम्भव नहीं, तुम्हीं ने तो कहा है उसे कि, वो मुझसे प्रेम करे, अब कर रहा है, तो मुश्किल ?

विकल्प : नहीं नहीं ! मैंने उससे कहा था कि वो तुमसे प्रेम करे, तुमसे व्यक्तिगत कहा था कि उससे प्रेम करो । लेकिन चाहता था कि वो भी प्रेम का अभिनय करे प्रेम नहीं ।

वृन्दा : तो मैं जाकर बता देती हूँ । (जाने लगती है)

विकल्प : नहीं नहीं ।

वृन्दा : (रूककर) अच्छा एक बात बताओ । तुम प्रेम हो या प्रेम का विकल्प ?

विकल्प : मतलब !!

वृन्दा : माने ये कि अंजन से पहले तुम जो थे वो सच है या उसके होने से अब जो तुम क्रमशः होते जा रहे हो वो सच है ।

विकल्प : मैंने कहा था अंजन से कि दोनों ओर से प्रेम, सच्चा प्रेम मुमकिन नहीं ।

वृन्दा : तो उनका क्या कहना है ?

विकल्प : वो कहता है कि दोनों ओर से True Love possible है ।

वृन्दा : और मैं क्या कहती हूँ ?

विकल्प : ये तो मैंने कभी पूछा ही नहीं ! ( ) (अंजन का प्रवेश)

अंजन : गर्मागरम कॉफी । क्या हुआ ?

विकल्प : कुछ नहीं पहली कविता ये थी जो तूने नहीं सुनी ।

दृश्य – 4

वृन्दा : (अंजन से) कहाँ गये ?

अंजन : कौन ?

वृन्दा : विकल्प

अंजन : लड़कियों को हमेशा उसकी चिंता क्यों होती है जो नहीं होता ? Now he is no more between us.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वृन्दा : ऐसा ?
अंजन : तुम्हें दुःख है ! सो सॉरी !
वृन्दा : It's all right.
अंजन : क्या It's all right ? तुम्हें दरअसल कौन चाहिए अंजन कि उसका विकल्प ?
वृन्दा : मैं उसे तुम्हारा विकल्प नहीं मानती ।
अंजन : अरे यार । मैं कह रहा हूँ कि तुम्हें अभी अंजन चाहिए कि विकल्प ?
वृन्दा : अभी तो अंजन ....
अंजन : अच्छा ! बाद में विकल्प ?
वृन्दा : मैं तो तुम्हें हमेशा के लिए चाहती हूँ ।
अंजन : इसलिए न ये प्रयोग किया जा रहा है कि तुम शुरू–शुरू में मुझे थोड़ा नापसन्द .टाइप करना...
वृन्दा : ठीक ।
अंजन : अभी नहीं । जब वो यहाँ रहे। फिर धीरे–धीरे मुझसे प्रेम करने लगना बस मेरी बात सच साबित हो जायेगी कि हम दोनों एक दूसरे से... करते हैं, यानी दोनों ओर से... सम्भव है यानी Womens love is an im....... Possibility – possiblity.
वृन्दा : फिर ?
अंजन : फिर क्या ! हमारे प्रेम की सार्वजनिक घोषणा शादी में बदल जायेगी । शर्त के मुताबिक विकल्प मेरा अभिभावक हो जाएगा । लेकिन यार तुम्हारे पापा (पापा का खांसते हुए प्रवेश तुरन्त प्रस्थान) अच्छी मुसीबत है बोलते ही प्रकट हो जाते हैं ।
वृन्दा : लेकिन........
अंजन : लेकिन क्या ?
वृन्दा : लेकिन ये कि विकल्प के सामने मैं धीरे–धीरे ये जत्ताने लगूंगी कि मैं उसे नहीं तुम्हें प्रेम करने लगी हूँ तो साबित हो जायेगा कि हम दोनों में प्रेम है, लेकिन कैसे ? ये कैसे, मैं जानूंगी कि प्रेम, तुम भी करते हो मुझसे ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंजन : अच्छा–अच्छा ! तो ये तुम्हें आज जानना है कि मैं तुम्हें प्रेम करता हूँ कि नहीं ...... !

वृन्दा : हाँ ।

अंजन : (चौंककर) हाँ ? तुम्हें क्या लगता है, तुम्हें लेकर मेरे मन में क्या है ?

वृन्दा : भय और ईर्ष्या ।

अंजन : (हंसकर) तो प्रेम है तभी तो (बैठ जाता है)

वृन्दा : (नकल करते हुए) प्रेम नहीं है तभी तो । भय होगा तो प्रेम कैसे होगा ! दोनों का साथ होना तो स्त्रियों का गुण है तुम तो पुरूष हो !

अंजन : हूँ भी ।

वृन्दा : अच्छा–अच्छा ! तो आप पुरूष है भी इसलिए मान लिया जाए कि आप तो प्रेम करते ही हैं ?

अंजन : हाँ, शादी के बाद तक ।

वृन्दा : और विकल्प !

अंजन : लो... फिर विकल्प ! जब दो हों तो तीसरे की चर्चा ...

वृन्दा : स्त्रीगुण है न !

अंजन : तो ?

वृन्दा : (इतराकर) तो क्या ! आप भी विकल्प के सामने जत्ताने लगिएगा प्रेम तो मैं मान लूंगी कि आप भी कहते हैं मुझसे प्रेम । (नेपथ्य से व्यवधान)
(शेफाली का प्रवेश तुरन्त प्रस्थान यह कहते हुए कि कोई बात नहीं बाद में आती हूँ)

अंजल : हाँ तो हम क्या कर रहे थे ?

वृन्दा : जत्ता रहे थे ।

अंजन : (इतराकर) नहीं नहीं । ये सब विकल्प के सामने । प्रेम का अभिनय विकल्प के सामने, सच्चा प्रेम मेरे सामने ।

वृन्दा : लेकिन मेरे सामने क्या ? कौन सा प्रेम कौन सा अभिनय ? तुम सचमुच प्रेम करोगे तब तो मैं भी सचमुचा प्रेम करने लगूंगी तो तुम्हारी बात सही होगी ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंजन : हाँ मैं ऐसे सोचता हूँ, और विकल्प वैसे ।

वृन्दा : और मैं ?

अंजन : ये तो मैंने कभी सोचा ही नहीं ! ( ) तुम कैसे सोचती हो प्रेम पर ।

वृन्दा : मैं सोचती नहीं ।

अंजन : तुम सोचती ही नहीं ! (हंसकर) वेरीगुड ।

वृन्दा : हाँ मैं सोचती नहीं करती हूँ जब हम सोचते हैं तो प्रेम नहीं करते ।

अंजन : अब ये कविता नहीं है ।

वृन्दा : तो क्या है ?

अंजन : समस्या ।

वृन्दा : समस्या ? मैं और प्रेम तुम्हारे लिए समस्या हैं ?

अंजन : तुम नहीं तुम्हारे पापा (पापा का फिर प्रवेश–प्रस्थान) यदि,... यदि क्या श्योर, हम तो मिल ही जाएंगे, विकल्प हमें मिला देगा । लेकिन यदि पा....... नहीं मैंने कुछ नहीं कहा । मेरा मतलब यदि वो (उन्हीं की तरह खासकर) नहीं माने और हमारी शादी के खिलाफ हो गए तो ? (विकल्प का प्रवेश)

विकल्प : नहीं होंगे नहीं होगे, नहीं होंगे । होंगे तो मैं मैनेज कर लूंगा। पूरा हास्टल मुझे मैनेजमेन्ट का धीरूभाई मानता है ।

अंजन : कोकिलाबेन वाले ।

विकल्प : कोकिलाबेन वाले नहीं लाखों में एक वाले । तेरी स्थिति तो बने मैं यूं–यूं सम्भाल लूंगा वृन्दा जी के पापा को ! (बोलते ही पापा का प्रवेश सब चौकतें है)

(फेड आउट)

दृश्य–5

(शेफाली का प्रवेश) (फेड इन)

शेफाली : देख ऐसे उदास होने से कुछ नहीं होता Problem ये नहीं कि विकल्प और अंजन दोनों तुझसे अलग–अलग प्यार करते हैं, ये उन्हें नहीं पता । Problem ये है कि तू सचमुच किसे प्यार करती है ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वृन्दा : मेरी Problem से पहले, मेरा प्रश्न है कि दोनों में से सचमुच मुझे प्रेम कौन करता है ?

शेफाली : अच्छा चल मान लेते हैं, कि अंजन तुझसे प्रेम करता है तेरे प्रश्न का Answer हो गया न । तू बता फिर तेरी Problem क्या है ?

वृन्दा : Problem मेरी ये है कि मैं दोनों से प्रेम करती हूँ । नहीं ! Problem ये भी नहीं है, दोनों ये बात नहीं जानते । दोनों अलग–अलग जानते है कि मैं सिर्फ उसी से, उसी से प्यार करती हूँ, लेकिन मेरी Problem ये भी नहीं है ।

शेफाली : फिर क्या है तेरी Problem ?

वृन्दा : ये मुझे clear हो तब तो मैं बताऊँ ।

शेफाली : तू दोनों से कैसे प्रेम कर सकती है ।

वृन्दा : मुझे न ! अंजन का नीला रंग पसन्द है, मेरे कैरियर, मेरी सुन्दरता मेरे सपनों का रंग, और विकल्प का जोगिया रंग पसन्द है उसके निर्मोही होने का रंग उसके बैरागी होने का रंग ।

शेफाली : तो तू क्या करेगी ?

वृन्दा : देख मैं क्या करती हूँ तुझे और कुछ चाहिए तो किचन से ले ले और चली जा ।

दृश्य – 6

(फेड इन)

वृन्दा : अंजन कहा गए ?

विकल्प : (प्रवेश कर) विकल्प यहाँ है !!

वृन्दा : तो !

विकल्प : अच्छा तो !

वृन्दा : अरे बाबा । आप दोनों साथ आए हो तो दूसरे के बारे में नेचुरली सवाल बनेगा न ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विकल्प : (एक सांस में) वो तेरे मोबाइल का बिल आज ही जमा कर दिया था, रसीद रूम पर ही रह गयी थी वही मैं लाने चला गया था जानकर उसे बुरा लगा होगा इसलिए वो भी कुछ लाने चला गया होगा रूम से तुम्हारा (अचानक धीमे व्यंग्य से) क्या पता उसके पास भी तुम्हारा कुछ सामान...... सावन के भीगे रस्ते..... खतों में लिपटी रात ......

वृन्दा : शक कर रहे हो ! प्रेम कहोगे ?

विकल्प : पता नहीं वृन्दा मुझे न जाने क्यों ऐसा लग रहा है तुम दोनों एक दूसरे को पहले से जानते हो ।

वृन्दा : तुम्हारा चोर बुद्धि का उपद्रव कर रहा है ।

विकल्प : मैं सोचता हूँ उसके आने से मैं Direct बात कर लूँ तुम्हारे पापा से ...... (खासते हुए पापा का प्रवेश)

पापा : मैं भी सोचता हूँ आज बात Direct हो जाए

विकल्प : अंजन ! अंजन कहां गया ? कभी भी टाइम पर नहीं रहता अंजन .... (चला जाता है)

पापा : कहां गया ?

वृन्दा : अंजन को ढूंढने ।

पापा : क्यों ?

वृन्दा : क्योंकि आपको खांसी हुई है ।

पापा : अच्छा ! और वो दूसरा ?

वृन्दा : वो पहले को बताएगा कि वो आपके लिए दवा न ले आए ।

पापा : क्यों ?

वृन्दा : क्योंकि वो मुझसे प्रेम करता है दवा वही लाना चाहेगा ।

पापा : अच्छा जो दवा लाता है वो प्रेम करता है और तू !

वृन्दा : मैं अंजन से ! .... नहीं ......

विकल्प+अंजन (दोनों साथ प्रवेश करते है) बाप रे ! अभी तक है !

(प्रस्थान)

पापा : क्या हुआ ?

वृन्दा : आपके कमरे में है दवा (पापा अपने कमरे में

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चले जाते हैं)

पापा : (प्रवेश कर) लगता है हमें अब चलना चाहिए शाम से कुछ ज्यादा हो गयी है, नहीं ?

वृन्दा : रूको एक–एक कॉफी और हो जाए, अंजन कहां गए ?

विकल्प : (चिढ़कर) K Street palihill. अच्छा वृन्दा ! तुम्हें अंजन बहुत पसन्द है ?

वृन्दा : पसन्द नहीं प्रिय ! अभिनय में !

विकल्प : और सच में ।

वृन्दा : हम तीनों ही अब कन्फ्यूज्ड हैं। नहीं ? उसे चलो बता दें कि हम दोनों ही... उसे भी पता हो जाए बेवजह धोखे में..

विकल्प : (पुरानी आध्यत्मिक फिल्मों के संवादों की तरह) धोखे में दरअसल कौन है ? नहीं मैं नहीं, वशिष्ठ पूछते हैं, राम से ।

वृन्दा : अच्छा विकल्प ! मान लो इस रामलीला में परिस्थिति ऐसी बनती है..... नहीं.... जैसे.... मैथ में होता है..... मान लो..... ।

विकल्प : हाँ ! मान लो कि मैं किसी का विकल्प हूँ ।

वृन्दा : नहीं, वो तो तुम हो लेकिन मान लो, अंजन से मेरी शादी हो जाती है तो, तो तुम क्या करोगे, तुम तो अकेले रह जाओगे ?

विकल्प : जब हम अकेले हो रहे होते हैं तो संसार में कोई और भी अकेला हो रहा होता है, हमारे लिए ।

वृन्दा : ये किस फिलॉसॉफर ने कहा है ?

विकल्प : पोस्टमॉडर्नथिंकर गौतम चटर्जी ने ।

वृन्दा : Stop it, तुम्हें कोई फर्क नहीं पड़ेगा ? मुझे अंजन ले जाएगा और तुम किसी और के लिए अकेले हो रहे होगे ? तो जाओ अपनी उसी अकेली के पास, जो कहीं अकेली हो रही है तुम्हारे लिए, मैं अपने और अंजन की शादी का कार्ड छापने की बात करने जाती हूँ पापा से .... पापा........

पापा : (प्रवेश कर) मैं भी यही सोच रहा था । बहुत प्यारा लड़का है । अंजन कहाँ है ?

विकल्प : अंजन ! हाँ अंजन !! अंजन ...... (चला जाता है) (अंजन ऐसे प्रवेश करता है जैसे वापस जाने में भलाई हो)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंजन : पापा ! (मानो पकड़े गये)

पाता : हं, मैं हूँ ! बुलाने की जरूरंत नहीं । जीवन भर तो बुलाना ही है ।

अंजन : हाँ आपके जीवन भर ! यही कोई, साल छः महीने लेकिन क्यों ?

पापा : क्यों ? मेरी बेटी से शादी करेगा तो पापा कहना छोड़ देगा ?

अंजन : नहीं ! जब कभी आपका फोन आया या आप हमारे घर ही कभी कभार आ गये

पापा : जरूरत ही नहीं होगी ।

अंजन : क्यों ?

पापा : क्योंकि तू तो यही रहेगा । बशर्ते ...

वृन्दा : बशर्ते क्या पापा......

पापा : हं.....बोलने की जरूरत नहीं, हूँ..... (स्वगत) ये छोकरा अभी पढ़ रहा है, कहाँ से लाएगा पाँच लाख !

अंजन : 5 लाख ! (वृन्दा से) टंगेंगे न हमारी शादी में, झालर!

पापा : झालर ? अबे 5 लाख कैश, देखे है ?

अंजन : कभी बैंक लॉकर में भी नहीं

पापा : तो फिर उस दूसरे छोकरे का नाम ।

वृन्दा : विकल्प ।

अंजन : नहीं नहीं...... । देखें हैं... देखें हैं ! अभी लाऊँ अभी तो आपको दवा की जरूरत है । (वृन्दा से) 5 लाख की दवा पीयेंगे ? क्या करेंगे 5 लाख का

पापा : तो कोई और लड़की देख..... लड़की नहीं तो लड़की का बाप देख..... बाप नहीं..... लड़की का विकल्प देख ।

अंजन : नहीं विकल्प नहीं । (दौड़कर पापा का पैर पकड़ता है)

पापा : तो कोई और लड़की देख ।

अंजन : नहीं है न संसार में दूसरा कोई

पापा : कैसे रहेगी ? हँ ! कैसे रहेगी ? सबको तो मार दिया तुम लोगों ने ! वो इतनी बड़ी मशीन पर देख लेना सीख गए हो कि लड़की है पेट में तो बाहर निकलने ही मत दो, मार डालो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उसे पेट में ही, तो फिर कहाँ से मिलेगी तुम्हें लड़की ! सारी बच्चियों को तो मार डाला है तुम लोगों ने, इस एक को मैंने बचा लिया है, माँ इसकी मर गयी बचपन में ही, अब मैं इसे मरने नहीं दूंगा...... जा..... 5 लाख ले आ ..... शादी कर... यहीं रह .... तो मैं दूंगा तुझे, अपनी.....बेटी ! (दृश्य गम्भीर हो उठता है)

फेड आउट

दृश्य–7

फेड इन

अंजन : (विकल्प को मनाते हुए) सब कुछ माँ, बाप, भाई, बहन सब कुछ ले ले लेकिन .....

विकल्प : वो सब लेकर क्या करूंगा ? जरा सी भी शर्म नहीं, मेरी वृन्दा को...... (रूआंसा होता है)

अंजन : तेरी वृन्दा नहीं ! वो मुझसे प्रेम करती है, कहा है मुझसे कहेगी तुझसे भी ।

विकल्प : कहेगी ! हाँ ? वो मुझसे कहेगी ? कहेगी कि मुझसे प्रेम नहीं करती, बोल ?

अंजन : हाँ । वो सच कहेगी ।

विकल्प : मुर्गी होकर सच कहेगी ?

अंजन : हाँ अब तू बस पापा को....

विकल्प : अरे पापा नहीं (उल्टे पांव भागना चाह रहा है)

अंजन : (कुर्सी पर बिठाते हुए) दोस्त ही दोस्त के काम आता है तू उन्हें सम्भाल और ह्यूस्टन टेक्सास फोन कर अपने अंकल को कि दो दिनों में 5 लाख भेज दें ।

विकल्प : मैं कुछ नहीं कहूंगा। वृन्दा के लिए तू ही जुटा 5 लाख और तू ही सम्भाल.... (हाथ बढ़ाता है, अंजन दबाने लगता है) मैं तो निबन्ध हूँ न तेरे लिए (विकल्प पैर बढ़ाता है) मेरी थ्योरी भी खारिज की थी (पांव भी बढ़ा देता है अंजन दबाने लगता है)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंजन : तेरी सारी थ्योरी उसे पढ़ा दूंगा । मेरी नामौजूदगी में तू ही पढ़ा देना, वो तुझे कविता सुनाएगी तू मेरी वाली भी कॉफी पी लेना । बस अपने मोबाइल से एक फोन अंकल को.........

विकल्प : हूं ।

अंजन : लेकिन उससे पहले जरा एक फाइनल बात पापा को सम्भालने की............

विकल्प : ये मुझसे नहीं होगा । (स्टेज से उतर जाता है पीछे से अंजन उतरता है विकल्प फिर चढ़ता है अंजन भी चढता है ।)

विकल्प : ये 5 लाख क्या करेगा बुड्ढा । 5 लाख में तो दंगे होते है आजकल ।

अंजन : दंगा बोले तो ?

विकल्प : हाँ ?

अंजन : हं ! तब तो तू ही ले जा वृन्दा को मुझे घर में नहीं कराना दंगा !

(दंगाई का प्रवेश)

दंगाई : किधर कराना है साब दंगा, बोलने का ?

विकल्प : नहीं बाबा नहीं हम इस दंगे में फसे हैं ।

दंगाई : (जाते–जाते) बरोबर, जरूरत पड़ेगा तो बुलाने का फोकट में खाली पीली......

अंजन : यार विकल्प

विकल्प : बोल अंजन

अंजन : यार एक बात समझ नहीं आयी, हमारे इस दंगे, मेरा मतलब, प्रयोग के चार अध्याय बन गए हैं । पहला अध्याय वृन्दा दूसरा मैं तीसरा...

विकल्प : मैं ।

अंजन : हाँ । लेकिन ये चौथा अध्याय कौन है ? (पापा का प्रवेश)

विकल्प : (कांपकर) तू भी वो देख रहा है जो मैं देख रहा हूँ ?

अंजन : नहीं मैं जो देख रहा हूँ वो सच है या ......

विकल्प : यार हम दोनों एक ही सच देख रहे हैं....

पापा : हाँ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंजन : नहीं डिस्कस कर रहे थे कि क्यों न हम दंगा करे !

पापा : क्या

अंजन : नहीं, नहीं हम पूछ रहे थे कि हमारे इस प्रयोग का पहला दूसरा तीसरा अध्याय तो हो गया है ये चौथा अध्याय कौन है ?

पापा : मैं हूँ ना चौथा अध्याय । मुझे सुनोगे तो सारे अध्याय पढ़ लोगे, मेरी विधि से जब तुम वृन्दा को प्राप्त करोगे तो बोलो एक

अंजन : एक

पापा : मुझे पैसा मिलेगा ।

अंजन : दो

पापा : मुझे बेटा मिलेगा ।

अंजन : तीन

पापा : मेरे पास अकेलापन नहीं होगा ।

अंजन : और चार......

पापा : लड़कियों को मारने का सिलसिला खत्म होगा। यही है चौथे अध्याय की मॉलिक्यूलर बॉयलॉजी। समझे मुर्गो । (पापा का प्रस्थान)

विकल्प : यार अंजन

अंजन : बोल विकल्प

विकल्प : यार पता नहीं क्यों मुझे बहुत तेज रोना आ रहा है ।

अंजन : तो रो ले !

विकल्प : नहीं न ! मेरे कहने का मतलब ये कि जब मैं बोलूं तो तू पूछ कि मुझे रोना क्यों आ रहा है ?

अंजन : चल ! नहीं पूछता ।

विकल्प : नहीं नहीं पूछ न ।

अंजन : क्या ?

विकल्प : कि मुझे रोना क्यों आ रहा है ।

अंजन : कहाँ आ रहा है दिखता तो नहीं है ।

विकल्प : अरे तो पूछ न कि क्यों आ रहा है ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंजन : क्यों आ रहा ?

विकल्प : क्यों आ रहा ! हाँ इसलिए आ रहा क्योंकि जो आ रही है वो किसी एक के पास ही न आएगी ।

अंजन : हाँ ये बात तो है । तो तेरे पास दूसरी आ जायेगी ।

विकल्प : नहीं न । जो एक है वो किसके पास आ रही है ?

अंजन : तू तो ऐसे पूछ रहा है मानो पूछना चाह रहा है कि वो दोनों के पास आ जाए तो......

विकल्प : वो तो मै मैनेज कर लूंगा लेकिन हम दोनों में से आखिर में कोई बचेगा, उसके पास कौन आएगी, सोच के रोना आ रहा है ।

अंजन : (हंसकर) अरे कोई भी आ जायेगी

विकल्प : जैसे

अंजन : शेफाली

शेफाली : (प्रवेश) मैं आ गयी ।

विकल्प : अरे अभी क्यों आ गयी ?

अंजन : आप को तो बाद में आना है, विकल्प के लिए ।

शेफाली: नहीं मुझे अभी काम है विकल्प जी से ।

अंजन : बस हो गया ..... सारे Question complete आते–आते रह गयी...

शेफाली: कौन ?

अंजन : रूलाई ! और मिल गयी नोबल प्राइज

विकल्प : ये ! नोबल प्राइज है ?

अंजन : तो क्या इसे ऑस्कर कहें ? वैसे ये प्राइज भी बुरी नहीं है ।

विकल्प : क्या बुरी नहीं है

शेफाली : अरे मैं एक सीरियस मैटर की बात करने आई हूँ और आप लोग अपने–अपने प्राइज बांट ले रहे हैं ।

अंजन : नहीं ये प्राइज बांटने वाली नहीं है ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शेफाली : मैं आप लोगों से पूछने आयी हूँ कि इस प्रयोग में आपको क्या महसूस हो रहा है ? वृन्दा आप दोनों में से किसे प्रेम करने लगी है ?

विकल्प : किसी से नहीं ।

अंजन : नहीं नहीं कर रही है कर रही है ।

शेफाली : क्यों ? ऐसा नहीं हो सकता कि वो आप दोनों से प्रेम कर रही हो ? लेकिन ! वो दोनों से एक साथ कैसे प्रेम कर सकती है ?

विकल्प : सवाल भी जवाब भी !

अंजन : हाँ एक साथ कैसे कर सकती है, अलग–अलग करना चाहिए उसे ।

विकल्प : क्या ?

शेफाली : तुम जिससे प्रेम करते हो वो दूसरे से भी प्रेम कर रही हो अलग–अलग तो तुम्हें बुरा नहीं लगेगा ? (अंजन से)

अंजन : जिसे बुरा लगेगा वो पिछले स्टेशन पर छूट जायेगा मेरी लाइन Clear हो जाएगी ।

शेफाली : (विकल्प से) और आप क्या करेंगे ?

विकल्प : आप तो ऐसे पूछ रही हैं मानो आप प्रेम की प्रोफेसर है । जैसे खूब किया है....

अंजन : ....प्रेम

शेफाली : किया नहीं कर रही हूँ !

अंजन : किससे ?

(शेफाली मुस्कुराकर विकल्प की ओर बढ़ती है)

अंजन : वाह ! तू भले मेरा विकल्प नहीं है लेकिन शेफाली जी किसी का विकल्प बन कर आ गयी तेरे पास

शेफाली : किसकी ?

अंजन : वृन्दा की ।

(वृन्दा का प्रवेश)

वृन्दा : ये क्या हो रहा है ? शेफाली तू ! तू यहाँ क्या कर रही है ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शेफाली : मैं भी जत्ता रही हूँ ।
वृन्दा : तुझे और कोई जगह नहीं मिली जत्ताने के लिए !
शेफाली : तुझे तो नीला रंग पसंद है न !
वृन्दा : ये मैंने कब कहा ?
शेफाली : ओ हाँ ! मैं भूल गयी थी। तुझे तो जोगिया रंग पसंद है ।
वृन्दा : जो भी पसंद हो तुझे इससे क्या !
अंजन : अरे इसे भी तो कोई रंग पसंद हो सकता है ।
वृन्दा : तो करे न । लेकिन नीला और जोगिया छोड़कर ।
शेफाली : नीला और जोगिया ? अरे कुछ छोड़ेगी भी !
वृन्दा : नहीं मुझे सब चाहिए ।
अंजन : पूरी कलर स्कीमिंग ।
शेफाली : कामयाब हो पाओगी
वृन्दा : कामयाब तो इन्हें होना है
शेफाली : और मैं ? फेड आउट

अंजन+विकल्प (गाते हैं) हम होंगे कामयाब... हम होंगे कामयाब.... हम होंगे कामयाब एक दिन..... हो हो मन में है विश्वास (अंजन विकल्प का मुंह बंद करता है)
अंजन : आस्था और विश्वास.....
वृन्दा : क्या है ?
अंजन : आप की ही बात कर रहे थे...
विकल्प : आस्था विश्वास ।
वृन्दा : बिल्कुल झूठ ! (बिल्कुल गम्भीर होकर) तुम दोनों को दरअसल मेरी कोई जरूरत ही नहीं ! तुम आस्था से प्यार करते हो, ओर तुम विश्वास से ! मैं हर बार की तरह फिर अकेली छूट गई ! शुरू से यही चला आ रहा है ! आज भी स्त्री की ट्रेजेडी तुम पुरूषों के लिए कॉमेडी है ! आज भी वो तुम लोगों के लिए एक मुर्गी से ऊपर नहीं उठ सकी है ! और कहते हो Women's love is an impossibility ! बोलते हो म्यूजिक करते हो मैथमेटिक्स ! क्यो ? बोलो ? (दुःख)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सिर्फ प्रेम ही तो चाहती हूँ ! प्रेम करना और प्रेम पाना ! क्या ये मेरा कोई कसूर है ? फिर नासूर कैसे बन गया प्रेम स्त्रियों के लिए ? महिषासुर तुम और बना देते हो महिषासुरमर्दिनी मुझे ? एक पूजा की मूर्ति भर बनाकर नाचते–नाचते डूबो देते हो मुझे गंगा में, और कहते हो गंगा प्रदूषित ?

(दोनों स्तब्ध..... एक क्षण बाद)

अंजन : वाह..

विकल्प : वृन्दा वाह !

वृन्दा : वाह ताज बोलिए हुजूर ! थोड़ा बहुत Acting भी सीख रही हूँ न । (अचानक उसी नखरे में बोल जाती है) (अंजन रोने लगता है)

विकल्प : यार अंजन तू रो रहा है !

अंजन : हाँ मैं रो रहा हूँ ।

विकल्प : लेकिन क्यों ? (माइथोलॉजिकल अन्दाज में) तुम्हारा क्या गया जो तुम रोते हो, तुम क्या लाए थे जो तुमने खो दिया जो लिया यहीं से लिया, जो दिया यहीं दिया । खाली हाथ आए, खाली हाथ चले, जो आज तुम्हारा है वो कल किसी और का था कल किसी और का हो जाएगा.....

युवक : हाय !

वृन्दा : हाय !

अंजन : लो ! ये अभी किसी का हो गया (दर्शकों से) ये कौन (युवक से) तू कौन ?

विकल्प : तुम इसे अपना समझकर मगन हो रहे हो यही प्रसन्नता तुम्हारे दुःखों का कारण है ।

वृन्दा : बाय ! (युवक के साथ चली जाती है)

विकल्प : (दर्शकों से) अब आप ही बताइए ये आपको कॉमेडी लगी या ट्रेजडी !

(पं. कुमार गन्धर्व का गाया भजन 'रामनिरंजन...' पूरा होता है)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंधेरे अनुभव

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पेन्टिंग के सररियलिज्म दर्शन पर लिखे इस नाट्यालेख में तीन वयस्क युवतियाँ जो श्रृंगार, करूण और हास्य रस की प्रतीक उपस्थितियाँ हैं, अपनी अलग–अलग मनोग्रस्तता और मनस्तप्तता के कारण झूठा प्रेम सच समझ कर जी रहीं हैं। एक विशेष रंगकाव्यात्मक रूपक के माध्यम से वे अपने वास्तविक स्वरूप को जान पाते हैं। यह मेरे एक अन्य नाटक 'अधूरे राग' की कथाभूमि है जबकि इस नाटक में महिष और असुर को क्रमशः काम और क्रोध का प्रतीक बताते हुए नायिका शाश्वती के शुद्ध चेतना के प्रतीक स्वरूप 'महिषासुर मर्दिनी' से वंचित होने का विन्यास रचा गया है । इसमें समय और माया को उसी तरह चित्रित किया गया है जिस तरह योगवाशिष्ठ में गाधी की कहानी में दर्शाया गया है ।
इसका प्रथम मंचन वाराणसी में 2004 में व दूसरा मंचन लखनऊ में 2005 में 'स्याहियाँ' नाम से हुआ था ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शाश्वती : अकेली सूनी, मनस्तप्त महिला
टुला : सहेली–सी परिचारिका
निशान्त : काल्पनिक प्रेमी (इस) शाश्वती का नहीं

(रात के सवा दस । शायद सोने जाने की तैयारी में शाश्वती गुनगुना रही है– 'सह्य ना जाये रे, यातना, दिवस गिन–गिन, अकेली, बाट जोहती रही, दिन रैन यूँ ही बैठी, साथी हो, आये ना' (रवीन्द्र संगीत) – कि नजर बेडशीट पर पड़ती है और दिमाग बिल्कुल गर्म, यह देख कि बेडशीट अभी तक कल रात वाली ही बिछी है, जिसे आज सुबह उसने टुला से बदल देने को कहा था। हर सुबह बेडशीट बदली जाती है इस कमरे की, इस बेड की, मगर आज रात....गुनगुनाना रोक वह पुकारती है– टुला ! — टुला ! .....और अब टुला पर हल्की रोशनी, जो अब तक यानी काफी देर से अन्धेरे में मकान के उस कमरे में खामोश बैठी है, जो मंच है । कमरे के बीचोबीच कुर्सी—और कुर्सी पर बैठी टुला । दोनों की पीठ दिख सकती है । कुर्सी एक खास रंग का शाल ओढ़ी हुई । काले मंच क़े पृष्ठ पर सफ़ेद शोलों (जो माँ दुर्गा की प्रतिमा के कण्ठ पर शोभायमान रहता है) का एक टूटाहार । टुला की बायी ओर थोड़ी दूरी पर दो काले ब्लॉक पर जलता एक लैम्प । चेहरा घुमाने पर इसकी रोशनी ठीक चेहरे पर ही । और कुछ नहीं । पुकारते हुए शाश्वती को यहीं आना है)

शाश्वती : टुला – ! सुबह कुछ कहा था ?
टुला : !
शाश्वती : कुछ कहा था तुझसे–बोल ? — कुछ सुन रही है ?
टुला : (एक दम घूमता है चेहरा, बायें, बिल्कुल सामने दिखता चेहरा) अब कुछ नहीं सुनना मुझे ! कुछ और सुनना है अब — जो मैंने अब तक नहीं सुना—!
शाश्वती : (पूरे कसाव़ के साथ चेहरा फिर अपनी ओर घुमाकर) तुझे सिर्फ वही सुनना है जो मैं कहूंगी (दोनों दिख रहे हैं अब लगभग)
टुला : क्या !
शाश्वती : क्या ? वो बेडशीट सुबह से वहीं पड़ी है–सुबह मैंने उसे बदलने को नहीं कहा था ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(टुला उठती है, मुड़कर आगे बढ़ती है, पलटकर पूछती है)

टुला : कोई नयी बात है बीजी, हाँ ?

शाश्वती : ये तुझे हो क्या गया है ? सारा घर वैसा का वैसा पड़ा है, बेडशीट तक नहीं बदला, चाह क्या रही है तू ? (कुर्सी घुमाकर बैठती है) अब तू ही बता क्या सुनना चाहती है तू ?

टुला : (एक दम से उसकी ओर बढ़ती है) ना ना कुछ मत बोलना– नहीं सुन सकती ये झूठ–नहीं देख सकती ये धब्बे । इन झूठ धब्बों ने आपको घेर लिया है बीजी– बाहर निकल आओ इनसे।

शाश्वती : क्या बोल रही है तू ? टूला तुझे...–

टूला : ठीक सुन रही हो आप । आप जो सुन रही हो वे ठीक सुन रही हो । अब तक गलत मैं सुनती आ रही थी । चार साल से, चार साल से चल रहा है ये नाटक ! आप समझती हो मैं कुछ नहीं समझती— कुछ नहीं समझती ? क्यूँ करती हो बीजी बोलो क्यूँ करती हो, क्यूँ ? छोड़ दो न ये सब !

शाश्वती : (दो सेकेण्ड खामोश देखती है उसे फिर) क्या करती हूं मैं रोज ? क्या करती हूँ मैं –रोज ?

(टुला जाकर पास ही पड़ी लाल धब्बे वाली शीट पूरा खोलकर दिखाती है)

टुला : आप की चीज आपी को बताऊं ? रोज रात सफेद बेडशीट बिछाकर सोती हो । सुबह उठते ही सबसे पहले उस पर लाल स्याही उड़ेलती हो– सिर्फ एक जगह ! फिर मुझे पुकारती हो । मैं आती हूँ तो कहती हो–टुला ये शीट बदल देना । और बेडरूम से बाहर चली जाती हो । रात में फिर वहीं लौटती हो । तब तक मैं दूसरी धुली सफेद बेडशीट बिछा चुकी होती हूँ (शाश्वती अवाक होती गयी है और टुला के कहने का ढंग बदलता गया है) कब तक चलेगा ये सब हाँ ? मैं तो अब चली। बीस साल से हूँ इस घर में । आपकी दोस्त की तरह (दीर्घ श्वास छोड़ती है) अब कोई और देख लो । मैं तो इंतजार कर रही थी आज, कि रात हो, दस बजे, आप

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पुकारो, और मैं समझाऊं आपको आपका नाटक ! यही करती हो आप रोज । क्या जरूरत है अब इन लाल धब्बों की हाँ ?

शाश्वती : तुझे जाना है तो चली जा। बहानों की कोई जरूरत नहीं जा। चली जा (लग रहा है वही जा रही है)

टुला : बहाने ? अरे बहाने तो आप जीती हो ! आप जीती हो हर रोज एक झूठ। नया नहीं । हर रात वही झूठ, लाल धब्बों का झूठ ।

शाश्वती : (प्यार से) सवा दस हो गये । जा सो जा रात बहुत हो गयी । सुबह बताना क्या तकलीफ है । चल जा के सो जा —

टुला : और आप ?

शाश्वती : (आधा सेकेण्ड अटकती है) तुझे इससे क्या ?

टुला : क्यूँ रखी हो मुझे इस घर में ? क्यूँ रहती हूँ मैं यहाँ?

शाश्वती : हम सिर्फ रहते हैं । टुला तू जब यहाँ रहती है तब यहीं रहती है मगर मैं ? चार साल से मैं कहाँ रहती हूँ—क्या करती हूँ..... क्यों करती ....

टुला : (बात काट कर) साबित करने की कोशिश! आप खुद को सही साबित करने की कोशिश करती हो बस । चार साल से लगातार कोशिश । छोड़ दो कोशिश करना, वक्त है ।

शाश्वती : कोशिश करना छोड़ दूँ ? तो फिर क्या करूँ मैं ? (एकदम आक्रामक) और रास्ता मुझे तू बताएगी ? तू किसलिए है यहाँ ? मैं तेरे बिना अकेली तेरे बावजूद अकेली ? क्या करती हूँ मैं तू रोज देखती है । खामोश बैठी रहती हूँ इस हवेली में रोज दिन भर। कोई नहीं आता। किसी को नहीं है आना । जा तू भी चली जा। मैं अकेली नहीं, बिल्कुल अकेली होना चाहती हूँ, चली जा ।

टुला : चली जाऊंगी तो साबित किसे करोगी कि साब सही थे ?

शाश्वती : !

टुला : चार साल पीछे जाओ बीजी, पचास साल के साब से शादी की थी आपने। सुहागरात को ही साबित हो गया कि साब में कुछ नहीं है । आप टूट गयीं । साब ने बहुत कोशिश की । सुबह

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तक वे कई बार इस कमरे से उस कमरे तक... मगर फिजूल ! याद करो, फिर उन्होंने गुस्से में आपको कहा कि एक बिस्तर लगाने वाली टुला के सामने मुझे बेइज्जत करके ही तुम्हें सन्तोष मिलेगा ? आप सन्न रह गयीं ! गुस्से में ही साब ने ताक पर रखी स्याही की शीशी चादर पर उड़ेल दी– मगर वहाँ नहीं जहाँ होना चाहिये था, और बाहर चले गये । आप भी उनकी जिन्दगी से बाहर चली आयीं। तलाक लेकर । इतनी दूर इस हवेली में रहने लगी कि वो अपनी मर्जी से जी सके और आप पड़ोसियों से बच सको–

शाश्वती : लोगों से मिलना जुलना, बनाव श्रृंगार छोड़ दिया । अकेली बीतने लगी यहाँ, चार साल बीत गये ——

टुला : और वो अन्धेरा आज रात भी आपके दिमाग में जिन्दा है और मेरे पास वो सुबह, मैंने साब की बात सुन ली थी । तब से आप हर रात सफेद चादर बिछा कर सोती हो, सुबह उठकर सबसे पहले सही जगह पर लाल स्याही उड़ेलती हो फिर मुझे पुकारती हो कि देख, तू जो समझ रही, वो गलत है। सही वो हैं । उनमें कोई कमी नहीं। आप उन्हें आज भी इतना चाहती हो कि सही ठहराकर उन्हें मेरी और अपनी नजरों में ऊंचा उठाने की कोशिश करती हो और कभी इत्मीनान नहीं कर पाती कि उस रात की बात सुधरी या नहीं । रोज सुबह सुधारती हो, मुझे दोस्त कहती हो और समझती हो मैं कुछ नहीं समझती...? लैम्प बुझा दूँ ? (टुला जा चुकी है, घुप्प अन्धेरे में सिर्फ शाश्वती । मानो गहरे कुएं से टुला को पुकार रही हो । तीस सेकेण्ड के अन्दर लैम्प का बुझना, शाश्वती का पुकारना और...)

स्वर : शाश्वती ! (शाश्वती के चेहरे पर एक पीली लकीर कहीं से इस सुनहरे स्वर के साथ)

शाश्वती : अं ! (बिल्कुल चौंकती है) .... कोई दूसरा हो सकता है क्या ! (स्वगत)...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वर : तुम अभिशप्त हो शाश्वती ! (लकीर की परिधि बड़ी होती हुई, पूरे पीले धब्बे में शाश्वती)

शाश्वती : कौन ?

स्वर : (तटस्थ) तुम कौन हो शाश्वती ! ये तुम्हें कौन बताएगा ।

शाश्वती : (भीतर सोचती है जो हमें सुनाई देती है बाहर सिर्फ परेशान चुप चेहरा) (फुसफुसाहट सा) सचमुच कोई है ! कोई है ! किधर ? उधर ! नहीं उधर ! कोई है तो जरूर (बोलती है) टुला !

स्वर : तुम्हे हमेशा जरूरत होती है किसी की ! होती है न शाश्वती ?

शाश्वती : अं... (स्वगत, भय, विस्मय) नाम भी जानता है कहीं वो तो नहीं (बोलती है) चार साल बाद ! (सोचती है) मगर ये आवाज, पहले तो कभी सुनी नहीं ।

स्वर : होती है न शाश्वती !

शाश्वती : (तुरन्त) हाँ ? क्या ?

स्वर : जरूरत किसी की, होती है न ?

शाश्वती : हाँ ।

स्वर : जरूरत किसी की —

शाश्वती : (स्वगत) क्या करें । कुछ करते हैं बत्तमीज बोल किधर से रहा है, लेकिन अच्छा लग रहा है (वाक्य पूरा होते न होते)

स्वर : तुम खामोश नहीं होती ?

शाश्वती : अं ?

स्वर : जब तुम खामोश होती हो तब तुम खामोशी नहीं होती ?

शाश्वती : (झटके में) बेडशीट बदल दो, नहीं, अरे, मैं बोल रही हूँ कि सुन रही हूँ—थोड़ी देर में शायद कुछ देख भी न पाऊँ, ये कुर्सी है न !

स्वर : आज भी बहुत प्रेम करती हो न ?

शाश्वती : हाँ ?

स्वर : अनिन्द्य से ?

शाश्वती : (स्वगत) सब मालूम है इसे चुपचाप सब मानती चली जा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वर : शाश्वती !

शाश्वती : अं ? हाँ – हाँ – (कुछ तय करती है, सिर्फ कदम बिना मुड़े पीछे की ओर बढने लगते हैं)

स्वर : किधर चल रही हो ? चलना किधर चाहिए चलती किधर हो ! चलती ही क्यों हो ? किससे बचना चाहती हो ? किसे बचाना... (पीछे बढ़ती हुई अब वह पूरी सतर्कता से क्षैतिज चलने लगती है शरीर मुद्रा शुरू से एक सी । कमरे के पृष्ठ के साथ खिसकते हुए जब वो ढकी कुर्सी को अपने ठीक सामने पाती है तो निगाहें उसी पर टिकाए उधर सामने दबे पाँव बढ़ती है मानो इसी शाल में वो छुपा है, "बचाना" शब्द तक वो एक झटके से शाल उठाती है कि)

....क्या मिला ? (डर कर शॉल फेक देती है मानो शाल ने पूछा !) तुम अभिशप्त हो शाश्वती ! बहुत डरी हुई ! इतना प्रेम ! (सिसकती वहीं बैठने लगती है) इतना दुःख ! इतनी ख्वाहिश ! चाहो तो ऐसे जीवन को बदल दो । इसी वक्त। (बेबस सर ऊपर उठता है) मन में कितनी आशा बची है न !

शाश्वती : (बहुत कोशिश से) सुनो ! (स्वगत, उसके सारे स्वगत जो वह सोचती है हल्की आवाज में सुनाई देते हैं जबकि जब वह संवादरत होती है तो वाचिक काकू बदल जाता है) कहाँ गया ? शायद इसे ही कहते हैं आँखें खोलकर सपने देखना । क्या इसी को सुनने की बात कर रही थी टुला, लेकिन (बोलती है) गया किधर ?

स्वर : इतना करीब हूँ कि बहुत दूर चलना होगा तुम्हें। छोड़ो चलना। चाहो तो रूको ! और हाथ बढ़ाकर छू लो मुझे (वो एक हाथ बढ़ाकर दूसरे फैले हाथ को छूने चलती है) नहीं ! इतना करीब हूँ कि छूने की भी जरूरत नहीं (आश्चर्य में ठहरती है) सिर्फ महसूस कर लो ! (दोनों हथेलियों को प्रश्न सी हृदय के करीब लाकर बिल्कुल असमंजस में पड़ बिल्कुल समर्पण भाव में, न जाने क्या बोल पड़ती है । खुद कुछ करने जैसा उसके पास अब रहा ही नहीं)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शाश्वती : कौन हूँ मैं, ऐसी क्यों हूँ मैं, यहाँ कैसे आयी मैं ?

स्वर : ये कुर्सी देख रही हो ?

शाश्वती : हाँ ? हाँ ।

स्वर : दो और हैं ।

शाश्वती : कहाँ ?

स्वर : यहीं। पता नहीं ? जाओ ले जाओ (सहमी सी न जाने कहाँ) जाओ (बढ़ती है) ठहरो ! दोनों कुर्सी इसी में हैं। इसे देखो भी । सुनो भी। इस घर में तुम अकेली नहीं । तुममें तीन औरते हैं । दो मर गई । शायद तीसरी तुम हो। मरने वाली । अभी नहीं । शायद कभी नहीं । चाहो तो हमेशा रह सकती हो यहाँ । उनकी तरह नहीं । वे अतृप्त हैं। रहेंगी । उन्हीं के साये में तुम जी रही हो अभिशप्त। चाहो तो इनसे मुक्त हो जाओ । आज अभी इसी वक्त। अब तुम इस कुर्सी पर जब जब बैठोगी, हर बार एक नयी औरत प्रगट होगी । तुम्हें सिर्फ ये पहचान करनी है कि इनमें से कौन तुम हो। जो तुम नहीं हो उसे अपने घर से बाहर निकालो । इनमें अपने को ढूँढ निकालते ही तुम्हारी ये दुनिया बिल्कुल बदल जायेगी। चलो बैठो ! (शाश्वती अब तक एक कोने में बैठी अवाक् इसी कुर्सी को सुन रही थी । जाकर बैठती है, बैठते ही वो, जो अब एक बदली हुई युवती है, बिल्कुल भिन्न मुद्रा में, उस जगह को देखती है, अचरज से, जहाँ शाश्वती शायद अभी तक बैठी हुई है ।)

शाश्वती : क्या हुआ ? ऐसे क्यूँ देख रही ? पहले कभी नहीं देखा ? (स्वर, टोन सब नया है) अनिन्द्य गया तो क्या सब खत्म हो गया ? अरे यूँ गुमसुम तो मर जायेगी । इनमें से तुझे कोई पसन्द नहीं ! किसी एक को साथी बना ले खुश हो जा, आसमान छूले । कामना को रोकेगी तू ? मैं नहीं जी सकती तेरी तरह अपन तो पाँचों से इश्क करते हैं–युधिष्ठर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव। हरेक खुद को मेरा दावेदार समझता है, मगर मैं ! क्यूँ बताऊं — बताऊं मैं किसे चाहती हूँ — नहीं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वे कभी नहीं जान पायेंगे (इस वाक्य के पूरा होने तक पीछे से आकर निशांत ने अपनी हथेलियों से उसकी आँखें ढक ली है) मैं बताऊं? गेस ? अर्जुन !

निशान्त : अर्जुन ! ...चलना नहीं है ?

शाश्वती : चलते हैं यार (उठ चुकी है) बोलों कहाँ चलना है–जुहू, मेरिन ड्राइव, नरीमन प्वाइन्ट, एस्प्लैनेड,
टॉलीगंज, श्याम बाजार, बागबाजार –

निशान्त : पागल हो गयी है क्या !

शाश्वती : बात ही कुछ ऐसी है ।

निशान्त : क्या बा....

शाश्वती : (बात काट कर) नहीं बताऊंगी । जस्ट गेस !

निशान्त : (लौटने लगता है) ओके ।

शाश्वती : अच्छा अच्छा बताती हूँ बताऊं ? नहीं अर्जुन ! आयम इन लव ।

निशान्त : (रोमैन्टिक आश्चर्य) अच्छा !

शाश्वती : हाँ डीप लव । लव समझते हो प्रेम । प्रेम समझते हो...

निशान्त : नॉनसेन्स !

शाश्वती : ह्वाट ?

निशान्त : मुझे क्या पता ? जो प्रेम करता है माने भी जानता होगा ।

शाश्वती : ओ यार अर्जुन, तू प्रेम नहीं समझता, हाउ बोर यू आर ।

निशान्त : भइया एक बात सीधे–सीधे बताओ आज डॉस क्लास चलना है कि नहीं ?

शाश्वती : आइडिया ! मेरे अर्जुन तू यहाँ बैठ। अर्जुन....

निशान्त : (बैठते ही उठकर) ये साला अर्जुन कहाँ से आ गया?

शाश्वती : (उसी को दिखा कर) ये है मेरा अर्जुन । मेरा मतलब तू जिस प्लेस पर है वो प्लेस है अर्जुन की और मैं जिस प्लेस पर हूँ वो है प्रेम ।

निशान्त : मैं जाऊं ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शाश्वती : नहीं पूछोगे कि मुझे किससे प्रेम है...

निशान्त : प्रेम है इतना ही क्या काफी नहीं । किससे ?

शाश्वती : तुम क्यूँ जेलस हो रहे हो ?

निशान्त : ओफ !

शाश्वती : क्या हुआ ?

निशान्त : जब तुम कम्युनिकेबल नहीं हो तो म्युजिकल भी नहीं हो सकती ।

शाश्वती : अरे कुछ म्यूजिकल तो हो, अपने आप हो जायेगा कम्युनिकेट !

निशान्त : (एकाएक टहलने लगता है) मुझे भी लग रहा है ।

शाश्वती : क्या !

निशान्त : यही कि मुझे भी आजकल कुछ प्रेम टाइप हो गया है ।

शाश्वती : सच !

निशान्त : हाँ ।

शाश्वती : क्या होगा ?

निशान्त : डेथ, और क्या होगा ।

शाश्वती : तुम मर जाओगे च्च, च्च, च्च —।

निशान्त : तुम क्या जिन्दा रहोगी ?

शाश्वती : और नहीं तो क्या !

निशान्त : (व्यंग्य) दौपदी !

शाश्वती : निशान्त ! तुम हद से गुजर रहे हो ।

निशान्त : अच्छा !

शाश्वती : तुमने मुझे द्रौपदी कहा ? क्या मैं इतनी ट्रेजिक हूँ ? यही तो है तुम पुरूषों का प्रेम

निशान्त : कितना विराट ! चलें ?

शाश्वती : कहाँ ?

निशान्त : डान्स क्लास !

शाश्वती : ओके तुम मेरे साथ आओ ......
(दोनों आकर एप्रन पर पैर लटका कर बैठ जाते है) कहो, है न खूबसूरत जगह !

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निशान्त : कितनी खुली जगह है– कितना आसमान – कितनी मुक्ति...

शाश्वती : अरे कित्ता छोटा कछुआ वो देखो ! (जमीन की ओर)

निशान्त : वो देखो बलाका (आसमान की ओर) ये पक्षी कभी घर नहीं बनाते....

शाश्वती : निशान्त ! हम घर कब बनायेंगे ! पहले बसाएंगे फिर बनाएंगे राइट ? टेरेस पर हम डान्स प्रैक्टिस किया करेंगे (उठती हुई) मान लो ये टेरेस है– और हम डान्स प्रैक्टिस कर रहे हैं (दोनों उठ चुके हैं) –

निशान्त : और मैं गा रहा हूँ – दूरियां नजदीकियां बन गई अजब इत्तफाक है– (एकदम संवेदनशी होकर) सुनो ! जब मैं तुमसे मिलता हूँ तब कोई और हो जाता हूँ । मैं नहीं चाहता कि जब मैं तुमसे मिलूँ तो वहाँ कोई और हो (पंक्ति पहले भी बोली जा सकती है) मैं चाहता हूँ कि जब मैं तुम्हारे पास रहूँ तब मैं तुम्हारे पास रहूँ ! – (व्यंजना में) ये पोएट्री है । अंधेरा हो गया । लौटते हैं ।

शाश्वती : कहाँ ?

निशान्त : !

शाश्वती : (वापस मुख्य जगह की ओर लौटती हुई) निशान्त ! यू आर नॉट म्युजिकल टू मी ।

निशान्त : ह्वाट इस रियली म्युजिकल टू यू ?

शाश्वती : डू यू फील मी ?

निशान्त : आई लव यू

शाश्वती : ?

निशान्त : आई लव यू बिकॉज आई नीड यू ।

शाश्वती : बट आई लव यू बिकाज आई डोन्ट नीड यू । मैं तुमसे प्रेम करती हूँ मगर मुझे तुम्हारी कोई जरूरत नहीं ।

निशान्त : मुझे है। ह्वेन आई से लव, आई मीन लव ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शाश्वती : अच्छा ! (कुर्सी पर बैठती है, दूसरी बार) जरूरत तो भूख होती है प्यास होती है नींद होती है । तुम्हें मेरी जरूरत है। मैं तुम्हारी भूख हूँ ? प्यासा हूँ ?

निशान्त : !

शाश्वती : क्या चाहिए तुम्हें ?

निशान्त : प्रेम !

शाश्वती : प्रेम भूख है ?

निशान्त : !

शाश्वती : तुम मुझसे प्रेम करते हो क्योंकि तुम्हें मेरी जरूरत है । इट्स ऑल योर लैंग्वेज । ऐण्ड ह्वेन यू से लव यू मीन लव । ह्वेन यू से जरूरत यू मीन जरूरत, राइट ?

निशान्त : तुम....

शाश्वती : (काटकर) कितना प्रेम करते हो मुझसे – उतना जितनी मैं यूजफुल हूँ ?

निशान्त : (समझाने की मुद्रा में) हम सभी में एक मीटिंग अर्ज है । हम मिलना चाहते हैं मगर पता नहीं होता कि किससे। जब एक स्त्री और एक पुरूष आपना–अपना ये अर्ज लिये एक दूसरे से मिलते हैं– और अगर कोई कॉमन मीटिंग प्लेस फील होता है तो इसे हम प्रेम कहते हैं । इसी जगह की तलाश में मैं तुमसे मिला और वो स्पेस, वो मीटिंग प्लेस मुझे तुममें मिला

शाश्वती : और तुम्हारी जरूरत पूरी हुई !

निशान्त : ऑफ कोर्स ।

शाश्वती : अब अगली जरूरत ?

निशान्त : !

शाश्वती : वो तो पूरी हो गई न, अब अगली ? कॉमन मीटिंग प्वाइंट कब तक सस्टेन करेगा ? मेरे अर्जुन तुम कभी नहीं समझ सकते मुझे । ईश्वर की बनायी हर चीज की अपनी एक भाषा है । हर चीज का अपना जेश्चर । मुझे पढ़ना है तो पहले मुझे पढ़ने की भाषा ढूँढो । तुम तो अपनी भाषा में मुझे पढ़ते आये हो अब तक, और कहते हो महाभारत का कारण द्रौपदी !

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दूसरे की भाषा पकड़ने के लिए अपनी थोड़ी देर के लिए छोड़नी पड़ती है अर्जुन ! तुम मुझसे शादी भी करना चाहोगे ?

निशान्त : हाँ !

शाश्वती : शादी के बाद क्या मैं वो सब कर सकूँगी जो मैं करना चाहती हूँ, जैसे डान्स, जैसे....

निशान्त : नहीं !

शाश्वती : क्यों नहीं ? मेरी भी अपनी जरूरत है ! तुमने तो मछली की आँख भेदी और जीत गये । अब निगाह दूसरी मछली पर, फिर तीसरी पर । मैं तुम्हारी सारी की सारी जरूरतें तो पूरी कर नहीं सकती ?

निशान्त : क्यों ?

शाश्वती : क्योंकि मैं तुम्हारा प्रेम हूँ और तुम्हारे पास मेरा उतना ही अस्तित्व हे जितनी मैं तुम्हारे लिए यूजफूल हूँ । मुझे पूरी तरह तुम कभी एक्सेप्ट कर सकोगे ? नहीं । तुम्हें ऐक्सेप्ट करना ही नहीं है । तुम गुलाम बनाना चाहते हो सब को । तुम दुनिया के सारे वृक्षों से उनका आसमान छीनकर उन्हें अपने कमरे की बोनसाई बनाना चाहते हो । मुझे भी । लेकिन वृक्ष को जमीन भी चाहिए और आसमान भी । कहाँ मिलेगा–कौन देगा मुझे ? यहाँ तो हर कोई मुझे निर्वस्त्र देखना चाहता है– जुआ तो तुम्हारा सिर्फ बहाना है– टाइम पास ! अरे, कोई भी फेंके पासा जीतोगे तुम हर बार हारूँगी मैं। हारना ही तो द्रौपदी है । जीतना तुम को है– पुरूष को । तुम्हीं मुझे फुसलाओ, तुम्हीं मुझे श्राप दो और तुम्हीं मुझे पत्थर होने से मुक्त भी करो ? वाह ! नहीं । अब तुम मुझे उस तरह नहीं देख सकोगे जिस तरह तुम देखना चाहते हो । पता है, उस दिन भी तुम मुझे निर्वस्त्र नहीं देख सके थे, जब तुम मुझे निर्वस्त्र कर रहे थे । जो मुझे निर्वस्त्र नहीं देखना चाहते थे वो तो सिर झुकाये बैठे थे उधर, और तुम सब, निर्वस्त्र होने से पहले ही मेरे निर्वस्त्र शरीर की कामना में इने धुत्त थे, कि सामने कुछ दिख ही नहीं रहा था । सब सामूहिक स्वप्नदोष में धुत्त थे। काम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

के अन्धों को भला क्या दिखे ? मैं सामने खड़ी और देख रहे थे तुम सब मुझे अपने कामोत्सव में ! और (हँसने लगती है) बिचारे दुश्शासन ने तो छुआ तक नहीं मुझे, मगर उसे लग रहा था, कि वो मेरी साड़ी उतार रहा है... और मैं (आँसू शायद गले में हो) मैं तो खुद को भी नहीं देख पा रही थी सिवाय कृष्ण के और आर्तनाद कर रही थी शायद ! (अट्टाहास फिर एकदम रूककर निशान्त को ढूंढती है, जो वहीं ह ") क्या हुआ ? निशान्त ! क्या हुआ, कहाँ हो ?

निशान्त : (सूंघकर) महुए की गंध ! कहाँ से आ रही है ? हाँ–महुए की ही है–हमें इतने वीराने में नहीं आना था, दूर–दूर तक रोशनी नहीं। नदी तो उधर ही थी इधर चर्च, वहाँ... वहाँ क्या ? हाँ कब्रगाह ! सुनो (उसकी ओर बिना देखे) यहाँ आओ, आओ तुम्हें मार डालें, यह एक अच्छा अवसर है ... मरोगी ?

शाश्वती : निशान्त !

निशान्त : (जोर से हँसता है) डर गयी ? चलो वापस चलें, देखो, सोच के अन्धेरे बन्द कमरे में बैठी रहती हो तुम दिन भर। बाहर निकलने के बदले तुम यूं चली जाती हो इतिहास में, महाभारत में। इतने गहरे कुएं में इस तरह झांकोगी तो कुआं तुम्हारे भीतर दाखिल हो जायेगा। अपने भीतर इस तरह जाओ जैसे जमीन के अन्दर जाते हैं वृक्ष। जो वृक्ष आसमान चूमते हैं वो दरअसल अपने भीतर का आसमान चूम रहे होते हैं ।

शाश्वती : मैं तुम्हें डरा रही हूँ ।

निशान्त : नहीं मैं डर रहा हूँ ।
चलो तुम्हें सही सलामत तुम्हारे घर तक पहुंचा दूँ ।

शाश्वती : तुम पहुँचाओगे ?

निशान्त : अकेली लौट सकती हो तो जाओ ।

शाश्वती : तुम क्यों नही अकेला होना चाहते ?

निशान्त : अकेला होना कौन चाहता है ?

(शाश्वती को बीच में ही सुनसान छोड़कर निशान्त वहाँ से बाहर निकल जाता है । विंग्स से बाहर जाने से पहले ही

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शाश्वती उसे पुकारती है । वह रूकता है । इन्तजार करता है अगले शब्द का । कोई शब्द नहीं आने से चेहरा यानी कान उसकी ओर घुमाता है, फिर भी शाश्वती के चुप रहने पर वह उसकी ओर घूमता है)

(26 साल बाद) (वे मिल रहे हैं)

शाश्वती : तुमने पता नहीं क्या आशा की थी इस दुनिया से, मगर मैंने कभी यह आशा नहीं की थी कि तुम फिर मिलोगे । एक भिक्षु के जेश्चर में ।

निशान्त : !

शाश्वती : मेरा बतलब पराजय के शिल्प मे....।

निशान्त : (सिर उठाता है) नहीं प्रार्थना के शिल्प में..... ।

शाश्वती : क्यों ? कहाँ गये सारे हस्तक्षेप ?

निशान्त : मैं पजेसिव होना चाहता था पजेस्ड हो गया, डॉमिनेट करना चाहता था डॉमिनेटेड हो गया, डराना चाहता था डर गया, वातावरण को बदलना चाहता था खुद बदल गया । जिन्दगी को लिखना चाहता था, जिन्दगी ने मुझे लिख दिया । हस्तक्षेप करने निकला था, साक्षी रह गया ।

शाश्वती : (तुमने) शादी क्यूं नहीं की ?

निशान्त : हम जिसे सबसे अधिक महत्व देते हैं वह हमें सबसे कम महत्व देता है ।

शाश्वती : तुमने सोचा था कि एक दिन मैं मिलूँगी तो तुम जताओगे अपना प्रेम, अपनी सैक्रिफाइस, छब्बीस साल बाद हम मिल रहे हैं । इन सालों में तुम्हें अगर अपने बाहर की दुनिया में दिलचस्पी नहीं रही तो.... तुम जिन्दा हो ? तुम्हें अच्छा लग रहा होगा, कि सवाल मैं पूछ रही हूँ ।

निशान्त : मुझे अब सिर्फ अच्छा लगता है प्रार्थना करना, टु प्रे । डिटेल में जाने से हम अपनी सरलता खो देते हैं ।

शाश्वती : शादी क्यूं नहीं की ?

निशान्त : (उठता है) हमें जीवन में वायलेन्स को ओवरकम करना होता है इसलिए हम चुनते हैं कोई एक वायलेन्स, बाहर की या भीतर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

की, नहीं... सिर्फ वायलेन्स होता है और हम इसे कम करते हुए मेच्योर होते हैं ।

शाश्वती : वायलेन्स क्यों होता है ?

निशान्त : जहाँ भी मनुष्य है वहीं वायलेन्स है। वह अपने लिए ही वायलेन्स है ।

शाश्वती : नहीं मैं, उस वायलेन्स की बात कर रही हूँ जो एक लड़की को औरत बनाती है (तीस सेकेण्ड शायद स्तब्ध रहने के बाद)

निशान्त : इसीलिए अन्त में बचती है सिर्फ एक प्रार्थना। प्रे ।

शाश्वती : हुंह । आई नो, आई नो ह्वाट इस प्रे फॉर ए मेल । फेमिनिन फ्लेश इस ए प्रे फॉर एवरी मेल, राइट ?

निशान्त : (बूढ़ों की तरह चलते हुए, बोलते हुए) डिफ्रेन्ट स्पीशीज, कान्ट फील, डिफ्रेन्ट स्पीशीज! ओनली सेन्सुअल फीलिंग, नो.. नो इक्वेशन बिटवीन मैन ऐण्ड नेचर... प्लीज ! लेट मी ट्रान्सेन्ड इट (बाहर कहीं चला जाता है, भीतर से कहीं आवाज आती है, तुम क्या समझते हो मैं अकेली नहीं रह सकती.....)

शाश्वती : क्या समझते हो ? क्या समझते हो मुझे तुम ? अपना गुलाम ? अपनी बैसाखी? अपनी स्लीपिंग पिल ? मैं औरत हूँ । तुम्हारी औरत नहीं । (टूट–टूट कर गिरती है जमीन पर या कुर्सी के हत्थे पर)

स्वर : थक गयी ? (पुरानी शाश्वती एकदम चौंकती हैं, उठती है, हर तरफ ढूंढती है)

शाश्वती : अं ? कहाँ हो ? कहाँ हो तुम ? तुमको हर वक्त क्यों नहीं सुन पाती ? कहाँ चले जाते हो (खुले बालों में, पागलों की तरह कहीं भटक गयी है) बताओ तुम कहाँ छुपे हो ? मुझे भी ले चलो वहाँ जहाँ तुम रहते हो ! बोलो न खामोश क्यूं हो गये ? तुम....तुम कुछ पूछ रहे थे ! नहीं ? हाँ, हाँ वे दोनों यहाँ आयी थी–दो बार मैं (कुर्सी पर हाथ थपथपाकर) इस पर बैठी थी— हाँ वे दोनों एक ही में थीं (खुद को झटकती है) नहीं ! वो मैं नहीं हूँ– (कुर्सी से क्रमशः दूर हटती है) वो भी नहीं, वो, वो भी नहीं...... (घने खुले केश के 'नहीं' झटके में उसका

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मनोरोग मुखरित हो रहा है शायद, अन्ततः खुद को भी नकारती है।) ये भी नहीं, वो भी नहीं, नहीं... (सिर्फ हिस्ट्रीयॉनिक झटके रह गये हैं)

टुला : लैम्प जला दूँ ? (जलाती है, निस्तब्ध)
बीजी आप सोई नहीं ?

शाश्वती : मैं सुन क्यों नहीं रही (एकाएक देखती है) तू...तू यहाँ क्या कर रही है ?

टुला : (उतनी ही शान्त, संयमित, गम्भीर) मुझे क्या करना चाहिए ?

शाश्वती : तू, तू वो सुन जो मैं सुन रही । वे... वे दोनों यहाँ आयी थीं... महिष भी... और असुर भी.... मगर टुला मैं महिषासुर मर्दिनी नहीं बन सकी (बोलते हुए उसे जकड़ कर फूट–फूटकर रोने लगती है, उसके पैरों, को जकड़ कर उनमें सिर रखकर रोती रहती है) .... मैं महिषासुर मर्दिनी नहीं बन सकी टुला.. (टुला उसके सिर पर हाथ फेर रही है जब रूलाई बिल्कुल चुप होती है...)

टुला : (शान्त) अब सो जाओ ।

शाश्वती : (हल्के अचरज से सिर उठाती है) कहाँ ? (रूंधास्वर)

टुला : मैंने बेडशीट बदल दी ।

शाश्वती : नहीं (छुड़ाती है, उससे अलग होती है) नहीं मैं वहाँ नहीं सोऊंगी, वो... वो यहाँ है (जमीन पर ही लगभग बैठे–बैठे) वो यहाँ मुझसे बात करता है... मैं यहाँ जगी रहूँगी ....यहीं उसका इन्तजार करूँगी... तो फिर मुझे पुकारेगा... शाश्वती ! (स्वर का स्वर) इस बार मैं उसे सामने बुलाऊंगी कहूंगी... मैं तुम्हारे साथ चलूंगी, चाहे जहाँ ले चलो मैं सोऊंगी नहीं, मैं यहाँ अब हमेशा जगी रहूंगी...पुकारूंगी और कहूंगी... मुझसे एक बार प्रेम कर लो !

टुला : किससे कह रही हो ?

शाश्वती : उससे !
(शाश्वती की आँखें अपलक खुलीं ऊपर देखती हुई, घुटनों के बल हाथ जोड़े प्रार्थनारत मुद्रा में बैठी गतिहीन और गतिशील।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

टुला जाती है। लैम्प उठा लाती है। उसके आगे रख देती है। चली जाती है)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंगिरा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पेन्टिंग की एक और दर्शनशैली 'क्यूबिज्म' में निबद्ध इस नाट्यालेख में कहानी साइकोपैथ चरित्र अंगिरा पर केन्द्रित है। हत्या की घटना मनोवैज्ञानिक है।

इस नाटक के कई मंचन हो चुके हैं। प्रथम मंचन 2003 में वाराणसी में हुआ था ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(रात 10 बजे का वक्त । किसी शहर का कोई कमरा । कमरे में धुंधली–सी रोशनी । दो कुर्सियाँ । अंधेरे में शायद बेड । एक कुर्सी पर अंगिरा । दाखिल होता माइज.....)

मोइज़ : ....। आप गयी नहीं ?

अंगिरा : (बेड के एक कोने में कैमरा रखता है । लौटता है । फिर मुड़कर कैमरा बायीं हथेली में ले लेता है)

मोइज़ : टाइम पता है, क्या है ?

अंगिरा : ....

मोइज़ : कल मेरी दो डीसी छप रही है । एक शायद फ्रन्ट पेज पर ओर (दूसरी कुर्सी खींच लेता है, कैमरे का शायद रील निकालना चाह रहा है) ..... डीसी समझती है न ? डीसी यानी डबल कॉलम । तस्वीरों के भी कालम होते हैं अखबार में । (अंगिरा कुछ हिलती है) जिन्दगी के भी होते हैं । एक कॉलम जिन्दगी । दूसरा कॉलम मौत ! अखबार के पन्नों में भी जिन्दगी नहीं, मौत को पढ़ते हैं सब साले । जिन्दगी जीते हुए शाम को मारते हैं । सुबह पढ़ते हैं । पावर चाहते हैं । पावर समझती हैं न आप ? पावर ....याने ....लड़की । और सुबह अखबार पढ़ते हैं । क्या पढ़ते हैं पता है न ? नहीं पता ? अरे अभी तो बताया......आपको मालूम है, छपने से पहले इत्ता–इत्ता स्पेस होता है—स्पेस तो समझती है न ? जैसे आपके थियेटर में होता है । हमारी फील्ड में भी। फर्क ये है कि हमारे यहाँ स्पेस बनता है कॉलम । कॉलम में मौत होती है । हम अखबार नहीं स्पेस बेचते हैं मैडम ! अखबार का स्पेस ! जिन्दगी का स्पेस । सुनिए । आप अगर सुन रही हैं तो कुछ सुन भी रही हैं क्या ? (मोइज़ के हाथ से कुछ गिरता है अंगिरा के ठीक सामने, जिसे वो उठा सकती है, पर उठाती नहीं । मोइज़ खुद उठाता है । पूछता है....) आपको जाना है, ये तो पता है न ?

अंगिरा : ....

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मोइज़ : दस बजकर तीन मिनट । लगभग सत्ताइस मिनट बाकी । गाउन पहनना शुरू कर दिया होगा हमारे मकान मालिक ने । उल्लू का पट्ठा प्रोफेसर साब । इत्ती ठंड और इत्ती रात में अगर उसने हमें कमरे से बाहर... तो, मेरा क्या होगा ? मतलब हमारा क्या होगा—अब आप कहेंगी (गाकर) होगा वही जो उल्लू रचि राखा । एक मिनट ! एक मिनट, इसे कहते हैं विगनेट एफेक्ट ! अखबार छापने वालों की कलर स्कीम का...... जानती है न ? कलर स्कीम—नहीं जानती होंगी, जाने दीजिए । अब आप जाइए । मेरा मतलब, शर्तों के अनुसार, अपने ऑफिस जाइए (फोन की घण्टी बजती है) । आप उठायें । मैं उठाऊं क्या ? यहाँ आपका तो कोई नहीं । फिर ये टाइम मेरा है । फिर आप जा नहीं रही हैं । मैं उठाऊं सिर्फ पच्चीस मिनट हैं अब ! हलो । आपा ? कहाँ से बोल रही हैं ? ... आ रही हैं ? यहाँ आ रही हैं ? मत आइए । मेरा मतलब आप आ तो सकती हैं, यहाँ रह नहीं सकती। मकान मालिक की शर्तों के अनुसार यहाँ सिर्फ शादीशुदा ही रह सकते हैं, बैचलर नहीं । न उनके रिश्तेदार । आपा, आप आयेंगी तो प्रोफेसर साला निकाल देगा वो मकान मालिक है । हम दो इस कमरे में रहते हैं। हाँ आपा। दूसरी एक—एक—एक महिला है... याने लड़की । .... आपा, मगर मैं दिन भर प्रेस में बन्द और रात दस बजे कमरे में लौटता हूँ तो ये अंगिरा— अंगिरा, नाम का मतलब तो मुझे भी नहीं पता.... मगर ये दस बजे से सुबह छः बजे तक ड्यूटी में रहती है । आकाशवाणी में है । नेशनल चैनल में —वहाँ रात को काम होता है । अब क्या होता है ? आपा मजाक मत करो । बात समझो । रोज साढ़े दस बजे मकान मालिक कमरा चेक करता है । कौन ? अरे वो प्रोफेसर ! अगर उसने हम दोनों को साथ देख लिया तो दोनों को बाहर कर देगा । आपा—हलो—हलो—आपा—बारह सौ मन्थली का कान्ट्रैक्ट है किराये का । टाइम टू टाइम (अंगिरा से) दस—दस हो गये— आप जल्दी कीजिए न— हाँ ? नहीं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आज अंगिरा अभी तक गई नहीं । पन्द्रह मिनट में आ जायेगा प्रोफेसर । आपा आप कैसी हैं ? जल्दी रखिए । कहाँ से बोल रहीं हैं ? पी०सी०ओ० से ! अगली बार आइएगा तो बता के आइएगा । आपा...आपा...हलो...हलो... (अंगिरा के करीब आता है) आपा थीं । मेरी आपा....खैर । आप कुछ समझ रही हैं या नहीं ? (मौन) स्टेशन डायरेक्टर ने कुछ कहा है ? नौकरी है न ? (अंगिरा उठती है) माँ की चिट्ठी आई है ? शादी से चिढ़ती तो नहीं है, फिर चिढ़ती क्यूँ हैं ? बंगाली थोड़ा ज्यादा बंगाली होते हैं । कुछ ज्यादा जातीय । आओ । हम वही बनें प्लीज ! शुभ दृष्टि । यही होता है न आपलोगों की शादी में ! .... जल शोइते.... नित बर ...बरन डाला...नान्दी मुख.... दोधी मंगल....घूरिए मत। फिर आशीर्वाद । फिर शादी ! आप लोगों में शादी से पहले आशीर्वाद क्यों होता है? इसलिए न ! शुभ दृष्टि रहे शादी के लिए आपका । जैसा कि आप में होता ही है एक या अनेक इन्टरव्यू लिये गये थे । आपसे लड़के ने पूछा था – नाम अंगिरा । पढ़ाई । एमे । शौक । कुछ अलग । विचार । अच्छे । पढ़े–लिखे । वो बोर हो गया । उसने आपसे डान्स करने को कहा । बोला गाना गाओ । गाया । बस दी एण्ड । एक बार फिर यवनिका पतन । पटाक्षेप । फिर आप नौकरी के लिए आकाशवाणी चली गई । सचमुच गाना गाने की नौकरी....

अंगिरा : ....

मोइज़ : गाया क्या था तब ? याद है ? भँवरे की गुंजन...
(गाता है)

अंगिरा : (उसी रिद्म में गा उठती है) पुरानो शेई दिनेर कथा भूलबी की रे हाये शे चोखे देखा प्राने कथा शेई की भोला जाय ....
(मोइज़ ताली बजाता है । अंगिरा चौंक कर रूकती है । मन में एक शोर–सा चुभता है, जिससे बचने के लिए वह बोल उठती है । रोकते–संभालते–अपने को संयमित करते, जैसे घोड़े भाग निकलना चाह रहे हों और रास अपनी ओर से पूरी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शक्ति से खींच रही हो) तुम कौन होते हो पूछने वाले कि क्या गाया था ? क्यों गाया था ?

मोइज़ : टाइम देखती रहिए .....

अंगिरा : मुझे अब कहीं नहीं जाना । कहीं नहीं । मोइज़ । अब मेरी कहीं जाने की जरूरत नहीं रही । मैं लौट आयी हूँ । अगर नहीं भी लौटी तो लौट जाना चाहती हूँ।

मोइज़ : (छोटा सन्नाटा तोड़कर) आप के जाने के लिए सिर्फ 15 मिनट रह गये हैं । .... या कहिए कि मैं जाऊं ?

अंगिरा : डर क्यूँ रहे हो ? कम से कम तुम क्यूँ डर रहे हो ? मैने अपने डर को मार डाला । अब कहीं कुछ नहीं होगा । कोई डर की तरह नहीं आयेगा । पूरा डर खत्म कर दिया मैंने । पूरा का पूरा खल्लास ! जान से मार डाला उसे ! अब वो नहीं आ सकता ! किसी सूरत में नहीं आ सकता ! मैंने नब्ज टटोली । पूरी नब्ज । पूरे इत्मीनान से लौटी हूँ । वह मर गया । मोइज़ वह मारा गया । वो डर भी था । पुरूष भी था । मैने मार डाला ।

मोइज़ : आप...आप...तुम...तुम... क्या कह रही हो ? कोई मर्डर किया है तुमने.....?

अंगिरा : (ओवरलैप) हाँ । मैं सिनेमा हॉल के पीछे गयी । शो छूटा । वह भीड़ को छोड़ता, अंधेरी सड़क की तरफ बढ़ा । मैंने ज़ंजीर पीछे से उसके गले में फँसा दी (जंजीर निकालती है) । इस जंजीर से .....मर डाला उसे....खत्म कर दिया देखो....उधर देखो । देखो नहीं सुनो । पुलिस की गाड़ियों की आवाज सुनो । वहाँ अब तक भीड़....वैसे शायद अब तक भीड़ चली गयी होगी । कर्फ्यू भी लग गया होगा । ये हत्या । एक अनुप्रास । कई जगह दंगा भड़क गया होगा । सड़कों पर पुलिस गश्त.... रेड एलर्ट..... खबर। तुम्हारे मुताबिक डी.सी. । कल अखबार में मिलेगा ये सब । हाँ, तुम्हारे वाले अखबार में भी । तुम तस्वीर लेने जाओगे । किसकी ? किसकी तस्वीर लोगे ? कहाँ ढूँढोगे ? मुझे कौन ढूँढेगा ? इस भयानक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रक्तपात में किसी को मेरा ध्यान ही नहीं आयेगा । कि मामला इतना पर्सनल है । इतना पर्सनल है कि...कि तुम्हारा कानून....आई रिपीट तुम मर्दो का कानून...

मोइज़ : अब तुम्हारा क्या होगा ?

अंगिरा : मैं साफ बच जाऊंगी । तुम मुझे छू नहीं सकोगे । मैं हूँ । तुम क्या हो ? क्या हो तुम ? लो ! पकड़ो मुझे ! अरेस्ट करो । करो.....करो.....

मोइज़ : तुमने किसे मारा है ? किसका खून किया है ?

अंगिरा : उसे....वो जो....उस लड़की को मारने आ रहा है । आ रहा था । उसे मारा है

मोइज़ : .... । पानी पियेंगी ? पियोगी ?

अंगिरा : नहीं ! तुम क्यों परेशान हो रहे हो ? सब ठीक है । वो देखो ! सब लोग बैठे हैं । मुझे देखने आये हैं वो सब । अभी शुरू होगा थियेटर । रियलिस्टिक थियेटर । शुरू हुआ । खत्म भी हो गया । बेस्ट ऐक्ट्रेस का एवार्ड मिल गया मुझे । एक बार, दो बार । मैं प्राइज लेने स्टेज पर गयी । तालियों की गूँज थमी । पूरे हाल ने कहा वन्स मोर दी सेम । कॉमेडी सीन । मैने दोबारा किया वो कॉमेडी सीन....एक टुकड़ा । हॉल फिर से जी उठा । उफ् ! वो प्यारा–प्यारा शोर । मैं खुशी से पागल हो गयी । ताली बजाओ । बजाओ ताली ..... (?) मै। विंग्स में गयी तो शम्भू दा ने सीने से लगा लिया । मैंने पाँव छुए । शम्भू दा । मेरे निर्देशक । मेरे गॉडफादर । मैं पूरी की पूरी उन्हीं की वजह से तो थी । वो एक जीनियस डायरेक्टर । उन्होंने क्या नहीं दिया मुझे । डान्स.....म्युजिक..... एक्टिंग.....सब कुछ ! शम्भू दा..... मोइज़ । तुम सुनो मोइज़ । देखो भी । पूरा हॉल तालियों में डूबा हुआ था । मैं खुशी से उत्तेजित । वे भी उत्तेजित । शायद किसी दूसरी खुशी से । साइक्लोरामा के पीछे । बीचोबीच ! एक नया सीन । गुरू का ताप । मेरा सन्ताप । मैं पाप नहीं जानती ताप जानती हूँ । मैं चीखी मगर हॉल में दर्शकों की पिछली तालियाँ जारी थीं ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एक बहरा शोर था । मैं सफलता के मूड में थी । एक कसता हुआ शिकंजा था । जैसे रीढ़ की हड्डी में कुछ बह गया हो । इज एनीबडी लिसनिंग ? आई हैव बीन रेप्ड । मैं जहाँ नहीं गिरना चाहिए था, वहाँ गिरी । गिरी नहीं थी मैं । गिरायी गयी थी । गलत को सही करने की कोशिश में......जिसने गिरना चाहिए था, वो गिरा....मगर पुरूष कभी नहीं गिरता । मैं औरत थी, गिरी समझी गयी.....मेरी अपनी आंखों में भी.....मै कहां गलत थी मोइज़ ?

मोइज़ : ....

अंगिरा : ....

मोइज़ : तो ? कोई भी गिरा । गिराया गया । टाइम देखो अंगिरा ।

अंगिरा : मेरे पास टाइम नहीं है । काला कल है ।

मोइज़ : काला कल ? ये क्या होता है ?

अंगिरा : पता नहीं ।

मोइज़ : जो कुछ तुम्हारे साथ हुआ उसमें अमेन्डमेन्ट कर सकती हो ?

अंगिरा : मैं समझी नहीं ।

मोइज़ : क्या तुम किसी घटना में संशोधन कर सकती हो ?

अंगिरा : तुम कर सकते हो ?

मोइज़ : हाँ ! शायद नहीं ।

अंगिरा : नहीं ! शायद हाँ ।

मोइज़ : हम स्मृतियों में तो संशोधन कर ही सकते हैं । इससे कम से कम....

अंगिरा : दुख कम हो जाता है ! दुख कम हो जाता है ?

मोइज़ : स्मृति में अनुवाद करके हम दुख की उम्र बढ़ा देते हैं। वी आलवेज रिमेम्बर.....

अंगिरा : शट अप ।

मोइज़ : ....

अंगिरा : घटनायें भूल सकते हो क्या ? कुछ घटनायें ऐसी होती है, जिनके अंधेरे में पूरा जीवन बीतने को अभिशप्त होता है ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भूलने की कोशिश में दरअसल हम उसी घटना को याद कर रहे होते हैं । संशोधन के बगैर ।

मोइज़ : हम किसी घटना को इसलिए संशोधित नहीं कर सकते, क्योंकि हम नहीं, हमारी स्मृतियाँ मिलती हैं ।

अंगिरा : कैमरे से नहीं, जिन्दगी को आंखों से देखने की आदत डालो मोइज़ । हम परिवेश को छोड़ देते हैं मगर परिवेश नहीं छोड़ता हमें ।

मोइज़ : हमारे निर्णय तब गलत सिद्ध होते हैं जब हम चीजों को वैसा देखते हैं, जैसा हम देखना चाहते हैं ।

अंगिरा : चीजें जैसी दिखती हैं, वैसी होती है क्या ?

मोइज़ : ....होती है क्या ?

अंगिरा : मैंने कोशिश की । शुरू से मैंने कोशिश की । चीजों को वैसे देखने की जैसे कि वो हैं । (रूंध जाता है स्वर) जीवन/पुरूष/स्त्री/जंगल/प्रकृति/छद्‌म/ बचपन/...... मैं कहाँ गलत थी बताओ । बचपन से मुझे सिखाया गया था, घर से सीधे स्कूल जाना और सीधे घर लौटना । सर में रोज तेल, दो चोटियाँ । किसी से बोलना नहीं । कहीं जाना नहीं । सिर्फ पढ़ाई । घर और स्कूल.....फिर कॉलेज..... के बीच सिर्फ थोड़ी देर बस में लड़कियों के बीच । बस ! हमारे जैसे मध्यवर्गीय बंगाली परिवार में बड़ी होती लड़की को बचपन से आर्ट का संस्कार भी दिया जाता है– रवीन्द्र संगीत.....रवीन्द्र नृत्य । लड़का आकर पसन्द करेगा । इसलिए । लड़का आया । पूछा–गान जानो ? मैंने गाया....आज खैला भांगार खैला खेलबी आय.....पूछा–डान्स जानो, मैं नाची (रूलाई हस्तक्षेप करती है), मैं कहाँ गलत थी ? वो सब करती गयी, जो कहा गया, लेकिन उसने क्या किया जानते हो ?

मोइज़ : (हामी में)

अंगिरा : उसे किसने अधिकार दिया था मुझे रिजेक्ट करने को ? कौन देता है पुरूष को अधिकार ? क्यों देता है ? मैं क्या करती मोइज़, क्या करती ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मोइज : कोई और प्रोफेशन चुन लेतीं । थियेटर क्यूँ करने लगी ?

अंगिरा : चुनाव की सुविधा तो हो ।

मोइज़ : मैं समझता था कि आप कुछ डिफ्रेन्ट हैं ।

अंगिरा : लड़की नहीं हो सकती ?

मोइज़ : सवाल लड़की होने का नहीं है । मन के मिलने का है । सोच के मिलने का है ।

अंगिरा : तुम जो चाहते थे, वो मिला ?

मोइज़ : इतना सिम्प्लीफाई भी नहीं किया जा सकता । हम जैसा सोचते हैं, वैसा इसलिए नहीं होता, क्योंकि हम उसे नहीं सोचते जो होता है । हम सोचते वही हैं जो चाहते हैं । जो जानते हैं । जो हो चुका होता है ।

अंगिरा : सिम्प्ली फिलोजॉफी ।

मोइज़ : नो ! वन मस्ट लिव हिज़ फिलोजॉफी ।

अंगिरा : डू यू लिव योर फिलोजॉफी ? हैव यू एनी फिलोजॉफी?

मोइज़ : परहैप्स ! ऐण्ड परहैप्स आई लिव ।

अंगिरा : क्या जान पाये ?

मोइज : जानने को है क्या ?

अंगिरा : कैसी दिखती है जिन्दगी ? जिन्दगी कैमरे में है या दिमाग में ? या फिर सिर्फ जिन्दगी में ?

मोइज़ : सिर्फ इतना जान पाया कि जो अनजाना है, उसका कद कितना बड़ा है ।

अंगिरा : जब पहली बार विश्वास टूटा तो मैंने भी जाना कि कितना बड़ा छद्म है यह समाज ! पुरूष ! उसके अधिकार ! वो जब चाहे किसी को अप्रूव करे, जब चाहे रिजेक्ट । कितनी बेवकूफ थी मैं ! मैं सोचती थी कि मैं वैसे देखती हूँ चीजों को, जैसी कि वे हैं....वो वैसी नहीं थीं। पता है फिर मैंने क्या किया ? मुझे लगा, मैं मध्यवर्गीय चहारदीवारी में रहूँगी तो दुनिया साफ नहीं दिखेगी । मैं बाहर आ गयी । खुली हवा में । मेरे सामने पूरी दुनिया थी । मेरी आंखें अब खुली थीं । चौकन्नी ! तुम कुछ सोच रहे हो !

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मोइज़ : नहीं सुन रहा हूँ । फिर तुमने थियेटर को प्रोफेशन बनाया । यही है न आगे ?

अंगिरा : हाँ ! पिछली घटनाओं को भूलती गयी शायद । थियेटर में ही शम्भू दा से परिचय हुआ । वे धीरे–धीरे सारी कसौटियों पर खरा उतरने लगे......

मोइज़ : सारी कसौटियों पर ? (ओवरलैप)

अंगिरा : सुनो । शम्भू दा बातचीत में बुद्ध से शुरू हुए थे । निर्वाण की बात करते थे ।

मोइज़ : जब कोई लड़का किसी लड़की से निर्वाण की बात कर रहा होता है, तो दरअसल वो उस लड़की के आगे अपना प्रेम जता रहा होता है ।

अंगिरा : मगर, मगर लड़की यह छद्‌म नहीं जानती तो ? उसी पर विश्वास कर बैठती है, जो है । क्या मैं इस बार भी गलत थी ?

मोइज़ : इस बार क्या जाना ?

अंगिरा : यही कि दुनिया में कोई भी अपनी असली शक्ल में नहीं है । या शायद मेरे पास वो क्षमता नहीं है कि चीजों को उनकी असली शक्ल में देख सकूँ । मुझे सारी चीजें सही शक्ल में नहीं दिख रहीं .... मैं शायद ऐब्नार्मल हूँ.......

मोइज़ : ऐसा आपने सोचा ?

अंगिरा : थियेटर की घटना के बाद, एक शक हुआ कि, चीजों के रंग वही हैं जो दिख रहे हैं या कुछ और ! मैंने तय कि अब मैं सिद्ध करूंगी कि मैं एब्नॉर्मल हूँ । पता है कैसे ? तुम वहाँ बैठो । कुर्सी पर मुझे देखते रहे । वो देखो....वो देखो वो आदमी जा रहा है.... उधर । वो मार डालेगा उस लड़की को । मगर इससे पहले मैं उसे मार डालूँगी..... इस जंजीर से (हँसती है, फिर एकाएक खामोश होने का संकेत देती हैं) मैं उसे मारूंगी और मुझे कोई पकड़ नहीं पायेगा । मैं डॉ. चड्ढा से ऑपरेशन कराऊंगी......यहाँ.......देखो यहाँ......ठीक इस जगह.....इस जगह एक छोटा सा ऑपरेशन करेंगी डॉ चड्ढा.....

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

और पता है, मैं पागल हो जाऊँगी । सचमुच ! लोग समझेंगे कि मैं अभिनय कर रही हूँ, लेकिन सारे डॉक्टर चेक करके कहेंगे–लड़की पागल है । ऐब्नॉर्मल ।

मोइज़ : कानून क्या करेगा ?

अंगिरा : वो मुझे बरी कर देगा । और अगली सुबह डॉक्टर चड्ढा फिर एक माइनर ऑपरेशन करेंगी.....और मैं फिर पहले जैसी हो जाऊंगी.....साफ बच निकलूंगी....और फिर मर्डर करूंगी । ऐब्नॉर्मल मर्डर करेगा और लड़कियों को उनकी नॉर्मल लाइफ मिलती जायेगी । दुनिया ऐब्नॉर्मल नहीं रहेगी । लोग चीजों को साफ–साफ देख पायेंगे.....विश्वास नहीं टूटेंगे......आस्थाएं नहीं मरेंगी....प्रेम अपदस्थ नहीं होगा......सभी एक दूसरे का काम बाँट लेंगे...... कला–कविता और संगीत अवान्तर नहीं होंगे.... तुमसे तुम्हारा गीत कोई छीन नहीं सकेगा.....क्या....भंवरे की गुंजन है मेरा दिल....मैं मुक्त होकर रवीन्द्रनृत्य कर सकूंगी..... दिखाऊं ? ऐसे.....मैं गाऊंगी (नाचते हुए) जोदि तोर डाक शुने केउ न आशे तबे ऐकला चलो रे.... (रो देती है) नहीं....कोई रोयेगा नहीं....विवाह का अर्थ होगा.....एकान्त सुरक्षित रहेगा.... समर्पण अपमानित नहीं होगा.... जल शोइते....बॅरन डाला....शुभ दृष्टि.....सिद्ध भी होंगे.....और.....

मोइज़ : कोई अपने व्यक्तिगत उद्देश्य से न तो किसी का खून करेगा न समाज को हिंसक बनायेगा....

अंगिरा : हाँ....हाँ....और.......नही......वो देखो.....वो आ रहा है.....मुझे मार डालेगा.....वो देखो, मेरे कन्धे पर कॉंक्रोच ! हट–हट.....नहीं पैरानोइया नहीं.... सीजोफ्रेनिया भी नहीं...मैं जानती हूँ.... मुझे कोई बेवकूफ नहीं बना सकता.....

मोइज़ : सुनिये ! क्या आप ऑपरेशन करा के लौटी हैं ?

अंगिरा : (अट्टाहास करती है) ऑपरेशन,...... के बाद मुझे कैसे पता चलेगा कि मैं क्या बोल रही हूँ ?

मोइज़ : आप अभी क्या बोल रही हैं ?

अंगिरा : तुम्हें क्या लग रहा है ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मोइज : आप मर्डर करके लौटी हैं !

अंगिरा : लौटी भी हूँ तो ?

मोइज़ : थोड़ी ही देर में पुलिस आने वाली होगी ।

अंगिरा : हो सकता है । आये ।

मोइज़ : आखिर आपने ऐसा क्या खो दिया जो.....

अंगिरा : क्या खो दिया ? क्या खो दिया ? अब भी पूछ रहे हो ? इतना सुनने के बाद ?

मोइज़ : (काटकर) हाँ आप फिर भाग क्यूँ रही हैं ? बल्कि, आप भाग भी नहीं रहीं....आप खेल रहीं हैं...दूसरों से । इस खेल में बनाये सारे नियम भी आपके हैं जो सिर्फ आप लागू नहीं होते । आप अपनी असफलता को गरिमा देने के लिए दुख को सुखद बना रही हैं । ऐसा क्या हो गया है, आपके साथ जो औरों के साथ नहीं होता ? आप जैसी हजारों लड़कियाँ हैं, मगर वे जंजीर लेकर नहीं घूमतीं ! आप में और उन लोगों में क्या फर्क रह गया जो सिर्फ व्यक्तिगत कारणों से समाज को हत्याओं के जंगल में झोंक देते हैं ?

अंगिरा : तुम कहते हो कि सुरक्षित हूँ मैं....और चाहते हो कि लुट जाऊं और लूटने वाला तुम्हारे अलावा कोई न हो ! मैं अपमानित होकर कुछ कहूँ भी तो तुम मुँह दबा दो....रोऊं तो गला दबा दो....अपने सारे पराजयबोध को मुझ पर लाद दो....शापित भी तुम करो, मुक्ति भी तुम्हीं दो ! कौन कहता है असम्पूर्ण है पुरूष ! मुक्त हो और कहते हो आग में जाओ....जलकर बताओ मुझे.... साबित करो कि तुम खरी हो (व्यंग्य में हँसती है) वो देखो....युधिष्ठिर क्या कर रहा है....उधर वो....उसे तो कुछ दिखता ही नहीं....सिवाय मछली की आंख के....वो नकुल बेचारा मेमना....सब वही....वही हैं....क्या दुर्योधन....क्या कर्ण....क्या अर्जुन ! शाम को निर्वस्त्र करते हैं । सुबह अखबार पढ़ते हैं । हॅह ! अर्जुन.....अखबार....तुम्हारी तस्वीर.....सिंगल कॉलम......डबल कॉलम......युधिष्ठिर.......विगनेट एफेक्ट.......लो .तस्वीर खींचो......मैं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निर्वस्त्र हो रही हूँ.....तुम तस्वीर खीचों.....लो खूब बिकेगा....हॅह ! दुर्योधन, रावण, कंस.. (चक्कर खाकर गिर जाती है) ( ) सब कुछ अजीब सा लगता है.....अजीब सा! सुन्दर सा । लगता है मैं यहाँ बरसों से हूँ बरसों से । गार्गी, मैत्रेयी, अपाला, लोपामुद्रा, द्रौपदी, पंचकन्या, अहिल्या.....सब में मैं होती चली गयी.....मैं सबसे शामिल क्यूँ हूँ ? ऐब्नॉर्मल हूँ..... इसलिए ? वो सब चली गयीं । सबकी सब । मैं बच गयी । अनिर्णीत । छूटी हुई । छोड़ दी गयी ।

(सिर्फ खामोशी)

मोइज़ : तुम ऐब्नॉर्मल नहीं हो । तुम एक सीधी–सादी, अच्छी लड़की हो । बस ।

अंगिरा : मैं अब भाग नहीं सकती । बहुत थक गयी हूँ मोइज । इतने बरसों से मैं भाग रही हूँ । अब नहीं भागा जाता । मुझे बचाओगे ?

(मोइज़ से कुछ दूरी पर श्लथ बैठती है । घुटनों के बल । मोइज़ दूरी कम करता है । अंगिरा ऐसे उठती है, जैसे मोइज़ ने उठाया हो । वह रोती हुई फिर बैठती है ।)

मोइज़ : सिर्फ एक बार कह दो कि तुमने कोई खून नहीं किया !

(अंगिरा सिर्फ रोती है)

मोइज़ : मुझे पता है, तुमने खून नहीं किया । तुमने कुछ भी नहीं किया । नहीं किया न !

अंगिरा : (अवाक)

(दरवाजे पर हल्की दस्तक । दोनों चौकन्ने । दस्तक थोड़ी तेज.....अचानक दोनों दरवाजा खोलने एकसाथ जाते हैं । दरवाजे तक पहुँचते ही दोनों के हाथ छू जाते हैं । एक अजीब–सी सिहरन । दस्तक । दोनों चुप । दस्तक । मोइज़ वापस आता है । उसके पीछे अंगिरा । दस्तक । दोनों चुप लेकिन करीब । आश्वस्त । एक दूसरे का भरोसा बनते हुए । दस्तक । रोशनी कम होने लगती है । दस्तक की अवधि बढ़ती है । रोशनी कम होने के साथ अंधेरे में दस्तक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भी न दिखाई देने लगती है, न सुनाई । ़बस, ऐसा लगता है, अंधेरा होते ही दोनों मिल जायेंगे । शायद !)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ईको चेम्बर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मीडिया की आन्तरिक भ्रष्टता के चरम का रंगमंचीय वर्णन है नाटक 'ईको चेम्बर' । इसकी नायिका कहानी में तो आती है किन्तु मंच पर नहीं । नाटक का सुर ध्रुवपद के आलाप में निबद्ध है।
इसका प्रथम मंचन वाराणसी में वर्ष 2001 में हुआ था ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(शायद कोई शव वैद्युतीय ढंग से गुजर रहा है । अंधेरे में सिर्फ इसकी विचित्र ध्वनि है। ध्रुपद का थोड़ा आभोग। जो कमरा अभी चालीस मिनट तक दिखेगा, वह दूरदर्शन महानिदेशालय के समाचार प्रभाग का विशिष्ट गोपनीय वार्ता कक्ष है । एक मेज, जिस पर वृत्ताकार प्रकाश है, के दोनों ओर दो कुर्सियाँ । आस–पास अंधेरा । गहरा अंधेरा । जिस व्यक्ति को दर्शकों की ओर देखते हुए बैठना है उस पर रैना की ओवर कोट है । गहरी ध्वनि के बीच ही आकाश का प्रवेश । ध्वनि धीरे–धीरे कम होती है। आभोग भी)

ओवरकोट : (ऑफ वॉयस) हूँ । बैठो ! इस वक्त तुम जहाँ हो, वो है हमारा ईको चेम्बर !
यहाँ तुम जो बोलोगे, वो सुनाई देगा। और वो भी, जो तुम नहीं बोलोगे ! ठीक ?
(रैना आकर कुर्सी से कोट उठाकर बैठते हुए) हम अक्सर खुद को सुन नहीं पाते । आज तुम जो बोलोगे वो सुनाई देगी । ठीक ?

आकाश : मुझे क्या ....

रैना : What (ओवर लैप)

आकाश : मुझे क्या बोलना है ?

रैना : हूँ ! तुम्हें क्या बोलना है.........?......... तुम्हें क्या बोलना है...(एकाएक) वही जो तुम अपनी Activity में बोलते आये हो अब तक ( ) (एकाएक) Relax.

आकाश : मैं ......

रैना : सुनो (ओवर लैप) ! सुनने से पहले खामोश रहोगे तो गलत नहीं सुनोगे । छोड़े तो नहीं होगे....(सिगरेट) ? (अपनी बायीं ओर घूमकर ओवर कोट से सिगरेट की पैकेट ढूँढता है, फिर एकाएक पलटकर) ओ ऽऽ यहाँ तो कुछ पी भी नहीं सकते सिवाय पानी के। तो तुम दूरदर्शन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

महानिदेशालय में हो, इसके समाचार प्रभाग में, इसके विशिष्ट गोपनीय वार्ता कक्ष में.....

आकाश : .....इस वक्त !

रैना : हाँ ! इस वक्त । इसी वक्त यहाँ हम आते हैं । तुमने आज यहाँ ज्वॉइन किया है । तुम्हारे पास कोई सूचना है, तुम्हारी किसी कलीग के बारे में ?

आकाश : तो आपने कुछ बताने के लिए यहाँ इस वक्त बुलाया है.... इत्ती रात.....रात बारह बजे !

रैना : बताने नहीं, पूछने । पूछने भी नहीं, तुम्हारी प्रॉब्लेम्स को जानने और सुलझाने ।

आकाश : ......( )

रैना : शर्वरी को तुम कब से जानते हो ...?

आकाश : ....!!!

रैना : नहीं /मेरा मतलब/शर्वरी कैसी लड़की है ? ( ) (आकाश उठ जाता है)

आकाश : मै चलूँ ?

(रैना हँसते हुए और उसे दोबारा बैठने का इशारा करते हुए बिल्कुल सामने, प्रकाश की परिधि तक आकर खड़ा हो जाता है । आकाश की ओर उसकी पीठ है । आकाश उसकी ओर घूमता है) ( )

रैना : यहाँ सिर्फ हम दो नहीं है ।

आकाश : बात क्या है ? आज मैने यहाँ ज्वॉएन किया है और आप पूछ रहे हैं शर्वरी.....आप मित्र है !

रैना : खामोशी में बोलोगे तो बात गूँजेगी । ( )

आकाश : यह सब आप दिन में ऑफिस में भी पूछ सकते थे ? ऑफिस आवर में ?

रैना : हम ऑफिस में ही हैं । ( ) ऑफिस ऑवर में भी। एक Journalist का टाइम कभी ऑफ नहीं होता । Crime कभी ऑफ होता है ? जब तक Crime है, तब तक Crime reporting है और तब तक copy

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

editing है । तुम हमारे experienced copy editor हो, और संयोग से, आज से मैं तुम्हारा Boss हूँ । Right......? लेकिन इससे पहले मैं तुम्हारा मित्र हूँ । ( ) जालंधर से आकर आज तुमने चार्ज लिया है और शर्वरी ने आज ही रिज़ाइन किया है । उसने पत्र में तुम पर आरोप लगाया है !

(रैना अपनी कोट की जेब में पत्र टटोलता है)

रैना : तुमने अभी शादी नहीं की है ना ?

आकाश : सर ......

रैना : यहाँ तुम अपने पैरेन्ट्स साथ लाये हो ? (आकाश के मस्तिष्क में पत्र है) आज तुमने नागार्जुन वाला टेलिकास्ट देखा ?

आकाश : हूँ शुरूआत देखी । प्रोग्राम अच्छा नहीं बना है ।

रैना : टेलिकास्ट की बात कर रहे हो या प्रोग्रामिंग की ?

आकाश : नहीं, मुझे समझ में नहीं आता, कि हम अपनी inefficiency को इतना खूबसूरत क्यों बनाना चाहते हैं ? अगरतला से रिपोर्ट की फाइल नहीं पहुँची तो स्क्रीन पर आसाम का मैप लगा दिया और टेलिफोन पर रिपोर्टर की रिपोर्ट टेप कर सुना दी, बस । प्रोग्राम कवर हो गया । अरे अगरतला छोड़िए, लालू की लखनऊ रैली टेलिफोन पर सुना दी गई । स्क्रीन पर लालू की तस्वीर लगा दी गई । अगरतला से डिस्टेंस समझ में आता है । लखनऊ से दिल्ली कितनी दूर है ? और फिर दिल्ली से दिल्ली कितनी दूर है ? मंडी हाउस से सादतपुर ग्यारह बसें जाती हैं । ये मैं उस स्थिति की बात कर रहा हूँ जब हम ये मान कर चले रहें हैं कि केन्द्र की अपनी सारी गाड़ियाँ नाकारा हो गयी हैं । एक रिपोर्टर और कैमरामैन कभी भी जा कर एक प्रोग्राम तैयार रख सकते थे । तब ये तो नहीं होता जो आज हुआ । एक तस्वीर लगा दी गयी और बोल दिया गया । —नागार्जुन नहीं रहे ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( ) इस वक्त अगर हम लाइफ प्रोफाइल दिखा सकते तो बात बनती । डेथ के बाद आदमी लाइफ प्रोफाइल में ज्यादा दिलचस्पी लेने लगता है ।

रैना : लेकिन मौत तो बिहार में हुई न, आकाश !

आकाश : मैं लाइफ प्रोफाइल की बात कर रहा हूँ । पचास मिनट शूट करने में कितने दिन लगते ? जब दिल्ली का ये हाल है तो......

रैना : लाइफ प्रोफाइल तो हम किसी का कभी भी बना सकते हैं ।

आकाश : कभी भी ? नागार्जुन को जिन्दा करेंगे ?

रैना : हाँ । दिल्ली से बिहार तक उनसे जुड़े तमाम लोग अभी जिन्दा हैं । तुम उनसे मिलोगे और नरेटिव तैयार कर दूरदर्शन पर नागार्जुन को जिन्दा करोगे । कब निकल रहे हो ?

आकाश : (हँसी आ जाती है) तो इसलिए बुलाया है आपने ? रात के बारह बजे ?

रैना : जब तुम बिहार की ओर निकलोगे तो बीच में इलाहाबाद पड़ेगा । वहाँ तुम उतरोगे तो तुम्हें स्मृतियाँ मिलेंगी । शर्वरी की स्मृतियाँ

(आकाश उठकर खड़ा हो जाता है । रैना आकाश के कंधे के पास आकर बोलता है)

रैना : नागार्जुन ने संस्कृत की शिक्षा यहीं ली थी (झूठ)। वहाँ उनसे जुड़े लोग अभी भी हैं । यानी स्मृतियाँ ।

(आकाश सिर घुमाता है)

रैना : This is simply a play of time and memory. ( ) (आकाश की चहलकदमी) सिगरेट भी नहीं पी सकते । बैठ जाओ । ( )

तुम शर्वरी को नहीं जानते ? लेकिन वो तो जानती है, तुम्हें !

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आकाश : सर, एक शर्वरी मेरे साथ इलाहाबाद युनिवर्सिटी में.....मैं जिस शर्वरी को समझ रहा हूँ । हमने साथ ग्रेजुएशन किया था एट्टीज में, बस । बाद में पता चला, वो शारजाह चली गयी है । आप किस शर्वरी की......

रैना : तुम सुन रहे हो, जो तुम बोल रहे हो ? तो तुम्हें सुनाई देगा जो तुम नहीं बोल रहे हो....बोलना नहीं चाह रहे हो !

आकाश : मैं झूठ नहीं बोलता, मुझे छुपाना नहीं आता । आप क्या कहना चाहते हैं और क्या चाहते हैं बता दें तो कोई कॉम्प्लीकेशन नहीं रहेगा ।

रैना : इलाहाबाद में जब तुम इन्टरव्यू लोगे तो लोग नागार्जुन से जुड़ी घटनाओं को याद करेंगे । कैमरा उनकी ओर होगा । तब तुम्हें शायद याद आ जाये कि शर्वरी ने तुमसे शादी की थी, तुमने नहीं। उसने यहाँ डी.जी. को बताया कि उसका जो बच्...बताओ उसे तुम्हारे कारण Resign करना पड़ा। उसने बताया वो खबर बन गई। तुम्हें याद आ जाये तो बता देना, हम कैमरा तुम्हारी ओर घुमा देंगे । लोगों को ये लाइफ प्रोफाइल नागार्जुन से ज्यादा दिलचस्प लगेगी । लगेगी न !

आकाश : नॉनसेंस ।

रैना : वो तुम्हें जानती है, उसे Resign करना पड़ा । तुमने ज्वाईन किया तुम उसे नहीं जानते । किस शर्वरी की बात कर रहे थे तुम ?

आकाश : वो थी, उसका पक्ष था, वो सही थी तो Resign क्यों किया ? (Monologue)

रैना : बच्चे की शक्ल तुमसे.....

आकाश : सही थी तो Resign क्यों किया ? (Monologue)

रैना : प्रश्न स्थान पर मैं हूँ ।

आकाश : इतना सब कुछ हो गया और मुझसे कभी संपर्क नहीं किया ? बारह साल से कोई कॉन्टैक्ट नहीं, इतना सा परिचय और इतना कुछ हो गया ! (Monologue)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रैना : उसके पास प्रमाण है । ( ) कब निकल रहे हो (इलाहाबाद) ?

आकाश : आपने डी.एन.ए. टेस्ट कराया ?

रैना : किसका ?

आकाश : श्रावंती का.....

रैना : किसका ?

आकाश : शर्वरी का....?

रैना : (हँसी) तुम expose हो रहे हो। सच बताने में क्या हर्ज है ?

बच जाओगे । यहाँ तुम देखे भी जा रहे हो और सुने भी जा रहे हो । कैमरा ऑन है। सत्रह कमरों में तुम स्क्रीन पर देखे जा रहे हो । और इस ईको चेम्बर के ठीक ऊपर डी.जी. साहब बैठे हैं । वे तुम्हें देख भी रहे हैं और सुन भी रहे हैं ।

आकाश : (घुटनों के बल) सिर्फ आपके देखने–सुनने से बात नहीं बनती क्या ?

रैना : (चमक) ठीक है, बात बन सकती है, तुम चाहो तो तुम्हारी बात सिर्फ मुझ तक ही ईको होगी ।

आकाश : नहीं मैं कुछ और देख रहा हूँ ।

रैना : क्या ?

आकाश : कि आपको न दिखाई-देता है न सुनाई ।

रैना : मतलब ?

आकाश : (हँसी) ये सचमुच ईको चेम्बर ही है । यहाँ मैं देख सकता हूँ, सुन सकता हूँ जो बाहर नहीं दिखाई देता लोगों को ।

रैना : तुम खुद को सुन पा रहे हो ?

आकाश : हाँ । ऐब्सोल्यूटली ।

रैना : क्या सुन......

आकाश : That you are talking absolutely nosense.

रैना : But you have to declare.

आकाश : What

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रैना : About शर्वरी..... about your relations ? About your यूनियनबाजी in Agartala ?

आकाश : What ? आप कैसे........

रैना : I have nothing to declare but my genious.

आकाश : सर, यूनियनबाजी का क्या मतलब ?

रैना : डी.जी. साहब को अगरतला से रिपोर्ट बनाकर भेजी गयी है कि वहाँ तुम यूनियन किया करते थे । आकाश मैं तुम्हारा दोस्त हूँ, बड़ा समझो, बचा लूँगा । यार तुम तो लीडर हो, लीडर थे यूनियन में ?

आकाश : लीडर नहीं था ।

रैना : फिर क्या थे ?

आकाश : कुछ भी नहीं । सिरे से अराजकता और कोई कुछ न बोले ? लोग या तो जीयें या फिर डरें । डरते हुए जीना अराजकता है । डरिये और अराजकता स्वीकार कीजिए ।

(विषयान्तर)

आकाश : वैसे आपको पता है कि मैं यहाँ क्यों आया हूँ ?

रैना : नौकरी करने !

आकाश : Yes, लेकिन आपके तरीके से नहीं ।

रैना : No, तुमको भेजा गया है । तुम्हारे ऊपर चार्ज है । गम्भीर चार्ज ।

आकाश : Yes मुझे भेजा गया है ताकि साजिश का पर्दाफाश हो सके ।

रैना : क.....कौन सी साजिश ?

आकाश : Population Minister की हत्या की साजिश । भूल गये ? किस तरह एक female singer को use किया गया था ! किस तरह science का misuse किया गया था ! किस तरह आलाप के vibration और time bomb की timing adjust की गयी थी ! किस तरह देश की मशहूर classical vocalist का इस्तेमाल किया था देश के एक मंत्री की हत्या के लिए ! मगर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हुआ क्या ! Singer के साथ सैकड़ों लोग उड़ गये bomb blast में । मंत्री को कुछ नहीं हुआ ।

आकाश : साजिश एक Journalist ने रची थी । Bureau chief ने ।

रेना : तो !

आकाश : इसी investigation में मैं यहाँ लाया गया हूँ ।

रैना : तो !

आकाश : आज से मैं On duty हूँ मगर आपके तरीके से नहीं ।

रैना : तो !

आकाश : मुझे यह भी मालूम है कि साजिश में एक लड़की की भी मदद ली गयी थी ।

रैना : तो ! (झल्लाकर)

आकाश : तो आपको मेरी मदद करनी है । आप क्यों परेशान हो रहे हैं, आप तो दोस्त हैं ? हम तभी इसमें पूरी तरह जुट पायेंगे जब हम ऐब्सर्ड (Absurd) बातें बंद कर थोड़ा rest लेंगे । Risk लेने से पहले Rest लेना पड़ता है । तो मैं चलूँ ? आप भी थक गये होंगे !

(दोनों मंच पर नहीं हैं मगर संवाद जारी है)

रैना : (Whisper) सुनो, तुम्हें मंत्री की हत्या वाली बात कहाँ से पता चली ?

आकाश : आपको कहाँ से पता चली ? (दोनों ऑफ विस्पर वॉयस में)

रैना : अब Communication world में कोई बात छुपती है क्या ?

आकाश : वहीं से पता चली । लेकिन आप क्यों परेशान है ?

रैना : तुमने अभी किसी journalist की बात की । किस अखबार में है वो ?

आकाश : Journalist क्या अखबार में ही होता है ? रेडियो, टेलिविजन में नहीं ? और फिर आप दिल्ली में है । आप बेहतर जान सकते हैं ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रैना : तुम्हें यह काम किसने दिया ?

आकाश : डी.जी. ने ।

रैना : डी.जी. ने ? उन्होंने तो मुझे नहीं बताया ?

आकाश : उन्होंने तो आपको यह भी नहीं बताया कि वे आज मुंबई गये हैं ।

रैना : मुम्बई ? वे तो ऊपर बैठे हैं ।

आकाश : नहीं, वे आज दोपहर की flight से ही मुंबई गये हैं । कल Chief Minister से उन्हें मिलना है । ऊपर वे नहीं है ।

रैना : तो कौन है ?

आकाश : यह तो आपको पता करना है कि ऊपर कौन है ?

रैना : ऊपर कोई नहीं है ।

आकाश : ना, ऊपर कोई तो है ।

रैना : तुम्हें कैसे मालूम ?

आकाश : आप ही ने तो बताया ।

रैना : क्या ?

आकाश : कि ऊपर कोई है ।

रैना : नहीं, ऊपर कोई नहीं है । (घबराकर)

आकाश : लेकिन मैं जानता हूँ कि है। आपने चिट्ठी नहीं दिखाई ?

रैना : कौन सी चिट्ठी ?

आकाश : क्यों, शर्वरी की ? आप ही ने बताया कि उसने आपको चिट्ठी दी है, कि उसने resign किया है, कि उसने मुझ पर आरोप लगाया है (रैना, 'हाँ शायद मेरी कोट में' बोलता हुआ कोट के पास आता है जो मंच पर है। आकाश भी । रैना चिट्ठी ढूँढता है)

रैना : चिट्ठी छोड़ो, वो यहाँ खुद ही आने वाली है ।

आकाश : कौन ?

रैना : आपकी शर्वरी । मैं और डी.जी. साहब यहाँ साढ़े ग्यारह बजे आये हैं । तुम्हें हमने बारह बजे बुलाया था और शर्वरी को साढ़े बारह बजे । साढ़े बारह हो रहे हैं ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आकाश : लेकिन डी.जी. साहब तो हैं नहीं ?

रैना : तो फिर ऊपर कौन है ?

आकाश : सोचिए, कोई तो है !

रैना : तुम मुझे बेवकूफ नहीं बना सकते । डी.जी. साहब कहीं भी जाते हैं तो मुझे बता कर जाते हैं ।

स्त्री स्वर: लेकिन इस बार नहीं बताया ।

रैना : (आकाश से ही) क्यों ?

स्त्री स्वर: क्योंकि इस बार उन्हें फेयर इन्वेस्टिगेशन चाहिए ।

रैना : वे सब सुन रहे हैं ।

स्त्री स्वर : नहीं वे आज दोपहर की फ्लाइट से मुंबई गये । कल चीफ मिनिस्टर से उन्हें मिलना है । यह तुम्हें मालूम है ।

आकाश : (स्वर की ओर आश्चर्य से) यह इन्हें मालूम है ! आप यहाँ क्यों नहीं आ रहीं है ?

रैना : कौन ?

आकाश : आप बोल कहाँ से रही है ?

रैना : कौन कहाँ से बोल रहा है ?

आकाश : क्या आपको बिल्कुल सुनाई नहीं देता ? सुनिए शर्वरी क्या कह रही है ? लेकिन आप वहाँ क्यों हैं, मेरा मतलब आप कहाँ हैं ? (रैना घूमकर अपनी बायीं ओर देखता है)

रैना : वहाँ कौन है ?

शर्वरी : शर्वरी !

रैना : शर्वरी ? तुम कहाँ से बोल रही हो ?

शर्वरी : तुम्हारे सत्रह कमरों की इस इमारत के एक कमरे से। यहाँ से तुम देखे भी जा रहे हो और सुने भी ।

रैना : लेकिन मैं क्यों नहीं देख पा रहा हूँ तुम्हें ?

शर्वरी : आकाश, आप मुझे देख पा रहे हैं ?

आकाश : हां, बिल्कुल साफ ।

रैना : (आकाश से) मुझे भी बिल्कुल साफ दिख रहा है कि यह तुम्हारी कोई चाल है । यह लड़की की आवाज कहाँ से

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आ रही है ? जरूरत तुम दोनों ने मिलकर कोई चाल चली है । यह किसकी आवाज है ?

शर्वरी : दूरदर्शन के न्यूज सेक्शन के ब्यूरोचीफ अमिताभ रैना, रात साढ़े बारह बजे इको चेम्बर में पूछ रहे हैं कि यह किसकी आवाज है । (इस संवाद को आकाश रिपीट करता है)

रैना : (जाकर, देखकर, लौटकर, किसी को न पाकर, आकाश से) यह कौन है ?

आकाश : शर्वरी ।

रैना : नहीं ! वो नहीं हो सकती !

आकाश : क्यों नहीं हो सकती ? ओ हाँ उसने तो resign कर दिया है । वो भला यहाँ ....

रैना : नहीं ! उसने resign नहीं .....

आकाश : बात क्या है ?

रैना : कुछ नही ।

आकाश : मैं सुन सकता हूँ । बात क्या है ? आप कुछ छिपा रहे हैं ।

रैना : नहीं । क्या वो सचमुच शर्वरी थी ! वो यहाँ.....नहीं तुम मुझसे खेल रहे हो । बताओ मैंने किसे सुना....अभी–अभी मैंने किसे सुना ?

आकाश : किसी को नहीं ।

रैना : कोई है.....कोई था.....वहाँ ।

आकाश : कहाँ ?

रैना : वहाँ ।

आकाश : आपको कोई दिखा ?

रैना : न्न !

आकाश : तो फिर कोई नहीं था ।

रैना : फिर वो आवाज ?

आकाश : कोई शक था आपके भीतर, जो सुनाई दिया ।

रैना : ( ) तुमने सुना ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आकाश : हाँ, मुझे तो वो दिखी भी ।

रैना : फिर ! फिर वो क्या थी जो दिखी—शक या शर्वरी !

आकाश : शर्वरी ।

रैना : फिर ? फिर वो मुझे क्यों नहीं दिखी ?

आकाश : आप जिसे सुनते हैं उसे देखना भी चाहते हैं । इसलिए वो दिखाई नहीं देता । आप सुने हुए का प्रमाण चाहते हैं ।

रेना : और तुम ?

आकाश : जो सुन सकता है उसके लिए सुनना ही देखना है । लेकिन पहले सुनाई तो दे !

रैना : क्या ?

शर्वरी : (पार्श्व स्वर) कि मैं मुम्बई नहीं गयी !

रैना : हाँ ? कौन ! सुना....फिर वो आवाज !

शर्वरी : (हँसी) इस बार परेशान होने की बारी अमिताभ रैना की है । आकाश !

आकाश : अं ! जी ?

शर्वरी : आप ठीक कहते हैं । इन्हें न दिखाई देता है न सुनाई । क्या आपको ये जानकर आश्चर्य होगा आकाश कि Population Minister की हत्या की साजिश इन्होंने रची थी, ब्यूरो चीफ अमिताभ रैना ने ?

आकाश : !!!

शर्वरी : क्या आपको आश्चर्य है ?

आकाश : हाँ ।

शर्वरी : लेकिन मुझे नहीं है । क्योंकि साजिश, चरित्र हत्या, लेखकीय हत्या और आखीर में सचमुच हत्या, अमिताभ रैना की धमनियों में रक्त का खूबसूरत बहाना बनकर दौड़ता है ।

(रैना परेशान हो जाता है)

रैना : साजिश......ये मेरे खिलाफ साजिश है.....आकाश....

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शर्वरी : (हँसी) साजिश की भाषा में लगातार सोचने वाले दिमाग को पूरी दुनिया एक साजिश दिखती है । आकाश तुम Investigation शुरू करो । मैं साक्ष्य उपलब्ध कराऊँगी ।

रैना : झूठ !

शर्वरी : लेकिन हाँ, तुम रैना की report बनाओ या नागार्जुन की script, ये accept नहीं होगी । रैना इसे डी.जी. तक पहुँचने ही नहीं देगा या script के बारे में गलत जानकारियों से कन्विंस करेगा ।

रैना : (आकाश से) तुम पागल हो गये हो क्या जो इसकी बातें इतने ध्यान से सुन रहे हो ?

आकाश : किसकी ?

रैना : शर्वरी की ।

आकाश : वो तो यहाँ है नहीं !

रैना : (अचकचा जाता है) हाँ, वो तो यहाँ है नहीं, वो तो वहाँ गयी है.....वहाँ.....

आकाश : कहाँ ?

शर्वरी : मुंबई ।

रैना : हाँ, मुंबई ।

आकाश : वो क्या करने मुंबई चली गई ?

शर्वरी : शर्वरी आकाश पर आरोप लगाकर, resign कर मुंबई चली गयी ! (हँसी) पता है आकाश, तुम किसी Crime के बारे में कोई खोजी story लिखोगे तो ये प्रसारित भी करेगा और तुम्हीं से जानकर उस criminal को तुम्हारे बारे में बता भी देगा कि खबर तुमने बनायी है । बदले में उससे लाखों वसूलेगा । नोएडा में एक साल में दो मकान अमिताभ रैना ने इसी तरीके से बनाए.....

रैना : सरासर झूठ ।

शर्वरी : और जिस Population Minister की हत्या की इसने साजिश रची थी जिसमें विजयलक्ष्मी समेत सैकड़ों लोग

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मारे गये उसी Minister ने इसे ये नौकरी दिलाई थी, जो आज ये कर रहा है। Transfer रूकवाया कि ये अपने परिवार के साथ रह सके । दूसरो का परिवार उजड़े अपना सलामत रहे ।

आकाश : आगे क्या Planning है रैना साहब ?

रैना : तो तुम भी इसकी बातों में आ गये ?

आकाश : मैं तो आपकी बातों में भी नहीं आया । मैं सिर्फ सुन रहा हूँ । बल्कि देख रहा हूँ । देखा जाये तो कोई और भी देख रहा है (ऊपर देखकर)

रैना : (जल्दी से उसका सिर नीचे कर देता है) नहीं, वहाँ कोई नहीं है ।

आकाश : अरे, वहाँ कोई नहीं है (ऊपर), वहाँ कोई नहीं है (बायें) तो फिर कहाँ कौन है ? आप यहाँ हैं, कि आप भी यहां नहीं है ? आप कहाँ है ?

रैना : देखो आकाश Relax यह Echo Chamber है । यहाँ जब अपने ही निदेशालय परिवार को लेकर क़ोई case बनता है तो बाहर जाने से पहले हम उसे पहले यहाँ लाकर इन्ट्रोगेट करते हैं । तुम पर इसने आरोप लगाया और.....

शर्वरी : और आरोप लगा कर मुंबई चली गयी । क्या करने ? बताओ रैना क्या करने ? ताकि डी.जी. और शर्वरी मुम्बई से लौटे तो आकर, देखें दोनों को लेकर इसने, नया scandal खड़ा कर दिया है । इस तरह कब तक नौकरी बचाते फिरोगे रैना ? न News sense, न फीचर sense, न कैमरा sense, न आवाज.....

आकाश : न आँख, न कान.....

रैना : इन्ट्रोगेशन पूरा हुआ । अब तुम जा सकते हो आकाश ।

आकाश : नहीं, अब तो मैं इस mystry को सुलझा कर ही जाऊँगा । एक तो सुलझ गई ।

रैना : क्या सुलझ गई ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आकाश : Population Minister की हत्या की mystry

रैना : सुलझ गई ? Population Minister की हत्या की mystry सुलझ गई ? तुम खुद को बहुत smart समझते हो ? तुम आज ही दिल्ली आकर मुख्यालय join कर खुद को तीसमारखां समझने लगे, और ये.... ये कल की लड़की मुझे नीचा दिखायेगी.....अमिताभ रैना को नीचा दिखायेगी ?

आकाश : शर्वरी आपको नीचा क्यों दिखायेगी ? उन्होंने तो मुझ पर आरोप लगाया है !

शर्वरी : इससे पहले इनसे ये पूछो कि इन्होंने मुझे और डी.जी. साहब को मुम्बई क्यों भेजा ? एकाएक ये प्रोग्राम क्यों बना ?

आकाश : इन्होंने भेजा ?

शर्वरी : हाँ ।

रैना : (हड़बड़ाकर) नहीं ।

आकाश : रूकिए । सुनने से पहले खामोश रहेंगे तो गलत नहीं सुनेंगे । आपने इन्हें मुम्बई क्यों भेजा ? (एकाएक शर्वरी से) लेकिन वहाँ तो C.M. से मीटिंग है ! C.M. की कोई सेरेमनी होनी है ?

शर्वरी : नहीं, C.M. की हत्या होनी है !

रैना : नहीं ।

आकाश : क्या ?

शर्वरी : कल मुम्बई के षणमुखानंद हॉल में C.M. की हत्या होने की साजिश रची है अमिताभ रैना ने ।

रैना : (अचानक हँसी शुरू हो जाती है) लेकिन तुम तो यहाँ हो....!

आकाश : वो क्या करेगी वहाँ हाँ ? आप क्या करेंगी वहाँ ?

शर्वरी : इसी से पूछो । वाह क्या Plan है ! C.M. दीप जलाने आयेंगे, पास में डी.जी. साथ खड़े होंगे । थाली लेकर दीप के पास पहुँचेगी शर्वरी। C.M. थाली से जलती मोमबत्ती

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उठाकर दीप जलायेंगे और एक भयानक विस्फोट में हॉल के परखचे उड़ जायेंगे । अगले दिन अखबारों में छपेगा, राजीव गांधी के बाद देश में एक और हत्या मानव बम से ! डी.जी. साफ । शर्वरी साफ । अमिताभ रैना केन्द्र के नये डायरेक्टर जेनरल !

रैना : (इस बीच रैना हथेलियों से पूरा चेहरा ढंक चुका है । अन्तिम वाक्य तक सिर्फ आँखें रोशनी में जल रही) (हँसी) देख रहे हो–देख रहे हो– बैठी है यहाँ और वहाँ कल मुम्बई में परखचे उड़ेंगे । शीयर नॉनसेंस ।

शर्वरी : तुम्हें क्या लग रहा है, मैं दिल्ली से बोल रही हूँ ? (रैना का चेहरा फक्क पड़ जाता है) अक्ल की रोशनी जब चली जाती है तो नहीं दिखता की मुम्बई में भी अपना ही दूरदर्शन केन्द्र है, जो यहाँ के Echo Chamber से On line हो सकता है ।

बदहवास रैना : तुम इसकी बातों पर यकीन मत करना । ये झूठ बोल रही है । (एकाएक शर्वरी से गुस्से में ऊँची आवाज में) अरे तुममें इतनी ताकत है तो कल के event को रोक कर दिखाओ । अरे तुम्हारी औकात को सिर्फ मैं ही काबू में रख सकता हूँ । ये अंधा डी.जी. नहीं ! क्या समझती हो तुम अपने आप को, कि जो बोलोगी वो सब–का–सब आकाश मानता चला जायेगा ? (आकाश से एकदम टूटकर) अरे समझाओ इसे आकाश ! इसने वहाँ जुबान खोल दिया तो मैं बेमौत मारा जाऊँगा । (बिखर जाता है) आकाश मुझसे भारी गलती हो गयी है । मैने ही ये साजिश रची है । मैने ही वो साजिश रची थी । क्या करता ! बिल्कुल मजबूर हो गया था । इस साली ने मेरा transfer अगरतला करवा दिया है, बूढ़े माँ–बाप हैं, मर जाऊँगा । C.M. बचे न बचे, तुम मुझे बचा लो । मुझे माफ कर दो (फूट–फूट कर रो पड़ता है)

आकाश : (गंभीर होकर) आप जाइए यहाँ से ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रैना : मुझे माफ कर दो (रूदन)

आकाश : (कड़े स्वर में) कहा न आपसे कि आप यहाँ से जाइए, get out .

रैना : पहले तुम मुझसे कहो कि तुमने मुझे माफ......

आकाश : आप जाते हैं या.....

रैना : (लगभग चला गया है) जा रहा हूँ, मुझे माफ कर देना लेकिन इस बिच का यकीन मत करना ।

आकाश : Get lost.
(रैना जाते जाते आकाश को कुछ पकड़ा जाता है । चिट्ठी गिर जाती है । उठाकर पढ़ता है)
( )

आकाश : ये....ये तो सचमुच आपने मुझ पर आरोप लगाया है ? (कोई जबाब न पाकर) आप....कहाँ गयीं....सुन रही हैं ?..... अरे अब तो मुझे भी नहीं दिख रहा है । ( ) आप कहाँ हैं ? चली गई क्या ?

शर्वरी : (पार्श्व) क्या आपके लिए इतना काफी नहीं जो आपके सामने हुआ ?

आकाश : जो सामने होता है क्या वही काफी होता है ?

शर्वरी : नहीं होता ?

आकाश : नहीं ।

शर्वरी : आप हमेशा चीजों के पीछे क्यों जाना चाहते हैं ?

आकाश : क्योंकि सच वही होता है ।

शर्वरी : यानी मैं सच हूँ, दुनिया तो माया कहती है ?

आकाश : आप मुम्बई से बोल रही हैं ?

शर्वरी : नहीं, यहीं से । बिल्कुल पास से । बिल्कुल पास की आवाज ही बिल्कुल दूर से आती लगती है ।

आकाश : ये मुम्बई की माया क्या है ?

शर्वरी : कुछ नहीं । आदमी का भय, उसका complex उसके लिए दुनिया को धोखे जैसी कोई चीज बना देता है ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आकाश : नहीं, यदि आप यहीं हैं तो फिर आप वहाँ कल मानव बम बनकर कैसे जाने वाली हैं ?

शर्वरी : जरूरी है कि मैं जाऊँ ?

आकाश : डीजी. साहब किसी और को तो allow करेंगे नहीं । आप नहीं जायेंगी तो आपकी शक्ल में वहाँ कौन होगी ?

शर्वरी : मेरी क्लोन !

आकाश : क्लोन !! आपने अपनी क्लोनिंग करायी है ?

शर्वरी : नहीं करा सकती ? कोई शक है ?

आकाश : नहीं, ये तो अब यहाँ भी possible है । लेकिन ये क्यों ?

शर्वरी : आप भी चाहते हैं कि मैं मर जाऊँ, अमिताभ रैना की तरह ?

आकाश : नहीं, मुझे समझ में नहीं आ रहा है कि ये सब क्या है ?

शर्वरी : ये आधी दुनिया की पूरी कविता है । नयी सदी की पुरानी कविता ! (भावनात्मक द्वन्द्व–कंठ से) मैंने तुम पर आरोप लगाया, ये सच है । कल C.M. की हत्या होनी है ये भी सच है ।

आकाश : क्या सचमुच आप इसे रोकेंगी नहीं ?

शर्वरी : नहीं । तिनके–तिनके ऐसे सच इकट्ठा कर ही मैं अपने लिए सुख का घरौंदा बनाने में लगी हूँ । दूसरे सच मुझें रास नहीं आते । ये तकलीफ देते हैं । (फंसी आवाज, दुःखी)

आकाश : अपने सुख के लिए आप दूसरे की हत्या .... क्या फर्क रह गया आपमें और रैना में ?

शर्वरी : देखो तो फर्क है, देखो तो नहीं । लेकिन देखता कोई नहीं । सुनता कोई नही । सब अपनी मौत से शतरंज खेल रहे हैं ।

आकाश : आप रोकिए । C.M. वाली घटना आप रोकिए ।

शर्वरी : बिल्कुल नहीं । कल की घटना के बाद यदि मैं नौकरी में रही तो रैना को Black mail करूँगी । नहीं रही तो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तुम्हें ! (आकाश गूँगा हो जाता है) मैं जा रही हूँ । (आकाश अकेला बचता है । गूँगा और स्तब्ध)

आकाश : (स्वगत) क्या है ! क्या है ये सब ! ये सब क्या है जो मैं देख रहा हूँ ! कि मैं कुछ नहीं देख पा रहा हूँ, कि मैं नहीं देख सकता । ठीक....मगर (ऊपर) (अब वो बोलता है) तुम तो देख सकते हो ? कि तुम्हें भी नहीं दिखता ? कुछ नहीं दिखता न ? (इतने वाक्य उसी के स्वर में भीतर से आ जाते हैं, ध्रुपद का अंतरा) ये सब कुछ दिखता नहीं या कि देखना नहीं चाहते ? महान हाथों से बनाये इंसान की छोटी–छोटी हरकतें तुम देखना नहीं चाहते ? सोचे ही नहीं थे कि इंसान इतना आगे निकल जायेगा ? नहीं, रैना ठीक कहता है । ऊपर कोई नहीं है । धोखा है सब ! कोई नहीं है ऊपर। नहीं... ऊपर कोई है जिसे दिखायी सुनाई नहीं देता । फिर क्या फर्क है तुममें और रैना में ? क्या ? क्या   बोले ? (पूरे मंच पर ढूँढता है) क्या कहा अभी   अभी ? ए ! खामोशी में मत बोलो । मुझे सुनाई नहीं देता । (आर्तकण्ठ में) ये मैं कहाँ हूँ भगवान ? ये कैसा Echo Chamber है । Echo Chamber है या Ego Chamber ?

आवाज : ये ash Chamber है ! (आकाश का स्वर अटक जाता है) तुम एक विशाल Chamber में ही हो लेकिन Echo Chamber में नहीं ऐश Chamber में । राख का घर समझते हो न, यह वो जगह है जहाँ एक ओर से शव को गुजारा जाता है । दूसरी ओर से शव की शक्ल में शव की राख निकलती है । तुम इसी Chamber के दूसरी ओर हो । (पीले और लाल के संयुक्त प्रकाश में मानों आकाश की हथेलियों में खूब सारा राख भर गया है । आरम्भिक ध्वनि के साथ ही मंच पर काला अंधकार फैल जाता है । शुरू में जो ध्रुपद आलाप लगता है वो आभोग के साथ गूंजता रहता है घुप्प अंधेरे में ।)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आवर्तन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कथा की सतह पर यह एक रहस्यमय अपराध कथा है किन्तु अपनी रचनाकेन्द्रीयता में कन्या भ्रूण हत्या का मनोवैज्ञानिक करूण पक्ष कथा की तहों में आलोड़ित होता है। तीन दृश्य अपने आप में ही विकसित होकर विन्यस्त होते हैं । ये आपस में सतह पर नहीं जुड़ते ।
इसका प्रथम मंचन वाराणसी में 2002 में और दूसरा मंचन शिलाँग में 2005 में हुआ था ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दृश्य–एक

(शून्य में एक संवाद 'वाह कविता वाह' के तुरन्त बाद कुमार गन्धर्व द्वारा गाये कबीर के पद 'सुनता है गुरू ग्यानी' के साथ कथक नृत्यांगना बहनों मं से एक मीता का नृत्य तीन अन्तरों के बाद ही दो सेकेण्ड की बिल्कुल खामोशी और लगभग अन्धेरे में चार–पांच माह की किसी बच्ची की सीख, बर्तन का गिरना, शीशे का टूटना, टेलीफोन की घण्टी और बाहर दरवाजे पर कोई दस्तक, डॉ0 कविता रिसीवर उठाकर कुछ सुनती हैं, फिर आकर, मंच पर आकर, पता करती हैं कि क्या सचमुच कोई दस्तक हुई थी। किसी को दरवाजे पर न पाकर, भ्रम समझकर वे बैठ जाती हैं, कि कोई नहीं, कि एकाएक दरवाजे पर नचिकेता। भयहीन कविता सन्देहरिक्त प्रश्नभाव से अजनबी को इस तरह देखती है कि अच्छे–अच्छे हाल छोड़ दे) (कुहरे में दार्जीलिंग। रात।)

नचिकेता : मुझे आप ही से मिना है...आप डॉ0 कविता देशपाण्डे आप से ही बात करनी थी...एक जरूरी सूचना थी....सूचना देनी थी....आपको ....आप.....
(बैठने का संकेत देती है वह नहीं बैठता)`

कविता : कहिए ?

नचिकेता: क्या आपको कोई सूचना मिली है ?

कविता : कैसी सूचना ?

नचिकेता : नहीं, अभी थोड़ी देर पहले आपको कोई सूचना मिली है ?

कविता : किस सम्बन्ध में ?

नचिकेता : आपके पति, मिस्टर देशपाण्डे के सम्बन्ध में ?

कविता : मेरे पति देशपाण्डे नहीं, देशमुख हैं, जो अब मेरे पति नहीं है। आप किसके पति, किस देशपाण्डे के बारे में क्या सूचना देना चाहते हैं ?

नचिकेता: नहीं। मिस्टर पी0एल0 देशपाण्डे के बारे में, कि वे आपके पति थे, कि आज सुबह उनकी हत्या हो गयी है, जिसकी सूचना थोड़ी देर पहले आपको मिली होगी....

कविता : आपको कैसे मालूम ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नचिकेता : ( ) क्या आप मुझे पहचान सकती हैं ....मैं देशपाण्डे का दोस्त....
(वह बैठता है वह उठ जाती है)
देशपाण्डे ने कई बार आपका जिक्र......

कविता : मैं किसी देशपाण्डे को नहीं जानती । आपको और कुछ कहना है ?

नचिकेताः (उठता है, पास जाकर) आपको कुछ नहीं कहना ? ( ) आपके पति की आज हत्या हो गयी और आपके चेहरे पर कोई भाव नहीं !

कविता : आप इतनी दिचस्पी क्यों ले रहे हैं ?

(फेड आउट

दो

(फेड आउट स्थिति में ही मंच पर बीचोबीच धीमे स्वर में कविता और मीता की बातचीत । वंशी । तबला)

मीता : कुछ बातें जिज्जी तुम्हें अपने मन से हटानी होगी । मैं तुम्हें तुम्हारे इस दुःख में कोई सान्त्वना देना नहीं चाहती क्योंकि दुःख की ज्वाला सान्त्वनाओं से नहीं बुझती ।

कविता : मैं जॉर्ज को लेकर नहीं सोच रही ।

मीता : टुनटुनी तुम्हारे साथ है । तुम जॉर्ज का साथ नहीं चाहती थी ।

कविता : किन्तु ये सब क्यूं ही हो रहा है ?

मीता : गुरूजी होते तो कहते माया । सिर्फ देखो ।

कविता : टुनटुनी ने क्या किया था । उसका क्या दोष था ?

मीता : देखो ।

(फेड इन

तीन

(सर और आवाक् बैठे हैं । Toilet से देखमुख के निकलते ही सर का संवाद । अवाक् आश्चर्य । उसी रात उसी दार्जीलिंग में एक होटल के कमरे में ये तीनों । फेड इन)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सर : नहीं नहीं ऐसे नहीं चलगा । ऐसे कैसे चलेगा । सोचो देखमुख सोचो ।

देशमुख : सर सोच ही तो रहा हूँ ।

सर : क्या सोच रहे हो ? बार–बार Toilet जा रहे हो । दो घण्टे हो गये हम लोगों को यहाँ आये हुए, और अब तक तुम तीन बार वहाँ जा चुके हो, देशमुख....

देशमुख : सर तीन नहीं दो बार । मैं दो बार और आप तीन बार (इससे पहले कि सर बोलें) क्योंकि आप Anxiety Nevrosis के पेशेन्ट हैं ।

सर : हाँ । नहीं नहीं । सब्जेक्ट ये नहीं है । हमें Toilet नहीं कल सुबह डॉ0 कविता के घर जाना है और उन्हें बताना है कि मिस्टर देशपाण्डे का कर्शियांग में मर्डर हो गया है ।

देशमुख : सर इसीलिए तो हम तब से Toilet जा रहे हैं ।

सर : What ?

देशमुख : मेरा मतलब इसीलिए तो हमें बार–बार Toilet जाना पड़ रहा है । जितना सोच रहे हैं उतना जा रहे हैं । या शायद जा रहे हैं तभी सोच पा रहे हैं ।

(अवाक् ने अपनी डायरी खोली, कुछ लिखा । दोनों ने देखा । गूंगा बहरा अवाक् तरह–तरह से देख रहा है)

सर : कैसे बताओगे ?

देशमुख : क्या ?

सर : कि मर्डर.....

देशमुख : सर हम वहाँ जायेंगे, उनसे मिलेंगे और उन्हें यह सूचना दे देंगे कि उनके पति का मर्डर हो गया है....

सर : .....साथ में एक किलो मिठाई का डिब्बा भी ले जायेंगे । पहले डिब्बा देंगे फिर यह सूचना !

देशमुख : सॉरी सर ।

सर : देशमुख यह कोई चुनावी घोषणा नहीं कि जब चाहा कर दिया ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देशमुख : जी सर । हमें यह सूचना.......

सर : नहीं नहीं । we have to handle it sensitively. ओह !

(वे बाथरूम की ओर मुड़ते हैं । फेड आउट)

चार

नचिकेता: आपको कुछ नहीं कहना ? आपके पति की आज हत्या हो गयी और आपक चेहरे पर कोई शिकन नहीं !

कविता : आपको इतनी दिलचस्पी क्यों है ?

नचिकेता: Wait wait wait. First I think I have to clear myself.

कविता : But I don't want

नचिकेता : You need because.......अच्छा एक बात बताइए, आप कैसी स्त्री हैं ? बिल्कुल संवेदनरिक्त या.....? मुझे लगता है आप इस संसार की सबसे संवेदनशील स्त्री है । वैसे आप निश्चिन्त रहिए । ये बात मुझे देशपाण्डे ने नहीं बतायी थी । इसे मैंने अभी–अभी किया । बिल्कुल अभी–अभी । आप बैठ जाइए (नहीं बैठतीं) चलिए मैं ही बैठ जाता हूँ । वेसे मुझे मालूम है कि आप नहीं लायेंगी फिर भी मांगता हूँ.......एक गिलास पानी मिलेगा ? (उठता है) कोई बात नहीं ।

कविता : आप चाहते क्या हैं ?

नचिकेता : देशपाण्डे की डायरी । मैं clear करता हूँ । आज सुबह देशपाण्डे की हत्या हुई । हत्या आपने नहीं की । Right ? किन्तु । किन्तु उनकी इस हत्या के अप्रकट कारणों में से एक कारण आप हैं (बैठती हैं) और मुझे आप नहीं, देशपाण्डे की डायरी चाहिए, जो फिलहाल आपके पास है । इसलिए मैं आपके पास हूँ । अब तय आपको करना है । क्या आप नहीं चाहेंगी कि मैं आपके पास

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अधिक देर न रहूँ ? (नचिकेता यह प्रश्न लिये कविता की कुर्सी के इर्दगिर्द टहलने लगता है, ज्योंहि वह उसके आगे घुटनों के बल बैठकर पूछता है)

कविता : (दूर चली जाती है) मैं आपको स्पष्ट कर चुकी हूँ । देशपाण्डे नाम के किसी व्यक्ति को मैं नहीं जानती । मेरे पति का नाम जॉर्ज देशमुख था । था इसलिए कि दो साल पहले हमने divorce ले लिया था । इस तरह वे अब मेरे पति नहीं रहे । आप फिलहाल किसी देशपाण्डे का जिक्र कर रहे हैं ।

नचिकेता : ( ) क्या आप मेरे लिए इतना कर सकती हैं कि आप बैठ जायें ? Please !

कविता : (बैठकर) बोलिए !

नचिकेता : (फिर टहलते हुए और अचानक सामने बैठकर आँखों में आँखें डालकर) तो आप चाहती हैं कि मैं आपके पास ही रहूँ । ओ.के. तो मैं अपना सामान्य परिचय रखता हूँ । मेरा नाम अजनबी । आपके लिए तो मैं अजनबी ही हूँ । वैसे आप चाहेंगी तो मैं अजनबी नहीं रहूँगा । Right ?

कविता : (जोर से पुकारती है) विदिशा ....

नचिकेता : (रोकता है) श्श्श्श......

(फेड आउट

पाँच

कविता : मैं सोच ही नहीं पा रही हूँ ।

मीता : सचमुच । कैसे हो गया यह सब !

कविता : मैं अभी तक सोच नहीं पा रही कि टुनटुनी नहीं है ।

मीता : तुमने दो साल उसके साथ बिताया था । दिन– रात । कैसे सोच सकती हो । किन्तु यह सच है । तुम्हें, नहीं हमें, अब इस सच के साथ रहना होगा । जब कोई नहीं होता तो शायद ज्यादा रहने लगता है ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कविता : किन्तु जाते–जाते हमारा बहुत कुछ अपने साथ ले जाता हैं । कहाँ गयी टुनटुनी ? कहाँ चली गयी ? नहीं, कुछ करना होगा ।

मीता : नहीं जिज्जी । हमें अब ऐसे ही रहना है ।

कविता : शून्य के साथ ? चीख भरे शून्य के साथ ?

मीता : गुरूजी से पूछो !

(फेड इन

छह

(देशमुख बैठा है, सर और अवाक् का प्रवेश)

सर : क्या साचे ?

देशमुख : सर मुझे लगता है आप यहीं रहें । मैं कल सुबह जाकर बता आता हूँ । वैसे भी यहाँ इतनी ठंड है । पूरा दार्जीलिंग कुहासे में लिपटा पड़ा है । आपको साइनस भी है । सिर्फ सूचना ही तो देनी है !

सर : तुम संभाल लोगे ? नहीं–नहीं देशमुख, सुनकर उन्हें शॉक् लग सकता है । तब तुम क्या करोगे ? एक सीनियर आदमी का वहाँ रहना जरूरी है । (अवाक् फिर कुछ लिखता है) ये बीच–बीच में क्या लिखता रहता है ! मैंने तुम्हें मना किया था.....

देशमुख : सर उसी की इच्छा थी । वो बेसिकली यहीं का रहने वाला है । अवाक् साथ में रहेगा तो घर ढूंढने में हमें दिक्कत नहीं होगी....

सर : क्या दिक्कत नहीं आयेगी ! न बोल सकता है न......

देशमुख : देख समझ सकता है । सर अभी डिनर लेकर हम सो जाते हैं । पूरे दार्जीलिंग में यही एक अच्छो होटेल है । रेस्ट ले लेते हैं । सुबह जब निकलेंगे तो कुछ सोच भी लेंगे । हो सकता है हमसे पहले सूचना पहुँच चुकी हो ! (अवाक् कहीं जाता है । देशमुख डायरी पढ़ता है)

सर : कविता है ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

टुनटुनी । और इत्तेफाक देखो । इधर टुनटुनी गयी एक महीना बीता, उधर खबर आयी कि जॉर्ज का मर्डर हो गया है कार्शियांग में । उसके तीन कलीग कल सुबह मुझे ये बात यहाँ आकर बताने वाले हैं । दो साल पहले ही, divorce से पहले ही मेरे लिए उसका कोई existence नहीं रहा था । इसलिए जब खबर आयी तो मैं indifferent थी । मुझे क्या, वो रहे, न रहे । एक टेररिस्ट के साथ और क्या होगा । किन्तु अभी तुमने बात करते हुए लग रहा है ये भी मेरे ही कारण हुआ । ये सारे मर्डर मैंने किये हैं । मैं मर्डरर हूँ ।

मीता : नहीं तुमने कुछ नहीं किया है । गुरूजी की सुनों तो सबकुछ प्रकृति कर रही है । हम कुछ नहीं कर रहे । हमें सिर्फ साक्षी होना है । कबीर की साखी । शब्द नहीं, साक्षी । सबद नहीं साखी । अब हम एक भी शब्द नहीं बोलेंगे । सिर्फ सुनेंगे । जब हम सुनते हैं तो हमारी ओर से वो सुनता है । इसलिए सोचों नहीं तो वो तुम्हारी सुनेगा । बहुत दिनों से तुमने Practice नहीं किया जिज्जी । आओ आज हम दोनों.....

कविता : नहीं । मैं मर्डरर हूँ । मुझे इस शून्य में एक झीनी सी चीख ......

मीता : नहीं । ये चीख नहीं । गगन मण्डल में अभी–अभी हुए कए जन्म की आवाज है झीनी–झीनी। इसे कोई गुरू ज्ञानी ही सुन पाता है । गुरूजी सुनते हैं । आओ आज इसे हम भी सुने । कबीर और कुमार गन्धर्व के संग ।

कविता : नहीं मैं प्रायश्चित करूँगी । सुबह उन तीनों से पहले कोई आ जाये ! बेहतर हो मृत्यु !

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दस

(फेड इन

(अवाक् के प्रवेश करत ही)

सर : ये क्या बोल रहा है ?

देशमुख : सर हमने इसकी डायरी देख ली न इसीलिए नाराज हो रहा है ।

सर : नन्न, इससे पूछो ये डायरी में जब तब क्या लिखता रहता है !

देशमुख : सर ये कह रहा है आप खुद ही देख लें !

सर : (पढ़ता है) होटेल सी व्यू ! अच्छा, ओ ये तो इसी होटेल का नाम है । ( ) अच्छा सी व्यू ! देशमुख, यहाँ तो पहाड़ ही पहाड़ है फिर होटेल के मालिक ने इसका नाम सी क्यों रखा ? यहाँ कोई समुद्र तो है नहीं !

देशमुख : सर मालिक समुद्र की ओर का रहने वाला होगा

सर : और इस डायरी में समुद्र कैसे आ गया, मेरीन ड्राइव पर सारी रात ? ये क्या कर रहा है ?

देशमुख : सर कह रहा है देशपाण्डे मेरीन लाइन्स का रहने वाला था ।

सर : तुम्हें पता है (अवाक् से) देशपाण्डे की हत्या हो गयी ?

देशमुख : (अवाक् के इशारे की ओर से) सर तभी तो हम यहाँ आये हैं !

सर : तुम देशपाण्डे को जानते हो ?

देशमुख : हत्या के बारे में भी !

सर : नहीं नहीं । क्या ? हत्या....हत्या तुमने की है रिवॉल्वर से ? देशमुख ये क्या कह रहा है....इसका नाम अवाक् किसने रख दिया.....अब तुम्हें क्या हो गया ?

देशमुख : सर सुबह अब हमें कविता देशपाण्डे के घर नहीं, पुलिस स्टेशन चलना होगा.....क्योंकि देशपाण्डे का हत्यारा यहीं है !

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सर : (अवाक् की ओर) क्या.....नहीं नहीं.....(वो डायरी बढ़ा देता है) माया.....स्त्री......शब्द......ईश्वर.....इच्छा......देशमुख.....उलटी फांस फंसानी !
(देशमुख तमतमा कर देखता है)

(फेड आउट

ग्यारह

(देशमुख और अवाक् बैठे है)

सर : देशमुख ये सब क्या है ? देखमुख !
देशमुख : सर हमें कर्शियांग वापस लौट जाना चाहिए । आज ही ।
सर : क्यों ? डॉ0 कविता से नहीं मिलना है ! उन्हें inform तो कर दें ।
देशमुख : यह भी कि हत्या का मुजरिम हमारे साथ है ?
सर : What ? तुम ....
देशमुख : सर अवाक् ने अभी–अभी accept किया तो अपनी डायरी में । (अवाक् प्रतिवाद करता है)
सर : क्या accept किया ! उसकी भाषा तुम समझ लेते हो ? मुझे तो कुछ पल्ले नहीं पड़ रहा । पढ़ो क्या मतलब है इसका —
'माया अद्भुत है आश्चर्य है कविता है'। कविता ?
देशमुख : डॉ0 कविता का वास्तविक नाम–माया
सर : 'बाप पूत की एकै नारी ओ एकै माय बिआय, ऐसा पूत सपूत न देख्यो जो बापै चीन्है धाय' —'बाप बेटे की पत्नी एक ही है, एक ही माँ के सभी बेटे हैं । पिता को पहचानने वाले पुत्र रिले ही होते हैं'....
पिता ....
देशमुख : देशपाण्डे !
सर : माया
देशमुख : कविता !

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सर : पुत्र

देशमुख : अवाक !

सर : बाप–बेटे की पत्नी एक ही है ! माया ! 'माता और माया दोनों एक हैं । माया पत्नी भी है और माता भी' । (अवाक् से) कविता जी तुम्हारी माता हैं ? तुम उनके पति हो ? (अवाक् देशमुख की ओर इशारा) देशमुख उनका पति हैं ? मैं पागल

: हो जाऊँगा ।

देशमुख : सर चलें !

सर : कहाँ ?

देशमुख : वापस कर्शियांग !

सर : हाँ, नहीं नहीं ! इन सबका मतलब अब मुझे समझना पड़ेगा । आता हूँ ।

देशमुख : समझ चुके ! (देशमुख आवाक् उलझ पड़ते हैं) (सर टॉयलेट से लौटते हैं)

सर : देशमुख, अब सब कुछ साफ–साफ बता दो

देशमुख : क्या !

सर : (काटकर) इतना तो अब clear हो गया कि तुम दोनों हत्या के इस मामले से कहीं न कहीं, नहीं गहरे जुड़े हो । तुम मुझे confuse नहीं कर सकते । तुम चाह रहे हो कि अवाक् संदिग्ध हो जाय, क्योंकि वो बोल नहीं पाता और उसकी उलटी बानी मेरे पल्ले नहीं पड़ती । अब साफ–साफ यह बताओ कि तुम डॉ0 कविता देशपाण्डे को कैसे जानते हो और देशपाण्डे की हत्या से तुम्हारा क्या रिश्ता है ?

देशमुख : सर आप मुझ पर सन्देह कर रहे हैं ? मैं आपका....

सर : नहीं नहीं !

देशमुख : सर हत्या के सारे संकेत अवाक् की डायरी में हैं, खुद उसी ने लिखा है, उसने तो accept भी कर लिया !

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देशमुख : कविता !!

सर : (डायरी लेकर पढ़ता है) मेरीन ड्राइव पर सारी रात । समुद्र पर होती रही बारिश । नरीमन प्वॉएन्ट पर रंजन नहीं । कोई नहीं । गगन में आवाज झीनी झीनी । शून्य में मैं और बादल सरकार की सारी रात ।

......कर्शियांग में हत्या.....दार्जीलिंग में कविता, मुम्बई में रंजन

देशमुख : और कोलकाता में बादल सरकार

सर : यानी ये सब इस हत्या में ?

देशमुख : (क्या ?) नहीं नहीं

सर : हाँ । हाँ ?

(अवाक् आकर डायरी झपटता है । देशमुख को घूरता है मानो सर को कुछ बताना चाह रहा हो)

(फेड आउट

सात

नचिकेता : वैसे आप चाहें तो मैं अजनबी न रहूँ !

कविता : विदिशा....

नचिकेता : श्श्श....ऽ., एक गिलास पानी लाऊँ ?

कविता : Who the hell you are and how dare--

नचिकेता : No No No ! you are going wrong. I am simply an outsider to you and simply demanding nothing but the diary.

कविता : आप समझते क्यों नहीं ?

नचिकेता : मैं समझना नहीं चाहता

कविता : आपको क्या-क्या चाहिए ?

नचिकेता : आपके पास क्या-क्या है ? ( ) आप क्यों नहीं चाहतीं कि दूसरा आपकी संवेदनाओं को शेयर करे, महसूस करें ? ठीक हैं, आपके तरीके से नहीं किन्तु अपने तरीके से ? क्या दुःख व्यक्तिगत होता है ? इतनी देर से मैं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आपके साथ हूँ । क्या आप महसूस कर सकीं – मेरा दुःख ? नहीं न ! क्योंकि दुःख का वायरस व्यक्तिगत नहीं है । जैसे आपका existence limited नहीं है । आपका existence Universal है । आपका दुःख Universal है । और आपके इस Universe में मैं naturally हूँ । हूँ न ? ( ) मै। नचिकेता । नचिकेता को तो आप जानती हैं । मृत्यु से मिलने गया था । इस बार नचिकेता आपसे मिलने आया है । मृत्यु के बाद । देशपाण्डे की मृत्यु के बाद । ( ) कोई मिस्ट्री तो नहीं है ! कहीं आपने तो.....क्यों, नहीं हो सकता ? आपके ताल्लुकात अच्छे नहीं थे । वो आतंकवादियों के साथ था । आपने पुलिस को खबर.....नहीं सम्मपत्ति आपको नहीं चाहिए । या हो सकता है मर्डर करने के बाद हत्यारा सीधे आपके पास पहुँच गया हो.....नहीं मैं देशपाण्डे का दोस्त, बहुत प्यारा दोस्त था मेरा । बहुत दूर तक जाना चाहता था वो, बहुत दूर चला गया । च्च च्च..... (नचिकेता अपनी रौ में बोलता गया है । कविता डरती हुई क्रमशः उसके पीछे चुपचाप उससे दूर हटती चली जा रही है । कुर्सी पर पीठ टिकाये जमीन पर बैठे–बैठे बिना कविता की ओर देखे)

नो नो । यू आर गोइंग रॉंग । नो । कम बैंक ।

(फेड आउट

आठ

(वही फेड इन

नचिकेता : (रूंधा स्वर) कोई नहीं समझता था उसे । बहुत दूर तक जाना चाहता था वो । बहुत दूर चला गया । च्च च्च । कम बैंक । नो देखो कविता जी तुम्हारे बगैर कैसी होती जा रही हैं । कुमार गन्धर्व नहीं सुनती । नहीं सुनती न ! पहले कितना सुन्दर था । आप दोनों समन्दर किनारे रेत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पर सुना करते थे....सुनता है गुरू ग्यानी....गगन में आवाज हो रही झीनी । हाँ । कविता जी । उस बार मैं भी मुम्बई गया था । दूर से आप लोगों को देख रहा था । सोच रहा था समन्दर की लहरों की तरह मैं भी आपके पाँवों तक जाऊं । लेकिन मैं लौटना नहीं चाहता था । लहरें तो लौट जाती हैं । आप दोनों फिर यहाँ दार्जीलिंग लौट जाये थे ।

कविता : आप कौन है ?

नचिकेता : कोई नहीं जानता । कोई नहीं जानता कि वो कौन है । मैं भी नहीं । आप भी नहीं । आप जानती हैं आप कौन है ? देशपाण्डे कि देशमुख ? मैं बताऊं आप समुद्र हैं लहरें आती हैं चली जाती हैं । ये आपकी माया है । लोग लहरों तक रहते हैं । लहरों को छूते हैं और सोचते हैं सम्रुद्र मिल गया । जो लहर के साथ समुद्र में जाता है वो उलटे दूर रेत पर फेक दिया जाता है । वो देशपाण्डे हो जाता है । आप देखमुख हो जाती है । हमारे पाँव रेत बन जाते हैं और समुद्र सुनता है चुपचाप गगन में आवाज झीनी झीनी । (कविता कुछ उठाकर उसके सिर पर पीछे से प्रहार करने जाती है, वह फुर्ती से रिवॉल्वर तान देता है) आप समुद्र हैं और इसकी जिस तह में आपने वो डायरी छुपा दी है उसे मैं अकेले नहीं ढूंढ सकता । आप मेरी मदद करेगी न ?

कविता : मैं आपकी हाथ जोड़ती हूँ......

नचिकेता : अरे नहीं नहीं । आप क्या कर रही हैं, समुद्र कभी हाथ जोड़ता है ? समुद्र में तो ऑक्टोपस होता है । आठ हाथ । एक हाथ मुम्बई में तो एक हाथ कर्शियांग में, एक हाथ उभरता दार्जीलिंग की पहाड़ियों के पीछे से ....

कविता : देखिये, मेरे पास कोई डायरी नहीं है....

नचिकेता : नहीं । हैं पाँच और हैं । अभी तीन ही हुए । पाँच हाथ और हैं ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कविता : देखिए आप क्या कह रहे हैं मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा है । एक का करत हैं । मैं यहाँ बैठती हूँ । आप पूरे घर में ढूंढ लीजिए । मिल जाय तो...

नचिकेता : नहीं मिलेगा, लहरों में क्या मिलेगा ? कुछ नहीं । और फिर लौटती लहर पाँव के नीचे की रेत भी लेती जाएंगी । नहीं मिलेगा ।

कविता : क्या आप मेरे लिए इतना कर सकते हैं कि आप बैठ जायें । Please.

(फेड आउट

नौ

कविता : मेरे लिए ये शून्य एक चीख है । टुनटुनी की चीख । नहीं । ऐसी कईयों की चीख !

मीता : ये तुम्हारा गिल्ट है जिज्जी जिसका बेस तुमने खुद तैयार किया है । लेकिन तथ्यों से नहीं सिर्फ कल्पनाओं से । ड्रॉप इट ।

कविता : मीता तुम मेरी बहन हो । ये कल्पना है ? लतिका मेरी बहन थी । उसे मैंने ऐबॉर्ट कराया । वो पैंक्रियाटाइटिस से मर गयी । ये सब कल्पना है ? फिर मैंने तुम्हें ऐबॉट कराया । तो मेरी टुनटुनी नहीं रही । ये कल्पना है ? ये सब मेरे किये का हासिल है । मैं नहीं मारती तो.....

मीता : तुमने कहाँ मारा ?

कविता : अरे देखा जाय तो तुम्हं और लतिका को ऐबॉट कराने का सजेशन मैंने ही दिया था ।

मीता : हाँ तो मैं नहीं चांहती थी कि बेटी हो, न ही लतिका । ये हम दोनों की इच्छा थी । हम दोनों दोनों लड़कियों का जन्म नहीं चाहती थीं, हमने दोनों को जन्म लेने नहीं दिया । तुम कैसे कसूरवार हुई ?

कविता : नहीं दोनों जन्म ले चुकी थी । क्या जन्म सिर्फ वही होता है जो बाहर आकर हरकत करें ? नहीं मैंने उनकी हत्या की है । दोनों की । इसलिए पहले लतिका गयी और अब

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बहुरि अकेला

(या शापित सौन्दर्य)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बहुरि अकेला अर्थात सदाशिव अर्थात सब जगह होकर भी कहीं नहीं । नाट्यशास्त्र के अंतिम अध्याय में भरत पुत्रों की कथा है कि कैसे वे अहंकार के जन्म होने के चलते शूद्र कहे गये थे। आज भी संगीत और रंगमंच से जुड़े कलाकार उसी कथा के अनुसार शूद्र हैं जो अहंकार का मैल ढो रहे हैं । वे इस शापित सौन्दर्य को शापमुक्त कर सकें, यह भी कथा में है । इसी कथा के आधार पर इन 2000 वर्षों में पहली बार इस नाट्यालेख का गठन किया गया है ।
इसका प्रथम मंचन वाराणसी में वर्ष 2005 जून में हुआ था । इन सभी नाटकों का प्रथम मंचन रंगसंस्था 'अभिरंग' की ओर से किया गया है ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(कबीर पद : युगन–युगन हम योगी)

नॉटी : कहीं कोई नहीं था । चारों ओर अन्धेरा । अन्धेरा और सन्नाटा । इस घुप्प अन्धेरी रात में न कोई आवाज, न डर, न कोई शक । वो अकेला था, गहरी नींद में था और मौका साफ था । मैंने आराम से चाकू निकाला । उसकी ओर बढ़ा । कि उसने करवट बदली । मैं ठहरा । मैं पूरी तैयारी, इत्मीनान और इरादे के साथ था । हवाएं गर्म थीं लेकिन मैं शान्त । पूरी खामोशी से बढ़ा । बढ़ता गया । बढ़ता गया । पास आकर चेहरे से तसल्ली की और चाकू उसके........

मनीषा : (चीख के रो पड़ती है, मातृकाक्षर छन्द में) हाय ये मैं क्या कर बैठी ! एक हत्यारे से प्रेम कर बैठी ! इतनी कम उम्र में किस्मत मुझसे रूठ बैठी ! इस नॉटी के प्रेम में तड़प कर मरना चाहती थी, बीच सपने में जागकर ये मैं क्या देख बैठी !

नॉटी : चुप !

मनीषा : अरे क्या चुप....

नॉटी : चुप ! बिल्कुल चुप ! मैंने कुछ कहा था ? कुछ कहा था तुमसे ?

मनीषा : अरे क्या कहा था.... हाँ, कहाँ था..... (छन्द बदलकर सामान्य काकु में) मुझे एटीएम से पैसा निकालना सिखा दोगे और तस्वीर खींचने वाली मोबाइल गिफ्ट करोगे...

नॉटी : अरे धत्त !

मनीषा : (छन्द में) लेकिन कहाँ..... ये सब तो दूर, मेरा मन लूट कर दिल नहीं भरा, सचमुच के चाकू से न जाने किसकी हत्या कर डाली....

नॉटी : एनफ, मनीषा, एनफ ! अब.... डोन्ट बिहेव लाइक ए स्टुपिड गर्ल !

मनीषा : अच्छा तो मैं अब स्टुपिड हो गयी ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नॉटी : मैंने तुमसे कहा था, कि जब मैं स्क्रिप्ट की रीडिंग किया करूँ तो तुम वहाँ नहीं रहा करो ?

मनीषा : क्यूँ नहीं रहा करूँ ? मुझे भी मन करता है, कि 'ऐक्ट' किया करूँ !

नॉटी : कि 'ऐक्ट' किया करूँ....अरे जब....

मोन्टू दा : नहीं–नहीं ! नॉटी तुम्हें उसकी वैसी ही कॉपी करनी है, कि 'ऐक्ट' किया करूं.....क्लियर....और मनीषा जी, आपको इधर नहीं देखना है। आपको.....

आशीष : (वह निर्देशक मोन्टू दा के साथ ही मंच पर प्रवेश कर चुका है) और सर, नॉटी ने एक बार की जगह दो बार 'चुप' बोला है....

मोन्टू दा : चुप !

आशीष : सर उसे एक ही बार चुप बोलना है...

मोन्टू दा : (चुप !) वो दस बार बोलेगा । डायरेक्टर मैं हूँ कि तुम ? ट्वेन्टी ईयर्स क़ा एक्सपिरियेन्स है । भारत रत्न नहीं मिला तो क्या हुआ, काशी रत्न तो मिला है.....(भौमिक और इंतजार नजर बचाकर, आकर बैठक जाते हैं) स्टैण्ड आप ! स्टैण्ड अप ! ये वक्त हुआ है रिहर्सल पे आने का ?

दोनों : सर तीन किलोमीटर तक ट्रैफिक जाम....

मोन्टू दा : ट्रैफिक जाम, जनसंख्या मंत्री की कार जा रही थी, उसके पीछे तीन बारात थी, फिर स्कूटर खराब हो गयी थी, सुबह से माँ की तबीयत खराब है, आज सुबह से पानी नहीं आया ! अबे इडियट, कहते क्यों नहीं कि भोजपुरी ऐलबम की शूटिंग से आ रहा हूँ...

दोनों : सॉरी दादा !

आशीष : और सर .....

मोन्टू दा : (चुप!) स्टार्ट !

नॉटी : कहीं कोई नहीं था....चारों ओर अन्धेरा....अन्धेरा और सन्नाटा ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सर : एक बात बताओ ! इस हत्या के सारे संकेत उसकी डायरी में हैं । ठीक ? उन संकेतों के ठीक–ठीक अर्थ तुम्हें कैसे मालूम ? ( ) अभी तुम्ही समझा रहे थे..... डॉ0 कविता का वास्तविक नाम माया, इस होटेल का मालिक समुद्र की ओर का रहने वाला है, देशपाण्डे की हत्या रिवॉल्वर से हुई है....तुम्हें कैसे मालूम ? तुम्हें कैसे मालूम कि उसकी हत्या रिवॉल्वर से हुई है ? उसकी हत्या तो नेपाली खुखरी से......

देशमुख : आपको कैसे मालूम ?

(सर मानो expose हो जाता है, फंस जाता है)

(फेड आउट

बारह

(नचिकेता विस्मय से बैठता है, दृश्य आठ के अन्तिम संवाद को सुनकर)

कविता : Thanks. मैं चाहती थी कि आयें । मैं प्रायश्चित करना चाहती थी ।

नचिकेता : प्रायश्चित !

कविता : हाँ । क्योंकि मैं मर्डरर हूँ । ये मर्डर भी मैंने किया है । मैं इसका प्रायश्चित चाहती थी । मैं चाहती थी कि उन तीनों के कल सुबह यहाँ आने से पहले कोई आये । बेहतर हो मृत्यु, औप आप आ गये ।

नचिकेता : अब ?

कविता : अब ! अब या तो आप मृत्यु से शतरंज खेंलेंगे, या फिर मृत्यु का नृत्य देखेंगे । आज मैं अपना अन्तिम नृत्य प्रस्तुत करूँगी –मृत्यु नृत्य । आप यहाँ मृत्यु को नृत्य करते देखेंगे । एक......दो......और हाँ, अब तीसरी मैं.....तीन जोड़ी पाँव मृत्यु की, यहाँ नृत्य करेंगी । आपकी आँखों के

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ऐन सामने । हर आवर्तन में मैं पूरा करूँगी अपना.... प्रयश्चित !

(नचिकेता सन्न रहा जाता है)

एक गिलास पानी लाऊँ ? रूकिए, लाती हूँ .....

नचिकेता : .....नहीं, नहीं....मैं.....

कविता : क्या हुआ, ले आती हूँ, बस एक मिनट । जब आकी हथेलियों में पानी भरा गिलास होगा तो आपको गिलास में पानी नहीं समुद्र दिखेगा । लहर नहीं समुद्र ! पूरा समुद्र आपकी गिरफ्त में होगा । कितना दिलचस्प होगा न आपके लिए यह दृश्य ! हाथों में समुद्र, बिना रेत का । उलटे दूर रेत में फेक दिये जाने का कोई डर नहीं । लहरों की कोई गुंजाइश नहीं कि पाँवों के नीचे की रेत भी चली जाय । नहीं । आपके पाँवों के नीचे रेत रहेगी और हाथों में होगा पूरा समुद्र । आप तो लहर नहीं पूरा समुद्र चाहते थे ? फिर इस तरह डरे–डरे अब क्यूँ बैठे हैं.....जिन ढूंढा तिन पाइयाँ, गहरे पानी पैठ, मैं बैरन डूबन डरी, रही किनारे बैठ.....मैं बैरन डूबन डरी (उसके डर का नकल कर चिढ़ाती है, हंसती है) रही किनारे बैठ (हंसी) चलों इसी पर डान्स करती हूँ । सारे आवर्तन पूरे हो जायेंगे (एकाएक स्तब्ध होकर) सुनों तुम कोई पद जानते हो ? जरूर जानते होगे, सुनाओ न, ओाा क्या माया–माया कर रहे थे, सुनाओ न, उसी पर नृत्य करूँगी कथक Please !

नचिकेता : अम्बर बरसै धरती भीजै, यहु जानै सब कोई
धरती बरसै अम्बर भीजै, बूझै बिरला कोई

कविता : Beautiful ! धरती बरसै अम्बर भीजै....धरती बरसेगी अम्बर भीजेगा..... बताओ कैसे ? बूझो तो जानू ? अरे क्या हो गया, अभी तुम ही तो कह रहे थे कि क्या कह रहे थे हाँ, समुद्र सुनेगा चुपचाप गगन में आवाज झीनी झीनी तो सुनो चुपचाप ! आवाज ..झीनी झीनी..... अरे भई अब तो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

खुश ! अब तो सब तुम्हारा.....समुद्र का अमृत तुम्हारा विष मेरा....मक्खन तुम्हारा छांछ मेरा..... तुम्हीं ने तो कहा, मैं समुद्र हूँ । यह समुद्र भी पवित्र है । बाहर का लिया बाहर ही वापस कर देती हूँ न इसीलिए लहरें इतनी घनी और पारदर्शी दिखती हैं । अविराम मन्थन । अब इसमें तृष्णा तुमने बुझानी है या नहीं नचिकेता !

नचिकेता : सुनो ।

कविता : हाँ सुनाओ ....

नचिकेता : नहीं, ठीक ही कहा है कबीर ने । माया की दो शक्तियाँ हैं । एक शक्ति है विक्षेप की और दूसरी आवरण की । माया वास्तविकता पर आवरण डाल देती है । आवरण चिरूतन । आप एक गिलास पानी लाइए, खुद पीजिए, मैं चलता हूँ ।

कविता : क्यों तुम्हें काहे का डर ! वो नचिकेता तो मृत्यु से मिलने गया था और ये मुझसे मिलने आया है.....मृत्यु के बाद..... देशपाण्डे की मृत्यु के बाद । नो नो कम बैक । कम बैक यार । अच्छा सुनो । वो नचिकेता जब मृत्यु से मिलने गया था तो तुरन्त मुलाकात नहीं हुई थी । तीन रात प्रतीक्षा करनी पड़ी थी उसे बिना कुछ खाये पीये । बदले में खुश होकर मृत्यु ने नचिकेता को तीन वरदान दिये थे । और यहाँ इस बार नचिकेता मुझसे मिलने आया है, एक रात नहीं सैक्रिफाइस कर सकता ? बदले में मैं उसे एक नहीं, तीन नहीं, पाँच वरदान दूँगी । पाँच हाथ । पाँच ही बचे थे न उस ऑक्टोपस के ? बोलो.... शतरंज या नृत्य ? चलो मृत्यु की जो माया, आज उसी का डान्स देखते हैं सारी रात ! कुहासे भरे दार्जीलिंग में मृत्यु और माया की सारी रात ! ( ) अरे तुमने कुछ सुना नहीं ? अभी–अभी आपको कोई सूचना मिली है ? एक जरूरी सूचना थी.....क्या आप मुझे पहचान सकते हैं.....मैं डॉ. कविता देशपाण्डे । देशपाण्डे या देशमुख ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नचिकेता : आप चाहती क्या हैं ?

कविता : देशपाण्डे की डायरी

नचिकेता : वो तो आप ही के पास (वो हँस पड़ती है) कविता O.K. मैं clear करती हूँ ।

नचिकेता : पागल हो गई है आप (shouting) दिमाग खराब हो गया है आपका क्या समझती है आप, कि मैं बेवकूफ हूँ आपका ये नाटक मैं समझ नहीं सकता क्यों नहीं समझ रही हैं आपकी देशपाण्डे के बिना कितना अकेला, असहाय, कमजोर और अपाहिज हो गया हूँ (बिखर जाता है) मै।, कितना जुड़ा था वो और कितनी दूर चला गया वो, मैं उसके बिना बिल्कुल बेबस हो गया.....

कविता : क्यूँ, विदेशी हथियार supply करते थे उसे ? च्च च्च कैसे पुरूष हैं आप ! बिल्कुल संवेदनरिक्त या....मुझे लगता है आप इस संसार के सबसे संवेदनशील पुरूष हैं । दोस्त नहीं रहा और चेहरे पर खुशी का कोई भाव नहीं । हुँहू, उलटी फांस फंसानी.....इसे मैंने अभी–अभी invent किया बिल्कुल अभी–अभी ।

नचिकेता : मुझे डायरी नहीं चाहिए । मैं जाऊ ?

कविता : Yes of course, because you are simply an outsider to me and demanding nothing even the Diary ! (वो सहमते हुए उठता है । जाने लगता है । चला जाता है।) You are simply an outsider to me. (रूंधा कष्ठ) You are simply an outsider to me टुनटुनी ? simply an outsider.....simply.......to me an outsider ! (रूदन) (नृत्य के विन्यास में कुमार गन्धर्व के शेष अनुच्छेदों के साथ खुद को ढूंढने की थकी कोशिश । दोनों बहनें नृत्य पूरी करती हैं । शेष रह जाती है कविता । थोड़ा सा चेहरा और अन्ततः वह भी नहीं)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गौरी : मुझसे नहीं होगा !

मोन्टू दा : अरे क्या नहीं होगा ?

गौरी : मैं इस प्ले में रोल नहीं कर पाऊंगी

मोन्टू दा: क्यों ?

गौरी : यूँ ही। बस मूड नहीं जम रहा ।

मनीषा : अरे साफ क्यों नहीं बताती कि कल से धर्मेश तिवारी की फिल्म में रोल करने जा रही हो !

मोन्टू दा : फिल्म में ?

मनीषा : हाँ ! कल से यहाँ शूटिंग शुरू हो रही है । उसी में एक छोटा सा रोल मिल गया है ....

गौरी : तो तुम क्यों जल रही हो ?

मनीषा : मैं क्यूं जलूं ! मैं नहीं करती भोजपुरी फिल्म !

मोन्टू दा : भोजपुरी फिल्म ?

मनीषा : हाँ उसी में मिला है एक, डेढ़ मिनट का रोल ।

गौरी : तुम भी तो गई थी रोल मांगने । अब नहीं मिला तो सांप लोट रहा ?

मनीषा : हाँ तो मैं तुम्हारी तरह दस बार होटल के चक्कर नहीं लगायी न, न बार-बार 'धर्मेश जी, धर्मेश जी' करती रही । तुम्हारे तरीके से चलूं तो मुझे यहाँ बनने वाली हर फिल्म में काम मिल जाय ! अरे सेल्फ रेस्पेक्ट भी कोई चीज है !

गौरी : बंटी-बबली में गिड़गिड़ा रही थी न एक रोल के लिए ? कहाँ चली गयी थी उस समय सेल्फ रेस्पेक्ट ?

मनीषा : मैं गिड़गिड़ा रही थी ?

गौरी : हाँ कि पेमेन्ट न मिले न सही, एक बार बस कैमरे के आगे जा आयें

मनीषा : गौरी इट इज लास्ट ! हाँ वैसे भी मेरे पास ठीकेदार नहीं है न !

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गौरी : ठीकेदार नहीं, वे लोकल प्रोडक्शन कन्ट्रोलर हैं । कोई अच्छा रोल रहता है तो खुद भी करते हैं, मुझसे भी करवाते हैं.....

मोन्टू दा : छी छी छी ! भरत मुनि का नाट्य शास्त्र ! अभिनव गुप्त का चिन्तन ! अभिनय की साधना ! और कलाकार साधना छोड़ हिन्दी–भोजपुरी फिल्म और ठीकेदार की भाषा में बात कर रहे, वो भी मेरे सामने ! छी छी छी !...

नॉटी : सर मैं चलूं ! एक और रिहर्सल में जाना है ...

गौरी : और मैं भी नहीं कर रही.......

मनीषा : तब मुझसे भी नहीं होगा । इतनी मुश्किल से आधा घण्टा समय निकाल कर एक महीने से आ रही हूँ । रिक्शा भाड़ा भी नहीं मिलता ।

गौरी : क्यों नॉटी की बाइक बिक गयी क्या ?

मनीषा : गौरी !

मोन्टू दा : गौरी, मनीषा, प्लीज ! कल शाम हमारा शो है और तुम लोग.... गौरी सिर्फ एक दिन की बात है । कल शो हो जाये फिर चली जाना शूटिंग में....

गौरी : कल शाम को ही मेरी शिड्यूल है मोन्टू दा । आप समझिए । ये मौका बार–बार नहीं मिलता ।

मोन्टू दा : तो फिर कौन करेगा तुम्हारा रोल, वो भी एक दिन में ? और फिर तुम्हारा मनीषा का लीड रोल है । सात गाने हैं तुम दोनों के साथ–साथ

गौरी : सॉरी दादा । आप किसी और से करवा लीजिए । मैं वहाँ कमिट कर चुकी हूँ !

मोन्टू दा : और यहाँ के कमिटमेन्ट का ? उसका कोई मूल्य नहीं ? जानता हूँ ! यहाँ पेमेन्ट नहीं है न ! अरे हम ऐमेच्योर आर्टिस्ट हैं ! टिकट बिकता नहीं ! पास देकर बुलाने से भी आते नहीं ! सिर्फ चौबीस घण्टे बचे हैं ! अब क्या हो ! गौरी का रोल हटा भी नहीं सकते !

आशीष : सर पूरा प्ले ही ड्रॉप करते हैं ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मोन्टू दा : चुप ! चाय क्यों नहीं आयी अभी तक ! चन्दन कहाँ है ? चन्दन ! कुछ न कुछ तो होगा ही ! शो कैन्सेल नहीं होगा । ट्वेन्टी ईयर्स का एक्सपीरियेन्स है । भारत रत्न नहीं मिला तो क्या हुआ ! चन्दन ! चन्दन !

पापा : मोन्टू दा आप ही हैं ? (एसिस्टेंट आशीष से)

मोन्टू दा : वो नहीं, मैं हूँ । बताइए । वैसे अभी मेरे पास टाइम नहीं । सीरियस प्रॉब्लेम डिस्कस कर रहा । थोड़े में हो तो बताएं ।

पापा : ये मेरी बेटी है । प्रिन्सी । टैलेन्टेड है । बस थोड़ा दुलार में रहती है....

प्रिन्सी : पापा ! (विशेष काकू में, 'पापा' कहने का उसका इतराया ढंग हर परिस्थिति में एक नहीं रहता)

मोन्टू दा : तो ? अभी मेरे पास दुलार के लिए वक्त नहीं है ।

पापा : नहीं नहीं । ये बनारस स्कूल ऑफ ड्रामा का ही सेन्टर है न ?

दा : हाँ, और मैं इसका डायरेक्टर हूँ । मोन्टू दा ।

पापा : बड़ी खुशी हुई । मैं मनोज अधिकारी । चेयरमैन ITC भारत सरकार !

दा : ठीक है बैठिए । चाय पीजिए । बात किसी और दिन करेंगे । चन्दन !

पा : देखिए बात सिर्फ इतनी है कि मेरी बेटी को अभिनय का बहुत शौक है । वो आपके स्कूल में ड्रामा करना चाहती हे । ऐक्टिंग सीखने की ललक है उसमें । अगर आप ......

दा : देखिए कल हमारा शो है .... और

प्रिन्सी : पापा ...

पापा : हाँ तो उसी में एक छोटे से रोल से शुरूआत कर दीजिए न !

दा : देखिए ये साधना का सेन्टर है । हम ऐक्टर बनाते हैं वीडिओ ऐलबम नहीं ।

प्रिन्सी : पापा !

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गौरी : चल मनीषा हम अपनी प्रैक्टिस शुरू करती हैं ।

मनीषा : हाँ चल ! कल के शो में हमें ही क्लैपिंग लेनी है वैसे आज तू बड़ी प्यारी लग रही है ।

गौरी : लेकिन अखबारों में तस्वीर तो तेरी ही छपती है ।

मनीषा : इस बार दोनों की छपेगी । चैनेल वाले भी आयेंगे । आप भी आइएगा (चिढ़ाकर प्रिन्सी से)...

गौरी : देखने .....

प्रिन्सी : पापा......

दा : चलो बेटी ।

नॉटी : (दादा के कान में) मोन्टू दा । बहुत रेयर चान्स है और आप इसे खो रहे हैं ।

दा : कैसा चांस ?

नॉटी : ये भारत सरकार के बहुत बड़े अधिकारी हैं । आईएएस हैं । सारे मंत्री इनके आगे सिर झुकाये रहते हैं । ये राष्ट्रपति के काफी नजदीक और प्रिय हैं । पिछले दस साल से राष्ट्रीय अलंकरण में ये ही फाइनल साइन करते हैं । और दादा भारत रत्न ! आप डिजर्व तो यही करते हैं लेकिन पद्मविभूषण भी मिल जाये तो चलेगा । दादा ये प्रसन्न हो जायें तो पद्मश्री तो पक्का !

दा : तुम्हें कैसे मालूम ?

नॉटी : इन्हीं की सरकारी कम्पनी में तो मैं क्लर्क हूँ ।

दा : तो

( ) ( ) ( )

दा : (पापा से) अरे आपने चाय नहीं पी । बैठिए । चन्दन आ ही रहा होगा । अरे ? वैसे मेरी क्रियेटिव फैकेल्टी में एक बात आयी है

पापा : क्या ?

दा : (निर्देशक की भंगिमा में तौल कर) हाँ । ठीक है नॉटी । बिल्कुल सही बैठेगा हमारे कैरेक्टर के लिए ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पापा : क्या सही बैठेगा ? अरे तुम ! तुम तो शायद मेरी ही कम्पनी में काम करते हो न ? देखा–देखा सा चेहरा लग रहा है ....

नॉटी : जी सर आपके लोकल ऑफिस में क्लर्क हूँ । इसी साल ज्वॉएन किया है । नॉटी पाण्डेय नाम है । थोड़ी ऐक्टिंग में इन्टेरेस्ट है ।

दा : चन्दन ! (इसी ग्रुप का सदस्य है चन्दन जो ग्रुप के लिए चाय आदि लाने का काम करता है और लगातार नदारद रहता है, अभी भी शुरू से नदारद था, प्रिन्सी के प्रवेश करते ही उसके पास उसे एक टक देखने में लीन है) सर मैं कह रहा था आप खुद क्यों नहीं ऐक्टिंग करते ?

पापा : What ?

प्रिन्सी : पापा......

गौरी : ओ ले ले ले......(तुतलाने की नकल में चिढ़ाते हुए)

मनीषा : दु द् दू पियेगी ? (साथ देते हुए)

प्रिन्सी : पापा...... (नाराज होते हुए)

पापा : अरे मेरी बेटी ऐक्टिंग सीखना चाहती है और आप मुझे कह रहे हैं ?

नॉटी : सर आप बहुत अच्छा करेंगे ।

दा : इन्टेलिजेन्ट हैं, फेस एक्प्रेसिव है, वॉएस इम्प्रेसिव, उच्चारण स्पष्ट, फीगर स्टेजी... बेटी को भी लेंगे....

प्रिन्सी : पापा.....

पापा : देखिए आप प्रिन्सी को लीजिए । मैं उसका शो देखने जरूर आऊंगा । लेकिन मुझे छोड़िए । मैंने कभी स्टेज....

दा : उसे तो ले चुके । कल के शो में वो मेन कैरेक्टर में दिखेगी । लेकिन आप, बस हाँ कह दीजिए

पापा : लेकिन प्रिन्सी बेटा इतनी जल्दी करेगी कैसे ? उसने तो कभी ड्रामा किया नहीं !

दा : वो मैं करा लूंगा । कर लोगी न बेटी ! आप सिर्फ अपने लिए हाँ कह दीजिए । बाकी जिम्मेदारी मेरी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नॉटी : जी सर

दा : बेटी पापा से कहो 'से यस' ...

प्रिन्स : पापा

पापा : ओ.के. प्रिन्सी कह रही है तो.... लेकिन मैंने कभी किया नहीं और फिर करूंगा क्या ?

दा : मिनिस्टर.... आप मिनिस्टर का कैरेक्टर करेंगे । क्यों नॉटी ?

नॉटी : जी, परफेक्ट होगा ।

पापा : (रूष्ट होकर) नहीं । ये कोई कैरेक्टर नहीं होता । मुझे धार्मिक विषयों में रूचि है । बचपन से आज तक मैंने ऐसी ही फिल्में देखी है जैसे श्रीकृष्ण लीला, सम्पूर्ण रामायण.....

मो दा : क्या बात है....क्या दृश्य है....और क्या वर्णन है ! राम चरित मानस में कबीर दास लिखते हैं.....

आशीष : सर कबीर दास नहीं, तुलसी दास !

दा : चुप ! मुझे बताता है ! ट्वेन्टी ईयर्स का एक्सपिरियेन्स है !

नॉटी : भारत रत्न नहीं मिला तो क्या हुआ ! तुलसीदास बोलूं या नन्दिता दास, बॉस इस ऑलवेज राइट !

दा : राइट । क्या दृश्य है ! जब कोई भी राजा जनक के दरबार में घनुष नहीं उठा पाता तो विश्वामित्र इशारा करते हैं राम को । राम सरलता से आज्ञा पाकर उठते हैं और भरी सभा को देखते हैं । अब यहाँ सर आप कबीरदास (   ) का वर्णन देखिए – लिखते हैं कि उठकर श्रीराम का सब तरफ देखना मानों किसी सिंह का अवलोकन, माने सिंहावलोकन ! (पापा की प्रशंसा में उनका वर्णन करते हुए) वैसी ही आँखें, वैसा ही अवलोकन इसलिए सर आप श्रीराम के चरित्र के लिए बिल्कुल फिट हैं ....

पापा : अरे नहीं नहीं ! मुझे राम का चरित्र ड्रामाटिक नहीं लगता, क्यूं बेटी !

प्रिन्सी : ....

गौरी, मनीषा : ....पापा (उसकी मुंह की छीनकर)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पापा : बहुत ही शाकाहारी–सा, वानस्पतिक–सा चरित्र है मर्यादा पुरूषोत्तम का....

नॉटी : और सर सरकारी तन्त्र में मर्यादा......हें हें हें....

दा : कोई बात नहीं । बिल्कुल मांसाहारी चरित्र है रावण का । आपको रावण बना देते हैं ।

आशीष : सर ......

दा : चुप !

पापा : हाँ । रावण का रोल थोड़ा चैलेन्जिंग होगा मेरे लिए

दा : तो फिर अभी से रिहर्सल शुरू करते हैं – आप रावण, नॉटी राम और क्या नाम है बेटी ?

प्रिन्सी : प्रिन्सी

दा : बस बस । राम के लिए प्रिंस नहीं, प्रिंसी सीता । ( ) मैंने कहा था न कि कल का शो होगा । कल का प्ले कैन्सेल । चन्दन । जाकर डिक्लेयर करो – कल का प्ले है–सीता के रा...

नॉटी : (दा का मुँह दबाकर) रावण ! सीता के रावण !

दा : मैं आपको सीन समझाता हूँ ! म्युजिक

पापा : एक मिनट एक मिनट ! अभी तक आपकी चाय नहीं आयी ?

दा : यस, चाय ! चन्दन ! यें चन्दन कहाँ है ?

आशीष : वो है चन्दन वहाँ

दा : चुप ! (उसे प्रकट करता है । वो दा की ओर बढ़ते हुए प्रिंसी की ओर अपलक)

प्रिन्सी : पापा !

(सभी फ्रीज । फेड आउट । गौरी मनीषा गाती हैं 'साजन मोरा आये रे' और बड़े गुलाम अली खाँ गाते हैं 'प्रेम जोगन बन जाऊँ')

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दृश्य–दो

(पूरी रोशनी में गौरी, मनीषा । शेष अन्धेरे में अनुपस्थित । प्रकाश शेष में मनीषा गौरी से आगे बढ़कर प्रिंसी के साथ आगे बढ़ता है । जो नॉटी के साथ मिलने के दृश्य में जुड़ जाता है । संगीत व गायिकाएं दोनों क्रमशः अप्रकट होती हैं । नये दृश्य में सिर्फ नॉटी और प्रिंसी ....प्रेम जोगन बन जाऊँ....)

नॉटी : आपको ऐक्टिंग सेन्टर आने की क्या जरूरत थी ? वो भी अपने पापा को लेकर ? आना था तो मुझे कह सकती थीं ! ये तो गनीमत थी कि वहाँ हम अपरिचित बने रहे और पापा नहीं जान पायें ! ( ) कुछ बोलेंगी भी, अपने पापा की बिटिया !

प्रिंसी : आसमान में कितने चाँद ?

नॉटी : अरे ! मतलब ?

प्रिन्सी : आसमान पे कितने चाँद ?

नॉटी : एक

प्रिन्सी : बनारस शहर में कितनी नदियाँ ?

नॉटी : एक

प्रिन्सी : भारत देश में कितने प्रधानमंत्री ?

नॉटी : एक

प्रिन्सी : भारतीय संगीत में कितनी लता मंगेश्कर ?

नॉटी : एक

प्रिन्सी : क्रिकेट टीम में कितने राहुल ?

नॉटी : एक

प्रिन्सी : फिल्मी दुनिया में कितने बिग बी ?

नॉटी : एक

प्रिन्सी : काशी में कुल कितने शंकर ?

नॉटी : एक

प्रिन्सी : राजनीति में कितनी महिलायें ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नॉटी : एक

प्रिन्सी : दुनिया भर में कितने जीनियस ?

नॉटी : एक (अपने आप पर गर्व कर)

प्रिन्सी : इस युनिवर्स में कितनी सुन्दरी ?

नॉटी : एक

प्रिन्सी : तुम्हारी जिन्दगी में कितनी सुन्दरी ?

नॉटी : एक (उसे लक्ष्य कर)

प्रिन्सी : और मनीषा ? बस यही देखने गयी थी तुम्हारे ऐक्टिंग सेन्टर में ।

नॉटी : ओफ ! तो कुछ दिखा भी ?

प्रिन्सी : दिखा ! भरपूर दिखा !

नॉटी : पापा को नहीं दिखा न ! देन इट्स ओके ।

नेपथ्य से: पापा !

प्रिन्सी : अब तो मैं भी ऐक्ट्रेस हो गयी ! कल शो है । आज ज्वॉएन । कल हिरोइन । कुछ दिनों में फिल्मफेयर एवार्ड तो मिल ही जायेगा ।

नॉटी : सॉरी ! थियेटर में फिल्मफेयर नहीं होता !

प्रिन्सी : थियेटर में ऐक्टिंग इसीलिए तो कर रही हूँ कि फिल्म में कर सकूं । नहीं तो नाटक कौन करता है ? न पैसा न पहचान न प्रसिद्धि ! (हिकारत से)

नॉटी : नाटक इसलिए है भी नहीं । वो आत्मविकास के लिए है । आत्मसाक्षात्कार के लिए है । मोक्ष के लिए है ।

प्रिन्सी : तो करते रहिए आप आत्मसाक्षात्कार और मोक्ष ! कितना हुआ आत्मसाक्षात्कार मनीषा के साथ ? या मेरे साथ आत्मज्ञान और मनीषा के साथ मोक्ष ?

मनीषा : तुम यहाँ क्या कर रहे हो ?

प्रिन्सी : तुम !

नेपथ्य : पापा !

मनीषा : मैं तुम्हें कहाँ कहाँ खोजती आ रही । मोन्टू दा ने कहा है कि रामलीला से पहले वे हम दोनों वाला प्रेमप्रसंग ड्राप नहीं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

करेंगे । इसलिए रिहर्सल कन्टीन्यू करना है । चलो दो घण्टे जमके करते हैं....
(संगीत : आयी बसन्त बहार)

दृश्य–तीन

प्रिन्सी : कहाँ चले ?

नॉटी : रिहर्सल...

प्रिन्सी : अच्छा यहाँ मैं हूँ इसलिए वहाँ ! क्यों मेरे सामने क्या प्रॉब्लेम है ?

नॉटी : नो प्रॉब्लेम । चलो मनीषा स्टार्ट । पूरी खामोशी से बढ़ा । बढ़ता गया । पास आकर चेहरे से तसल्ली की और चाकू.....

मनीषा : हाय ये मैं क्या कर बैठी.... एक हत्यारे से प्रेम कर बैठी...

प्रिन्सी : और ये मैं क्या देख बैठी...(मनीषा के छन्द टोन में)

नॉटी : मैंने तुमसे कहा था न कि मैं जब रीडिंग करूं तो तुम वहाँ....

मनीषा : और मैंने भी कहा था कि जब मैं रहूँ तो कोई और न रहे....

प्रिन्सी : कोई और न रहे....क्यूं न रहे.... और आप क्यूं रहे..?

मनीषा : ओए ! दुद्दू पीने वाली लड़की ! अभी फीडिंग बॉटेल मुँह से हटी नहीं और इतनी चक्ल्लस ! ये ऐक्टिंग है । आर्ट है । जा जाकर पहले एलकेजी–यूकेजी कर ! (नेपथ्य : पापा !)

नॉटी : (भयभीत स्वगत) मेरी नौकरी गयी । दादा का भारत रत्न गया ।

मनीषा : नॉटी ! ये डिस्टर्बेन्स कहाँ से जुटा लिया ? रिहर्सल होनी है या नहीं ? चलो यहाँ से । घर पे करते हैं । न जाने तुम कहाँ रहते हो ?

नॉटी : (कविता की तरह कविता पढ़ता है) घर से निकलता हूँ तो घर शुरू होता है । घर लौटता हूँ तो घर छूटता है । एक घर पेड़ पर एक घर आसमान पर । एक घर मेरे पास एक घर तुम्हारे पास । चलूं तो घर बैठूं तो घर । लिखूं तो घर देखूं तो घर । सिर्फ घर में ही घर नहीं ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

फेड आउट

दृश्य–4

मनीषा : हर दुःख एक घर है, हर अनुभव घर का आंगन । दुःख मिले तो सोचो घर मिल गया, अनुभव मिले तो सोचो पीपल की छाँव । नदी मिले तो सोचो घर अभी दूर है, राख मिले तो सोचो माँ को अभी आना है । पतझड़ को राग वसन्त और दुःख को कुमार गन्धर्व की जरूरत नहीं । जब घर होगा तो दुःख होगा । घर हो, न हो ! कैसी लगी तुम्हें मेरी कविता ? अरे, कहाँ गये ? (स्वगत) अभी तो यहीं था ! (पुकारती है) दुष्यन्त ! दुष्यन्त ! (स्वगत) फिर भूल गया होगा मुझे ! कोई बात नहीं Its all right. अब ये रोग ही जेनेटिक है तो कैसे न भूले दुष्यन्त ! लेकिन मैं तो नहीं भूली न ! मुझे तो सब याद है, कि हम कैसे मिले थे, कैसे हरी नदी में नीले आसमान को हम साथ बैठे देखते थे । फिर एक दिन आसमान से बादल उतरा तो तुमने उसे नाव बनाकर कागज की तरह बहा दिया और मेरा मन आखिरी स्पर्श तक भीग गया । फिर तुम तैरने गये, मैं डरी, तुमने तीसरी डुबकी लगाने से पहले, याद है, आखिरी बार देखा था, मुस्कुरा कर डुबकी लगायी तो (उदास हो जाती है) अभी तक ऊपर नहीं आये । एक शती पुरानी बात है । मैं मन की तलहटी तक ढूंढ आयी तुम्हें फिर भी नहीं मिले मुझे । कहाँ हो तुम दुष्यन्त ? मैं आज भी वहीं, उसी सीढ़ी पर पाँव पानी में डुबोये बैठी तुम्हारा इन्तजार कर रही हूँ । कब आओगे ?

मोन्टू दा : Its Ok अब आपको (प्रिन्सी से) ठीक ऐसे ही बोलना है। Don't worry. पहली बार है इसलिए शुरू में थोड़ा नर्वस फील होगा । लेकिन बाद में फिर आप ऐसी ही, बल्कि इनसे भी अच्छा बोलने लगेंगी । आशीष प्रिन्सी जी को script दीजिए । चलिए । शुरू करते हैं । आप नदी के किनारे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बैठी हैं । इस शकुन्तला का मूड समझिए । दुष्यन्त की प्रतीक्षा में वो जल प्रवाह में पाँव डाले बैठी है और यह कविता पढ़ रही है । जैसे ही आपका डायलॉग पूरा होगा, एक मिनट का एक सायलेन्स रहेगा और दुष्यन्त का डायलॉग सुनायी देगा । वो stage पर नहीं आयेगा । वो नेपथ्य से, तुमसे sorry, आपसे सम्बोधित होगा । right ?

प्रिन्सी : ..... (नेपथ्य स्वर : पापा)

दा : हां हां पढ़िए । Make an effort.

प्रिन्सी : हर दुःख एक घर है....

(मनीषा हंस देती है)

(नेपथ्य स्वर : पापा)

दा : मनीषा Please ! cooperate ! चलिए ।

प्रिन्सी : हर घर एक दुःख है ....

(मनीषा फिर हंस देती है)

आशीष : प्रिन्सी जी, हर घर नहीं, हर दुःख एक घर है....

दा : चुप ! डायरेक्टर मैं हूँ कि तू ? (नेपथ्य स्वर : भारत रत्न नहीं मिला तो क्या हुआ) तू सिर्फ Prompting करेगा । हाँ चलिए ....

प्रिन्सी : ये हँसेंगी तो मैं नहीं पढूँगी !

मनीषा : ऐसे पढ़ेंगी तो सारे दर्शक क्या चुप बैठेंगे ? पहले हंसेंगे फिर रोयेंगे, फिर अण्डे....

प्रिन्सी : आप जैसे बहुत अच्छी करती हैं! मैं नहीं करूंगी।

मनीषा : अरे तो कहा किसने है ? खुद ही आयी हो ! यहाँ बाल रंगमंच नहीं होता । घर जाकर लूडो खेलो । और अगर ऐक्टिंग सीखनी है तो पहले कार्टून नेटवर्क देखो । कुछ सेन्स बनेगा ।

(: पापा)

प्रिन्सी : देख तो रही हूँ !

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दा : मनीषा जी मनीषा जी Please आप Senior Actress हैं । ये New comer है । आप उन्हें Accept कीजिए । उन्हें बताइए कि उन्हें कैसे करना है ...

मनीषा : जो एक लाइन साफ बोल नहीं पा रही उसे भगवान भी नहीं सिखा सकते । अरे पहले प्रतिभा होनी चाहिए ! आप ही तो कहा करते हैं कि प्रतिभा भगवान शिव की तीसरी आँख है !

प्रिन्सी : तीसरी, अरे जब से तुम मेरे नॉटी की जिन्दगी में आयी हो मुझे फूटी आँख नहीं सुहा रही

मनीषा : मेरे नॉटी ?

दा : प्रिन्सी जी, मनीषा जी....

इमान : दादा अभी नॉटी नहीं आयेगा । अभी उसकी शूट है ।

दा : अरे भाड़ में गया नॉटी !

मनीषा : भाड़ में नहीं शूट में । मैं भी जा रही !

प्रिन्सी : हाँ उसके बगैर मन कैसे लगेगा !

मनीषा : क्यों तुम तो कर रही हो न ! लूडो खेलते–खेलते डायलॉग बोलना और दुद्दू पीती रहना !

दा : आप क्यों जा रहीं ?

मनीषा : कोई एक ही करेगा न ये रोल ! जब बेबी प्रिन्सी कर ही रही है तो मेरी क्या जरूरत ?

दा : नहीं ! करेंगी तो आप ही । शकुन्तला आपसे बेहतर और कौन हो सकती है !

प्रिन्सी : जितनी देर तक शकुन्तला की जिन्दगी में ट्रेजेडी है बस उतनी देर तक

मनीषा : फिर बाकी की कॉमेडी तुम पूरी कर देना

दा : नहीं । उसका भी तैयार रहे । दो तीन बार डायलॉग बोले । वो अण्डरस्टडी है । जाकर पापा को बतायेगी तो पापा को भी लगेगा कि वो रोल कर रही !

मनीषा : लेकिन करूंगी मैं ही न फाइनल शो में ?

दा : बिल्कुल ! Right ! Start....

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रिन्सी : मैं बोलने जा रही हूँ ...

मनीषा : पापा को याद कर लेना ....

दा : Please

प्रिन्सी : मेरे बोलने में अब कोई disturbance नहीं होनी चाहिए ।

दा : OK. Silence. Start....

प्रिन्सी : हर दुःख एक घर है हर अनुभव घर का आंगन । दुःख मिले तो सोचो घर मिला
अनुभव मिले तो सोचो पीपल की छाँव ।
नदी मिले तो सोचो घर अभी दूर है ।
राख मिले तो सोचो माँ को अभी आना है
पतझड़ को राग बसन्त और दुःख को कुमार गन्धर्व की जरूरत नहीं ! जब घर होगा तो दुःख होगा प्रेम हो, न हो !

नॉटी : (बिल्कुल पीछे बैकड्रॉप के अंधेरे में चलते हुए, सम्भव है मुख्य प्रकाश में बैकग्राउण्ड से फोरग्राउण्ड तक वही आता जाय) चलो देह की नाव से प्रेम की नदी पार करें
जैसे जैसे नदी बहती जाय
वैसे वैसे हम घुलते जायें
घुलते जायें बहते जायें मिटते जायें खोते जायें
साथ–साथ खोना
नदी के साथ बहकर पार होना हो
नदी के पार न होकर
देह के पार होना हो
रेत भी घुले राख भी घुले
फूल भी घुले आत्मा भी धुले
रह जाये सिर्फ पंखुरियाँ तैरतीं
नदी के थिरकते आसमान पर
चलो
भावों की खामोश नाव पर
प्रेम की नदी स्वीकार करें !

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दृश्य–5

दा : खाली थियेटर करने से चलेगा ?

नॉटी : ठीक से किया जाये तो क्यों नहीं चलेगा दादा ! बीस साल से आप कर ही रहे हैं !

दा : तो कर के क्या मिला – न पैसा न पद्मश्री ! हॉल का किराया बढ़ता जा रहा । कलाकारों को पेमेन्ट नहीं कर पाते । नाटक के लिए आयोजक पैसा लगाने को तैयार नहीं । फैशन शो के लिए वे कुछ भी लुटा सकते हैं । संगीत को नाटक का हिस्सा कहा जाता है और प्रोग्राम पाने के लिए कलाकार एक दूसरे का गला काटने को तैयार हैं । क्या डान्सर क्या सिंगर क्या ऐक्म्पनिस्ट ! इतने वर्षों की कला साधना के बाद भी समाज में महिलाओं और दलितों तो क्या, सर्वहारा वर्ग को मर्यादा मिल गयी लेकिन आज भी कलाकार सभ्य समाज के लिए नचनियाँ बजनिया से ऊपर नहीं उठ सके । शताब्दी चाहें इक्कीसवीं हो या इक्तीसवीं ! कलाकारों से समाज आज भी शूद्र की तरह क्यों बिहेव करता है नॉटी ? (पारसी अभिनय के अंदाज में)

नॉटी : दादा आज आप काफी तरल हो रहे हैं ! अचानक इतना दुःख ?

दा : नहीं रे ! ये बहुत पुराना दुःख है कलाकारों का जो बीच–बीच में रह–रहकर उमड़ पड़ता है मुझमें । अब बताओ, हम नाट्यशास्त्र को आधार बनाकर इतने संघर्ष से एक नाटक खेलते हैं फिर भी लोग कहते हैं –नाटक–नौटंकी ! एक गाली लगती है ! क्या हम शबनम मौसियों से भी गये गुजरे हैं ?

नॉटी : जाने दीजिए दादा ! कभी हमारी भी लड़ाई लड़ी जायेगी । आज शाम आप फिर से फॉर्म में आ जाइए । कल शाम ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

को शो हो जाने दीजिए । फिर हम इस मुद्दे को गम्भीरता से लेंगे और संसद में इस मुद्दे पर बहस चलवा देंगे !

दा : तू तो ऐसे कह रहा है मानों संसद न हुआ कोई अखबार हो गया जब चाहा कुछ भी छपवा लिया । अरे ये सब पाये हैं लोकतंत्र के । सुन लेंगे तो फिर हम शूद्रता से भी गये !

नॉटी : नहीं दादा, कलाकर्म शूद्रता नहीं है, न हम कोई शूद्र !

दा : नहीं हैं तो फिर हम एक मूर्ख अधिकारी को इतना महत्व क्यों दे रहे हैं ? न कला से मतलब हैं उसे न कलाकारों से !

नॉटी : दादा मतलब है तभी तो वो अपनी बेटी को आपके पास ले आये ।

दा : अच्छा तो तेरी नजर बेटी पर है ! अरे कोई कलाकार बनवाने थोड़े लाये हैं ! उन्हें क्या मतलब कला साधना से ? बस मुझसे प्रशिक्षण का सर्टिफिकेट मिल जाये और उसे फिल्मों में, सीरियल में चांस मिलता जाये ! भई ऐप्रोच वाले ठहरे ! चांस, रोल, मीडिया में इम्पार्टेन्स, एवार्ड, फेम सब मिलता चला जाएगा और खाली कहने को, इन्टरव्यू देने को कहती फिरेगी कि मैंने अभिनय कला की बारीकियाँ अपने गुरू मोन्टू दा से सीखी है । आज के चालाक मूर्ख ! रोल चाहिए ! हुँह !

नॉटी : ठीक तो है ! उसे रोल चाहिए और आपको भारतरत्न ! बेटी को रोल देकर बाप से अलंकरण ले लीजिए । आपने अधिकारी के चेहरे को नहीं पढ़ा ? साफ लिखा था–तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें....

दा : इसीलिए तो मैंने तुमसे आते ही पूछा–खाली थियेटर करने से होगा ?

नॉटी : तो मैंने भी कहा तो, कि एकै साधे सब सधै । ठीक से नाट्य कला को साध लिया जाये तो जीवन का सब सध जायेगा !

दा : माने ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नॉटी : जीवन–मृत्यु सब सध जायेगा !

दा : इसीलिए तो कह रहा हूँ कि रिपोर्टर से पूछ कि मेरा बायोडाटा कमिश्नर ने दिल्ली भेजा कि नहीं ।

(फेड आउट)

दृश्य–6

(नॉटी प्रिन्सी प्रणय मुद्रा में)

गौरी : नॉटी भैया, मनीषा आयी है ?

मनीषा : ए गौरी सुना तुमने ! कल इस दुद्दू के पापा रावण बनेंगे !

(नेपथ्य : पापा)

गौरी : सच ! कलियुगी ?

मनीषा : हाँ री !

नॉटी : अरे नहीं री !

प्रिन्सी : क्या री ? हाँ री– नहीं री !

मनीषा : ओ ले ले ले, बोलने लगी !

गौरी : चलो बेटे, दीदी को जरा वो वाली पोएम सुनाओ– 'बा बा ब्लैक शिप'

मनीषा : चॉकलेट दूंगी, 'पापा' !

गौरी : ओ (डांटती है) ! इत्ती बड़ी हो गयी, अभी भी पापा !

नॉटी : मेरा मन कर रहा गाऊं – आइल बसन्त बहार !

गौरी : मनीषा, रावण की बेटी का क्या नाम था ?

मनीषा : हाँ भई, जानना जरूरी है । अब रावण किंग थे तो बेटी प्रिंन्सी ही होगी ।

गौरी : प्रिंसी, कल तुम्हारे पापा रावण का कौन सा डॉयलाग बोलेंगे ?

मनीषा : पापा ! (प्रिन्सी की इतराई टोन में)

प्रिंसी : हाय क्या दिचस्प नजारा होगा ! कल शाम शूर्पणखाएँ रावण के साथ होंगी और मैं रहूँगी अपने नॉटी के साथ !

गौरी : भइया !

मनीषा : मुझे कोई फर्क नहीं पड़ेगा !

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नॉटी : कोई फर्क नहीं पड़ेगा ?
मनीषा : नहीं
नॉटी : क्यों ?
मनीषा : क्योंकि मैं तुमसे प्रेम करती हूँ ।
नॉटी : ये कैसा प्रेम है !
मनीषा : मुझे अपने प्रेम पर विश्वास है तो फिर सन्देह कैसा ? मैं निश्चिन्त हूँ ।
गौरी : (गाती है) चलो सजनी....
प्रिन्सी : ऐसे ही गई होगी लक्ष्मण के पास नाक कटवाने....
गौरी : भइया !
नॉटी : गौरी ! मनीषा देखो कितनी सुन्दर नाक है मेरी गौरी की !
प्रिन्सी : मनीषा देखो नहीं, प्रिंसी देखो !
नॉटी : प्रिन्सी देखो मनीषा की नाक.... टेढ़ी है, टेढ़ी है !
प्रिन्सी : टेढ़ी हो या सीधी, तुम देखोगे ही क्यों मेरी छोड़ किसी और की नाक ?
नॉटी : क्योंकि आज सभी को अपनी नाक बचाने की पड़ी है । इसलिए देखनी पड़ती है सबकी ....
प्रिन्सी : नहीं ! तुम किसी की नहीं, सिर्फ मेरी देखोगे
गौरी : किसी और क़ी देख ली तो
प्रिन्सी : तुम मेरे अलावा और किसी की ओर भी देखते हो तो मुझे फर्क पड़ता है....
नॉटी : क्यों ?
प्रिन्सी : क्योंकि मैं तुमसे प्रेम करती हूँ ।
नॉटी : ये कैसा प्रेम है ?
प्रिन्सी : प्रेम करने पर पजेसिव होना पड़ता है । पजेसिव नहीं मतलब प्रेम नहीं ।
गौरी : भइया ! ये प्रेम करती है इसलिए निश्चिन्त है और वो प्रेम करती है इसलिए पजेसिव है । तुम निश्चिन्त हो कि पजेसिव ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नॉटी : (पहले आराम से दोनों को बारी–बारी से देखता है फिर आसमान की ओर चेहरा कर करूण स्वर में) पापा !

(फेड आउट)

दृश्य–सात

दादा : हाँ भई ! सेट रेडी ? म्युजिक, लाइट्स, प्रॉम्पिटंग स्क्रिप्ट, आर्टिस्ट सब रेडी? पाँच मिनट बाद कर्टेन खुलने वाला है । पूजा शुरू करें ? नारियल कहाँ है ? चन्दन ! और सर नहीं दिख रहे ?

इ : सर अभी आधा हॉल खाली है....

दादा : रहे । अब घर जाकर ड्रामा नहीं दिखायेंगे ! (दो आदमी सर को लगभग हाथों में उठाकर ले आ रहे हैं) अरे, छोड़ो उन्हें, ये क्या कर रहे हो तुम लोग उनके साथ ? अरे अभी तक आपने कॉस्ट्यूम नहीं पहनी ?

पापा : एक बात कान खोलके सुन लीजिए डायरेक्टर साब ! मैं धोती नहीं पहनूंगा ! नाटक हो चाहे न हो ! परेशान कर दिया इन लोगों ग्रीन रूम में !

दादा : गया भारत रत्न ! तो आप धोती कुर्ता नहीं पहनेंगे ?

पापा : नहीं

दादा : तो क्या पहनेंगे ?

पापा : पैन्ट ठीक है

दादा : पैन्ट में रावण !

पापा : आज वो होता तो वो भी यही कहता

दादा : ओके ओके ! अब हमारे पास वक्त नहीं ! हम फॉर्म बदल देते हैं । अब हम रियलिस्टिक नहीं, सिम्बॉलिक ड्रामा करेंगे । राम–रावण की पोशाक मॉडर्न रहेगी । (पापा को) बस रावण लगने के लिए मूंछ लगवा लीजिए और स्वर्णमुकुट सिर पे रख लीजिए । मैं आडियेन्स और समीक्षकों को कन्विन्स कर लूंगा ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पापा : नहीं मूंछ भी ठीक है..... (अपनी मूंछ को टटोलते हुए)

दादा : ओके ! ठीक है सिर्फ मुकुट सिर पे रख उतर पड़िये युद्ध के मैदान में । राम तैयार हो न तीर धनुष ले के ?

प्रिन्सी : पापा आप मुकुट पहनेंगे ! आपके सब कलीग आये हैं । देख के सब हँसेंगे ।

पापा : राइट ! प्रिन्सी ठीक कहती है । मैं मुकुट–वुकुट नहीं पहनूंगा ।

दादा : देखिए साब मुकुट तो पहनना ही होगा

पापा : नहीं । मैंने कह दिया न ! नहीं पहनूंगा ।

दादा : तो फिर नाटक नहीं होगा सर ! लोग हूट करेंगे ! बिना राजमुकुट के रावण को वे स्वीकार नहीं करेंगे । जरा सोचिए सर, आपने कभी देखा है बिना राजमुकुट का रावण ?

पापा : क्यों बिना राजमुकुट के क्यों नहीं हो सकता रावण ?

दादा : नहीं हो सकता ! अरे रावण लगना भी चाहिए !

पापा : तो लगाइए न ! आप डायरेक्टर काहे के हैं ? बिना मुकुट के रावण लगाइए !

नॉटी : दादा चैलेन्ज !

(दादा विचारों में टहलते हैं)

दादा : चन्दन ! दौड़ के जाओ, किसी आम नेता की टोपी ले आओ !

नॉटी : पहले से है सर (निकाल के देता है)

दादा : यहाँ आइए । (पापा को पहनाता है, अपनी ओर घूमे उनके चेहरे को दर्शको की ओर घूमाकर) अब लग रहे हैं रावण !

(सभी Position लेते. हैं) (फेड आउट)

दृश्य–आठ

(मंच पर इर्द–गिर्द दर्शक बैठे । मंच पर परेशानी)

दादा : अब क्या Problem है ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पापा : राम तीर नहीं चलायेगा । बस इशारे से ऐसे (तीर चलाने की मुद्रा) करेगा ।

दादा : अरे वो सचमुच का तीर थोड़े चलाएगा !

पापा : नहीं बस ऐसे करेगा ।

दादा : ओके ओके । नॉटी बस ऐसे करना । धनुष भी लाने की जरूरत नहीं !

(राम–रावण द्वन्द युद्ध करते हैं । मंच पर उनके साथ घूमता प्रॉम्प्टर रावण के डायलॉग प्रॉम्प्ट कर रहा । रावण बोल रहा । प्रॉम्प्टर–आशीष, राम–नॉटी, रावण–पापा । मंच पर मंच, शेष चरित्र राम–रावण युद्ध देख रहे । निर्देशक मोन्टू दा मंच के चरित्रों और दर्शकों को मैनेज करते हैं ।

दादा : लीजिए प्रस्तुत है ब्लैक कॉमेडी 'सीता के रावण' । सीता जी अभी लंका में हैं । राम–रावण युद्ध अन्तिम क्षणों में है । रावण को मार कर राम सीता जी से मिलेंगे और लक्ष्मण हनुमान....

आशीष : सर हनुमान नहीं.....

दादा : Silence लक्ष्मण समेत राम जी अयोध्या लौटेंगे । Start-

राम : आखिर आना ही पड़ा मेरे सामने.... करना ही पड़ा मेरा दर्शन... मृत्यु के लिए प्रस्तुत हो जा और मोक्ष के लिए प्रार्थना कर....

प्रॉ : ये तो अगला पल ही बताएगा

रावण : ये तो अगला पल ही बताएगा

प्रॉ : कि किसे प्रस्तुत होना है मृत्यु के लिए, किसे करनी है प्रार्थना मोक्ष की

रावण : कि किसे प्रस्तुत होना है मृत्यु के लिए, किसे करनी है प्रार्थना मोक्ष की

राम : अरे मृत्यु क्षणों में तो ध्यान कर शंकर का....

प्रॉ : मैं तो स्वयं शंकर हूँ

रावण : गुड ! मैं तो स्वयं शंकर हूँ

प्रॉ : रहते हैं वे मेरे द्वारपाल की तरह

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रावण : रहते हैं वे मेरे द्वारपाल की तरह

राम : तो तीन बार स्मरण कर भगवान शंकर का । तीन बार तीर चलाऊंगा मैं, तेरे तीन महापापों के लिए । तीसरा तीर तेरा प्राण पखेरू ले उड़ेगा । सावधान रावण !

प्रॉ : अरे जा जा वानर सेनानायक.....

रावण : अरे जा जा वानर सेनानायक ! रावण को ललकारता है ! तेरी ये हिम्मत त्रिलोकपति को चुनौती देता है !

राम : ये तीर 'छल' के पाप के लिए । सम्भल... (तीर छोड़ने की मुद्रा)

प्रॉ : आह !

रावण : वाह !

प्रॉ : सर वाह नहीं आह !

राम : ये दूसरा तीर मानसिक व्यभिचार के लिए....

प्रॉ : एक बार फिर आह !

रावण : एक बार फिर वाह !

प्रॉ : मैं नहीं मर सकता राम ! मैं अमर हूँ, अजेय हूँ

रावण : मैं अमर हूँ अजेय हूँ

प्रॉ : दोनों घूमते हैं । घूमिये । चक्कर लेकर ।
(दोनों द्वन्द्व युद्ध की तरह ललकार की मुद्रा में घूमते हैं)

राम : बस ये अन्तिम तीर । प्रभु को याद कर रावण !

प्रॉ : हा हा मैं अमर हूँ अजेय हूँ

रावण : हा हा मैं अमर हूँ अजेय हूँ

राम : सावधान रावण । सावधान....

प्रॉ : तू क्या मुझे मारेगा

रावण : तू क्या मुझे मारेगा

प्रॉ : ब्रैकेट में पैर पटककर मैं अजेय हूँ

रावण : ब्रैकेट में पैर पटककर मैं अजेय हूँ

प्रॉ : तीन बार घूम कर दहाड़ता है

रावण : तीन बार घूम कर दहाड़ता है

प्रॉ : अट्टहास

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रावण : अट्टहास
प्रॉ : (अचानक ठहर कर पापा से)अरे अट्टहास कीजिए
रावण : अरे अट्टहास कीजिए
प्रॉ : ....कीजिए
रावण : क्यों करूं
प्रॉ : जोर से हँसिये
रावण : क्यों हँसू ?
प्रॉ : तो फिर मरिये
रावण : क्यों मरूँ ?
राम : ये तीसरा तीर तेरे सारे पापों का । सम्भल
रावण : मैं क्यों हँसू मैं क्यों मरूँ ? (स्वगत)
प्रॉ : करूण क्न्दन के साथ हृदय में तीर लिये
रावण : करून क्न्दन के साथ हृदय में तीर लिये
प्रॉ : रावण भूमि पर धराशायी होता है, ब्रैकेट क्लोज्ड
रावण : रावण भूमि पर धराशायी होता है, ब्रैकेट क्लोज्ड (खुश होकर)
प्रॉ : अरे आप यहाँ गिर जाइए
रावण : क्यों ?
प्रॉ : क्योंकि ये सीन की डिमान्ड है !
रावण : अरे चलो !
दर्शक एक : ए डयरेक्टर साब ! जब राम ने रावण को मार दिया तो वो गिरता काहे नहीं ?
दर्शक दो : तीन बार तीर तो चला !
दादा : रूकिए रूकिये पूछता हूँ.... सर आप गिर क्यों नहीं रहे ?
रावण : क्यूं गिरूं ? कोई दादागिरी है क्या ?
दादा : अरे दर्शक लोग पूछ रहे हैं । आप गिर जाइए तो वे ताली बजाएंगे नहीं तो अण्डे फेकेंगें...
रावण : मैं नहीं गिरूंगा । (जनता अण्डे फेकेगी तो मैं केसरिया पार्टी से कह दूंगा । वो दंगा करा देगी)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दादा : अरे सर ! काहे सीन क्रियेट कर रहे हैं ? राम ने आपको मार दिया । आप मर गये । अब मर गये तो गिरेंगे नहीं ? खड़े रहेंगे ?

रावण : मार दिया ? किसने मार दिया ? उसकी इतनी हिम्मत कि मुझे मारे ? हर महीने मेरी कम्पनी से हाथ बढ़ाकर तन्खा लेता है और इतने लोगों के सामने ये मजाल कि वो मारेगा मैं गिरूंगा ? ए ! नौकरी करनी है कि नहीं ?

राम : करनी है सर ! मेरी भला क्या जुर्रत कि....

दादा : देख लीजिए

दर्शक एक : ए डायरेक्टर साब ! जल्दी से रावण गिरता है कि बताएं !

दर्शक दो : रावण नहीं गिरा तो आपका पुतला फूंक देंगे

दर्शक तीन : जल्दी गिराइए रावण को और दिखाइए सीताजी को.....

दादा : सर आप बस दो मिनट के लिए गिर जाइए । पर्दा गिर जाएगा । फिर मैं सारी जिन्दगी आपकी कदमों में....प्लीज !

रावण : सवाल ही नहीं उठता कि मैं अपने क्लर्क के आगे गिरूँ । Afterall it is my social prestige you know !

दादा : तो क्या करें

रावण : और कोई नाटक दिखा दीजिए । ये नाटक होगा तो मैं नहीं गिरूंगा (दर्शकों की ओर से टमाटर)

दादा : आप लोग बैठे रहिए ये रावण अभी गिरेगा । बस बीच में ये एक छोटा से हम ब्रेक ले रहे । नॉटी खटाखट कालिदास–विद्योत्तमा वाला सीन कर डाल । प्रिन्सी जी आइए। तो लीजिए प्रस्तुत है विद्योत्तमा–कालिदास शास्त्रार्थ । देखिए कैसे हारती है विद्योत्तमा विद्वान कालिदास की विद्वता के आगे ।

पापा के साथ विद्योत्तमा बनी प्रिन्सी : आसमान में कितने चाँद ? (इशारे से। भीतर से मंगला बोल रही)

कालिदास : एक (नॉटी इशारे से। नेपथ्य से अयाज की आवाज)

वि : पाँच पाण्डवों में कितनी द्रौपदी ?

का : एक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विद्योत्तमा : दुनिया भर में कितने जीनियस ?
का : एक
वि : इस युनिवर्स में कितनी सुन्दरी ?
का : एक
वि : और तुम्हारी जिन्दगी में ?
का : एक
वि : (बोल देती है) और मनीषा ? (प्रिन्सी बोल पड़ती है)
मनीषा : बोल दी बोल दी
गौरी : ले, अब दुद्दू पी ले
दादा : इस तरह महापंडित कालिदास जीत गये । विद्योत्तमा हार गयी ।
पापा : ओए ! मेरी बेटी नहीं हारेगी समझे । वो अपने पापा की बेटी है । उसका अभी पूरा कैरियर पड़ा है । आप उसे पहले ही शो में हरा दे रहे !
दादा : अरे एक बार हारने दीजिए न ! जीवन भर जीतेगी
पापा : हरगिज नहीं । हराना है तो कोई दूसरी ऐक्ट्रेस ले आइए
प्रिन्सी : क्यों मनीषा है तो
मनीषा : क्या है ! चलिए सीन दोबारा करते हैं
पापा : इस बार मैं कालिदास, आप (मनीषा से) विद्योत्तमा। सिर्फ (इशारे से पंजा और मुट्ठी दिखाते हुए) ऐसे ऐसे ही तो करना है और जीतने की गारन्टी !
आशीष : लेकिन फर्स्ट राउण्ड में हार गये थे कालिदास
पापा : ये लास्ट राउण्ड है
दर्शक एक : डायरेक्टर जी ये नाटक है कि ब्रेक ?
दादा : बस देखते जाइए । start.
(पापा–मनीषा थोड़ी देर वैसे ही इशारे करते हैं और अचानक पूरे मंच पर खुशी से नाचते हुए....)
पापा : मैं जीत गया, मैं जीत गया ... मैं कालिदास !
मनीषा : ओए ! बेटी के पापा ! बच्चों की तरह इतना उछलने की जरूरत नहीं । आप हारे हैं !

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दादा : जी सर आप हारे हैं । पहले कालिदास हारते हैं फिर जीतते हैं ।

पापा : (हैरानी से) फिर हारे हैं ! मैंने एक बार कह दिया कि मैं हारता नहीं फिर भी तुम सब मुझे हरवाने पे क्यों तुले हो । मैं नहीं हारूंगा, वो भी एक औरत से ? छि छि छि छि !

दादा : तो मनीषा जी आप हार जाइए । आखिर में तो हारना ही है !

मनीषा : जी नहीं मैं नहीं हारती । आज की महिला काफी सशक्त हो चुकी है । वो नहीं हारेगी

दर्शक में से : हाँ हाँ महिला नहीं हारेगी

मनीषा : ओए मूर्ख कालिदास, तू हार जा

पापा : मैं नहीं हारता । मैं पुरूष हूँ । आप कौन है ?

मनीषा : वृन्दा करात !

पापा : (भय से दादा के पास भागकर) डायरेक्टर ये महिला नहीं वृन्दा करैत है

दादा : अब तो हार जाइए

पापा : नहीं पुरूष नहीं हारेगा

पु.दर्शक : नहीं हारेगा नहीं हारेगा

मनीषा : महिलाएं भी नहीं हारेंगी

म.दर्शक : नहीं हारेंगी, नहीं हारेंगी

दादा : चन्दन ! जाओ जनता के बीच से एक ऐसी महिला ले आओ जो हारने के लिए तैयार हो

(चन्दन जनता की भीड़ के निराकार के बीच गुजर कर सामने की विंग्स से हरीतिमा को ले आता है)

क्या नाम है ?

हरीतिमा : सर्वहारा

दादा : ये तो पहले से हारी हुई है ! विद्योत्तमा बनेगी ?

हरीतिमा : सामने कोई कालिदास तो हो ?

दादा : (बिल्कुल आगे निकल कर झुंझलाकर पुकार उठते हैं) पापा !

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

फेड आउट

दृश्य – नौ

नॉटी : क्या हुआ ?

मनीषा : मोन्टू दा बीमार पड़ गये । हालत सीरियस है ।

आशीष : आपको बार–बार पूछ रहे थे

नॉटी : दादा ! क्या हो गया ?

दादा : नॉटी तू आ गया ! मेरे बेटे, मेरे लाल, मेरे दोस्त ! तू मुझे महात्मा जी के पास ले चल !

नॉटी : महात्मा जी के पास ?

दादा : हाँ तूने ही एक बार बताया था कि तू एक महात्मा जी के पास जाता है । बस मुझे मरने से पहले एक बार उनके पास ले चल । मेरी अन्तिम इच्छा पूरी कर दे नॉटी !

नॉटी : लेकिन देख के आपको निराशा होगी । वे देखने में सन्त महात्मा नहीं लगते । न दाढ़ी न चोंगा न बढ़े बाल न प्रवचन । बहुत कम बोलते हैं । हैं वे बड़े योगी लेकिन दिखते नहीं ।

दादा : जो दिखते हैं वे होते नहीं । तू ले चल ।

नॉटी : लेकिन आप वहाँ जाकर करेंगे क्या ? उन्हें नाटकों में रूचि नहीं ।

दादा : मैं सिर्फ एक सवाल पूछूंगा – इतनी मेहनत करते हैं हम लेकिन हम कलाकारों का ये हाल क्यों ? क्यों नहीं मिल पा रही हमें गरिमामय प्रतिष्ठा ?

नॉटी : पूछेंगे ?

दादा : हाँ पूछेंगे ।

नॉटी : तो चलिए ।

बाकी : हम भी चलेंगे । हम भी चलेंगे ।

(फेड आउट में पंडित कुमार गन्धर्व की आवाज में कबीर साहब का पद "गुरूजी जहाँ बैठूँ वहाँ छाया दे" क्रमशः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गूँजने लगता है । प्रकाश में मंच पर शेष दृश्य का गेरूआ प्रकाश और सामूहिक प्रणव ध्वनि में.......)

दृश्य–दस

दादा : प्रणाम ! महात्मा जी, हम कलाकार हैं संगीतकर्मी, नाट्यकर्मी । कई वर्षों से हम लोग कला साधना में लगे हैं लेकिन सबसे ज्यादा अशान्त हम ही लोग हैं । संगीत और नाट्य दोनों कला को युगों युगों से न प्रतिष्ठा प्राप्त हो पा रही है न गरिमा । यही हाल कलाकारों का भी है । ऐसा क्यों है ? हम समाज के उत्थान और जागृति के लिए सब कुछ खोकर इतना कुछ करते आ रहे हैं लेकिन समाज में ही इतने तिरस्कृत होते गये हैं हम । समाज में तो बदलाव आ गया लेकिन हम कलाकारों के अभाव, असहायता और अमर्यादित जीवन में कोई बदलाव नहीं आ पाया । आखिर क्यो ?

(जिसने रावण की भूमिका अभिनीत की है वही अब महात्मा के वेश में है और हारने के दुःख का बदला लेने के मूड में)

महात्मा : क्योंकि आप अभिशप्त हैं ! आप सभी के पास कला का सौन्दर्य है लेकिन यह सौन्दर्य शापित है । नाटकों के प्रथम प्रयोगों के युग से ही नट शापित हुए थे । वो शाप आप तक चला आ रहा है । नाट्यशास्त्र लिखने के बाद भरत मुनि ने अपने पुत्रों से नाट्य प्रयोग कराया था– देवासुर संग्राम । अपनी कला के ही बूते वे भरत पुत्र प्रतिष्ठित हुए थे । लेकिन उनमें अहंकार ने जन्म लिया और वे मदोन्मत्त होकर ऋषि–मुनियों की तपस्या में विघ्न डालने लगे । (महात्मा की हरकतों से रंगकर्मियों की यह टीम परेशान हो रही लेकिन महात्मा को पहचान नहीं पा रही) परेशान होकर मुनियों ने उन्हें शाप दिया था कि आने वाले युगों में भले ही कलाकर्म या रंगकर्म करने वाले भरतपुत्र कहे जायं लेकिन जिस भी युग में वे कलाकर्म से जुड़ेंगे, वे शूद्र कहलाएंगे ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आज आप सारे भरतपुत्र शूद्रता का शापित जीवन जी रहे हैं आपको इस शाप से मुक्त होने की पहल करनी है ।

नॉटी : शूद्र का जीवन ! अब तो वे भी मैल नहीं ढोते !

महात्मा : मन का मैल नहीं ढो रहे ? हृदय और चित्त की अशुद्धता नहीं जी रहे ? क्या संगीत और नाट्य कला की साधना आप इसलिए नहीं कर रहे कि आपका कैरियर बने, आपको प्रसिद्धि मिले, सरकारी सम्मान मिले, पैसा, प्रतिष्ठा, प्रसिद्धि, पॉवर ये सब मिले ? (पिछले दृश्य में न हारे हुए नॉटी और मनीषा को इस वक्त अपने पांवों पर झुका देख रावण या पापा खुश है) क्या कला की साधना इसलिए है ? ये तो उसकी भी महत्वाकांक्षा होती है जो कला से जुड़ा नहीं होता । आप ये सब मैल ढोते हुए शूद्रता का शापित जीवन जी रहे हैं । वही मिल रहा जो आपको प्राप्य है । आप लक्ष्य से भटक गये हैं । (अब वे सब पापा को पहचान गये हैं) आपका लक्ष्य है शान्त रस और मोक्ष । लक्ष्य की ओर बढ़िये, (लड़के लड़कियों की ओर श्रृंगार रस में बढ़ रहे) अपने कलाकर्म के माध्यम से, और अपने सौन्दर्य को शापमुक्त करिए ! आप शिवपुत्र हैं (अचानक पापा की निगाह पड़ती है, हैरानी और गुस्से में मुख्य पुरूष पात्रों को खींचने के काकू में) यानी बहुरि अकेला..... (समूह ध्वनि : ओम)

दृश्य–ग्यारह

(सिर्फ नॉटी पर प्रक़ाश । नॉटी शान्त रस में)

नॉटी : कहीं कोई नहीं था । न कोई विकृत भाव । चारों ओर प्रकाश । प्रकाश और प्रशान्ति । न कोई भय न शब्द । विकृत भावों का शमन हो चुका था । मैं जाग रहा था जबकि सब सो रहे थे । मैं रह गया था बहुरि अकेला .....

मनीषा : हाय ये मैं क्या कर बैठी .... एक निर्मोही से प्रेम कर बैठी ! (पहले दृश्य के काकू में ही)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रिन्सी : इस नॉटी के प्रेम में तड़प कर मरना चाहती थी, बीच सपने में जागकर ये मैं क्या देख बैठी ! (मनीषा की तर्ज पर ही)

नॉटी : (मुस्कुरा कर शान्त) अब मैं शान्त रस में हूँ

दोनों : पापा !

दूसरे पापा : फर्स्ट ऐक्टर नॉटी आप ही हैं ?

नॉटी : कहिए....

पापा : ये मेरी बेटी है, शैल ! आपको Join करना चाहती है ! टैलेन्टेड है बस थोड़ा दुलार में रहती है.....

शैल : पापा ! (ठीक प्रिंसी की अदा में)

(....गीत पूरा होता है 'युगन युगन हम योगी')

(फेड आउट नहीं होता)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

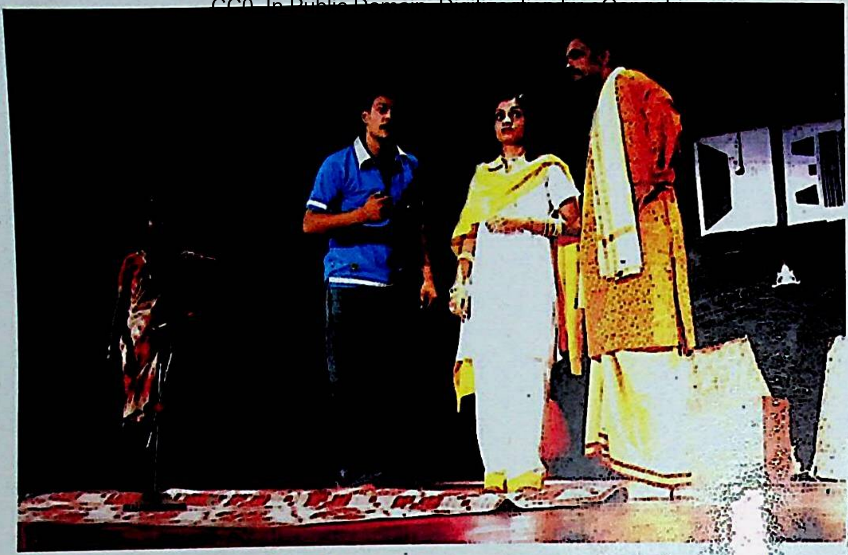

A tense moment from Dasharupak staged at Ravindralaya, Lucknow on June 11th, 2006 (Kabir Purnima) - Photo : *Dinesh*

REVIEWSCAPE

`An depiction of poignant situations.'

(Sandhya Bhasa, The Pioneer, 15th Sept. 1996)

'समय और स्मृति का संवेदनधर्मी प्रदर्शन जहाँ संवादों का नाटकीय विन्यास अभिनेता की शक्ति से भिन्न नहीं ।'

(अन्धेरे अनुभव, दैनिक जागरण, 12 फरवरी 1994)

'कलारूप क्यूबिज्म और चरित्र के अनुभव की बहुवांचकता प्रभाव को बौद्धिकता में न बदलकर प्रवाह को रंगमंचीय बनाती है ।'

(अंगिरा, स्वतन्त्र भारत, 10 फरवरी 1993)

'विभाजित स्त्री की सन्तप्त भावदशा का संक्षिप्त रंगरूपायन किन्तु नाटकीय सरोकार बिल्कुल आधुनिक और समकालीन कथासमय से बिल्कुल आगे है।'

(स्याहियाँ, राष्ट्रीय सहारा, 15 फरवरी 1995)

कठोपनिषद के आधार पर नाट्य प्रस्तुति प्रभावी रही ।'

(अन्तरा, हिन्दुस्तान, 30 सितम्बर 2004)

`Mystery of this dramatic fiction transends towards rational metaphysics'. (Avartan, The Hindu, 5th Nov. 2005)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

નારેશ્વરે

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

A tense moment from Dasharupak staged at Ravindralaya, Lucknow on June 11th, 2006 (Kabir Purnima) - Photo : *Dinesh Seth*

REVIEWSCAPE

`An depiction of poignant situations.'

(Sandhya Bhasa, The Pioneer, 15th Sept. 1996)

'समय और स्मृति का संवेदनधर्मी प्रदर्शन जहाँ संवादों का नाटकीय विन्यास अभिनेता की शक्ति से भिन्न नहीं।'

(अन्धेरे अनुभव, दैनिक जागरण, 12 फरवरी 1994)

'कलारूप क्यूबिज्म और चरित्र के अनुभव की बहुवांचकता प्रभाव को बौद्धिकता में न बदलकर प्रवाह को रंगमंचीय बनाती है।'

(अंगिरा, स्वतन्त्र भारत, 10 फरवरी 1993)

'विभाजित स्त्री की सन्तप्त भावदशा का संक्षिप्त रंगरूपायन किन्तु नाटकीय सरोकार बिल्कुल आधुनिक और समकालीन कथासमय से बिल्कुल आगे है।'

(स्याहियाँ, राष्ट्रीय सहारा, 15 फरवरी 1995)

कठोपनिषद के आधार पर नाट्य प्रस्तुति प्रभावी रही।'

(अन्तरा, हिन्दुस्तान, 30 सितम्बर 2004)

`Mystery of this dramatic fiction transends towards rational metaphysics'. (Avartan, The Hindu, 5th Nov. 2005)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi